



# सम्पूर्ण पूजन एवं यज्ञविधिः

#### लेखक एवं सम्पादक आचार्य रामसेवक पाण्डेय (प्राध्यापक)

अन्नपूर्णा ऋषिकूल ब्रह्मचर्य आश्रम संस्कृत महाविद्यालय, शिवपुर, वाराणसी

#### ज्योतिष प्रकाशत

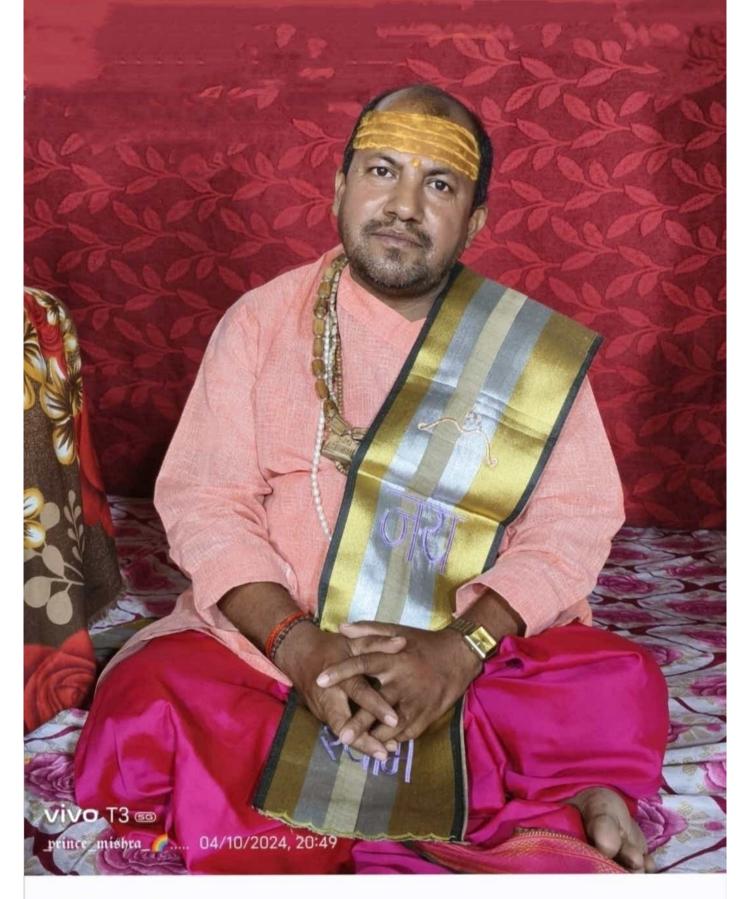
चौक, (आई.सी.आई.बैंक के बगल में ) वाराणसी 0542-2390854, 9415343257 email- vnsjyotishprakashan@gmail.com

# रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन

कचौड़ीगली, वाराणसी-221001

फोन: 0542-2392543, 2392471

सन् 2017 ई०] सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित



Written By -

"Acharya Shri Ramsevak Pandey Ji maharaj"

Shri Annapurna Sanskrit Degree College Shivpur, Varanasi



#### **DEVELOPER-**

Vashu Pandit...

Banarash Hindu University "Department Of Sahitya"

# विषयानुक्रमणिका

	क्रम	विषय	पृष्ठांक
	(क)	संध्या न करने से दोष	9.40
	(碅)	अथसन्ध्योपासनविधि:	१०
	(ग)	तर्पण-विधि:	28
	१.	प्रायश्चित प्रयोग	<b>३</b> ६
	₹.	प्रायश्चित सङ्कल्प	30
	₹.	दशविधि स्नान	39
	٧.	प्रायश्चित हवन	४२
	4.	जलयात्रा विधि:	४६
	ξ.	गणेशाम्बिकापूजनम्	५३
	<b>9</b> .	कर्मपात्र स्थापनम्	<b>६</b> १
	۷.	कलशस्थापनं-पूजनम्	९६
	9.	पुण्याहवाचनम्	१००
	१०.	अथाभिषेक:	१०९
	११.	षोडशमातृकापूजनम्	१०९
	१२.	वसोर्धारापूजनम्	११३
	१३.	आयुष्यमन्त्र जपः	११४
	१४.	नान्दीश्राद्धम्	११५
	१५.	आचार्यादिवरणम्	११८
	१६.	मण्डप प्रवेश:	१२०
	१७.	दिग् रक्षणम्	१२१
	१८.	शिख्यादिवास्तुपूजनम्	१२३
	१९.	अग्न्युत्तारण विधि:	१३०
•	२०.	मण्डपपूजनम्	१३८
	२१.	मण्डपस्यद्वारदेवतापूजनम्	१५६
	२२.	चतुःषष्टियोगिनी स्थापनम्	८७८
	२३.	क्षेत्रपाल पीठपूजनम्	१८३
	२४.	सर्वतोभद्रदेवता स्थापनम्	१८६
	२५.	एकलिङ्गतोभद्र देवताविशेषा:	१९१

0	, a a	Company of the second s	
क्रम	विषय	1	पृष्ठांक
२६.	द्वादश लिङ्गतोभद्रमण्डल	The state of the state of the	१९४
२७.	रेखात्मक चतुर्लिङ्गतोभद्रस्थापनम्	The state of the s	308
२८.	गौरीतिलक मण्डलपूजनम्	age of	२११
२९.	गृहवास्तुपूजाप्रयोगः	事情为一种	२१७
₹0.	कुण्डपूजनम्	· 大學 · 學學 · 其等	२२५
३१.	नवग्रहपूजनम्	75 19 A	२२७
	असंख्यातरुद्रस्थापनम्	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	२३०
	कुशकण्डिकाकरणम्	774	२३१
	आवाहित देवानां हवनम्	· March 200	२३५
	प्रधान होम:	The state of	२४०
३६.	स्विष्टकृत् हवनम्	The Many	२६१
36.	भूरादि नवाहुति प्रदानम्	Or seems	२६१
₹८.	एकतन्त्रेण दिक्पालादीनां बलिदानम्	and a	२६२
	कूष्माण्डबलिदानम्	上一次共 1000000000000000000000000000000000000	्२६५
४०.	क्षेत्रपालबलिदानम्	The state of the state of	२६६
४१.	पूर्णाहुति:	The state of the s	२६८
४२.	वसोर्धारा होम:		२७१
४३.	त्र्यायुषकरणम्		२७२
88.	पूर्णपात्रदानम्	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	२७३
४५.	श्रेयोदानम्	A STATE OF THE STA	२७३
४६.	दक्षिणासङ्कल्प		२७४
४७.	ब्राह्मणभोजनसङ्कल्प	Company of the same	२७४
86.	पीठदानसङ्कल्प		
४९.	अभिषेक:	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	२७५
40.	छायापात्रदानम्	The state of the service	२७६
48.	भूयसीदक्षिणासङ्गल्पः		
42.	आवाहित देवतानां विसर्जनम्		२७७
५३.	क्षमा प्रार्थना	At the same of the same	
48.	तिलकाशीर्वाद:	The second second	२७९
. ५५.	गणपत्यावरण पूजनम्		२८१

क्रम	विषय .	The state of the s	पृष्ठांक
५६.	दुर्गाङ्गपूजनम्	My La troupe to a tax.	२८६
५७.	रुद्राङ्गपूजन	The second second	२९४
46.	विष्णोः अङ्गपूजन	English to Williams	३०१
49.	लक्ष्म्या:वरणपूजन	A STATE OF S	३०५
-६०.	हनुमदङ्गपूजनम्		38.4
<b>द</b> १.	रामाङ्गपूजनम्		333
६२.	श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्		339
६३.	श्रीसूक्तम्	1000 April	380
६४.	पुरुषसूक्तम्	The state of the s	387
६५.	रुद्रसूक्तम्		383
ξξ.	शिवमानस पूजास्तोत्रम्		384
६७.	हेमाद्रिः सङ्कल्पः	the said of the	३४६
६८.	पार्थिव पूजन	AND SHOP THE THE	347
६९.	ब्रह्मादि-शाप-विमोचनम्		340
90.	अथ देव्याः कवचम्		349
७१.	अर्गलास्तोत्रम्		३६३
७२.	कीलकस्तोत्रम्		३६५
७३.	नवार्णमन्त्र-जपविधिः		३६७
७४.	तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्		३६९
७५.	सप्तशतीन्यासः		360
७६.	प्रथमोऽध्यायः (१)		३७२
<b>66</b> .	द्वितीयोऽध्यायः (२)		360
७८.	तृतीयोऽध्यायः (३)		७७६
७९.	चतुर्थोऽध्यायः (४)		398
	पञ्चमोऽध्यायः (५)		390
८१.	षष्ठोऽध्याय: (६)		४०६
۷2.	सप्तमोऽध्यायः (७)	Settle	806
८३.	अष्टमोऽध्याय: (८)		४१२
८४.	नवमोऽध्याय: (९)		४१८
८५.	दशमोऽध्याय: (१०)		822
THE RESERVE AND ADDRESS OF THE PARTY OF THE			

क्रम विषय	पृष्ठांक
८६. एकादशोऽध्याय: (११)	४२५
८७. द्वादशोऽध्याय: (१२)	४३१
८८. त्रयोदशोऽध्याय: (१३)	४३५
८९. उत्तरन्यास:	४३९
९०. तन्त्रोक्तं देवी-सूक्तम्	880
९१. नवार्णमन्त्र-जपः	885
९२. प्राधानिकं रहस्यम्	\$88 \$88
९३. वैकृतिकं रहस्यम्	884
९४. मूर्ति-रहस्यम्	
९५. देव्यपराध-क्षमापन-स्तोत्रम्	888
९६. सिद्ध-कुञ्जिका-स्तोत्रम्	४५१
९७. देवताओं के यज्ञ विचार	४५३
९८. आहुति देने का विचार	४५५
९९. हवन मुद्रा के भेद	849
१००. षडङ्गन्यासाः	४६०
१०१. रुद्र-प्रार्थना	४६४
१०२. शुक्लयजुर्वेदीय-रुद्राष्ट्राध्यायी	४६५
१०३. परिशिष्टाऽध्याय:	४६६
१०४. शान्त्यध्याय: (१)	828
१०५. स्वस्ति-प्रार्थनामन्त्राध्याय: (२)	828
१०६. रुद्रस्वाहाकारविधिः	868
१०७. शिवसहस्रनामावलिः	868
१०८. दुर्गासहस्रनामावलिः	409
१०९. देवी-देवताओं की गायत्री	५२७
११०. देवी-देवताओं की आरती	484
चक्र-मण्डल	480

## संध्या न करने से दोष

जिसने संध्या का ज्ञान नहीं किया, जिसने संध्या की उपासना नहीं की वह (द्विज) जीवित रहे, शूद्र-सम रहता है और मृत्यु के बाद कुत्ते आदि की योनि को प्राप्त करता है—

## संध्या येन न विज्ञाता संध्या येनानुपासिता। जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतः श्वा चाभिजायते।।

(दे.भाग. ११-१६-७)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि संध्या नहीं करें, तो वो अपवित्र है और उन्हें किसी पुण्यकर्म के करने का फल प्राप्त नहीं होता।

संध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु। यदन्यत् कुरूते कर्म न तस्य फलभाग्भवेत्।।

(दक्ष समृ. २-२७)

सूर्य और तारों से रहित दिन-रात की संधि को तत्वदर्शी मुनियों ने संध्याकाल माना है-

अहोरात्रस्य या संधिः सूर्यनक्षत्रवर्जिता। सा तु संध्या समाख्याता मुनिभिस तत्वदर्शिभिः।।

(आचारभूषण ८९)

## संध्यास्तुति

ब्राह्मणरूपी वृक्ष का मूल संध्या है, चारों वेद, चार शाखाएँ हैं, धर्म और कर्म पत्ते हैं। अत: मूल की रक्षा यत्न से करनी चाहिये। मूल के छिन्न हो जाने पर वृक्ष और शाखा कुछ भी नहीं रह सकते—

विप्रो वृक्षो मूलकान्यत संध्या

वेदाः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्।

## तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव वृक्षो न शाखा।।

(देवीभाग. ११-१६-६)

समय पर की गयी संध्या इच्छानुसार फल देती है, और बिना समय की की गयी संध्या वन्ध्या स्त्री के समान होती है—

## स्वकाले सेविता संध्या नित्यं कामदुघा भवेत्। अकाले सेविता सा च संध्या वन्ध्या वधूरिव।।

(मित्रकल्प)

प्रात:काल में तारों के रहते हुए, मध्याह्नकाल में जब सूर्य आकाश के मध्य में हों, सायंकाल में सूर्यास्त के पहले ही इस तरह तीन प्रकार की संध्या करनी चाहिये—

#### प्रातः संध्या सनक्षत्रां मध्याह्ने मध्यभास्कराम्।। ससूर्या पश्चिमां संध्यां तिस्त्रः संध्या उपासते।

(दे.भा. ११/१६/२-३)

सायंकाल में पश्चिम की तरफ मुँह करके जब तक तारों का उदय न हो और प्रात:काल में पूर्व की ओर मुख करके जब तक सूर्य का दर्शन न हो, तबतक जप करता रहे—

#### जपन्नासीत सावित्रीम्प्रत्यगातार कोदयात्। संध्या प्राक् प्रातरेवं हि तिष्ठदासूर्यदर्शनात्।

(पा.स्मृं. २।२४-२५)

गृहस्थ तथा ब्रह्मचारी गायत्री के आदि में 'ॐ' जप करें, और अन्त में 'ॐ' का उच्चारण न करें, क्योंकि ऐसा करने से सिद्धि नहीं होती है।

## गृहस्थो ब्रह्मचारी च प्रणवाद्यामिमां जपेत्। अन्ते यः प्रणवं कुर्यान्नासौ सिद्धिम वाप्नुयात्।।

(याज्ञवल्क्य स्मृ. आचाराध्याय २४।२५ बालम्भट्टी) जपके आदि में चौंसठ कलायुक्त विद्याओं तथा सम्पूर्ण ऐश्वर्यों का सिद्धिटायक 'गायत्री-हृदय' का तथा अन्त में 'गायत्री-कवच' का पाठ करें। (यह नित्य-संध्या में आवश्यक नहीं है, करे तो अच्छा है।) चतुष्षष्टिकला विद्या सकलैश्वर्यसिद्धिदा। जपारम्भे च हृदयं जपान्ते कवचं पठेत्।।

घर में संध्या-वन्दन करने से एक, गो-स्थान में सौ, नदी किनारे लाख तथा शिव के समीप में अनन्त गुना फल होता है—

गृहेषु तत्समा संध्या गोष्ठे शतगुणा स्मृता। नद्यां शतगुणा प्रोक्ता अनन्ता शिवसंनिधौ।।

(लघुशातातप स्मृ. ११४)

पैर धोने से, पीने से और संध्या करने से बचा हुआ जल श्वान के मूत्र के समान हो जाता है, उसे पीने पर चान्द्रायण-व्रत करने से मनुष्य पवित्र होता है। इसिलए बचे हुए जल को फेंक दें—

पादशेषं पीतशेषं संध्याशेषं तथैव च' शुनो मूत्र समं तोयं पित्वा चान्द्रायणं चरेत्।।

## शताक्षर गायत्री मंत्र-

सौ अक्षरों की गायत्री का जाप करने के बाद गायत्री मन्त्र का जाप करना चाहिये—

ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

ॐ त्र्यम्बकं व्यजामहे सुगुन्धिं पुष्टिवध्दीनम्। उर्व्याक्किमिव बन्धनात्रमृत्योमीक्षीय माऽमृतात्॥

ॐ जातवेदसे सुनवाम्सोमेमरातीयतो निर्दहातिवेदेः। सनः पर्षदित दुर्गाणि विश्धा नावेवसिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

# अथ सन्ध्योपासनविधिः

पवित्रीकरणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

त्रिराचमनम्

अन्तर्जानुहस्तः संहताङ्ग्लिना शुद्धजलं गृहीत्वा मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठेन वामेनान्वारब्धपाणिना ब्रह्मतीर्थेन त्रिरपः पिबेत्-

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। हस्तौ प्रक्षाल्य।।

आसनशुद्धिः

पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोग:-

🕉 पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।। पवित्रीधारणम्

ॐ पवित्रेस्थोव्वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रिश्मिभः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।

भस्मतिलकधारणम्

त्र्यायुषमित्यस्य नारायण ऋषिः रुद्रो देवता उष्णिक्छन्दः भस्मधारणे विनियोगः--

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः ललाटे। कश्यपस्य त्र्यायुषम् ग्रीवायाम्।

यदेवेषु त्र्यायुषम् बाह्योः। तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् हृदये।

#### स्वस्ति-तिलक धारणम्

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द्धातु॥ शिखाबन्धनम्

मानस्तोक इति मन्त्रस्य कुत्स ऋषिः जगती छन्दः एको रुद्रो देवता शिखाबन्धने विनियोगः।

ॐ मानस्तोकेतनये मानऽआयुषि मानोगोषु मानोऽअश्वेषुरीरिषः। मानोव्वीरान्नुद्द्रभामिनोव्वधी र्हविषमन्तः सदमित्वा हवामहे।।

> चिद्रूपिणी महामाये दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।। संकल्पः

ॐ शुभे शोभनेमुहुर्ते अद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तेकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे किलयुगे किलप्रथमचरणे.....सम्वत्सरे..... मासे.....पक्षे......तिथौ.....वासरे....नक्षत्रे......योगे.... ममोपात्तदुरितक्षयार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं ब्रह्मवर्चस्वाप्तये प्रातः/ मध्याह्न/सायं/संध्योपासनं करिष्ये।

## अधमर्षणाचनम्

ॐ ऋतं चेति त्र्यृचस्य माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तं दैवतमपामुपस्पर्शने विनियोग:।।

ॐ ऋतं च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥ समुद्रादर्णवादिधसंवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विद्धद्विश्वस्य मिषतो वशी॥

## सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥ प्राणायामः

ॐ कारस्यब्रह्मऋषिर्दैवीगायत्रीछन्दः परमात्मादेवता सप्तव्याहृतीनां प्रजापित ऋषिर्गायत्र्युष्णगनुष्टुब्बृहृती पंक्तित्रष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यिग्न वायु सूर्य बृहस्पतिर्वरुणेन्द्रविश्वेदेवादेवताः, तत्सिवतुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सिवता देवता आपोज्योतिरिति शिरसः प्रजापित-ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः प्राणायामे विनियोगः—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमिह। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।।

#### प्रातराचमनम्

सूर्यश्च मेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यमन्युपतयो रात्रिश्च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः—

ॐ सूर्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्योरक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मिय इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।।

#### मध्याह्नाचमनम्

आपः पुनन्त्विति मंत्रस्य नारायण ऋषि अनुष्टुप् छन्दः आपः पृथिवी, ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्म च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रति ग्रह्ँ स्वाहा।।

#### सायमाचमनम्

अग्निश्चमेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोग्निमन्युम न्युपतयोऽहश्च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेश्यः पापभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्रा पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भयामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मिय इदमहं माममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।। मार्जनम्

आपो हिष्ठेति त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपोदेवता मार्जने विनियोगः।

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवः। ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ॐ महे रणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसः। ॐ तस्य भाजयतेह नः। ॐ उशतीरिव मातर। ॐ तस्मा अरङ्गमाम वः। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ॐ आपो जनयथा च नः।

## अभिमन्त्रणम्

द्रुपदादिवेत्यश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयोऽनुष्टुप्छन्द आपो देवताः शिरस्सेके विनियोगः।

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।। अधमर्षणम्

ऋतञ्चेतित्र्यृचस्यमाधुश्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिः अनुषुप्छन्दोभाववृतं दैवतमघमर्षणे विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीन्द्वात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।।

समुद्रादर्णवादिधसंवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विद्धिष्ठस्य मिषतो वशी।। सुर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो दिवञ्च

आचमनम्

तिरश्चीन ऋषिरनुषुष्छन्दः आपो अन्तश्चरसीति अपामुपस्पर्शने विनियोग:।

ॐ अन्तश्चरिस भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥ सूर्यार्घ्यम्

ॐकारस्य ब्रह्म ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णगनुष्टुप्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सूर्यार्घ्यदाने विनियोग:।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमिह। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

सूर्योपस्थानम्

उद्वयमिति प्रस्कण्व ऋषिः अनुषुप्छन्दः सूर्यो देवता उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता चित्रमिति कुत्साङ्गिरस ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता तच्चक्षुरिति दध्यङाथर्वण ऋषिः एकाधिका ब्राह्मी त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने:। आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षक्षसूर्यऽआत्माजगतस्तस्थुषश्च॥

ॐ तच्चक्षुर्देविहतं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत छ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

प्रतिमन्त्रं दक्षिणेन पाणिना वामकरस्थिततोयैरभिषिञ्चेत्।

ॐ भूः पुनातु-शिरिश। ॐ भुवः पुनातु - नेत्रयोः।

ॐ स्वः पुनातु - कण्ठे। ॐ महः पुनातु - हृदये।

ॐ जनः पुनातु - नाभ्याम्। ॐ तपः पुनातु-पादयोः।

ॐ सत्यं पुनातु - पुत्रः शिरसि।

#### गायत्र्यावाहनम्

ॐ तेजोऽसीति धामनामासि च परमेछी प्रजापति ऋषिर्यजुस्त्रिष्टुबृगुष्णिहौ छन्दसा सविता देवता गायत्र्यावाहने विनियोग:।

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि। धामनामासि प्रियं देवनामनाधृष्टं देवयजनमसि।।

#### गायत्रीध्यानम्

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनै: पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता।। आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।। गायत्र्युपस्थानम्

गायत्र्यसीति विवस्वान् ऋषिः स्वराण्महापंक्तिश्छन्दः परमात्मादेवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः। ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदिश न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत।

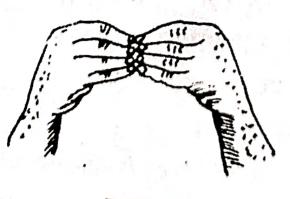
#### गायत्रीजपः

ॐ कारस्य ब्रह्म ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभङ्छन्दांस्यग्नि-वायुसूर्या देवता, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमिह। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

## जपस्य पूर्व मुद्रा

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा। द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्यंचमुखं तथा। षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा। शकटं यमपाशं च प्रथितं चोन्मुखोन्मुखम्।। प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्। सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा। एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः।।



सुमुखम्











४. विस्तृतम्

५.द्विमुखम्



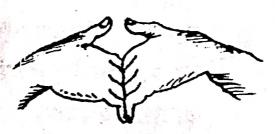


७. चतुर्मुखम् ८. पंचमुखम्



६. त्रिमुंखम्

९. षणमुखम्



१०. अधोमुखम्



११. व्यापकाञ्जलिकम्





१३. यमपाशम्



२२. महाक्रान्तम् २३. मुहरम् २४. पल्लवम्

प्रार्थना-

ॐ अहो देवि महादेवि संध्ये विद्ये सरस्वति। अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तु ते।। ॐ देवि गायत्रि त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव। विसष्ठ शापाद्विमुक्ता भव। विश्वामित्र शापाद्विमुक्ता भव। शुक्रशापाद्विमुक्ता भव।

#### माला प्रार्थना

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी। चतुर्वर्गस्त्विय न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।। ॐ अविघ्नं कुरू माले त्वं गृहामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।। ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धि देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय मे स्वाहा।

ॐगुह्याति गुह्यगोष्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्विर।। जप के बाद की आठ मुद्राएँ

सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिः शंखोऽथ पङ्कजम्। लिङ्गं निर्वाणमुद्रां च जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत्।।

नोट: गायत्री जप करने से पूर्व सौ अक्षर की गायत्री करने के पश्चात् ही जप करें।

मंत्र—त्र्यम्बकं यजामहे०, जातवेदसो सुनवाम०, भूर्भुवः स्वः तत्सवितुवरेण्यम्०।



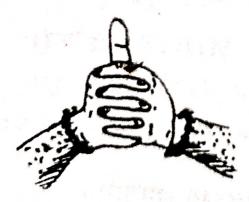
१. सुरिभ



३. वैराग्यम्



५. शंख



७. लिङ्गम्



२. ज्ञानम्



४. योनिः



६. पङ्कजम्



८. निर्वाणम्

सूर्यप्रदक्षिणा

विश्वतश्चक्षुरिति भौवन ऋषिः त्रिषुप्छन्दो विश्वकर्मा देवता सूर्यप्रदक्षिणायां विनियोगः।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमित सम्पतत्रैर्द्यावाभूमि जनयन् देव एकः॥

जपसमर्पणम्

ॐ देवा गातुविद इति मनसस्पतिऋषिर्विराडनुषुप्छन्दः वातो देवता जपनिवेदने विनियोगः।

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित। मनसस्पत इमं देव यज्ञक्षस्वाहा व्वाते धाः॥

अनेन यथाशक्तिकृतेन गायत्रीजपाख्येन कर्मणा भगवान् सूर्यनारायण: प्रीयताम्

विसर्जनम्

उत्तमे शिखरे इति वामदेव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः गायत्री देवता गायत्रीविसर्जने विनियोगः।

ॐ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि। ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्।।

अनेन संध्योपासनाख्येन कर्मणाश्रीपरमेश्वरः प्रीयताम्। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

गायत्री-कवचम्

अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दो गायत्री देवता ॐ भूः बीजम् भुवः शक्तिः स्वः कीलकम् गायत्रीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्यकोटिसमप्रभाम्। सावित्रीं ब्रह्मवरदां चन्द्रकोटिसुशीतलाम्। त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहारविराजिताम्। वराभयां कुशकशा हेमपात्राक्षमालिकाय्।। शङ्खचक्राब्जयुगलं कराभ्यां दधतीं वराम्। सितपंकजसंस्थं च हंसारूढां सुखस्मिताम्। ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गायत्री कवचं जपेत्।। ॐ ब्रह्मोवाच

विश्वामित्र महाप्राज्ञ गायत्रीकवचं शृणु। यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत् क्षणात्।।१।। सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी। ललाटं ब्रह्मदैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी॥२॥ कणौं मे पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बिके। गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ॥३॥ द्विजान् यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती। सांख्यायनी नासिकं मे कपोलौ चन्द्रहासिनी।।४।। चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वधनाशिनी। स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवादिनी।।५।। उदरं विश्वभोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया। जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी।।६॥ पार्श्वी मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गोगोिष्त्रकाऽवतु। ऊर्वोरोंकाररूपा च जान्वोः सन्ध्यात्मिकाऽवतु॥७॥ जङ्घयो पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका। सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रा पादांगुलीषु च॥८॥ सर्वाङ्गं वेदजननी पातु मे सर्वदाऽनघा। इत्येतत् कवचं ब्रह्मन् गायत्र्याः सर्वपावनम्। पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्वरोगनिवारणम्॥९॥

त्रिसन्ध्यं यः पठेद्विद्वान् सर्वान् कामानवाप्नुयात्। सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञः स भवेद्वेदिवत्तमः॥१०॥ सर्वयज्ञफलं प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात्। प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थश्चतुर्विधान्॥११॥ ॥ इति सन्ध्योपासन विधिः॥

भगवतीस्तुतिः

प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम। दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम्।।

प्रातर्नमामि महिषासुरसुरचण्डमुण्ड-शुम्भासुरप्रमुखदैत्यविनाशदक्षाम्।

ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम्।।

प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम्।

संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां

मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णोः॥

तव च का किल न स्तुतिरम्बिके! सकलशब्दमयी किल ते तनुः।

निखिलमूर्तिषु मे भवदन्वयो मनसिजासु बहिः प्रसरासु च॥

इति विचिन्त्य शिवे! शिमताशिवे! जगित्र आतमयत्नवशादिदम्।

स्तुतिजपार्चनचिन्तवर्जिता न खलु काचन कालकलास्ति मे।।

## तर्पण-विधिः (देवर्षिमनुष्यपितृतर्पण-विधि)

प्रातःकाल ब्राह्मीवेला के पूर्व उठकर शौचादि से निवृत्त हो स्नान करके शुद्ध श्वेत वस्न धारण कर पूर्वाभिमुख हो कुशासन पर बैठे। फिर तीन बार आचमन करके संध्योपासना एवं नित्यमोह करने के पश्चात् बायें और दायें हाथ की अनामिका अंगुलि में 'पिवत्रे स्थो वैष्णव्यो o'-इस मन्त्र को सम्पूर्णरूप से पढ़ते हुए पिवत्री धारण करे। फिर हाथ में त्रिकुश, यव, अक्षत और जल लेकर निम्नलिखित संकल्प पढ़े—

ॐ विष्णवे नमः ३। हरिः ॐ तत्सदद्यैतस्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तेकदेशे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा (वर्मा, गुप्तः) अहं परमेश्वरप्रीत्यर्थं देवर्षिमनुष्यिपतृतर्पणं करिष्ये। देवताओं का आवाहन—

ॐ विश्वेदेवास ऽआगत शृणुता म इम्हवम्। एदं बर्हिर्निषीदत।। ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेम ्हवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यविष्ठ। ये अग्निजिह्या उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्।।

आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः। ये तर्पणेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तु ते॥ देवतर्पण

पूर्वाभिमुख होकर चावल मिश्रित जल द्वारा कुशाय भाग से देवतीर्थ से ब्रह्मादि देवताओं को एक-एक अञ्जलि जल देवे—

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापितस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐछन्दांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः

नोटः नित्य के तर्पण में जौ, तिल, चावल का प्रयोग निषेध है।

सावयवस्तृप्यन्ताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सिरतस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्।

ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यन्ताम्।

#### ऋषितर्पण

इसी प्रकार निम्नांकित मन्त्र वाक्यों से मरीचि आदि ऋषियों को भी एक-एक अञ्जलि जल दें।

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरा-स्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

## दिव्यमनुष्यतर्पण

जनेऊ को माला की तरह गले में धारण कर उत्तराभिमुख होकर जौ मिश्रित जल द्वारा कुशा का मध्य भाग किनिष्ठिका के मूलभाग में उत्तराग्र रखकर प्राजापत्य तीर्थ से दिव्य मनुष्यों को दो-दो अञ्जलि जल दें।

ॐ सनकस्तृप्यताम्।।२

ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्।।२

ॐ सनातनस्तृप्यताम्।।२

ॐ कपिलस्तृप्यताम्।।२

ॐ आसुरि-स्तृप्यताम्।।२

ॐ वोढुस्तृप्यताम्।।२

ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम्।।२

## दिव्यपितृतर्पण

दक्षिणाभिमुख हो बायें घुटने को पृथ्वी पर रखकर अपसव्य भाव से (जनेऊ को दाहिने कंधे पर रखकर) तिल सहित जल द्वारा कुशा के मूल भाग को दक्षिणाग्र रखकर पितृतीर्थ (अँगूठा और तर्जनी के मध्यभाग से) दिव्य पितरों को तीन-तीन अञ्जलि जल दें।

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।३ ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।३ ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।३ ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।३ ॐ अग्निष्वात्ता पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं) तेभ्यः स्वधा नमः।।३ ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं) तेभ्यः स्वधा नमः।।३ ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं) तेभ्यः स्वधा नमः।।३

#### यमतर्पण

इसी प्रकार निम्नलिखित मन्त्र-वाक्यों को पढ़ते हुए दक्षिणाभिमुख होकर चौदह यमों के लिये भी पितृतीर्थ से ही तीन-तीन अञ्जलि तिलसहित जल दें।

ॐ यमाय नमः।।३ — ॐ धर्मराजाय नमः।।३

ॐ मृत्यवे नमः।।३ — ॐ अन्तकाय नमः।।३

ॐ वैवस्वताय नमः।।३ — ॐ कालाय नमः।।३

ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः।।३ — ॐ औदुम्बराय नमः।।३

ॐ दध्नाय नमः।।३ — ॐ नीलाय नमः।।३

ॐ परमेष्ठिने नमः॥३ — ॐ वृकोदराय नमः॥३

ॐ चित्राय नमः॥३ — ॐ चित्रगुप्ताय नमः॥३

## मनुष्यपितृतर्पण

इसके पश्चात् पितरों का आवाहन निम्नांकित मन्त्र से करें। ॐ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्तुशत आ वह पितृन् हविषे अत्तवे।।

(यजु०१९।७०) आस्मन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।। (यजु०१९।५८) तदनन्तर अपने पितृगणों का नाम-गोत्र आदि उच्चारण करते हुए प्रत्येक के लिये पूर्वोक्त विधि से ही तीन-तीन अञ्जलि तिलसहित जल दे।

अमुकगोत्रः अस्मित्पता (बाप) अमुकशर्मावसुरूपस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।३।।

अमुक गोत्रः अस्मित्पतामहः (दादा) अमुकशर्मा रुद्ररूप-स्तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।३।।

अमुक गोत्रः अस्मत्प्रिपितामहः (परदादा) अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।३।।

अमुकगोत्रा अस्मन्माता (माता) अमुकी देवी दा वसूरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।३।।

अमुकगोत्रा अस्मित्पतामही (दादी) अमुकी देवी दा रुद्ररूपा तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्यै स्वधा नमः॥३॥

अमुकगोत्रा अस्मत्प्रिपतामही (परदादी) अमुकी देवी दा आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्यै स्वधा नमः।।३।।

अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नमाता (सौतेली माँ) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥३॥

इसके बाद निम्नांकित नौ मन्त्रों को पढ़ते हुए दक्षिणामुख होकर पितृतीर्थ से जल गिराते रहे।

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुँ य ईयुरवृका ऋत्तज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।।

(यज्०१९।४९)

ॐ अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वय ् सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।।

(यज्०१९।५०) आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानै:। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।। (यजु०१९।५८)

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्नुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन्।। (यजु०२।३४)

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधायभ्यः स्वधायम्। अक्षन् पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्। (यज्०१९।३६)

ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्य याँ२ उ च न प्रविद्य। त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञ सुकृतं जुषस्व।। (यजु०१९।६७)

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। (यजु०१३।२७)

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ्रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।। (यजु०१३।२)

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (यजु०१३।२९) ॐ मधु। मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।

फिर नीचे लिखे मन्त्र का पाठ करे-

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै। नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहात्रः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त।। (यजु०२।३२)

#### द्वितीय गोत्रतर्पण

इसके बाद द्वितीय गोत्र मातामह (नाना-नानी) आदि का दक्षिणामुख होकर पितृतीर्थ से तिलमिश्रित जल द्वारा तीन-तीन अञ्जलियाँ जल दें। यथा—

अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः (नाना) अऽमुकशर्मा वसुरूप-स्तृप्याम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः॥३

अमुकगोत्रः अस्मत्रमातामहः (परनाना) अमुकशर्मा रुद्ररूप-स्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।३

अमुकगोत्रः अस्मद्वृद्धप्रमातामह (बूढ़े परनाना) अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्याम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३

अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।३

अमुकगोत्रा अस्मत्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी दा रुद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।३

अमुकगोत्रा अस्मद्वृद्धप्रमातामही (बूढ़ी परनानी) अमुकी देवी दा आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।३

#### पत्न्यादितर्पण

यहाँ भी पूर्वोक्त की भाँति निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ते हुए दक्षिणा मुख होकर जल दें।

अमुकगोत्रा अस्मत्पत्नी (भार्या) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।१

अमुकगोत्रः अस्मत्सुतः (बेटा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।३

अमुकगोत्रा अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।१

अमुकगोत्रः अस्मित्पतृत्य (पिता के भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।३ अमुकगोत्रः अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३

अमुकगोत्रः अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुकशर्मा वसुरूप-स्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।३

अमुकगोत्रः अस्मत्सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।३

अमुकगोत्रा अस्मित्पतृभगिनी (बुआ) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥३

अमुकगोत्रा अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥१

अमुकगोत्रा अस्मदात्मभगिनी (अपनी बहन) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥१

अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहन) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नम:।।१

अमुकगोत्रः अस्मच्छ्वशुरः (श्वसुर) अमुकशर्मा वसुरूप-स्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३

अमुकगोत्रः अस्मद्गुरु अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।३

अमुकगोत्रा अस्मदाचार्यपत्ना अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥२

अमुकगोत्रः अस्मच्छिष्यः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३

अमुकगोत्रः अस्मत्सखा अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३

अमुकगोत्रः अस्मदाप्तपुरुषः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३ इसके बाद सव्य तथा पूर्वाभिमुख हो नीचे लिखे श्लोकों को पढ़ते हुए जल गिरावे—

देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः। पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः॥ जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः। तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः॥

इसके बाद अपसव्य होकर दक्षिणाभिमुख हो नीचे लिखे हुए श्लोकों को पढ़कर पितृतीर्थ जल गिरावे।

नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः।
तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सिललं मया।।
ये बान्धवाऽबान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु ये चाऽस्मत्तोयकांक्षिणः।।
ये मे कुले लुप्तिपण्डाः पुत्र-दार-विवर्जिताः।
तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम्।।
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देविष-पितृ-मानवाः।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ-माता-महादयः।।
अतीत-कुल-कोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्।
आब्रह्मभुवनाँल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्।।
वस्त्र-निष्पीडन

तत्पश्चात् वस्र को चार आवृत्ति लपेटकर जल में डुबावे और बाहर

ले आकर निम्नांकित मन्त्र को पढ़ते हुए अपसव्यभाव से अपने बायें भाग

में भूमि पर उस वस्त्र को निचोड़े।

ये के चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः। ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।।

#### भीष्म-तर्पण

दक्षिणाभिमुख हो पितृतर्पण के समान हाथ में कुशा धारण किये हुए ही बालब्रह्मचारी भक्तप्रवर भीष्म के लिये पितृतीर्थ से तिलमिश्रित जल के द्वारा तर्पण करें।

वैयाघ्रपदगोत्राय साङ्कृत्य-प्रवराय च। गङ्गापुत्राय भीष्माय प्रदास्येऽहं तिलोदकम्।। अपुत्राय ददाम्येतत्सिललं भीष्मवर्मणे। अर्घ्यदान

तदनन्तर सव्य होकर पूर्वाभिमुख हो शुद्ध जल से आचमन कर अर्घ्य

दें।



ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठा सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥ (यजु. १३।३) ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणं पूजयामि॥

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाँ सुरे स्वाहा।। (यजु. ५।१५) ॐ विष्णवे नमः। विष्णुं पूजयामि।।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ (यजु. १६।१) ॐ रुद्राय नमः। रुद्रं पूजयामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सिवतुर्वरेणयं भर्गो देवस्य धीमिह। धियो यो नः प्रचोदयात्।। (यजु. ३६।३) ॐ सिवत्रे नमः। सिवतारं पूजयामि।। ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्।। (यजु. ११।६२) ॐ मित्राय नमः। मित्रं पूजयामि।।

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके।। (यजु. २१।१) ॐ वरुणाय नमः। वरुणं पूजयामि।।

## सूर्योपस्थान

इसके बाद निम्नांकित मन्त्र पढ़कर सूर्य को प्रणाम एवं प्रार्थना करें— ॐ अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ २ अनु। भ्राजन्तो अग्नयो यथा। उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय। सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम्।। ह्ँसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसब्द्रोता वेदिषदितिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्द्योमसद्द्या गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्।। (यजु. ८।४०, १०।२४)

इसके पश्चात् दिग्देवताओं को पूर्वादि क्रम से नमस्कार करें।

'ॐ इन्द्राय नमः' प्राच्यै।।

'ॐ अग्नये नमः' आग्नेय्यै।।

'ॐ यमाय नमः' दक्षिणायै।।

'ॐ निर्ऋतये नमः' नैर्ऋत्यै।।

'ॐ वरुणाय नमः' पश्चिमायै।।

'ॐ वायवे नमः' वायव्यै।।

'ॐ सोमाय नमः' उदीच्यै।।

'ॐ ईशानाय नमः' ऐशान्यै।।

'ॐ ब्रह्मणे नमः' ऊर्ध्वयै।।

'ॐ अनन्ताय नमः' अधरायै।।

सं.पू.य.वि. २

इसके बाद जल में नमस्कार करें।

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

#### मुखमार्जन

शुद्ध जल से मुँह धो ले—

ॐ सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा स<sup>\*</sup>् शिवेन। त्वष्टा सुदत्रो विद्धातु रायोऽनुमार्षु तन्नो यद्विलिष्टम्। (यजु०२।२४)

#### विसर्जन

निम्नांकित मन्त्र पढ़कर देवताओं का विसर्जन करें।

ॐ देवा गातुविदो गातुं विक्ता गातुमित।

मनसस्पत इमं देव यज्ञ स्वाहा वाते धाः।।

(यज्० ८।३१)

#### समर्पण

निम्नांकित वाक्य पढ़कर यह तर्पण-कर्म भगवान् को समर्पित करें। अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् मम समस्तपितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां न मम।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।
।। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।।
।। इति।।

# शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।। नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय

तस्मै नकाराय नमः शिवाय॥१॥

मंदाकिनी-सिलल-चंदन-चर्चिताय नंदीश्वर-प्रमथ-नाथ-महेश्वराय॥

मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय

तस्मै मकाराय नमः शिवाय॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-

सूर्याय दक्षाध्वर-नाशकाय।।

श्रीनीलकण्ठाय वृषभध्वजाय

तस्मै शिकाराय नमः शिवाय॥३॥

वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य-

मुनीन्द्र-देवाऽर्चित-शेखराय॥

चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय

तस्मै वकराय नमः शिवाय॥४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय

पिनाकहस्ताय सनातनाय॥

दिव्याय देवाय दिगम्बराय

तस्मै यकाराय नमः शिवाय॥५॥

फलश्रुति:—

पञ्चाक्षरिमदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निघौ। शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥६॥

## अथ प्रायश्चित प्रयोग

मङ्गलं भगवान् विष्णुः मङ्गलं गरुडध्वजः। मङ्गलं पुण्डरीकाक्षः मङ्गलाय तनो हरिः॥

पवित्रीकरणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

त्रिराचमनम्

ॐ केशवाय नमः,ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः।। ॐ गोविन्दाय नमः, इति हस्तौप्रक्षाल्यं हृषीकेशाय नमो नमः।। आसनशुद्धिः

ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम।।

पवित्रीधारणम्

उत्त्रं पिवत्रेस्थो वैष्णव्यौ सिवृतुर्वक्ष्प्रस्व। उत्त्रं नाम्यिद्धेरेण पिवत्रेण सूर्व्यस्य रिश्मिभिक्षे। तस्य ते पिवत्रपते पिवत्रं यत्कामक पुने तच्छकियम॥ (इति पिवत्रीधारणम्)

ततः शिखा बन्धनम्

ॐ मानेस्तोकेतनेये मान्ऽआयुषि मानो गोषुमानोऽ अश्रेषुरीरिषः। मानो वीरान्नुद्र भामिनो वधीर्द्विष्मन्तः सद्मित्वी हवामहे॥ तिलक धारणम्

ॐ स्वस्ति न ऽइन्ह्री व्वृद्धश्र्श्रीवाः स्वस्ति नेः पूषा व्विश्व वैदाः। स्वस्ति नुस्ताक्ष्यी ऽअरिष्ट्टनेमिः स्वस्ति नो बृहुस्प्पतिर्द्धातु॥ (हाथ धो लेवें)

प्राणानायम्य

ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचौळ्वेनऽआवः। सबुध्धन्याऽउपमा अस्यिळ्छाः स्तश्च योन्मिसतश्चविवे÷॥

> ॐ इदं विष्णुर्विचेक्रमे त्रेधानिदेधे प्दम। समूढमस्यपाछं सुरे स्वाहां॥

ॐ नर्मः शम्भवायं च मयोभ्वायं च नर्मः शङ्कायं च। मयस्कृरायं च नमः शिवायं च शिवतराय च॥ (प्रायश्चित सङ्कल्प करने से पूर्व स्वस्तिवाचन कर लेंवे)

## अथ प्रायश्चित सङ्कल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याऽद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे किलयुगे किलप्रथमचरणे जम्बूदीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे षष्ट्यब्दानां मध्ये अमुकनामसम्वत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु प्रहेषु यथायथा-राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं प्रहगुणगण-विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यितथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं गुप्तोऽहं वा) मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा बाल्ययौवन

वार्द्धवाक्यावस्थासु वाक् पाणिपाद पायूपस्थ श्रोत्रचक्षुर्जिह्या घ्राणमनोभिः ज्ञाताज्ञात कामाकाम सकृद् सकृत् कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिकाणाम् आचारितानां समेषां पापानां ब्राह्मणनिन्दा गुरुनिन्दा माता-पितृनिन्दा देवनिन्दा तीर्थनिन्दा-वेदनिन्दा-शास्त्रनिन्दा मातापितृ ज्येष्ठभ्रातृ गुरुतिरस्कार मातृपितृ गुरुद्रोह-परद्रोह परनिन्दा आत्मस्तुति-रुपाणाम् अस्पृश्य स्पर्शन, अश्रव्य श्रवण अहिस्य हिंसन अवन्द्य। वन्द्यन अचिन्त्य चिन्तन अयाज्य याजन, अपूज्य पूजन, रुपाणाम् परमर्गोद्घाटन मिथ्यापवाद मिथ्या भाषण म्लेच्छ सम्भाषण, पतितसम्भाषण, परस्त्री सम्भाषण, परस्त्रीगमन, ब्रह्मद्वेष करण, ब्रह्मवृत्तिहरण, परवृत्तिहरण, हीन जातिसेवन, निषिद्धाचरण रुपाणाम्, शौचत्याग, सन्ध्योपासन त्याग, तर्पण, बलिवैश्वदेव, नित्यमोह त्याग, देवपूजन त्याग, स्वयाम त्याग, स्वदेशत्याग, परिवार त्याग, कुलत्याग, स्वधर्मत्याग, सदाचार त्याग, शीलत्याग, गुरुत्याग, वेदत्याग, शास्त्रत्याग, आश्रमत्याग, रुपाणाम् अभक्ष्य भक्षण, अभोज्य भोजन, अचूष्य चूषण, अलेह्य लेहन, अपेयमान लशुन, पलाण्डु, गृञ्जन भोजन, उच्छिष्ट भोजन, दूषितात्र भोजन, निन्दितात्र भोजन, निषिद्ध परान्न भोजन, सकलीकरण, मलिनीकरण, अपात्रीकरण, जातिभ्रम, शंकर प्रकीर्ण कपातकानामेतत् कालपर्यन्तं सञ्चितानां गुरुलघु स्थूल, सूक्ष्म रुपाणां समेषां पापानां परिहारपूर्वकं यथावत्फल प्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं स्वशरीर संशुद्धये देवब्राह्मण सन्निधौ करिष्यमाणम् अमुककर्माधिकार सिन्ह्यर्थं द्वादशाब्दं षडब्दं त्र्यब्दं वा सर्व प्रायश्चितं करिष्ये। तदङ्गत्वेन दशदानादि च यथा नाम गोत्रेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः विभज्य दातुमहमुत्युजे तथा

वपनं दन्तधावनम् पञ्चगव्यादि दशविधि स्नानानि च करिष्ये।।
मुण्डन मन्त्र

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्या समानि च। केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात् केशान्वहाम्यहम्।।

दन्त धावन

बारह अंगुल के अपामार्गादि के दातून को तोड़ते समय अधोलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च। ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते।।

दन्तधावन के पश्चात् चुपचाप मार्जनात्मक स्नान करें।

### दशविधि स्नान

प्रथम भस्म स्नानम्-

ॐ नमंस्ते रुद्रमुन्यवं उतोत्ऽ इषवे नमं÷। बाहुभ्यामुतते नमं÷॥

द्वितीय मृत्तिका स्नानम्-

ॐ इदं विष्णुर्विचेक्रमे त्रेधा निदंधे प्दम्। समूढमस्य पाछंसुरे स्वाहां॥

तृतीय गोमय स्नानम्-

ॐ मानेस्तोकेतनेये मान्ऽआयुषि मानो गोषुमानोऽ अश्रेषुरीरिषः। मानौ व्वीरारन्तुंद्र भामिनौ व्वधीर्द्विष्यन्तः सदुमित्वी हवामहे॥

चतुर्थ पञ्चगव्य स्नानम्-

ॐ सहस्रोशीर्षा पुरुषः सहस्रावक्षः सहस्रीपात्। सभूमिष्ट सुर्व्वते÷ स्यृत्वात्त्यीतष्ट्वहशाङ्गुलम्॥ पञ्चम गोरज स्नानम्-

ॐ आयं गौर पृष्टिन्नरक्रमीदसंदन्नमातरं पुरः पितरं च

प्ययन्सर्व÷॥

षष्ठ धान्य स्नानम्-

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायंत्वो दानायंत्वा ळ्यानायंत्वा। दीर्घामनु प्रसिति मायुषे धान्देवोवंः सिवता हिरण्य पाणिः प्रतिगृब्भणा त्वि छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम् पयौऽसि॥ सप्तम फल स्नानम्-

ॐ याश फुलिनीुर्घ्या ऽअफुला ऽअपुष्पा वाश्च पुष्पिणीं बहस्पति प्रसूतास्ता नी मुञ्चन्त्वष्ट हंसह॥

अष्टम सर्वोषधि स्नानम्-

ॐ ओर्षधयुः समेवदन्त सोमेन सृह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्ति राजन्य पारयामि॥ नवम कुशोदक स्नानम्-

ॐ देवस्यत्वा सिवतुः प्रस्वेश्विनौर्बाहुक्याम् पूषणो हस्तक्याम्॥

दशम हिरण्य स्नानम्-

ॐ आकृष्णेन् रजसा वत्तीमानो निवेशयेश्र मृत्मर्मर्त्यञ्च। हिर्ण्ययैन सिवता रथेना देवो योति भुवनानि पश्रयन्॥

#### पञ्चगव्य करणम्

(स्नानान्तर पञ्चगव्य प्राशन हेतु पञ्चगव्य तैयार कर लेंवे) एक पात्र में अधोलिखित मन्त्रों द्वारा पञ्चगव्य मिला लेंवे।

गोमूत्र---

ळंड गायत्री त्रिष्टुब्ब्जगत्यनुष्टुप्पुङ्कत्यासृह। बृहत्युष्णिही कुकुप्पूचीभि÷ शम्यन्तुत्वा॥ गोमय—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये र्इश्वरी गोद्ग्ध—

ॐ आप्प्यायस्वुसमेतुते विश्वर्तः सोम् व्वृष्ण्यम्। भवा व्वार्जस्य सङ्ग्रथे॥

गोदधि--

ॐ दुधिक्क्राब्ण्णों ऽअकारिषञ्जिष्णणो ऽरश्र्यस्यव्वाजिने÷। सुर्भिनो मुखाकर्त्प्रण् ऽआयूंछं षितारिषत्॥ गोघृत—

तेजोऽसि शुक्रमस्यमृत मसि नामांऽसिप्प्रियन्देवा नामना धृष्टन्देव यजनमसि॥

पञ्चगव्य मिश्रित करके पञ्चगव्य पात्र को बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से ढककर अधोलिखित मन्त्र पढ़ें---

> यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम।।

पञ्चगव्य प्राशन करके आचमन करें। करों को सम्पुटिकृत्य करके प्रार्थना करें---

> गावोममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वशाम्यहम्।।

यज्ञसाधन भूतायाः विश्वस्याघौघनाशिनी। विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनयागवा।।

इस प्रकार प्रार्थना करके गोभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समपर्यमि।।

हाथ में जल लें—अनेन कर्मणा पापापहा महाविष्णुः प्रीयतां न मम।। श्री विष्णवे नमः। श्री विष्णवे नमः।

## विष्णुपूजन विधि

सङ्कल्प—देशकालौ सङ्कीर्त्य अङ्गीकृत्य प्रायश्चिदङ्गत्वेन विष्णु पूजन पूर्वकं विष्णु श्राद्धम् करिष्ये।। तत्रादौ निर्विघ्नता सिध्यर्थं गणेशाऽम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।

गणेश पूजन तथा भगवान् विष्णु का षोडशोपचार पूजन करें। विष्णु पूजन करके पञ्चभू संस्कार तथा अग्नि स्थापन करें। फिर कुशकण्डिका करके प्रायश्चित हवन करें।

## प्रायश्चित हवन आहुतयः।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा - इदं प्रजापतये न मम।। बिना बोले आहुति देवें। तत:—

ॐ इन्द्राय स्वाहा - इदं इन्द्राय न मम।।

ॐ अग्नये स्वाहा – इदं अग्नये न मम।।

ॐ सोमाय स्वाहा - इदं सोमाय न मम।।

ऊपर लिखित तीन आहुतियाँ घृत से देवें।

ततः अष्टोत्तरशताष्टविंशति वाऽज्याहुतीनाज्यस्त्समस्तिभः महाहव्याः हतिभिर्तो नमः॥

- (क) ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम।। (कुशा से आहुति दें।)
- (ख) ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम।। घृत से ,, ,,)
- (ग) ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम।।

(घ) ॐ भूर्भुवः स्वाहा — इदं प्रजापतये न मम।। यह चार आहुतियाँ २८ या १०८ बार देना चाहिये। इस प्रकार चार आहुतियाँ सात बार देने से २८ आहुतियाँ हो जायेंगी।

## पञ्चगव्य आहुति

ॐ इरावती धेनुमती हि भूति सूयविसनी मनेवे दश्स्या ळ्यस्कब्भ्ना रोदंसी विष्णवेते दाधर्त्य पृथिवी मुभितो मुयुखे स्वाहा॥ इदं पृथिव्ये इदं न मम॥

ॐ इदं विष्णुर्विचेक्रमे त्रेधा निदंधे प्दम्। समूढमस्य पाछंसुरे स्वाहां॥ इदं विष्णवे इदं न मम॥

ॐ मानस्तोकेतनये मान्ऽआयुषि मानो गोषुमानोऽ अश्रेषुरीरिषः। मानो व्वीरान्तुंद्र भामिनो वधीर्द्विष्मन्तः सदुमित्वा हवामहे॥ इदं रुद्राय इदं न मम॥

ॐ शन्नों देवी रिमष्टिय ऽआपों भवन्तु पीतये। शं ख्यो रिमस्रवन्तु नः स्वाहा। इदं अदभ्यो इदं न मम।।

🕉 अग्नये स्वाहा – इदं अग्नये न मम।।

ॐ सोमाय स्वाहा – इदं सोमाय न मम।।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् स्वाहा – इदं सवित्रे न मम।।

ॐ स्वाहा - इदं परमेष्ठिने न मम।।

पञ्चगव्य घी मिश्रित आहुति करें—

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा - इदम् प्रजापतये न मम।।

ॐ अग्नये स्वाहा - इदम् अग्नये न मम।।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा-इदम् अग्नये स्विष्टकृते न मम।।

यजमान कहें — विप्रव्रत प्रहणं करिष्ये।।

विप्र ब्राह्मण कहें — कुरु कुरुष्व।।

पञ्चगव्य का पुनः प्राशन करे।

## घृत आहुति करें

🕉 भूः स्वाहा – इदम् अग्नये न मम।।

ॐ भुवः स्वाहा – इदं वायवे न मम।।

ॐ स्वः स्वाहा – इदं सूर्याय न मम।।

🕉 भूर्भुवः स्वः स्वाहा – इदं प्रजापतये न मम।।

इस प्रकार सात बार होम करके फिर ब्राह्मणान्वारब्ध होकर—

ॐ भूः स्वाहा - इदम् अग्नये न मम।।

ॐ भुवः स्वाहा – इदं वायवे न मम।।

ॐ स्वः स्वाहा – इदं सूर्याय न मम।।

## अथ प्रायश्चित होम

ॐ त्वज्ञी ऽअग्ने वर्तणस्य व्विद्धान्न देवस्य हेडोऽअवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो व्वहितमः शोशीचानो विश्वादेषां सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्। (स्वाहा) इदमग्नि वरुणाभ्यां न मम।

ॐ सत्वन्नों ऽअग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्याऽ उषसो व्युष्ट्रौ। अवयक्ष्वनो व्यर्तण्ट रर्राणोव्वीहि मृडीक्ट सुहवौनऽएधि॥ इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम।

ॐ अयाश्चाग्ने स्यनिभ शस्ती पाश्च सत्यिमत्वमया असि। अया नो यज्ञं वहा स्ययानो धेहि भेषज ७ स्वाहा॥ इदं अग्ने अयसे न मम।

ॐ येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः तेभार्त्रोअद्य सवितोत विष्णुर्विश्श्वे मुञ्चन्तु मरूतः स्वक्काः। (स्वाहा) इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्कभ्यश्च न मम॥

ॐ उद्वेत्तमं व्वेरुण् पाशीमस्म दवीध्रमं विमेध्युम छ श्रिथाय। अर्था व्वयमिदित्य व्यते तवानींग सो अदितये स्याम॥ (स्वाहा) इदं प्रजापतये न मम॥

ततः बर्हिहोमं स्वाहा - इससे बर्हिहोम करें। इदं प्रजापतये न मम - यह भी बोल देवें

तदनन्तर संस्रवप्राशन या अवघ्राण करके दो आचमन करके अग्नि में 'स्वाहा' शब्द से पवित्री डालकर पूर्णपात्र दान देवें।

### पूर्णपात्र दान

संकल्प-

प्रायश्चित होम कर्मणः साङ्गफल प्राप्तये साद्गुण्यार्थं अपूर्ण पूरणार्थं च इदं पूर्णपात्रं सद्रव्यं ब्रह्मणे तुभ्यं सम्प्रददे।। इसके बाद अग्नि की प्रार्थना करें। फिर उत्तर पूजन करें। प्रार्थना-

ॐ अग्नेनयं सुपर्या रायेऽअसमान् विश्वनि देव व्वयुननि व्विद्दान। युयोध्दयस्मर्ज्जुहुराण मेनोभूयिष्ठान्ते नर्मऽउक्तिं व्विधेम॥ श्रद्धा मेधां यशः प्रज्ञां, विद्यां पुष्टिं बलं श्रियम्। तेजं आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं, देहि मे हव्यवाहन।। पीछे संकल्प में—

प्रायश्चित् यज्ञं विष्णु श्राब्दं संपत्तये ब्राह्मणचतुष्टाय आयात्रं पक्वान्नं वा दास्ये।। ऐसा बोलकर (चार) ब्राह्मणों को कच्चा या पक्का अन्न देवें। पश्चात् त्र्यायुषीकरण यज्ञ भस्म लगावें-

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने: (ललाटे) कश्यपस्य त्र्यायुषम् - (ग्रीवायाम्) यष्ट्वेषु त्र्यायुषम् - (हृदि) फिर होम की दक्षिणा का सङ्कल्प करें-

प्रायश्चित होम कर्मणः साङ्गफल प्राप्तये साद्गुण्यार्थं च इमां दक्षिणामपि तुभ्यं सम्प्रददे। (ब्रह्म दक्षिणाऽचार्य दक्षिणा द्विगुणा) कृतस्य प्रायश्चित कर्मणः साद्गुण्यार्थं पञ्चदश ब्राह्मणान् यथोपङ्गेन भोजयिष्यामि अस्मिन् प्रायश्चित कर्मणे न्यूनातिरिक्तदोष परिहारार्थं भूयसीं दक्षिणामन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये। ततोऽग्निं विसृजेत।।

#### अथ जलयात्रा विधिः

स्वस्तिक बनाये अष्टदल पर कलश रखें, प्रधान कलश बीच में रखें, सप्तमातृकाओं के लिये कपड़े बिछायें, कपड़े पर सात-सात अक्षतपुंज रखें। सिन्दूर का टीका लगायें (पुंज पर) सर्वप्रथम गौरी-गणेशपूजन करें—

#### सङ्कल्प-

ॐ जलयात्राङ्ग भूत याज्ञिक कार्य साङ्गता सिद्ध्यर्थे श्रीवरुण देवता प्रसन्नार्थं गणेश, जलमृत्तिका जीवमातृका, स्थलमातृका, सप्तसागर, योगिनी, क्षेत्रपाल, भूमि पूजनपूर्वकं नव वर्द्धिन कलशेषु वरुण पूजनं च अहं करिष्ये। कपड़े पर चावल की सात-सात ढेरी रखें।

प्रथम सात पुंज में क्रम से सप्त जलमातृका का आवाहन स्थापन करें। बायें हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से एक-एक पुंज पर छोड़े।

#### सप्त जलमातृका

- (१) ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि।।
- (२) ॐ भूर्भुवः स्वः कूम्यैं नमः कूर्मीमावाहयामि स्थापयामि।।
- (३) ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।।
- (४) ॐ भूर्भुवः स्वः माण्डूक्यै नमः माण्डूकीमावाहयामि स्थापयामि।।
- (५) ॐ भूर्भुवः स्वः मकर्यं नमः मकरीमावाहयामि स्थापयामि॥

(६) ॐ भूर्भुवः स्वः ग्राहक्यै नमः ग्राहकीमावाहयामि स्थापयामि।।

(७) ॐ भूर्भुवः स्वः कोचिक्यै नमः कोचकीमावाहयामि स्थापयामि।। प्राण प्रतिष्ठा करके पूजन करे। पूजन के बाद प्रार्थना करें—

#### प्रार्थना-

मत्सी कूर्मी च वराही दर्दुरी मकरी तथा। जलूकी तन्तुकी चैव सप्तैता जलमातरः।। मत्सादि सप्तजलमातृभ्यो नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि।

#### सप्तमातृका पूजनम्

(१) ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्थे नमः कुमारीमावाहयामि स्थापयामि।।

(२) ॐ भूर्भुवः स्वः धनदायै नमः धनदामावाहयामि स्थापयामि।।

(३) ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दायै नमः नन्दामावाहयामि स्थापयामि।।

(४) ॐ भूर्भुवः स्वः विमलायै नमः विमलामावाहयामि स्थापयामि।।

(५) ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलायै नमः मङ्गलामावाहयामि स्थापयामि।।

(६) ॐ भूर्भुवः स्वः अचलायै नमः अचलामावाहयामि स्थापयामि॥

(৩) ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि।। प्राण प्रतिष्ठा करके पूजन करे। पूजन के बाद प्रार्थना करें—

#### प्रार्थना-

कुमारीधनदानन्दा विमलामङ्गलाऽचला। पद्माचेति सुविख्याताः सप्तैताः जीवमातरः॥

कुमार्यादि सप्तजीवमातृभ्यो नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कार समर्पयामि। अनया पूजया कुमार्यादि जीवमातृकाः प्रीयन्ताम्।। सप्त स्थलमातृका पूजनम्-

(१) ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्यं नमः ऊर्मीमावाहयामि स्थापयामि।।

(२) ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।।

(३) ॐ भूर्भुवः स्वः महामायायै नमः महामायामावाहयामि स्थापयामि।।

(४) ॐ भूर्भुवः स्वः पानादेव्यै नमः पानादेवीमावाहयामि स्थापयामि।।

- (५) ॐ भूर्भुवः स्वः वारुण्यै नमः वारुणीमावाहयामि स्थापयामि॥
- (६) ॐ भूर्भुवः स्वः निर्मलायै नमः निर्मलामावाहयामि स्थापयामि॥
- (७) ॐ भूर्भुवः स्वः गोधायै नमः गोधामावाहयामि स्थापयामि॥ प्राण प्रतिष्ठा करके पूजन करे। पूजन के बाद प्रार्थना करें— प्रार्थना—

ऊर्मीलक्ष्मीः महामाया पानदेवी तथैव च। वारुणी निर्मला गोधा सप्तैताः स्थलमातरः॥

ऊर्म्यादि सप्तस्थलमातृभ्यो नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि। अनया पूजया ऊर्म्यादि जीवमातृकाः प्रीयन्ताम्।। योगिनी पूजन-

## ॐ योगे योगे त्वस्तरं व्वाजे व्वाजे हवामहे। सर्वाय ऽइन्द्रमूतये॥

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि। प्रार्थना-

ढुं ढुं ढुमकत ढुम्ब ढुम्ब वहनं भूमौ सदा यस्य सा। क्षुं क्षुं क्षुमकत क्षुम्ब-क्षुम्ब घुँघरु कर्णों सदा सर्वदा।। रं रं रमकत रम्ब-रम्ब रक्तं कमलं तु हस्ते सदा। चं चं चमकत चम्ब चम्ब कङ्कण दुर्गे सदा पाहि मां।। कं कं कां कां हसन्ति प्रहसित वदने भक्षयन्ती कराली। क्षुं क्षुं क्षां क्षां क्षरन्ति रिपुकुल दमनी खङ्गं चक्रं शिरांसि।। क्लीं क्लीं कालरात्रि भव भयहरिणी वज्रहस्तं धरन्तीम। भक्तानां पालयन्ति सकल सुख करीं कालिकां त्वां नःपान्तु।। त्रिशूलमिस चापेषु, धरणीं पद्मलोचनां। ध्याये चतुर्भुजां दिव्यां, योगिनीं सिंह वाहिनीम्।। दिव्यादि चतुःषष्टि योगिनीभ्यो नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि। अक्षत लेकर जल में छोड़ें जल में उनकी पूजा करें।

## अथ दशदिक्पाल पूजनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायये नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ मनौ जूतिज्जु षतामाज्ज्यस्य बृह्स्पतिर्व्यज्ञिम्मं तेनो त्वरिष्टं व्यज्ञंक्ट सिम्मं देधातु। व्विश्श्वेदेवासं उद्गृह मिदयन्तामों ३ म्प्रतिष्ठु॥ ॐ भूर्भवः स्वः इन्द्राद्यनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदाः भवन्तु। षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्॥

हस्ते जमादाय अनया पूजया दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्।।

## अथ क्षेत्रपाल पूजनम्

वायव्य कोण में त्रिकोण मण्डल पर क्षेत्रपाल और दश दिक्पाल पूजन करें—

## ॐ क्ष्त्रस्य योनिरसि क्ष्त्रस्य नाभिरसि। मा त्त्वीहि ८ सीन्मा मीहि ८ सीस।।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि॥

प्रार्थना--

कौलीरे चित्रकूटे हिमगिरि शिखरेकाल जालान्धरेवा।
सौराष्ट्रे सिन्धुदेशे मगधपुरवरे कौसलेवाकिलङ्गे।।
कर्णाटे कौङ्गणेवा भृगुषु पुरवरे कान्यकुब्जेस्थितेवा।
ते सर्वे यज्ञरक्षा करण कृतिधयः पातुवः क्षेत्रपालम्।।
करकित कपालः कुण्डलीदण्डपाणिः।
तरुणितिमिर नील व्याल यक्षोपवीती।।
क्रतुसमय सपर्याद् विघ्नविच्छेद हेतुः।
जयित बदुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि।

#### बलिदानम्-

निम्नांकित मन्त्र से दीपक, उड़द, दिध, भात तथा पापड़ से बलि देवें—

क्षेत्रपाल महाबाहो, महाबल पराक्रम। बलिं गृहाण देवेश, क्षेत्र रक्षण हेतवे।।

भो क्षेत्रपाल दिशं रक्ष बलि भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुकर्ता, क्षेमकर्ता, तुष्टिकर्ता, पुष्टिकर्ता वरदो भव।।

सप्तसागर पूजन-

ॐ समुद्रादूर्मिर्माधुमाँ ऽउदीर दुण् ६ शुना सम्मृतत्व मनिद्। घृतस्य नाम गुह्यँष्वदस्ति जिह्ना देवानीम्मृतस्य नाभिः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लवणेक्षु सुरासर्पि दिधक्षीर जलयान सप्त सागरान् आवाहयामि स्थापयामि॥

ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः।

ॐ तत्वी यामि ब्रह्मणा वन्दमान्स्तदा शस्ति यजमानो ह्विभिं÷। अहेडमानो वरुणेह बोध्यर्रशध सुमान्ऽनायुः प्रमौषीः॥

उपर लिखित मन्त्र से पूजन करें, फिर पेड़े की बिल देवें। जल में पञ्चामृत प्रक्षेप में तथा स्नुवा से द्वादश घृत आहुति दें।

जल पूजन-

ॐ अदभ्यः स्वाहा — इदमद्भ्यो न मम।।

🕉 उदकाय स्वाहा 👚 = इदमुदकाय न मम।।

ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा — इदं तिष्ठन्तीभ्यो न मम।।

ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा — इदं स्रवन्तीभ्यो न मम।।

ॐ कुप्याभ्यः स्वाहा — इदं कुपाभ्यो न मम।।

ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा — इदं स्यन्दमानाभ्यो न मम।।

ॐ सुधाभ्यः स्वाहा — इदं सुधाभ्यो न मम।।

ॐ धार्याभ्यः स्वाहा — इदं धार्याभ्यो न मम।।

🕉 अर्णवाय स्वाहा — इदं अर्णवाय न मम।।

ॐ वार्भ्यः स्वाहा — इदं वार्भ्यो न मम।।

🕉 समुदाय स्वाहा 👚 इदं समुदाय न मम।।

🕉 सरिराय स्वाहा 💮 इदं सरिराय न मम।।

इदं सर्वं जलाधिपतये सपरिवाराय वरुणाय न मम। नीचे लिखे मन्त्र से तीन बार अर्घ्य देवें।

ॐ वर्रणस्योत्तम्भनमसि वर्रणस्यस्क्कम्भ-सर्जीनीस्त्थो वरुणस्यऽऋत् सर्दन्न्यसि वर्रणस्य-ऽऋतुसर्दनमसि वर्रणस्य ऋतुसर्दनुमासीद।

जल में फल डालें (मन्त्र द्वारा)। नव कलश स्थापन करें।

चौराहे पर भैरव का पूजन करें।

ॐ न्हिस्प्पश्मविदन्नन्यम्स्माद् वैश्वान्रात्पुर पुतारम्ग्नेर। एमेन मवृधन्नमृताऽअमेर्त्यं व्वैश्वान्रं क्षैत्रजित्याय देवाश।।

बलिदानम् -

भगवन् क्षेत्रपाल भासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख अवतर-अवतर, किपल, पिङ्गल ऊर्ध्वकेश जिह्वाललन छिन्धि-छिन्धि, भिन्धि-भिन्धि, कुरु-कुरु, मुरु-मुरु, चल-चल, लं लः हां हीं हुँ हैं।।

ॐ भगवन् क्षेत्रपाल मम यज्ञं रक्ष बलि गृहाण-गृहाण स्वाहा। ॐ क्षेत्रपालाय नमः सदीपमाषभक्त बलिं समर्पयामि।। प्रार्थना –

ॐ नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूतप्रेत गणाधिप। पूजां बिलं गृहाणान्नं सौम्यो भवतु सर्वदा।। आयुरारोग्यदो भूयाः निर्विघ्नं कुरु सर्वदा। मां विघ्नं मास्तु मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः।। सौम्यो भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि। हस्ते जलमादाय – अनया पूजया क्षेत्रपालः प्रीयताम्।

# अथ गणेशाम्बिकापूजनम्

मङ्गलं भगवान् विष्णुः मङ्गलं गरुडध्वजः। मङ्गलं पुण्डरीकाक्षं मङ्गलाय तनो हरिः॥ पवित्रकरणम्—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ त्रिराचमनम्—

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। इति प्रक्षालनं हषीकेशाय नमो नमः॥ आसनशुद्धिः—

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः। ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

उठ पृथ्वः त्वया वृता लाका दाव त्व विष्णुना वृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।। पवित्रीधारणम्—

ॐ प्वित्रे स्थो व्यैष्णव्यौ सवितुर्वि÷प्प्रस्ऽव। उत्त्पुनाम्यिद्धेण प्वित्रेण सूर्व्यस्य रिश्मिभि÷॥ तस्ये ते पवित्रपते प्वित्रेपूतस्य यत् कामः पुने तच्छकेयम॥ शिखा बन्धनम्-

ॐ मानस्तो केतन्ये मान्ऽआयुषि मानो गोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः। मानौ व्वीरान्त्रुंद्र भामिनौ व्यधीर्द्विष्मन्तः सद्मित्त्वीहवामहे।।

स्च-रूद्ध्यदह

ॐ स्वृस्ति न ऽइन्द्री व्वृद्धश्र्रश्रीवाः स्वृस्ति नेः पूषा व्विश्व वैदाः। स्वृस्ति नुस्ताक्ष्यी ऽअरिष्ट्टनेमिः स्वृस्ति नो बृह्स्प्पतिर्द्धातु॥ प्राणायाम-ॐ ब्रह्मी यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमृतः सुरूची व्वेन ऽअविः। स बुध्धन्या ऽउपमा अस्य व्विष्ठाः स्तरश्च योन्मिस्तश्च विवेः॥

ॐ इदं विष्णु र्विचेक्रमे त्रेघानिदेधे पृदम। समूढमस्यपार्७ सुरे स्वाहा॥

ॐ नर्मः शम्भवायं च मयोभ्वायं च नर्मः शङ्कार्यः च। मयस्क्रार्यं च नमः शिवायं च शिवतराय च॥ गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।

गुरूः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा शान्ति पाठं पठेयुः॥ स्वस्तिवाचन—

ॐ आनौ भद्दाः क्क्रतेवो बन्तु व्विष्धतो ऽदेब्धासो ऽअपरीतास ऽउद्भिद्ध। देवा नो बधा सद्मिद्द्धधे ऽअस्त्रप्प्रीयुवो रिक्क्षितारौ दिवे दिवे॥१॥

ॐ देवानं भद्द्रा सुमृतिऋ जूयतां देवानां रातिर्भि नो निवर्त्तताम् देवानां स्वख्यमुपेसेदिमा व्वयं देवा न ऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥२॥

ॐ ताल्पूर्व्वया निवदा हुमहे व्वयं भगीमित्र मदितिन्द क्षेमस्त्रिधम्। अर्व्धमणं व्यक्षणह सोमम्शिश्चना सर्स्वती नः सुभगा मर्यस्वकरत॥३॥

ॐ तन्नो व्वाती मयोभु व्वातु भेष्जं तन्नाता पृथिवी तत्पिता द्यौश। तद्ग्रावाणः सोम् सुतौ मयोभुवस्तदेशिश्वना शृणुतं धिष्णया युवम्॥४॥ ॐ तमीशानिञ्जगीतस्त्रस्थुष्रस्प्पिती धियञ्चित्रव मवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेद सामसद वृधे रिक्शता पायुरदेब्धः स्वस्तये॥५॥

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो व्वृद्धश्र्श्रीवाः स्वस्ति नेः पूषा व्विश्व वैदाः। स्वस्ति नुस्ताक्क्ष्यी ऽअरिष्ट्टनेमिः स्वस्ति नो बृहुस्प्पतिर्द्धातु॥६॥

ॐ पृषेदश्या मुरूत् पृषिन्नमातर शुभं व्यावीनो व्विदथेषु जग्मेयः। अगिग्नुर्जिह्वा मनेवः सूरे चक्क्षसो व्विश्थे नो देवा ऽअवसार्गमन्निह।।७॥

ॐ भृद्द्रं कण्णेंभिः शृणुयाम देवा भृद्द्रं पश्ययेमाक्क्षभिर्व्य यत्त्राः। स्थिरे रङ्गेस्तुष्टुवा छ संस्तुनूभिर्व्यशोमहि देवहितं व्यदायुं÷॥८॥

ॐ शृतिमन्ने शृरदोऽअन्ति देवो बन्नो नश्श्र्वका जरसन्तनूनोम। पुत्रासो बन्नो पितरो भविन्नि मा नो मृद्धया रीरिषेतायुर्गन्तो ।। १॥

ॐ अदितिर्द्यो रिदितिर्द्यतिस्थ मिदितिम्माता स पिता स पुत्रशे। व्विश्श्वे देवा ऽअदिति पञ्च जना ऽअदितिर्जात मिदितिर्जिनित्वम्॥१०॥

ॐ द्यौः शान्ति रुत्तरिक्क्ष् शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। व्वनुस्पतियः शान्तिर्विश्रेषे देवाः शान्तिर्व्यद्य शान्तिः सर्व्वृष्ट् शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा गा शान्तिरिध॥११॥ ॐ वर्तो यतः स्मीहंसे तर्तो नो ऽअभयङ्कुरू। शन्ने÷ कुरू प्रजाब्भ्यो ऽभयन्नः प्रशुब्भ्ये÷॥१२॥ सुशान्तिर्भवतु॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमा-महेश्वराभ्यं नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थान देवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटौ विघ्ननाशो विनायकः॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।। शुक्लाम्बर धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।। अभीप्सितार्थं सिब्ह्यर्थं पूजितो यः सुरासुरै:। सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।। सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दि वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।। यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूति ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। अनन्याश्चियन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।। स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।। सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः॥ विश्वेशं माधवं ढुणिंढ दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।। वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः॥

#### ॥ सङ्कल्पः॥

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः स्वस्ति श्री मन्मुकुन्द सिच्चिदानन्द-रूपस्य परब्रह्मणो निर्वाच्य मायया यथाशक्ति विजृम्भिता विद्यायोगात् कालकर्मस्वभावाविर्भूत महत्तोदिताहंकार त्रयोदभूतस्य वियदादि पञ्च केन्द्रिय देवता निर्मिताण्डकटाहे चतुर्दश लोकात्मके लीलयातन्तमध्यवर्ति भगवतः श्रीनारायणस्य

नाभिकमलोद्भृतस्य सकललोकस्य पितामहस्य ब्रह्मणः सृष्टि कुर्वतस्तदुद्धारणाय प्रजापति प्रार्थितस्य महापुरुषस्य श्री श्वेतवाराहवतारेण धृयमाणायामास्यां धरित्र्यां भूलींकसंज्ञितायां सप्तद्वीप मण्डितायां क्षीरोदादि समुद्रतद्वीज वलयीकृत लक्षयोजनविस्तृर्णेजम्बुद्वीपे स्वर्गादि सरिद्धिः पाविते निखिल जनपावन कर्तृभिः शौनकादि महामुनि निवास भूते नैमिष्यारण्यादि मोक्षसाधनभूते (श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोर्राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवश्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूलोंके भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे (काश्यां-अविमुक्त वाराणसी क्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकण्टक विराजिते भागीरथ्याः उत्तरवाहिन्याः गङ्गायाः वामे दिक्भागे) (अमुक) प्रान्ते (अमुक) मण्डलान्तर्गत (अमुक) पुण्यपवित्र ग्रामे (अमुक अयने) (अमुक) ऋतौ (अमुक) संवत्सरे (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) राशिस्थिते श्रीसूर्ये (अमुक) राशिस्थिते श्रीचन्द्रे (अमुक)राशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यकाले (अमुक) गोत्रः (अमुक) शर्मा, वर्मा, गुप्तोऽहं वा सपत्नीकोऽहं (अत्रागत्यानां सर्वेषां जनानां प्रतिनिधि भूतोऽहं अस्मिन् (अमुक) यज्ञे श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त शास्त्रोक्त वेदोक्त तन्त्रोक्त पुण्यफल प्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य तथा च अन्येषां जनानां विशेषतः 'एतत् प्रान्तीयानां सर्वेषां स्त्री पुंसां च्वित्य कल्याण प्राप्त्यर्थं कायिक वाचिक

मानसिक सांसर्गिक चतुर्विध पापक्षय पूर्वकं आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक, त्रिविध, तापोपशान्तिसकल दुःख शेष निवृत्ति पूर्वकं व्याधादि जरा मृत्यु रोगभय शोकाद्यपसर्ग निवृत्ति-पुरस्सरं, मम जन्म कुण्डल्यां प्रश्नकुण्डल्यां लग्न कुण्डल्यां गोचरे च तन्महादशायां अन्तर्दशायां प्रत्यन्तर्दशायां प्रतिप्रत्यन्तर्दशायां शूक्ष्मान्तर्दशायां केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टम द्वादश स्थान स्थित क्रूर ग्रहास्तैः संसूचितं संसूचियष्यमाणं पुत्रपौत्रादिसन्तते-रविच्छिन्नाभिवृद्धर्थं, आदित्यादिनवग्रहानुकुलता सिब्ह्यर्थं इन्द्रादिदशदिक्पालप्रसन्नता सिब्ह्यर्थं धर्मार्थकाममोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकालसंरणार्थं सकलमनेप्सितकामना सिब्ह्यर्थं लोके वा राजद्वारे, सभायां, न्यायालये, उद्योगे, कृषिकार्ये, व्यापारे, समाजेऽपि तद्वारे वा सर्वत्र यशोविजय कीर्तिलाभादि प्राप्त्यर्थं,शत्रुपराजय सद्धिष्ट सकल्पोक्त कामना सिद्ध्यर्थं च इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं गृहे विपुल धन-धान्य ऐश्वर्यादि-अभिवृद्धिपूर्वकं गृहे सर्वेषां जनानां शरीरे उत्पन्न एवं उत्पत्स्यमाण समस्त रोग व्याधि कष्ट पीडा निवारणपूर्वकं शरीरे दीर्घायुष्यनैरुज्य कीर्तिलाभक्षेमस्थैर्य सद्धर्म ,सद्बुद्धि सद्विद्या सद्विवेक सदाचारादि प्राप्यर्थं सनातन धर्मेस्मिन अतिशयश्रद्धाभिक्तसंवृद्ध्यर्थं, धार्मिकग्रन्थानां पुराणानां सर्वासां विद्यानां संवृद्ध्यर्थं विशेषतः स्वधर्मे सनातनधर्मे प्रीतिविवर्द्धनार्थम-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

इति सदुद्देश्यसिद्धिद्वारा विश्वस्मिन् जगति सर्वविधशान्यर्थं धर्मग्लान्यधर्मधर्माभ्युत्थान निवृत्तिपूर्वकं धर्मसंस्थापनार्थं च पुण्यकालेऽस्मिन् सकलदुरितोपशमनार्थं दुर्भिक्ष, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, विप्लव भूकम्प पशुरोग कृषिकार्ये च उत्पन्न समस्त बाधा निवारणार्थं निर्विघ्नतापूर्वक प्रचुर अन्न उत्पादनार्थं राजभय चौरभय सर्पभय शत्रुभय अग्निभय रोगभय यानपातनादिभय दुस्संगजन्याकस्मिकभय तथा नानागतभयनिवारणार्थं नवग्रह-जन्यपीड़ा शान्त्यर्थं उपस्थितानां समेषां जनानां कल्याणार्थं तथा डाकिनी-शाकिनी-भूत-प्रेत-पिशाच-वेतालादिभय निवारणार्थं विशेषतः जगन्नियन्ता अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायकस्य भगवतः सूर्यमण्डलावर्ति जगद्वीज पुरुषोत्तम वैकुण्ठाधिपतेः श्रीसीतारामयोः वा साम्बसदाशिवस्य वा लक्ष्मीनारायणयोः वा जगदम्बिकयोः अनुग्रह प्राप्त्यर्थं सग्रहमखं (शिवशक्ति) यागकर्म एभिर्द्विजकुलावतंसैः,शम-दमादि-निखल-गुणगण-भरितैः,विद्वद्भिः सह अद्यरभ्य पूर्णाहुति पर्यन्तं करिष्ये।

तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं, वसोर्घारा-पूजनमायुष्य मन्त्रजपं साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धमाचार्यादि वरणञ्च करिष्ये।

तथा च मण्डपप्रवेशपूर्वकं वास्तुपूजनं, मण्डपपूजनं, चतुःषष्टियोगिनीपूजनं क्षेत्रपालनवग्रहपूजनं असंख्यात् सर्वतोभद्रपूजनं च करिष्ये।

तत्रादौ निर्विघ्नतासंसिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजन महं करिष्ये।

# अथ कर्मपात्र स्थापनम्

बायें हाथ में अक्षत-गन्ध-पुष्प लेकर दाहिने हाथ से प्रक्षेपण करें। पूर्वे ऋग्वेदाय नमः।। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः।। पिश्चमे सामवेदाय नमः।। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः।। मध्ये अपांपतये वरुणाय नमः।। सर्वोपचारार्थे गन्धाऽक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

जल पात्रोपरि अङ्कुशमुद्रया सर्वाणि तीर्थान्यावाह्य धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य ''हुं'' इति कवचेनागुह्य मत्स्यमुद्रयाऽच्छाद्य ''वं वरुणाय नमः'' इति मन्त्रम् अष्टवारं जपेत्।।

ॐ तत्वा वामि बहाणा व्यन्देमान्स्तदा शास्ते यज्मानो हिविब्मिं÷। अहेडमानो वरुणोह बोद्ध्युर्रश्रष्ट स्मान् आयु प्रमोषी ।। अपां पतये वरुणाय नमः॥ अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि च॥ कलशे वरुणाद्यावाहित देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।। इस मन्त्र से सभी सामग्रियों पर जल छिड़कें—

ॐ पुनन्तुं मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु व्विश्श्वां भूतानि जातवेदः पुनीिह मा॥

सूर्यार्घ्यम्—

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

कर्म साक्षिणे भास्कराय नमः। इदमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ आकृष्णणेन् रजेसा व्वत्तीमानो निवेशयेत्र ऽमृतम्मर्त्यञ्च। हिरुणण्ययेन सविता रथेना देवो योति भुवनानि पश्रयन्॥

सूर्याय नमः। पुष्पाञ्जलिं रामर्पयामि।

दीप पूजनम्-

तीक्ष्णद्रंष्ट महाकाय कल्पान्त दहनोपम्। भैरवाय नमस्तुभ्यंमनुज्ञा दातुमर्हिस।। ॐ अगिग्न ज्ज्योतिषा ज्ज्योतिष्माञ्चककमो व्वर्चसा व्यन्वीस्वान्। सहस्र्वदाऽ असि सहस्रायत्वा॥

दीपस्थ देवतायै नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि। इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्)॥

भो दीप देव रुपस्त्वं कर्म साक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावदत्र स्थिरो भव।।

घण्टा पूजनम्—

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं च रक्षसाम्। घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टा प्रपूज्यते।।

गणपित ध्यानम्— गजाननं भूतगणादि सेवितं किपत्थजम्बू फलचारुभक्षणम्। उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्।। गौरी ध्यानम्—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणता स्मृताम्।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। गणपति आवाहन—

ॐ गुणानन्ता। गुणपितिष्ट हवामहे प्रियाणन्ति। प्रियपितिष्ट हवामहे निधीनान्त्वी निधिपितिष्ट हवामहे व्यसोमम्। आहमजानिगर्ब्मधमा त्वमजासि गर्ब्सधम्॥ ॐ नमी गुणेब्म्यो। गुणपित ब्म्यश्चवो नमो नमो व्यातेब्भ्यो व्यातेपति ब्भ्यश्चवो नमो नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सेपतिब्भ्यश्चवो नमो नमो विरूपेब्भ्यो व्विश्वरूपे ब्भ्यश्चवो नमो नमक्षा

गौरी आवाहन-

ॐ आयं गौः पृश्निरक्क्रमीदसंदन्मातरं पुरः पितरं च प्ययनुत्स्वं÷॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिके उम्बोलिके न मा नयति कश्चन ससंस्त्यश्यकः सुभिद्रिद काङ्काम्पील वासिनीम्॥ प्रतिष्ठा-

ॐ मनौ ज़ूति ज्रुंषिता माज्ज्यस्य बृह्स्पिती र्ध्वज्ञम्मिमं त'नो त्वरिष्ट्टं व्यज्ञक्षं सिम्म न्दंधातु। विश्धे देवा संऽ इह मादयन्ता मो३ प्रतिष्ठु॥ आसनम्-

ॐ पुर्लंष उएवेदि सर्व्यं व्यद्भूतं व्यच्चे भाव्यम्। उता मृतुत्त्वस्ये शानो यदन्नेनाति रोहंति॥

अथोवेऽ अस्युसत्वनो ऽहन्ते भ्यो ऽकर् न्नमेः॥

ॐ वार्ते रूद्र शिवा तुनूर घोराऽपीप काशिनी। तयानस्तुच्वा शन्त मया गिरि शन्ताभिची कशीहि॥

अनेकरत्न संयुक्तं नानामणि गणान्वितम्। भावितं हेममयम् दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम।।१।। अनेकरत्न संयुक्तं नानामणि गणान्वितम्। कार्तस्वर भयं दिव्यम् आसनं प्रतिगृह्यताम्।।२।। विचित्र रत्नचितं दिव्यास्तरण संयुतम्। स्वर्णिसंहासनं चारू गृहीष्व सुर पूजनम्।।३।। पाद्यम्-

ॐ एतावीनस्य महिमा तो ज्ज्यायाँश्चि पूर्रूषः। पादौऽस्य व्विश्वी भूतानि त्रिपा देस्या मृतन्दिवि॥

ॐ वामिषुं ङ्गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गि रित्रता ङ्कारूमा हिष्ट सीक्ष पुरूषकुत्रगत्॥

ॐ नमोऽस्तु नील ग्रीवाय सहस्राक्षयमीढुषे। अथो्बेऽ अस्यसत्वानो हन्ते भ्यो कर न्नमः॥

ॐ अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम्।।

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध संयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्।।१।।
सर्वतीर्थ समुद्भूतं पाद्यं गन्धा दिभिर्युतम्।
विघ्नराज गृहाणेदं भगवन्भक्त वत्सल।।२।।
पाद्यं चते मया दत्तं पुष्प गन्धसमन्वितम्।
गृहाण देव देवेश प्रसन्नो वरदो भव।।३।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।
अर्घ्यम्-

ॐ त्रिपा दूर्ध्वऽ उद्दैत्पुरूष्ट् पादौऽस्येहाऽभवत्पुने÷ तर्तो व्विष्ट्वङ् व्यक्कामत्सार्शनानशनेऽ अभि॥

ॐ शिवेन व्वचं सात्त्वा गिरि शाच्छां व्वदामिस। यथान् सर्व्व मिज्ज गंदयक्ष्मधः सु मनाऽ असृत्॥ ॐ गायत्री त्रिष्टुब्ज गत्य नुष्टु प्यङक्त्यास्ह। वृह्त्युष्णिही कुकुप्सूचीभि÷ शम्यन्तुत्वा॥

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारा मार्द्रा ज्वलर्न्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्येस्थितां पद्मवर्णां तामि होप ह्वये श्रियम्।।

ॐ धार्मन्ते व्विश्वम्भुवेनम धिशिश्रत मृन्तः समुद्रेत्हुद्युन्त रायुषि। अपा मनीके सिम्धे यऽ आर्भृतस्त मेश्श्याम् मधु मन्तन्तऽ क्रिम्मिम्॥

निधीनां सर्वदेवानां त्वमऽर्घ्यं गुणा ह्यसि।
सिंहो परिस्थिते देवि गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।।१।।
तत्पुरूषाय विद्यहे महादेवाय धीमिह।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।२।।
गन्ध पुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं प्रसन्नो वरदो भव।।३।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्--

ॐ त्र्यम्बकं व्यजामहे सुगुन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकिमिव बन्धनात्रमृत्योर्मीक्षीय माऽमृतात्॥

ॐ इमम्मे। वरुणश्श्रुधीहर्वम्ध्याचेमृडय॥ त्वामवस्युराचके॥

ॐ ततौ विराडंजायत व्विराजो ऽअधि पूर्रेषः। स जातो ऽअत्यंरिच्च्यत पंश्चाद्भूमिमधौ पुरः।।

ॐ अध्येवोचद्धिव्कता प्रथमो दैव्यो भिषक्॥

<sup>सं.पू.य.वि.३</sup>

अहीश्च सर्वीञ्चम्भयुत्त्सर्वीश्च यातुष्यान्न्योऽध्राचीः परासुव।

ॐ मुरुत्वीरऽइन्द्र॥ ब्वृष्भोरणायिषवासोमे-मनुष्व्धम्मदीय॥ आसिश्चस्वज्ठरेमध्देऽऊम्मिन्वष्ट राजिस्प्रितिपत्त्पुतानीम्॥ उपयामगृहीतोसीन्द्रीयत्वा-मुरूत्वेतएषतेयोन्रिन्द्रीयत्वामुरुत्त्वेते॥

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

तां पद्मिनीमीह शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितह स्वादु शीतलम्। तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनीयं समर्पयामि।

स्नानम्—

ॐ तस्मद्यिज्ञात्सर्वृहुत् सम्भृतं पृषद्गुज्यम्। पृश्राँसताँश्रके व्वायव्यानारण्यां ग्ग्राम्याश्च वे ॥ ॐ आपो हिष्ठ्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे देघातन। महे रणाय चक्षसे॥

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथोस्सतेभिरागीहि नियुत्वान्सोमीपीतये॥

ॐ असौ यस्ताम्म्रो ऽअंकृण ऽउत् बब्धुः सुमङ्गलं÷। ये चैनष्ट कृद्रा ऽअभितौ दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषाणं हेडं ईमहे॥ ॐ देवस्येत्त्वा। सिवृतुः प्रस्वेष्विश्वनौर्ब्बाहुब्ध्या-म्पूष्पणोहस्ताभ्याम्।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्व पापहरं शुभम्। तदिदं किल्पतं देव स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्।।

पयः स्नानम्—

ॐ पर्यः पृथिव्यां पया ऽओषधीषु पर्योदिव्युः ऋतिक्षे पर्यो धाः। पर्यस्वतीः प्रदिशः सङ्गु मह्मम्॥

ॐ पर्यसोर्फ्यं व्याविद्ध्नोर्फ्यद्धुवर्कन्धूनि॥ सोमस्यरूपं व्याजिनक्ष सौम्म्यस्यरूपमामिक्क्षा॥ कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पयस्नानं समर्पयामि।

दिध स्नानम्--

ॐ दुधिक्राव्यों ऽअकारिषञ्जिष्य्योरश्वेस्य व्वाजिने÷। सुरिभ नो मुखा कर्त्प्रण ऽआयुं ऐषि तारिषत्।। ॐ धानाः कर्म्भः सक्तवः परीवापः पयोदिधि। सोमस्य रुपः हुविषेऽआमिक्क्षाव्वाजिनम्मधुं॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दथ्यानीतं मया देव। स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दिध स्नानं समर्पयामि। घृत स्नानम्---

They were their pier his

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते ष्टिश्रातो घृतम्वस्य धामे।
अनुष्व्वधमार्वह मादयस्य स्वाही कृतं व्यषम व्यक्षि हव्व्यम्॥
ॐ घृतङ्घतपावानः पिब्बत्व्वसींव्वसापावानः
पिबतान्तरिक्षस्य हुविरिस्स्वाही।
दिशे प्रदिशेऽआदिशोव्विदिशेऽउदिशोदिगम्यः स्वाही॥
ॐ तेजौसिशुक्रमस्यमृतमिस्धाम्नामिसिप्प्र्यंदेवानामनिष्ट्रष्टेव यजनमिस॥

ॐ घृतेनाञ्जन्तंप्थोदेवयानात्र्यजानत्वाज्ज्यप्येतुदेवान्। अनुत्वासप्तेष्प्रदिशेः सचन्ताणं स्वधाम्स्मौयजीमानायधेहि॥ ॐ घृतवितीभुवेनानामभिष्ठिश्रयोर्व्वीपृत्थ्वीमधुदुधे सुपेशिसा। द्यावापिथिवीव्यक्षणस्यधम्मीणाष्ट्रिकष्यक्रिकिभतेअजरे-भूरिरेतसा॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः घृत स्नानं समर्पयामि। मधु-स्नानम्—

ॐ मधुळाता ऽऋतायते मधु क्षरिक्त सिन्धवः। माद्धवीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमन्त्पार्थिवृष्ट् रर्जः। मधु द्यौरेस्तु नः पिता। मधुमात्रो व्वन्स्पित्मिधीमाँ ऽअस्तु सूर्व्यः। माध्दवीर्गावी भवन्त नः॥ ॐ स्वाहामुरूद्धिः। परिश्शीयस्वदिवश्सृ७्-स्पृशस्पपाहि।। मधुमधुमधु।

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

स्नानम्—

ॐ व्वर्रणस्योत्तम्भेनमसि्व्वर्रणस्य स्वकम्भ्सर्जी-नीस्त्थोव्वर्रणस्यऽ-ऋतसदित्र्यसिव्वर्रणस्यऽऋतसदेन-मसि व्वर्रणस्यऽऋतसदेनमासीद।

ॐ द्रुपदार्दिवमुमुचानः स्विन्नः स्नातोमलदिव। पूतम्पवित्रेणेवाज्ज्य मार्पः शुन्धन्तुमैनसः॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि। शर्करा-स्नानम्—

ॐ अपाछं रस्मुद्ध्यस् छ सूर्ब्यस्तिहः स्माहितम्। अपा छ रसंस्ययोरस्स्तंब्बो गृह्णाम्म्युत्तममुपया मगृहीतो सीन्द्रीयत्वा जुष्टुङगृह्णाम्म्येषते बोनि रिन्द्रीयत्त्वा जुष्टतमम्॥

ॐ स्वादुः पवस्वादि व्यासजन्नमने स्वादुरिन्द्राय सुहवीत तुमम्मने स्वादूर्मासस्त्रा यत्व रुपाय वायवे बृहस्पते मधुमा अक्षाब्भ्यः।

इक्षुरससमुद्धतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्। मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। अन्नानि मिष्टा नियथा भवन्ति तृप्तिं तथा देव गणा लभन्ते। तां शर्करा देव शशि प्रभां तथा स्नानाय दत्तं मधुरं गृहाण।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृत-स्नानम्---

ॐ पञ्चन्द्युः सरस्वती मिप यन्ति सस्त्रीतसः। सरस्वती तु पञ्चिधा सो देशे भवतस्रित्।।

ॐ आण्यायस्व समैतुतेव्विश्श्वतं÷ सोमुव्वृष्णयम्। भवाव्वाजस्यसङ्गुथे॥

ॐ ऊक्क्चीमे सुनृताचमे पर्यश्च्चमे रसंश्च्चमे घृतञ्ची मे मधुचमे सिग्धिश्च्चमे सपीतिश्च्चमे कृषिश्च्चीमे व्विष्ट्रिश्च्चमे जैत्रञ्जम् औद्भिद्यञ्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। पञ्चामृतं मयानीतं पयो दिध घृतं मधु। शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

गन्धोदक-स्नानम्—

ॐ अट्ट शुनिते। ऽअट्ट शुः पृच्च्यताम्पर्रुषापर्र्यः। गुन्धस्ते सोमम वतु मदीय रसो अच्च्युतः॥

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखन्ँस्त्वा मिन्द्रस्त्वाम्बृहुस्पति÷। त्वामीषधे सोमो राजिवद्वान्त्र्यक्ष्मीद मुच्च्यत्॥

ॐ तय्युज्जम्ब्रहिष्प्प्रौक्क्षृत्रपुरुषञ्जातमेग्गृतः। तेने देवाऽअयजन्त साद्धयाऽऋषयश्रश्चे॥

ॐ प्रमुञ्चधन्वन् स्त्वमुभयो रात्त्वन्यों ज्र्याम्। वाश्च्यते हस्तुऽइषवृक्ष पराताभगवोळ्यप॥ गुन्धूर्व्वस्त्वी व्विश्शावसुः परिद्यातुव्विश्श्वस्या-रिष्ट्रयैयजीमानस्य परिधिरेस्युग्निरिडऽईडितः॥ इन्द्रस्य बाहुरसिद्धिणोव्विश्श्वस्यारिष्ट् यैयजीमानस्य परिधिरेस्युग्नि रिडऽईडितः। मित्रा वर्रणौत्त्वोत्तर्तः परिधत्तान्धुवेण् धर्मणा विश्श्वस्या रिष्टयै यजीमानस्य परिधिरेस्य ग्निरिड ईडितः॥

नाना सुगन्धितं द्रव्यं चन्दनं रजनीयुतम्। गन्धोदकं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। मलयाचल सम्भूतं चन्दनेन विनिःसृतम्। इदं गन्धोदकं स्नानं कुङ्कुमाक्तं च गृह्यताम।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।

तीर्थोदक-स्नानम्-

ॐ ये तीत्र्यानि प्रचरन्ति सुकाहिस्तानिष्ङ्गिणी÷। तेषां ७ सहस्र योजनेऽव धन्वीनितन्मसि॥

ॐ सृप्तास्यांसत्रपरिधयंस्त्रिः सृप्तस्मिधंः कृताः। देवाश्रद्धज्ञन्तंत्र्वानाऽअबंध्नृत्पुरुषम्पशुम्।। गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा। कावेरी सरयू महेन्द्र तनया कर्मण्वती वेदिका।। क्षिप्रा वेत्रवती महासुर नदी ख्याता च या गण्डकी। पूर्णा पुण्यजलैर्समुद्र सहिता स्नानं सदा मङ्गलम्।। गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः तीर्थोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक-स्नानम्—

ॐ शुद्धवीलः सूर्व्व शुद्धवालो मण् वाल् स्तऽअश्थिमाः श्येतं÷ श्येताऽक्षो्रुणस्ते रुद्धार्य पशु पत्ये कुण्णांश्रामाऽ अविल्पा रौद्रा नभौ रुपाः पार्ज्न्याः॥

ॐ आपो॒हिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदेघातन। महेरणाय्चक्षसे॥

ॐ नर्म÷ शम्भ्वायं च मयोभवाय च नर्मः शङ्करायं च मयस्क्करायं च नर्म÷ शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ आपोऽअसमात्रमातरं शुन्धयन्तुघृतेनेनो घृत्प्प्व्ः पुनन्तु। विश्शृष्टः हिरिप्प्रम्प्रवेहन्तिदेवी-रुदिदोब्भ्यः शुचिरा पूतऽएमि। दीक्षात्पसौस्तनूरसिता त्विशिवा ७ शागमाम्परिदधे भुदं व्वर्णम्पुष्ट्येन्॥

ॐ शन्नी देवी रिभष्ट्रियऽआपीभवन्तु पीतर्ये। शंय्योर्भिस्त्रवन्तुनः॥

ॐ असौयस्ताम्मोऽअंकृणऽउत- बब्धुः सुमङ्गलं÷ ये चैन ७ कृद्राऽ अभितौदिक्षुिश्राताः संहस्त्रशोऽवैषा ७ हेर्डऽईमहे॥

ॐ वार्चन्ते शुन्धामिप्राणन्तेशुन्धामिचक्षुंस्ते शुन्धामिश्रोत्रेन्ते शुन्धामि नाभिन्ते शुन्धामिमेढ्ढ्न्ते शुन्धामि पायुन्ते शुन्धामिच्रित्राँस्तेशुन्धामि॥

नमो हिरण्य गर्भाय हिरण्यकवचाय च। नमो ब्रह्मस्वरुपाय स्नापयामि शुभैः जलैः।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्व पाप हरं शुभम्। तिदं किल्पतं तुभ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्-

ॐ तस्मीद्यज्ञात्सर्व्यद्वत्यक्रम् सामीनजज्ञिरे। छन्दी छ सिजज्ञिरेततस्माद्यजुस्तस्मीदजायत॥ ॐ सुजीतो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्यर्ध्यमासदित्स्वृश्च्यासौ ऽअग्ने व्विश्श्वरूप ह संव्ययस्व व्यिभावसो॥ ॐ हु ह सा शृचिषद्धसुरन्तरिक्ष्म सद्धोतिव्येदिषदितिथिर्द्वरोणसत्। नृषद्धरसदृतसद् द्वयोम्स दुब्ब्जागोजाऽऋत्जाऽअद्रिजा-ऽऋतम्बृहत॥

ॐ युवासुवासा परिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान्मवति जायमानः। तं धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥ ॐ असौबौऽवसर्प्यतिनीलंग्ग्रीवो विवलौहितः। उत्तैनङ्गोपाऽअदृशश्रन्नदृशश्रन्नदृश्श्रन्नदृष्ट्यां सदुष्ट्रो मृडयाति नः॥

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मिराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। शीत-वातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।। सर्वभूताधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं गृह्येतां वाससी त्वया।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं

समपर्यामि।

यज्ञोपवीतम्—

ॐ तस्मादश्वीऽअजायन्तवे केचीभ्यादेतः। गावी हजित्तरेतस्मान्तस्माज्जाताऽश्रेजावयः॥ ॐ ब्रह्मं यज्ञानं प्रेथ्रमं पुरस्ताद्वि विसीम्तः सुरूची व्वेनऽश्रोवः। स बुध्न्याऽउपमा श्रेस्य व्विष्ठाः स्तश्च वोनिमसेतश्च व्विवेः॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥

ॐ नमींऽस्तुनीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मी्ढुषे। अथो्थे ऽअस्य सत्त्वानो ऽहन्तेब्भ्यो ऽकर्न्नमः॥ स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।। नविभस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि तदन्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्—

ॐ सुजितो ज्ज्योतिषा सह शर्मा व्यक्तंश्यमासेदत्स्व। व्यासीऽअग्ने व्विश्वरूप १ संव्ययस्य व्यिभावसो॥ ॐ उपस्मि गायतान्यः पर्वमानायेन्द्वे। अभिदेवाँ२ इयक्षते।

ॐ तस्मीद्यज्ञात्सीर्व्यहुत् सम्भृतम्पृषद्गुज्यम्। पृश्रुँस्ताँश्चीकक्रेव्वायव्याः नारुणयाग्ग्रामयाश्च्युवे। ॐ असौयौऽवसर्पति नीलंग्गीवोविलौहितः। उत्तैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नदहीर्ष्युः सदृष्ट्टोमृडयातिनः।

ॐ व्वसींक्ष प्वित्रीमिस शृतधीरं व्वसींक्ष प्वित्रीमिस स्हस्त्रधारम्। देवस्त्वी सिवृता पुनातु व्वसींक्ष प्वित्रीण शृतधरिण सुप्वा कामधुक्षक॥

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालङ्करणं वस्त्र मतः शान्तिं प्रयच्छ मे।। उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रं समर्पयामि तदन्ते जलं समर्पयामि।

चन्दनम्—

ॐ त्वां गेन्ध्व्वां ऽअंखन्ँस्त्वामिन्नस्त्वां बृहुस्प्पति÷ त्वामीषधे सोमो राजां व्विद्दान्न्रक्षमीदमुच्च्यत॥

ॐ तंळ्याज्ञम्बहिष्ण्रीक्कृन् पुर्कषञ्चात मेग्रतः।।
तेनं देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च्ये।
ॐ प्रमुञ्च धन्न्रन्त्वमुभयोगत्कर्न्योज्ज्याम्।।
वाश्च्यं ते हस्तुऽइषवृः पग्ताभगवोव्वप॥
ॐ तुरिणिर्विशृश्वदेर्शतो ज्ज्योतिष्कृदेसि सूर्ष्य।
व्विश्श्वमाभासिरोच्नम्।

ॐ नम् श्रवब्ध्यः श्रवपितिब्ध्यश्रचवो नमो नमो भ्वाय च रुद्राय च नमेः शुर्व्वायचपशुपतेये च नमो नीलंग्ग्रीवाय चिशति कण्ठीय च नर्मः॥

ॐ युञ्जन्तिब्बृदध्नमेरूषञ्चरेन्त्रम्परित्स्त्थुष÷॥ रोचेन्तेरोच्नादिवि॥

ञुञ्जन्त्रं स्युकाम्म्या हरी विपेक्क्षसारथे। शोणी धृष्णणूनुवा हैसा॥

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपृष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।। सुगन्धं चन्दनं दिव्यं मयादत्तं तव प्रभो। भक्त्या परमया शम्भो सुभगं कुरू मां भव।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः चन्दनं समर्पयामि।

अक्षतम्--

ॐ अक्ष्ननमीमदन्त ह्यवं प्रियाऽअधूषत। अस्तौषत् स्वभानवो व्विप्रा नविष्ठया मृती योजान्विद्न्द्र ते हरी॥

ॐ नम्स्तक्षंक्यो रथकारेक्यंश्श्रवो नमो नम्स कुलिल्क्यः कुम्मिरक्यंश्श्रचवो नमो नमो निषादेक्यंः पुञ्जिष्ठेक्य्यश्श्चवो नमो नमेः श्र्विनिक्योमृग्युक्यं श्श्रवो नमो नम्स॥

ॐ व्क्रीहर्यश्च्चं में व्रवाश्च में माषश्चि में तिलिश्च में मुद्गाश्चं में खल्ल्वश्चि में प्रियङ्गवश्च्च में श्यामाकश्च्च में नीवारश्च्च में गोधूमश्च्च में मुसूरश्च्च में बुज़ेने कल्प्पन्ताम्॥ ॐ नर्मः शम्भ्वायं च मयो भ्वायं च नर्मः शङ्करायं च मयस्वक्रायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥ ॐ मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यमशीय। पशूनां रूपमन्नस्य मिय श्रीः श्रयतां यशः॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥ अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्ताफलसमन्वितान्। गृहाणेतान् महादेवि देहि मे निर्मलां धियम्॥ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पम्—

ॐ इदं व्यिष्णुर्विचेक्क्रमे ऋेषा निर्देधे पुदम्।
समूढमस्य पा छं सुरे स्वाहा॥
ॐ ओषंधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पंवतीः प्रमूर्वरिः।
अश्श्वाऽइव स्जित्वरीर्व्वाक्तधः पारियृष्णणवः॥
ॐ यत्पुर्क्षषं व्यदेधः कितृषा व्यक्तल्पयन्।
मुखङ्किमस्यासीतिकं बाहु किमूक्त पादा उच्च्येते॥
ॐ वाऽओषंधीः पूर्व्वा जाता देवेक्यसित्रयुगं पुरा।
मनैनु बुब्धूणामह ए श्तन्धामनि सप्पत च॥
ॐ नमः पार्व्याय चा वार्व्याय च नमः प्रतर्रणाय
चोत्तरंणाय च नम्स्तीत्थ्याय च कुल्ल्याय च नमः
शष्याय च फेन्न्याय च नमः॥

ॐ मनस्क काम्मकृतिं व्वाचश स्त्यमेशीय। पुशुना ७ रूपमन्नस्य रसो वशुक् श्रीक श्रीयतां मिय स्वाहा॥ ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमिह।
पशूनां रूपमन्नस्य मिय श्रीः श्रयतां यशः॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम॥
मन्दार परिजातादि पाटली केतकानि च।
जाती चम्पक पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पं समर्पयामि।

पुष्पमाला—

ॐ ओषंधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवंशः। अश्र्धा उइव स्जित्त्वंशिर्व्याः पारियुष्णणवः॥ ॐ द्याम्मालेखीर्न्त रिक्षम्मा हिंश् सीः पृथिव्या सम्भव। अर्थश्व हित्त्वा स्विधितिस्तेतिजानः प्रणिनार्य महुते सौभगाय॥ अतस्त्वन्देव व्वनस्प्यते शृतवंलशोव्विरोहसहस्रवलशा व्विवयश्व रुहेम॥

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।। पत्रं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च। गृहाणार्ध्यं मया दत्तं देहि मे वाञ्छितं फलम्।। मन्दार पारिजातादि पाटली केतकानि च। जाती चम्पक पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभनम्।। बन्धूककाञ्चन निभं रुचिराक्षमालां,

पाशाङ्कुशौ च वरदां निज बाहुदण्डै:। बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-

मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पमालां समर्पयामि। दूर्वी—

ॐ काण्डोत् काण्डात् प्ररोहन्ति पर्सषः परुष्टस्परि। एवा नौ दूर्व्वे प्रतेनु सहस्रीण शृतेने च॥

ॐ हिरंण्यरूपा ऽउषसी व्विरोक ऽउभाविन्द्रा ऽउदिथः सूर्ळ्यश्श्रा आरोहतं व्वरुण मित्रुगर्त्तं तृतश्रश्रक्षाथा मित्रितं दितिं च मित्र्रोऽसिव्वर्रणोऽसि॥

ॐ या शतेने प्रतनोषिसहस्रेण व्विरोहिस। तस्यस्ति देवीष्ट्रके व्विधेमे ह्विषाव्वयम्॥ दूर्वाङ्करान् सुहरितानमृतान् मङ्गल प्रदान्। आनींतास्त्व पूजार्थं गृहाण गणनायक।। ॐ आर्द्रा पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। विष्यवादि सर्वदेवानां प्रियां सर्व सुशोभनाम्। क्षीर सागर सम्भूते दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा।। विष्वादि सर्वदेवानां दुर्वेत्वं प्रीतिदा सदा। क्षीर सागर सम्भूते वंश वृद्धि करी भव।। दुर्वेध्यमृत सम्पन्ने शतमुलेशं तां कुरु। शतं पातक संहन्त्री शतमायुष्यवर्धिनि।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

बिल्वपत्रम्—

ॐ नमीं बिलिमनें च कव्चिनें च नमीं व्वर्मिणें च व्यक्ष्यिने च नमें शश्रुतार्यं च शश्रुतसे गर्यं च नमों दुन्दुब्ध्याय चा। हनुत्र्याय च॥

ॐ शिवो भीव प्राजाभ्यो मानुषी भ्यस्त्व मिङ्गिर। माद्यावी पृथिवी ऽअभिशौचीुर्मान्तरिक्ष्ममा व्वनुस्पतीन्॥ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्। त्रिजन्म पाप संहारं बिल्व पत्रं शिवार्पणम्।। त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च हाच्छिद्रै: कोमलै: शुभै:। शिव यूजां करिष्यामि बिल्व पत्रं शिवार्पणम्।। शालग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत्। सोमयज्ञ महापुण्यं बिल्व पत्रं शिवार्पणम्।। दन्ति कोटि सहस्राणि वाजपेयशतानि च। कोटि कन्या महादनं बिल्व पत्रं शिवार्पणम्।। लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्। बिल्व वृक्षं प्रयच्छामि बिल्व पत्रं शिवार्पणम्।। दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्। अघोर पाप संहारं बिल्व पत्रं शिवार्पणम्।। मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णु रूपिणे। अग्रतः शिवरुपाय बिल्व पत्रं शिवार्पणम्।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि। शमीपत्रम्—

ॐ शन्नों देवीर्भिष्ट्टंयुऽ आपों भवन्तु पीतये॥ शंख्यो रभिस्त्रवन्तुनशाश॥

ॐ अगिनम्मूर्द्धा। दिवश कुकुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्॥ अपा छ रेता छ सिजिञ्चति॥२॥ ॐ वर्तो यतः सुमीहसे ततौ नो ऽअभयङ्कुरू। शन्नेः कुरू प्रजाब्भ्योऽभयन्नः पृशुब्भ्यः।।३॥ ॐ अमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च। दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शमीपत्रं समर्पयामि।

धतूरा—

ॐ त्र्यम्बकं व्यजामहे सुगुन्धिम्पुष्ट्रि वद्धीनम्॥ उर्व्वाक्त्रक मिव् बन्धनात्रमृत्यो मी्द्द्रीय मामृतति॥ त्र्यम्बकं व्यजामहे सुगुन्धिम्पित्वेदेनम्॥ उर्व्वाक्तकमिव बन्धना दितो मुक्षीय मामुते÷॥१॥

ॐ नर्म÷ शम्भ्वायं च मयो भ्वायं च नर्म÷ शङ्करायं च मयस्क्रायं च नर्म÷ शिवायं च शिवतराय च॥२॥

ॐ उदुत्यञ्चात वैद सन्देवं व्वेहन्ति केतवे÷॥ दृशे विश्श्वीय सूर्य्यम्॥३॥

ॐ कार्षिरिस समुद्द्रस्य त्वाक्षित्त्या उन्नयामि॥ समापौऽअदिद्द्ररगगमत् समोषधीभिरोषधीः॥४॥ विजया—

ॐ व्विज्जयन्धर्नुः कप्र्हिनो विशिल्ल्यो बाणे वाँ २॥ ऽउत अने शत्रस्य याऽइषेवऽआभुरस्य निषङ्गधिः॥१॥

ॐ यत्पुर्रूषं व्यद्धाः कित्धाव्यकिल्पयन्। मुख्ङ्किमस्या सीत्किम्बाह् किमुरू पादी उच्चेते॥२॥

ॐ शिवोभेव। पप्रजाक्त्रयो मानुषी ब्ल्यस्त्वमिङ्गरह॥ माद्यावी पृथिवीऽअभिशौचीुर्म्मान्तरिक्ष् म्माव्वन-स्प्यतीन्॥३॥ तुलसी हेमरूपां च रत्न रूपां च मञ्जरीम्। भव मोक्ष प्रदां तुभ्यं समर्पयामि हरिप्रियाम्।। सिन्दूरम्—

ॐ सिन्धौरिव प्पाद्ध्वने शूघनासो व्वातं प्रमियहं पतयन्ति बह्वाः ॥ घृतस्य धारा ऽअरूषो न व्वाजी काष्ठी भिन्दत्रूर्मिभिहं पिन्नीमानह॥१॥

ॐ स्त्रः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्द्रोब्स्य विह्ह्यमणिः सिल्लः प्रप्लुतोवयोरोजसास्क्रिम्ता रजो ७ सि व्वीर्व्य भिर्व्यारते माशविष्ठा॥ यापत्येतेऽअप्रतिता सहोभिव्विष्णूऽअगुत्रवर्र्णण पूर्व्यद्वतौ॥२॥

ॐ अहिरिवभोगै? पर्ळीत बाहुंज्यायां हेतिं परिबाधमानः। हुस्तुग्ञ्नो व्विश्श्ची व्वयुनिनि व्विद्धान्न्पुमान्पुमी संप्परिपातु व्विश्वतं ॥३॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।४।।
सिन्दूरानि सुगन्धीनि द्रव्याणि विवधानि च।
मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वरः।।५।।
सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूरं तिलकं प्रिये।
भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।६।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दरं समर्पयामि।

नानापरिमल द्रव्याणि—

ॐ अहिरिव भोगै? पर्खेति बाहुंज्यायिहेतिं प्रिवाधमानः। हुस्तुग्छोव्विश्श्वी व्वयुनिन व्विद्वान्नुमान्पुमी सं प्परिपातु व्विश्वतं ॥

ॐ नाना हि वान देवहित छ सदेस्कृतं मा स छ स्थाथां परमे व्योमन्। सुरा त्वमिस शुष्मिणी सोमे एष मा मो हिऐसीः स्वां योनिमा विशन्ती॥

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्। अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारू प्रगृह्यताम्।। अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च। अबीरेणार्चितो देव अतः शान्तिं प्रयच्छमे।।

सुगन्धित द्रव्य---

ॐ अह शुना ते अह शुः पृच्यतां पर्लषा पर्ल।
गृत्थस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः॥
ॐ त्र्यम्बक अजामहे सुगृन्धिं पृष्टिवधनम्।
उर्वाक्किमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
ॐ अहिरिव भोगैः पर्व्यति बाहुंज्यायांहेतिं
परिवाधमानः। हुस्तृष्ठोव्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्
पुमान पुमा ७ सं परि पातु विश्वते÷॥

ॐ ग्न्ध्र्वस्त्वाविष्श्वावसुः परिद्यातु विष्श्ववस्यारिष्टयै वर्जमानस्य परिधिरस्यग्निनिर्द्धिष्टितः। इन्द्रस्य बाहुरसिदिक्षिणो व्विष्वस्यारिष्टयै वर्जमानस्य परिधिरस्यग्निनिर्द्धिष्टितः। मित्नाव्वर्रणौ त्वोत्तर्तः परिधत्तान्ध्रुवेण् धर्माणा व्विष्श्वस्यारिष्टयै वर्जमानस्यपरिधिरस्यग्निनिर्द्धितः।

जनि चम्पकतैलिमदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः। सुरिभगन्धिमदं च चतुः समं सपिद सर्विमिदं प्रतिगृह्यताम्।। तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च।

मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर।। दिव्य गन्थसमायुक्तं मधुमिरमलाद्भुतम्। गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नाना परिमल द्रव्याणि समर्पयामि। आभूषण—

ॐ हिरंण्ण्यरूपा उषसी व्विरोक उभाविन्द्रा उदिथ्हं सूर्व्यश्च। आ रौहतं व्वरूण मित्र गर्त्तं ततेश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रोऽसि व्वरूणोऽसि॥

ॐ स्वर्णा घुर्माः स्वाहा स्वुर्णार्कः स्वाहा स्वुर्णा शुक्कः स्वाहा स्वुर्ण ज्ज्योतिः स्वाहा स्वुर्ण सूर्ळाः स्वाहा।

मातस्तवेमं मुकुटं हरिन्मणिप्रवालमुक्तामणिभिर्विराजितम्। गारूत्मतैश्चाऽपि मनोहरं कृतं गृहाण मातः शिरसो विभूषणम्॥ धूपम्—

ॐ धूरिस् धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं ठ्योऽस्मान् धूर्विति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वीमः। देवानीमस् व्वह्नितम् ६ सस्त्रितम् पण्रितमंजुष्ट्रतमं देवहूर्तमम्॥

ॐ ब्बाह्मणोऽस्य मुखंमासीद्बाहू राजिन्त्यः कृतः। ऊरकतदस्य्यद्वेश्यं पद्भ्याण्शुद्द्रोऽ अजायत॥ ॐ ला ते हेतिमीबिब्हमहस्तेब्भूवते धनुः त्यास्माञ्चिश्य तस्त्व मयक्ष्मया परिभुज॥ ॐ नर्म÷ कप्रदिनें च ळ्यूप्तकेशायचनमें सहस्राक्षाये च शृतधं त्र्वने च नमीं गिरिश्यायं च शिपि विष्ट्वायं च नमीं मीढुष्ट्रमायुचे षुंमते च नमे॥

ॐ अश्रवंस्यत्त्वाव्बृष्णं श्वक्ताधूपयामि देव्यजेने पृथिव्याः ।। मृखयंत्वाशीष्णं ।। अश्रश्नस्यत्वाव्बृष्णं श्वनाधूपयामि देव्यजने पृथिब्याः। मृखायंत्वामृखस्यत्त्वा-शीर्ष्णे। अश्रश्नस्यत्वाव्बृष्णं शक्नाधूपयामिदेक्युजेनेपृथिब्या। मखायंत्वामृखस्यत्त्वा-शीर्ष्णे। मखायंत्वामृखस्यत्त्वाशीर्ष्णे।

ॐ व्यसंवस्त्वा धूपयन्तु गायुत्रेण्च्छन्दं साङ्गिर्स्वद्भू द्रास्त्वा धूपयन्तु त्रेष्ट्रुभेनुच्छन्दंसाङ्गिरस्वदंदित्या स्त्वाधूपयन्तु जागतिन् च्छन्दं साङ्गिर्स्वादिद्वश्शेत्वा देवावेश्शा न्राधूपयन्त्वानुष्टुभेनुच्छन्दं साङ्गिरस्व दिन्द्रंस्त्वा धूपयतु व्यक्षणस्त्वा धूपयतु व्विष्णुंस्त्वा धूपयतु।

ॐ यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुह्यादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।। वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्योगन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नाना धूपमाघ्रापयामि।

दीपम्—

ॐ अगिगनज्जोति ज्जोतिरग्निः स्वाहा सूर्व्यो ज्जोतिज्ज्योतिः सूर्व्याः स्वाहा । अगिनर्व्वच्चो ज्ज्योतिर्व्वच्चाः स्वाहा सूर्व्यो व्वच्चो ज्ज्योतिर्व्वच्चाः स्वाहा । ज्ज्योतिः सूर्व्याः सूर्व्यो ज्ज्योतिः स्वाहां ॥ ॐ चन्द्रमा मनसोजातश्रक्षक्षोः सूर्व्भीऽअजायत । श्रोज्ञाह्वायुश्श्च-प्राणश्श्च मुखादुग्निर्जायत ॥

ॐ नमंऽआशवे चाजिरायं चनमे शीग्र्याय च् शीब्भ्याय च नम्ऽऊम्प्यीय चावस्वृत्र्याय च नमो नादेयायं च द्द्रीण्याय च॥

ॐ अगिग्नर्ज्योतिषा ज्योतिषमाञ्चक्यमो व्यन्वीसा व्वन्त्री स्वान्। सहस्त्रदाऽअसि सहस्त्रीयत्वा ॥

ॐ शुक्क्रज्योतिश्रश्च चित्रज्योतिश्रश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्ञ । शुक्क्रश्च ऽऋत्पाश्श्चात्येष्ट हार ॥

ॐ परितेधन्नेनो हेतिर्स्मान्त्रीणक्त व्विश्वतं÷ । अथो यऽईषुधिस्तवारेऽअसम्मन्निधे'हितम् ॥

ॐ स्वण्णं घम्मी स्वाहा स्वुणांकक । स्वाहा स्वुण्णंशुक्का स्वाहा स्वुण्णंज्ज्योति स्वाहा स्वुण्णं सूर्व्यक्ष स्वाहा ॥

ॐ चन्द्रमाऽअप्पस्वन्तरा सुप्ण्णों धावते दिवि। रियम्प् शङ्गम्बहुलम्पुरूस्पृहु ६ हरिरेतिक निक्कदत्॥

ॐ सरिमाजिनलये सरोजहस्ते धवलतरां बुज्श गन्धमाल्यशोभे । भगवित हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्मम् ॥

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।। भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।। दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः। दीपो हरतु मे पापं पूजादीप नमोऽस्तु ते।। शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुखसम्पदाम्। शत्रुबुद्धि विनाशं च दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपम् दर्शयामि।

नैवेद्य-

ॐ नाल्भ्यो ऽआसीदुन्तरिक्षश्च शीर्ष्या द्यौः समैवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथो लोकाँ ऽअंकल्पयन्॥
ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्व छ सहस्त्राक्षृशतेषुधे।
निशीर्व्यशल्ल्यानाम्मुखो शिवोने सुमनो भव॥
ॐ नमी जज्येष्ठायेच किन्ष्ठाये च नमे पूर्वजाये।
चापर्जाये च नमी मद्ध्यमाये चाप गुल्माये च॥
नमी जघन्त्याय च बुध्याय च॥
ॐ अन्प्रतेन्तस्य नो देह्य नमीवस्यशृष्टिमणिः।
प्रप्रदातारेन्तारिष् ऊर्ज्जन्नोधेहिद्धिपदे चतुष्पदे॥
ॐ स्वादिष्ठायामदिष्ठ्या पर्वस्वसोम् धार्या इन्द्रीय्पातेवे
सुतः॥

ॐ प्राणाय स्वाहीऽपानाय स्वाही व्यानाय स्वाहा। चक्क्षुषे स्वाहा श्रोत्र्रीय स्वाही वाचे स्वाहा मनेसे स्वाही॥ ॐ आर्द्रा पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मी जातवेदो म आवह।। ॐ शर्कराखण्ड खाद्यानि दिधिक्षीर घृतानि च। आहारं भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये। गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर।। ॐ शर्करा घृत सयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम्। उपहारं संयुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

## करोद्वर्तन---

ॐ अ ह शुना ते अ ह शु? पृच्यतां पर्रषा पर्रा न्। ग्व्यस्ते सोममवतु मदीय रसो ऽअच्युत्रहा। ॐ सिञ्चन्त्रिपरि षिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्तिपुनन्ति च। सुरिये बब्ध्वैमदेकिन्त्वोव्यदितिकिन्त्वः।। चन्दनं मलयोद्धतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्। करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।

करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥
नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर॥
करोद्वर्तनकं देवं सुगन्धैः परिवासितैः।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां मितम्॥
एलोशीर लवङ्गादि कर्पूर परिवासितम्।
प्राशनार्थे कृतं तोयं गृहाण गणनायक॥
श्रीतोदकैः पाणिमुखं पवित्रे प्रक्षाल्यलक्ष्मीश सुवर्णपात्रे।
मन्दारपुष्पायुत चन्दनेन हनूमदुद्वर्त्तनकं कुरुष्व॥
ॐ अ १ शुच्श्रीमेर्शिम्मश्च्चमेऽद्याभ्यश्च्चमेऽधिपतिश्च्य मऽउपा् श्रुश्च्वीमेऽन्तर्व्यामश्च्वीऽऐन्द्रवा-

य्वश्च्यमे मैत्रावरुणश्च्चेमऽआश्श्वनश्च्चेमेप्रति-प्रस्थानश्च्यमेशुक्कश्च्चेमेम्न्थीच्चेमे खुजेने कल्पन्ताम्।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनं निवेदयामि।

ऋतुफल—

ॐ याः फुलिनीर्व्याऽअफुलाऽअपुष्या वारश्ची पुष्टिपणीः बृहुस्पतिप्रसूतास्ता नौ मुञ्जन्वः हसः॥

ॐ इमा रूद्रायं त्वसं कप्रदिनेक्ष्यद्द्वीराय् प्रभरामहे मृती? यथा शमसंद् द्विपदे चतुष्यपदे विश्वम्पुष्टुङ्ग्रामेऽ अस्मिमन् नातुरम्॥

अर्प्रां यः करिणीं यिष्ट्टं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मिन।।
द्राक्षा-खर्जूर-कदली-पनसा-ऽऽम्र-किपतथकम्।
नारिकेलेषु-जम्ब्वादि-फलानि प्रतिगृह्यताम्।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ऋतुफलानि निवेदयामि।

ताम्बूल-पूंगीफल—

उभाक्य्यामुत ते नमी बाहुक्य्यान्तव धृष्णावै। उभाक्यामुत ते नमी बाहुक्य्यान्तव धन्वेन॥ ॐ यत्पुर्रुषण हुविषा देवा यज्ञमतेत्र्वत। व्यस्नतोऽस्यासीदाज्ज्यं ग्रीष्मऽङ्गध्मः श्रारद्धवि।॥ ॐ तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरणयं प्रभूतं गावो दास्योश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ ॐ उत स्मस्यि द्रवंतस्तुरण्ण्यतः पण्णित्र व्वेरनुवाति प्रगृद्धिने÷। श्येनस्यैव धर्जतोऽअङ्कुसम्परि दिधकाब्णे÷ सुहोर्जा तरित्रतुः स्वाहा।।

ॐ पूर्णायं च पर्णा शृदायं च नमं ऽउद्गुरमाणाय-चाभिग्घ्नते च नमं ऽआखिद्ते च प्रखिदते च नमं ऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्चवो नमोनमो व किरिकेक्यो देवाना छ हृदयेक्यो नमों व्विचिक्वत्केक्यो नमोव्विविक्षण्तकेक्योनमं ऽआनिहतेक्यं:॥

ॐ इमारुद्द्रायंत्व सैकप्हिनैक्षयद्द्वीरायुष्प्रभरामहेमृती?। यथा शमसृद्द्विपदे चतुष्यदे व्विश्वम्पुष्टुङ्ग्रामैऽअसम्मन्न-नातुरम्॥

ॐ सप्प्तास्थांसत्र्यरिधयस्त्रिः सप्प्तस्मिधः कृताः। देवायद्यज्ञन्तंत्र्वानाऽअबध्नुत्रपुरुषम्पुशुम्।।

ॐ वाश प्निलानी वा ऽअप्नलाऽअपुष्पा वाश्चे पुष्पिणी । बृहुस्पित प्रसूतास्ता नौ मुक्कृत्त्व है हैस ।।
ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टि सुवर्णा हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।
मुखे ते ताम्बूलं नयन युगले कज्जलं कला-ललाटे काश्मीरं विलसित गलेमौक्तिकलता।।
स्फुरत् काञ्चीसाटी पृथुकिटतटे हाटकमयी-भजामि
त्वां गौरीं नगपित किशोरीमिविरताम्।।
पूगीफल महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

नागवल्लीदलं चैव पूंगीफलं समन्वितम्। कपूरिण समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा---

ॐ हिरण्णयगुर्ब्मः समीवर्त्तताग्रीभूतस्य जातः पितरिके ऽआसीत्॥ सदी धारपृथिवीन्द्यामुते माङ्कस्मैदेवायं हिवषिव्यिधेम॥१॥

ॐ यहुत्तँख्यत्परादान्ँख्यत्पूर्तंख्याश्च दिक्क्षणा तद्गिनळी ११वकर्माण? स्विर्देवेषुनो दधत्॥२॥

ॐ हिर्रणणयरूपा ऽड्रषसी व्विरोक ऽड्रभाविन्द्रा ऽउदिथः सूर्व्घश्श्य। आरोहतं व्वरूण मित्र्य गर्तं तत्रश्रक्षाथामदितिं दितिं च मित्र्योऽसि व्यर्क्षणोऽसि॥३॥

ॐ स्वणणिघर्माः स्वाहास्वणणिकः स्वाहास्वणणि शुक्कः स्वाहास्वणणिज्योतिः स्वाहास्वणणि सूर्व्यः स्वाहो॥४॥

ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूषानहम्।। हिरण्यं भिर्मा हेमबीजं विभावसे:। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।। ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।। दक्षिणा प्रेम सहिता यथा शक्ति समर्पिता। अनन्त फल दामेनां गृहाण परमेश्वर।।

हिरण्यं गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो:। दक्षिणा काञ्चनी देव स्थापिता मे तवाग्रत:।। श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नम: दक्षिणा समर्पयामि।

आरार्तिक्यम्—

ॐ इदं ६ हुवि?॥ प्रजननम्मेऽअस्तु दर्शवीर् ६ सर्व्वगण ७ स्वस्तये॥ आत्मसनिग्प्रजा सनिपशु सनि लोकसन्त्र्यभयसनि॥ अग्नि? प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्प योरेतो ऽअसमा सुधत्त॥१॥

ॐ आ रित्रि पार्त्थिवृष्ट रर्ज÷ पितुरिप्रायि धार्मिभशा दिव? सर्दा छंसि बृहुती व्वि तिष्ठुस् ऽआ त्त्वेषं व्वर्त्तते तर्मः॥२॥

ॐ ये दैवासो दिळ्येको दश्स्त्य पृथिळ्यामद्ध्येको दश्स्त्य॥ अप्पुक्षितौमिहनैको दश्स्त्यते देवासो यज्ञिम् भञ्जीषद्धम्॥३॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिकयमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।। चक्षुदं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम्। आरार्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वर।। कर्पूर गौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्। सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः आरार्तिक्यं समर्पयामि।

मंत्र पुष्पाञ्जलिम्---

ॐ यूज्ञेन यूज्ञमेयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमात्र्यासन्। ते हु नार्कं महिमाने सचन्त यत्र्य पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसहा साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय महां कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायै स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुषान्तादा परार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया ऽएकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवाः सभासद इति।।

ॐ व्विश्धतेश्श्वक्शुक्त व्विश्धतोमुखो व्विश्धतो बाहुक्त व्विश्धतेस्पात् सम्बाहुब्भ्यान्धमित् सम्पतेत्रौ-द्यावाभूमी जनयेत्रदेव ऽएकिः॥

ॐ एकदन्ताय विद्यहे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात।।

सेवन्तिका-बकुल-चम्पक-पाटला-ऽब्जैः पुन्नाग-जाति-करवीर-रसाल-पुष्पैः। विल्व-प्रवाल-तुलसीदल-मञ्जरीभिः त्वां पूजयामि जगदीदश्वरि! मे प्रसीद।।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावात्। करोति यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयेत्तत।। श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। प्रदक्षिणा—

ॐ ये तीत्र्थानि प्यूचरित स्काहिस्ता निष्कुङ्गिण÷ तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्नवानि तत्रमसि। ॐ मानौ महान्तंमुत मानौ ऽअर्ब्ध कम्मान ऽउक्षन्त मुतमान ऽउक्षितम् मानौ व्यधीः पितर्म्मोत मातरम्मानं प्रियास्तृत्वो रुद्द्ररीरिषः॥

ॐ सप्तास्यां सन्नपरिधयुक्तिः? सप्तस्मिधेः कृताः?॥ देवायद्यज्ञन्तं न्वानाऽअबंध्नृन्ध्युर्स्रथम्पृशुम्॥ यानि कानि च पापानि ज्ञाता-ऽज्ञात कृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥ पदे पदे या परिपूजकेश्यः सद्योऽश्वमेधादि फलं ददाति। तां सर्वपापक्षयहेतु भूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे॥ श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्यम्—

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।। द्वैमातुर! कृपासिन्थो! षाण्मातुराग्रज प्रभो!। वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद्।। अनेन सफलार्घ्येण सफलोऽस्तु सदा मम।।

प्रार्थना—

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय। नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते।।१।। भक्तार्ति नाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय। विद्याधराय विकटाय च वामनाय

भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।२।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रूद्ररूपाय करि रूपाय ते नमः।।३।।
विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।४।।
लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरू मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।५।।
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति

भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति। विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति

तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेव।।६।। वन्दे देव गजाननं षडगुरूं वन्दे जगत्भूषणम। वन्दे विघ्न विनायकं त्रिभुवनं वन्दे शुभ मङ्गलम्।।७।। वन्दे ईश उमासुतं कविवरं वन्दे सुलम्बोदरम्। वन्दे सिद्धि विनायकं शिवसुतं कुर्यात्सदा मङ्गलम्।।८।। अलि मण्डल मण्डित गण्डतलम्

तिलकी कृत कोमल चन्द्रकरम्। करिदारि विदारित बैरिबलम् प्रणमामि गणाधिपतिं जटिलम्।।९।। त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया। सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भृवि मुक्तिहेतुः॥ गणेश पूजने कर्म यन्त्र्यूनमधिकं कृतम्। तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम।। अनया पूजया गणेशाम्बिकं प्रीयेतां न मम।।

## कलशस्थापनं पूजनम्

कुंकुम (रोली) से भूमि पर अष्टदल कमल बनाकर भूमि स्पर्श करें। ॐ मही द्यौ? पृथिवी चे न ऽड्डमं ख्युज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमिभिः॥

अष्टदल कमल पर सप्तधान्य छींटे।

ॐ ओष्धयुः समेवदन्त सोमैन सुह राज्ञी। यसमै कृणोति ब्ब्राह्मणस्तर्ण राजन्यारयामसि॥ सप्तधान्य पर कलश स्थापित करें।

ॐ आजिग्न्न कुलशं मुह्या त्त्वी व्विश्नित्वन्देवः। पुनेक्जि निवर्त्तस्व सार्नः सहस्रं घुक्ष्वोक्तधारा पर्यस्वती पुनुम्मव्विशताद्द्रयिः।।

कलश में जल भरें।

ॐ व्यक्षणस्योत्तम्भनमस्य व्यक्षणस्य स्वकम्भ-सर्जीनीस्त्थोव्यक्षणस्यऽऋतसदेश्यस्य व्यक्षणस्यऽ-ऋतुसदेनमस्य व्यक्षणस्यऽ ऋतुसदेनुमासीद। कलश में सर्वोषधि डालें।

ॐ वाऽओषधीः पूर्वा जाता देवेब्म्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु ब्ब्सूणा मुह्ह शतन्धामानि सूप्त च॥ कलश में दूर्वा डालें।

ॐ काण्डीत् काण्डात् प्र्योहेन्ती पर्सषः पर्सष्स्परि। एवानौ दूर्व्वे प्रतेनु सहस्त्रेण श्रातेने च॥ कलश में पञ्चपल्लव डालें।

ॐ अश्चित्तथे वो निषदेनं पुण्णे वो व्यस्तिष्कृता। गोभाज ऽइत्किलासथ यत्सनवेथ पूर्रिषम्॥ कलश में कुश की पवित्री डालें।

ॐ प्वित्रें स्थो व्वैष्ण्याव्यो सिवृतुर्वीः प्रस्व ऽउत्त्पुनामयच्छिद्द्रेण प्वित्रेण सूर्व्यस्य रिम्मिभः। तस्य ते॥ पवित्रपते प्वित्रिपूतस्य यत्कोमः पुने तत्त्रिकेयम्॥

कलश में सप्तमृत्तिका (सात जगह की मिट्टी) डालें।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्ष्रा निवेशनी वच्छा नः शर्मा सुप्प्रथाः॥

कलश में सुपारी डालें।

ॐ वा? फुलिनीुर्व्या ऽअंफुला ऽअंपुष्या वाश्श्री पुष्यिणी÷। बृहुस्प्पति प्रसूतास्ता नौ मुंक्चन्त्व ६ हंसस।।

कलश में पञ्चरत्न डालें।

ॐ परि वाजपतिः क्विरिग्निर्व्व्यात्र्यंक्क्रमीत्। दध्दद्रत्नीनि दाशुषे॥

कलश में सुवर्ण (द्रव्य) डालें।

ॐ हिर्णण्यगुर्क्सः समीवर्त्ताग्ग्रे भूतस्य जातः पितरेके ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हिवधी व्विधेम्।

कलश में चारों ओर वस्त्र लपेट दें।

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्मा व्यक्तंथमासदुत्स्वः व्यासाऽअग्गने व्यिशश्चरूपृष्ट् संव्ययस्य व्यिभावसो॥ कलश में पूर्ण पात्र रखें।

ॐ पूरणां देर्बि परापत् सुपूरणां पुन्रापत। व्यस्त्रेव व्यक्तीणावहा ऽइष्मूर्जि १ शतक्क्रतो॥ कलश में लाल वस्त्र लपेटा हुआ नारियल रखें।

ॐ तत्वी यामि ब्बह्मणा व्वन्न्दमान्स्तदाशास्ति यजमानो हुविब्मि÷। अहेडमानो व्वरूणेह बोध्युर्रुश ६ सुमान् ऽआयु६ प्यमीषी६॥

अस्मिन् कलशे वरूणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिक-मावाहयामि स्थापयामि। ॐ अपां पतये वरूणाय नमः।

इसके बाद पञ्चोपचार पूजन करें। तीर्थों का आहवान करें। कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकलाः। संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यतं।। कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।। कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तदीपा च मेदिनी। अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती।। कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी। तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।। नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः। पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टि करी तथा। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥

ॐ मनो जूतिर्जीषतामाज्यस्य बृह्स्प्यति र्व्यज्ञिम्ममं तेनोत्वरिष्टुं च्युज्ञ ६ सिम्मं देधातु । व्विश्धे देवासे ऽइह मदियन्तामो३ँप्प्रतिष्ठु । कलशे वरूणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । ॐ वरूणाद्यावाहित देवताभ्यो

नमः ॥

वरूणाद्यावाहित देवताओं का षोडशोपचार पूजन करें। कलश प्रार्थना

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।। त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्विय स्थिताः। त्विय तिष्ठन्ति भूतानि त्विय प्राणाः प्रतिष्ठिता।।

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रूद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥ त्विय तिष्ठिन्त सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुं मीहे जलोद्भव।। सान्निध्यं कुरू मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।। नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्चेतहाराय सुमङ्गलाय। सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥ घटे धान्या घाटे कनक कुलिसाद्याक्षतयुते प्रपूर्णे श्री गङ्गाविमलयमुनानीर निकटे। चतुर्वेदैः नित्यै सविधि सकलै:देव दनुजै: स्थिते श्री नीरीशं वरूणमधुनायामि शरणम्॥ हे पाश भूत वरूणनाथ जलेशदेव दीने दया मिय विधेहि सदा सुदेव। नातः परं किमपि प्रार्थियतव्य मस्ति पुष्पाञ्जलिं ननु गृहाण सदा मदीयम्।।

## पुण्याहवाचनम्

अवनिकृत जानुमण्डलः कमल-मुकुल सदृशमञ्जलि शिरस्या-धायाऽनन्तरं दक्षिणेन पाणिना स्वर्णपूर्ण कलशं धारियत्वा आशिषः प्रार्थयेत्।

पृथ्वी पर (वीरासन मुद्रा में) बैठकर कमल के सदृश अपनी अंजित को सिर पर रखकर, दाहिने हाथ में सोने आदि के जलपूर्ण कलश को अपने सिर से स्पर्श कर यजमान अपने आशीर्वाद के लिए ब्राह्मणों से प्रार्थना करें।

यजमानः - दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च । तेनाऽयुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।। विप्रा: - अस्तु दीर्घमायु: । (ब्राह्मण कहें)

यजमानः - ॐ ऋीणि प्दा व्यिचेक्क्रमे व्यिष्णुंग्रांपा ऽअदिष्म्यः । अतो धर्माणि धारयेन्॥ तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।

इसके बाद दो बार सिर से उस कलश का स्पर्श कर यथा

स्थान रखें।

यजमान: - ॐ शिवा आप: सन्तु । (यजमान ब्राह्मणों के साथ में

जल दें)

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) सन्तु शिवा आप: ।

यजमानः - सौमनस्यमस्तु । (यजमान् ब्राह्मणों के हाथ में पुष्प दें)

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) अस्तु सौमनस्यम्।

यजमान: - अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु । (यजमान ब्राह्मणों के हाथ में

अक्षत दें)

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) अस्तवक्षतमरिष्टं च।

यजमान: - गन्धाः पान्तु । (यजमान ब्राह्मणों को चन्दन टें)

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) सुमङ्गल्यं चाऽस्तु ।

यजमान: - अक्षताः पान्तु । (यजमान ब्राह्मणों के हाथ में अक्षत दें)

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) आयुष्यमस्तु ।

यजमान: - पुष्पाणि पान्तु । (यजमान ब्राह्मणों के हाथ में पुष्प दें)

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) सौश्रियमस्तु ।

यजमान: - सफलताम्बूलानि पान्तु । (यजमान ब्राह्मणों के हाथ में

फल और ताम्बूल दें)

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) ऐश्वर्यमस्तु ।

यजमान: - दक्षिणाः पान्तु । (यजमान ब्राह्मणों के हाथ में दक्षिणा

दें)

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) बहुदेयं चास्तु ।

यजमान: - पुनरत्राऽप: पान्तु । (यजमान ब्राह्मणों के हाथ में जल दें)

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) स्वर्चितमस्तु ।

यजमानः - (यजमान कहें) दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चाऽयुष्यं चाऽस्तु ।

विप्रा: - (ब्राह्मण कहे) तथाऽस्तु ।

यजमानः - (यजमान कहें) यं कृत्वा सर्ववेद-यज्ञ-क्रियाकरण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमार्दि कृत्वा ऋग् - यजुः - सामा - ऽथर्वा - ऽशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचियष्ये ।

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) वाच्यताम्।

करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चाऽपि द्विजातयः।
सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा।।
ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः।
तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः।।
स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च।
स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा।।
स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे।।
लक्ष्मीररून्थती चैव कुरूतां स्वस्ति तेऽनध।
असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाऽङ्गिराः।।
विश्वष्टः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः।।

स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्त्तिकेयश्च षणमुखः। विवस्वान् भगवान् स्वस्ति करोतु तव सर्वदा।। दिग्ग्जाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः। अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारयते हि यः।। शेषश्च पन्नगश्चेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु।।

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत् प्रचितिष्ठ्ठत । नेष्ट्रादृतुभिरिष्ण्यत ॥

ॐ स्विता त्वां स्वानां छ सुवता मृग्निग्र्वृहपतीना छ सोमो व्वन्स्प्पतींनाम् । बृहुस्प्पति र्व्वाचऽइन्द्रो-ज्यैष्ट्याय रूद्र् पृशुब्भ्यों मिन्न्र् सृत्यो व्वर्र्णो धर्मापतीनाम् ॥

ॐ न तद्रक्षां ७ सिं न पिशाचास्तरिकत देवानामोर्ज÷प्रथम्ज ७ ह्येतत् । यो बिभित्तं दाक्षायण १ हिरणण्य १ स देवेषुकृणुते दीर्ग्यमायुः समनुष्य्येषु कृणुते दीर्ग्यमार्यः ॥

ॐ उच्चा ते जातमन्ध्रसो दिविसद्धम्म्यादेदे । उग्ग्र ७ शर्म्म महिश्श्रवं÷ ॥

ॐ उपस्मि गायता नरः पर्वमानायेत्र्देवे । अभि देवाँ२ ॥ इयक्षते ॥

यजमान: - (यजमान कहें)— व्रत-जप-नियम-तप:-स्वाध्याय-व्रत्तु-शम-दम-दया-दान-विशिष्टानां सर्वेषां ब्रह्मणानां मन: समाधीयताम्'।

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) 'समाहितमनसः स्मः॥

यजमान: - (यजमान कहें) - 'प्रसीदन्तु भवन्तः'।

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) - 'प्रसन्नाः स्मः'।।

इसके बाद यजमान बायें हाथ में अक्षत लेकर दाहिने से 'ॐ शान्ति रस्तु' से लेकर 'पुण्यं पुण्याहं वाचियष्ये' तक वाक्य पढ़कर कलश पर दो-दो दाना अक्षत चढ़ावे। इन वाक्यों के मध्य 'ॐ अरिष्ट निरसन मस्तु' से लेकर 'तदूरे प्रतिहत मस्तु' तथा 'ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः' से 'ॐ शाम्यन्तू पद्रवाः' तक पढ़कर अलग-अलग कसोरे में अक्षत छोड़ें।

ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्म समृद्धिरस्तु। ॐ धर्म समृद्धिरस्तु। ॐ वेद समृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्य समृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु। (बहिः) ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु । ॐ यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तदूरे प्रतिहतमस्तु। (अन्तः) ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरिभवृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथि-करण-मूहुर्त-नक्षत्र-ग्रह-लग्न-सम्पदस्तु। ॐ तिथि-करण-मुर्हूत-नक्षत्र-ग्रह लग्नाधि-देवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथि करणे-स मुहूर्ते स नक्षत्रे स ग्रहे स लग्ने साधि दैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरूद्गणाः प्रीयन्ताम् । ॐ वसिष्ठ पुरोगाः ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धती पुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णु पुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋब्द्विकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकारी

प्रीयताम्। ॐ भगवती पृष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तृष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्त्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः। (अन्तः) ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आतृथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहृतयः सन्तु। ॐ शिवा आहृतयः सन्तु। ॐ शिवा आहृतयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहृतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ज् नृकामे निकामे न छ पूर्जिन्यो व्वर्षतु फलिवत्यो । नृ ऽओषिधयः पच्च्यन्तां ख्योगक्षेमो न ÷ कल्प्यताम् ॥

ॐ शुक्रा ऽङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु सोम सिहतादित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु याज्या– यत्पुण्यंतदस्तु वषटकारेणयत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु। एतत्कल्याण युक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचियिष्ये।

ब्राह्मण: - (ब्राह्मण कहें) वाच्यतामिति।

यजमान: - (यजमान कहें) -

ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्य सृष्ट्युत्पादनकारकम्। वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुक याग कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। विप्रा:-(ब्राह्मण कहें) ॐ पुण्याहं पुण्याहं पुण्याहम्।

यजमान: - (यजमान कहें) ॐ अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) ॐ पुण्याहं पुण्याहं पुण्याहम्।

ॐ पुनन्तु मा देवजना पुनन्तु मन सा धिय । पुनन्तु व्यिष्धा भूतानि जाते वेद पुनी हि मा॥ ॐ पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।

ॐ पृथिव्यामुद्धृताया तु यत्कल्याण पुरा कृतम्। ऋषिभिः सिद्ध गन्धर्वे स्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुक याग कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

यजमान: - (यजमान कहें)

विप्राः - (ब्राह्मण कहें) ॐ कल्याणं कल्याणं कल्याणम्।

ॐ वर्थमां व्वाचं कल्याणीमावदानि जने क्या । ब्बह्मराज्ञ्याक्यां ७ श्रुद्राय चार्व्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भ्रुयासम्यं मे काम्हं समृद्धयतामुपं मादो नमतु॥

यजमान: - (यजमान कहें)

ॐ सागरस्य तु ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता। सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः॥ भो ब्रह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुक याग कर्मणः ऋद्धिं

भवन्तो ब्रुवन्तु । यजमान:-(ब्राह्मण कहें) ॐ कर्मऋध्यताम् कर्मऋध्यताम् कर्मऋध्यताम् ।

ॐ स्त्र्त्रस्यऽऋिद्धरस्यगेनम् ज्ज्योतिरुमृताऽअभूम्। दिविम्पृथिव्याऽअध्द्यार्लहामाविदामदेवानस्वज्जीति÷॥ यजमानः - (यजमान कहें)

क्षं स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या पुण्य कल्याण वृद्धिदा। विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुक याग कर्मणः स्वस्ति

भवन्तो ब्रुवन्तु ।

यजमानः - (ब्राह्मण कहें) ॐ आयुष्मते स्वस्ति-३

ॐ स्वृस्ति न ऽइन्द्रो व्वृद्धश्र्यवाङं स्वृस्ति नेः पूषा व्विश्यवेदाङं। स्वृस्ति नुस्ताक्ष्योऽअरिष्ट्टनेमिङं स्वृस्तिनो बृहुस्प्पतिर्द्धातु॥

यजमानः - (यजमान कहें)

ॐ समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका। हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुक याग कर्मणः श्रीरिस्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।।

यजमान: - (ब्राह्मण कहें) ॐ अस्तु श्री:, अस्तु श्री:, अस्तु श्री:।

ॐ श्रीशश्च ते लृक्ष्मीशश्च पत्न्यांवहोराञ्जे पाशर्थे नक्षंत्राणि रूपमृश्चिनौ ळ्यात्तम् । इष्णणन्निषाणामुं मे ज्ञाण सर्व्वलोकम्मे उइषाण॥

यजमान: - (यजमान कहें)

ॐ मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा। आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्।।

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः, शतं जीवन्तु भवन्तः, शतं जीवन्तु भवन्तः ।

ॐ शृतिमञ्ज शृरदोऽअन्ति देवा यत्र्यो नश्श्यक्का <sup>जास</sup>न्तनूनीम् । पुत्र्यासो यत्र्यं पितरो भवन्ति मा नो <sup>पृथ्द्</sup>या री'रिष्तायुर्गान्तो'हं॥ यजमानः - (यजमान कहें)

ॐ शिव-गौरी विवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे। धनदस्य गृहेया श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि।।

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) ॐ अस्तु श्री:, ॐ अस्तु श्री:, ॐ अस्तु

ॐ मनस्र काम्माकृतिं व्याच्यः स्त्यमंशीय। प्रशूनाॐरूपमन्नस्य रसो वश्रः श्रीः श्रीयतां मिय स्वहा॥

यजमान: - (यजमान कहें)

ॐ प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्। भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः।।

विप्रा: - (ब्राह्मण कहें) 🕉 भगवान् प्रजापितः प्रीयताम्।

ॐ प्रजीपते न त्वदेतात्र्यत्र्यो व्विश्वा रूपाणि परि ता बिभूव । यत्कीमास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्त्वयमुमुख्ये पितासावस्य पिता व्वयणं स्योम् पत्यो रयीणाणंस्वाही ॥

यजमान:-(यजमान कहें) आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे। श्रिये दत्ताषिशः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः॥

विप्राः - (ब्राह्मणे कहें) ॐ आयुष्मते स्वस्ति, ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।

ॐ प्रति पन्थामपद्मिह स्वस्ति गामनेहसम् वेन् व्यिश्धां परि द्विषो व्यूणिक व्यन्ति व्यस् ।

स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु ।

#### संकल्प-

कृतस्य स्वस्तिवाचन कर्मणः समृद्ध्यर्थं स्वस्तिवाचकेश्यो ब्राह्मणेश्य इमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ।

### अभिषेक:

एकस्मिन् पात्रे वरूणोदकं गृहीत्वाऽविधुराश्चत्वारो ब्राह्मणाः दुर्वाऽप्रपल्लवैः सकुटुम्बं वामभागस्थितां पत्नीं यजमानं चाऽभिषिश्चेयुः ।

तदनन्तर अविधुर (विवाहित, जिनकी पत्नी जीवित हो) ब्राह्मण हाथ में कलश के जल को किसी दूसरे पात्र में लेकर दूर्वा एवं आम्रपल्लव-सहित उस जल से (उत्तरमुख बैठे हुए या खड़े हुए) सपरिवार बायीं ओर पत्नी सहित यजमान के मस्तक पर मन्त्रों को पढ़ते हुए जल छिड़कें।

## षोडशमातृका पूजनम्

आग्नेय्यां प्रतिमास्वक्षत पुञ्जेषु वा प्राक्संस्थमुदक्संस्थं वा पीठोपरि मातृकास्थापनं कुर्यात् । तद्यथा—

(१) ॐ गृणानांन्त्वा गृणणंति हवामहे िष्प्र्याणांन्त्वा िष्प्रयपति हवामहे निष्धीनान्त्वां निष्धिपति हवामहे विष्यानान्त्वां निष्धिपति हवामहे व्यामहे व्य

- (२) ॐ आयं गौं पृष्ठित्रं स्वः गौर्ये नमः गौरीमावाहयामि प्रितरं च प्रायन्त्स्वः। ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्ये नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि ।।
- (३) ॐ हिरंण्ण्यरूपा उठ्रषसो व्विरोकऽठ्रभाविन्या उडिदिशृहं सूर्व्यश्रश्रा आरो हतं व्वरुणिमात्रा गर्ने तर्तश्राक्षाथामदितिं दितिं च मित्र्रोऽसि व्वरुणोऽसि॥ ॐ भूर्भवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि।
- (४) ॐ निवेशन स्मुमनो व्वसूनां विश्धा रूपाभिचष्टे शचीभि । देव ऽईव सिवृता सृत्यध्में न्रो न तुस्त्यी सम्रे पथीनाम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि।
- (५) ॐ मेधां मे ळ्करणो ददातु मेधाम् निः प्रजापितिः । मेधामिन्द्रंश्य ळायुरश्यं मेधांधातादेदातु मे स्वाहां।। ॐ भूर्भवः स्वः मेधायै नमः मेधामावहयामि स्थापयामि ।
- (६) ॐ स्विता त्त्वां स्वानां स्वानां स्वताम् । वृहस्प्यतिर्व्वाच उइन्ह्रों पतीनां सोमों व्वनस्प्यतीनाम् । वृहस्प्यतिर्व्वाच उइन्ह्रों जज्येष्ठ्यां कृद्रश्रं पृशुब्ध्यों मित्र्त्रश्रं स्त्यो व्वर्रणों धर्मिपतीनाम् ॥ ॐ भूर्भवः स्वः सावित्र्ये नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥
- (७) विज्ज्यन्धर्नुः कपूर्दिनो व्विशिल्यो बाणवाँ२॥ उत्त । अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषड्गक्षिः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि ॥
- (८) ब्रह्मीनां पिता ब्रह्मरस्य पुत्र्वशिश्चश्चाकृणोति सम्मनावगत्य । इषुधि सङका प्रतेनाश्च सर्व्वा पृष्ठि

निर्नद्धो जयित प्रसूतः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि ॥

- (१) इन्द्रेऽआसान्नेता बृह्स्पितिर्हिश्रीणा खूजः पुरऽएतु सोर्मे । देवसेनानामिभभञ्जतीनाञ्जयन्तीनां मुरुतो अन्त्वग्रम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनाचै नमः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि ॥
- (१०) ॐ पितृब्भ्यं स्वधायिब्भ्यं स्वधा नर्मः पितामहेब्भ्यं स्वधायिब्भ्यं स्वधाययिव्भयं स्वधाययिव्भयं स्वधायये स्वधायये नमः स्वधाययायि स्थापयामि ॥
- (११) स्वाहा प्राणोब्ध्य हं साधिपतिवेन्ब्ध्य हं पृथिळ्ये स्वाहाग्नये स्वाहाक्रतिक्षाय स्वाहां व्वायवे स्वाहा । दिवे स्वाहा सूर्व्याय स्वाहां ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहाये नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ॥
- (१२) ॐ आपो ऽअसमान्नातरं शुन्धयन्तु घृतेनं नो घृतप्वः पुनन्तु । व्विशश्चृष्ट हि रिप्पं प्रवहंन्ति देवी कृदिद्यां शुचिरा पूत ऽएमि । दीक्षातपसो स्तनूरंसितां त्वा शिवालं शृग्मां परिदधे भूदं व्वर्णं पुष्यंन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः मातृः आवाहयामि स्थापयामि ॥
- (१३) रियश्रधिमें रायश्रि में पुष्टुं में पुष्टुंश्य में विद्युं चे में प्रूण्यं चे में पूर्णिं में पूर्णितरञ्ज में कुर्यवश्च में प्रूणितरञ्ज में कुर्यवश्च में प्रित्रञ्ज में कित्रज्ञ में अर्जन में कल्पाञ्चाम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि।।

- (१४) ॐ यत्प्रज्ञानंमुत चेतो धृतिशश्च यज्योति-रन्तरमृतम्प्रजासुं । यसमान्नऽऋते किञ्चनकर्मिक्क्यते तन्नमेमनं शिवसङ्केल्प्यमस्तु ॥ ॐ भूर्भवः स्वः धृत्ये नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि ॥
- (१५) ॐ अङ्गीत्रयात्वमित्रमुषजा तद्रिश्चनात्वमानमङ्गेर समिधात्त्सरंस्वती । इन्द्रस्य कृपष्ट शृतमीनुमायुश्चिन्द्रेण् ज्ज्योतिरमृतन्दधीनाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पृष्ट्यै नमः पृष्टिमावाहयामि स्थापयामि।
- (१६) ॐ जातवेदसे सुनवाम्सोमेमरातीयतो निर्दहातिवेदः। सनेः पर्षदिति दुर्गाणा विश्धा नावेवसिन्धुं दुरितात्यिनः॥ ॐ भूर्भवः स्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।
- (१७) ॐ प्राणाय स्वाहांऽपानाय स्वाहां व्यानाय स्वाहां चक्षुषे स्वाहा। श्रोत्र्राय स्वाहां व्वाचे स्वाहा मनेसे स्वाहा। ॐ भुर्भवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि ॥

प्राणप्रतिष्ठापूर्वक सब का पूजन कर प्रार्थना करें। प्रार्थना –

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।। धृतिः पृष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः। गणेशेनाधिका होता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडशा। आयुरारोग्यमैश्चर्यं दद्ध्वं मातरो मम। निर्विध्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं स गणिधपः।। यथाशिक्त कृतार्चनेन गणेशपूर्वक षोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम।

## वसोर्धारापूजनम्

आग्नेयां भितौ कुड्कुमादिना बिन्दुकरणेनाऽलङ्करणं कृत्वाऽऽ -गामिमन्त्रं पठन् घृतेन सप्तधाराः प्राक्संस्था उदक्संस्था वा कुर्यात् ।

- १.ॐ व्यसीं प्वित्रीमिस शृतधीं व्यसीं प्वित्रीमिस सृहस्रीधारम् । देवस्त्वी सिवृता पुनातु व्यसो प्वित्रीण शृतधिण सृप्वा॥ इति मन्त्रेण वसोधीराः कर्तव्या। "कामधुक्ष " इत्येतावता मन्त्रेण (धारामधीभागेन) गुडेनैकीकरणम् प्रतिधारामेकैक-देवतामावाहोत् ॥
- २. ॐ मनेस् काम्माकृतिं व्याचा सृत्यमेशीय पृश्नुना छ रूपमन्नस्य रसो यश्काशी श्रीयतां मिय स्वाही।। ॐ भूर्भ्वः स्वः श्रियै नमः श्रियमावाहयाभि स्थापयामि ।
- ३. श्रीशश्चे ते लृक्ष्मीश्च्य पत्न्यविहोराञ्चे पार्श्वे नक्षेत्राणि रूपमृश्चिनौ व्यात्तम् । दृष्णित्रिषाणामुं मेऽइषाण सर्व्वलोकम्मेऽइषाण ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यैः नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि ॥
- ४. ॐ भृद्रङ्कणणेभिं शृणुयाम देवा भृद्रम्पेश्येमाक्ष-भिर्ळाजन्नारं। स्थिरैरङ्गैस्तुष्ट्ट्वा ७ संस्तुन्भिर्ळ्यशोमिह देवहितं ळ्यदायुं÷ ॥ ॐ भूर्भवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि ॥
- ५. ॐ मेधां मेळकंणो ददातु मेधाम्गिनॐ प्यूजापितिॐ। मेधामिन्द्रश्ची ळायुश्ची मेधां धाता देदातु मे स्वाहां॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि॥
- ६. प्राणाय स्वाही ऽअपानाय स्वाही व्यानाय स्वाहा । चक्षुषे स्वाहा श्रोत्र्रीय स्वाही ॥ वाचे स्वाहा

मनेसे स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ॥

- ७. ॐ आयं गौं पृष्ठित्ररक्क्रमीदसंदत्रमातरं पुरंह पितरं च प्ययन्त्रवः॥ ॐ भूर्भवः स्वः प्रज्ञाये नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि॥
- ८. पावका नृष्टं सरस्वती व्वाजे भिर्वाजिनी वित। यूजं व्यष्टु धियावसुष्टं। ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वतयेनमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि ॥ प्राणप्रतिष्ठा कर सबका पूजन करके प्रार्थना करें।

### प्रार्थना

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेघा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती माङ्गल्येषु प्रपूज्यने सप्तैता घृतमातरः।

यदङ्गत्वेन भो देव्यः! पूजिता विधिमार्गतः। कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतुद्भवम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः वसोधीरा देवताभ्यो नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि। अनया पूजया वसोधीरा देवताः प्रीयन्तां न मम।।

### आयुष्यमन्त्र जपः

यदायुष्यं चिरं देवाः सप्त कल्पान्त जीविषु।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम्।।
दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्।।
सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरिहतानि च।
अविनाश्या युषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्।।
ॐ आयुष्य्यं व्वर्ण्यस्यृष्ट रायस्प्योष् मौद्धिदम्।
इद्वष्टहिरंण्ण्यं व्वर्ण्यस्व जौल्लाया विशता दुमाम्॥

ॐ न तद्रक्षणिस् न पिशाचास्तरित देवाना मोर्जः प्रथम्जिट होतत् । यो बिभित्ति दाक्षायणिट हिरणण्यट्ट स देवेषु कृणुते दीर्ग्यमायुः स मनुष्य्येषु कृणुते दीर्ग्यमायुः ॥

ॐ यदार्बध्नन् दाक्षायणा हिर्णणयक्ष शृतानी काय सुमन्स्य मौनाः तन्न्मऽआर्बध्नामि शृत शौरदाया युष्यान् ज्रदिष्ट्रिर्ळ्यथा सम्॥

## अथ नान्दी श्राद्धम्

ابدار - "فيل"	4-5-11	Ni. 15-7	
4	3	2	चित्र

पूर्व में किये हुए संकल्प के अनुसार नान्दीश्राद्ध करना चाहिए। पूर्व में विश्वेदेव के आसन के लिए उत्तराग्र कुशा रखें, तीन कुशांसन दक्षिण से पूर्वाग्र रखें। जिसमें प्रथम आसन पर मातृ, पितामही और प्रपितामही तथा द्वितीय आसन पर पितृ, पितामह और प्रपितामह तथा तृतीय आसन पर सपत्नीक, मातामह, प्रमातामह और वृद्ध-प्रमातामह का आवाहन एवं पूजन करें।

पादप्रक्षालनम् — (चारों स्थान पर पैर धोने के लिये जल देवें) ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ मातृ पितामही प्रिपतामहाः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ पितृ पितामह प्रिपतामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं प्रादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं प्रादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

अनस्मद्वृद्धयशब्दानामरुपाणामगोत्रिणाम् । अनाम्नामतिलाद्येश्च नान्दीश्राद्धं च सव्यवत् ॥

आसनदानम् – (चारों स्थानों पर कुशाओं का आसन देवें) 🕉 सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राब्देक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।। ॐ मातृ पितामही प्रपितामहाः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राब्देक्षणौ क्रियेतां तथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः। ॐ पित पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राब्धे-क्षणौ क्रियेतां तथा प्राप्नुवन्तो भवनतः तथा प्राप्नुवामः। ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राब्देक्षणौ क्रियेतां तथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।।

गन्धादिदानम- (चारों स्थान पर गन्ध पुष्पादि देवें) ॐ सत्यवसु-संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्च नं (स्वाहा) सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातृ पितामही प्रपितामहाः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । ॐ पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्थाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

भोजननिष्क्रयदानम् - (चारों स्थान पर भोजन-निष्क्रय निमित्त दक्षिणा देवें) ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्ता ऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । ॐ मातृ पितामही प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । ॐ पितृ पितामह प्रिपतामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

3% मातामह-प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः 3% भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

स-क्षीरमवमुदकदानम् — (दूध, यव, जल में मिलाकर दाहिने हाथ में लेकर चारों स्थान पर पृथक्-पृथक् देवें) ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दी मुखाः प्रीयन्ताम् । मातृ पितामही प्रपितामहाः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम् । पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् । मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् । ।

जलाऽक्षत-पुष्पप्रदानम् — (जल-अक्षत-पुष्प लेकर चारों स्थानों में चढ़ायें) चतुर्थं स्थानेषु-शिवा आपः सन्तु इति जलम्। सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्। अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु इत्यक्षतान्।।

जलधारादानम् - (चारों स्थानों पर अँगूठे की ओर से पूर्वाग्र जल की धारा देवें) ॐ अघोराः पितरः सन्तु । इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् । इति सदाचारः।।

आशीः प्रार्थना — (यजमान हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे) ॐ गोत्रन्नो वर्धताम् दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदितथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु।

ब्राह्मणाः – सन्त्वेताः सत्या आशिष इति ।

ततो दक्षिणादानम् ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्यनान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षा-ऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे । ॐ मातृ पितामही प्रपितामहाः नान्दी मुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यवमूल- निष्क्रियणीं दक्षिणां दातुमहमुत्पृजे। ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यवमूल-निष्क्रियणीं दक्षिणां दातुमहमुत्पृजे।।

ॐ उपस्मि गायता नर् पर्वमाना येव्र्वे । अभि देवाँ२ ॥ इयेक्षते ।

ॐ इडामग्ग्ने पुरूद्ध संध स्निङ्गो? शश्चित्त्मध हर्वमानाय सार्ध । स्यात्रं÷ सूनुस्तनयो व्विजावाग्ग्ने सा ते सुमृतिभूत्वसमे ॥

यजमान कहे - अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम् । ब्राह्मण कहे - सुसम्पन्नम् ।

## विसर्जनम्

ॐ व्वाजे वाजेऽवत व्वाजिनो नो धने खे विष्प्रा ऽअमृता ऽऋतज्ञाः अस्य मद्ध्वं पिबत माद यद्ध्वं तृप्ता यति पृथिभिर्देवयाने ॥

ॐ आ मा व्वाजस्य प्रस्वो जंगम्यादेमे द्यावीपृथिवी व्विश्व रूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा च मा सोमो ऽअमृत्त्वेन गम्यात्॥

इन मंत्रों से विसर्जन करके-

यजमान कहे- मयाऽऽचरिते साङ्कल्पिक नान्दीश्राब्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्री गणेश प्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।

अस्तु परिपूर्णः — ऐसा ब्राह्मण कहें।

## आचार्यादिवरणम्

इसके बाद यजमान आसन पर आचार्य को उत्तर मुँह बैठाकर चन्दन, अक्षत और पुष्पादि से पूजा करे। ॐ अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुकप्रवरान्वित अमुकशर्माऽहम् अमुकगोत्रोत्पन्न ममुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाज सनेयमाध्यन्दिनीय शाखाध्यायिन ममुक शर्माणं ब्राह्मणमस्मिन् अमुक याग कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वाम् वृणे।।

ब्राह्मणः - वृतोऽस्मि ऐसा कहे।

यजमान इस प्रार्थना श्लोक को पढ़े।

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत।।

ब्रह्मवरणम् - यजमान हाथ में वरणद्रव्य ब्रह्मवरण के लिए ब्राह्मण के हाथ में दे दे।

अस्मिन अमुक याग कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्र-ममुक-शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ।

ब्राह्मण कहे - वृतोऽस्मि।

यजमान इस श्लोक को पढ़कर ब्रह्माजी की प्रार्थना करे।

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोक पितामहः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम।।

## ऋत्विक्वरणम्

फिर यजमान ऋत्विक्वरण के निमित्त हाथ में जल, अक्षत और वरण सामग्री लेकर पाठ करने वाले प्रत्येक ब्राह्मणों के हाथ में दे दे।

अस्मिन् अमुकयाग कर्मणि एभिर्वरण द्रव्यैरमुक गोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे ।

ब्राह्मण्गण- वृतोऽस्मि - इस प्रकार कहें।

यजमान इस श्लोक को पढ़कर प्रर्थना करे।

भगवन् सर्वधर्मज्ञ! सर्व धर्म परायण। वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नृत्विक् त्वं मे मखे भव।।

ॐ व्वतेनं दीक्षामां प्लोति दीक्षाया जोति दक्षिणाम्। दक्षिणा शशुद्धा माप्नोति शश्रुद्धया सत्यमाप्यते ॥ ततो यजमानः करसम्पुटं कृत्वा सर्वान् प्रार्थयेत् ।

### प्रार्थना

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः। ग्रहध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा।। अदुष्ट भाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः। ममाऽपि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि।। ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्। यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः।। अस्मिन् कर्मणि ये विप्राः वृता गुरूमुखादयः । सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम्।। अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया। सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधि पूर्वकम्।। यथाविहितं कर्म कुरू (एकतन्त्रपक्षे कुरूत)

विप्र: - यथा स्थानं करवाणि (करवामः) ।।

## मण्डप प्रवेशः

हाथ से पुष्प अक्षत लेकर पृथ्वी का ध्यान कर पूजन करें। ॐ पृथ्वीं चतुर्भुजां शुक्लवर्णांकूर्म पृष्ठो परिस्थिताम्। शंखपद्मधरां चक्र शूलं हस्तां धरां आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोक धारिणि। पृथ्वीत्वं ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभि वन्दिता।।

ॐ भूम्यै: नम: (ऐसा बोलकर)

उध्दृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
दंष्ट्राग्रैर्लीलया देवि यज्ञार्थं प्रणमाम्यहम्।।
ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शङ्करेण च।
पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दवैश्रवणेन च।।
यमेन पूजिते देवि धर्मस्यविजिगीषया।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनं रूपं च पूजिता।।
गृहाणार्धिममं देवि सौभाग्यं च प्रयच्छ मे।।
ॐ भूम्यै नमः अर्घ्यंसमर्पयामि। ततो गन्धपुष्पधूपदीप
नैवेद्यैः भूमिमर्चयेत्।

दिग् रक्षणम्

बायें हाथ में पीली सरसों लेकर दाहिने हाथ से ढ़के। फिर इस मन्त्र को पढें—

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्। विष्णु रूद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्।। स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्। धरणीगर्भ सम्भूतं, शिशपुत्रं बृहस्पतिम्।। दैत्याचार्यं नमस्कृत्य, सूर्यपुत्रं महाग्रहम्। राहुं केतुं नमस्कृत्य, यज्ञारम्भे विशेषतः।। शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्चैव तपोधनान्। गर्ग मुनिं नमस्कृत्य, नारदं मुनिसत्तमम्।। विशिष्ठं मुनिशार्दूलं, विश्वामित्रं च गोभिलम्। व्यासं मुनिं नमस्कृत्य, सर्वशास्त्र विशारदम्।। विद्याधिका ये मुनय आचार्याश्च तपोधनाः। तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षा करान् सदा।। पूर्वीद क्रम से दिशाओं में सरसों फेकें।

ॐ रक्षोहणं व्यलगृहनं वैष्णण्वी मिदमहं तं व्यलग्-मुित्तरामि वं मे निष्ट्यो वम्मात्यो निच्खानेदमृहं तं व्यलगमुित्वरामि वं मे समानो वमसमानो निच्खानेदमृहं तं व्यलगमुित्वरामि वं मे स बन्धु र्व्यम स बन्धिर्त्रच्खानेद महन्तं वेल गमुित्वरामि वमे सजातो यमसजातो निच्खानोत्कृत्याङ्करामि॥

ॐ रुक्षोहणो व्यो व्यलगृहन् प्रोक्षामि व्येष्ण्या-न्त्रक्षोहणो वो व्यलगृहनो वनयामि व्येष्ण्यानन्त्रक्षोहणो वो व्यलगृहनो-वस्तृणामि वैष्ण्यावान्त्रक्षोहणी वां व्यलगृहना-ऽउपंदधामि-व्येष्ण्यावीर्यक्षोहणी वां व्यलगृहना-पर्व्याह्मिव्येष्ण्यावी-व्येष्ण्यावमिसव्येष्ण्यावास्त्ये ॥

ॐ रक्षंसाम्भागोसिनरंस्तृष्ट रक्षंऽइदमह्ह रक्षोभि-तिष्ठामीदमहह रक्षोवंबाधऽइदमहह रक्षोधमन्तमोनयामि ॥ घृतेनद्यावापृथिवीप्पोणुवाथांव्वायोव्वेस्तोकानामगिन राज्यंस्यव्वेतु स्वाहा स्वाहांकृतेऽऊद्धर्त्नभसम्मारुत-क्रेब्छतम् ॥

ॐ रक्क्षोहाव्विश्वचर्षणि रिभयोनिमयोहते। ह्रोणेस्ध-स्थमासंदत्। ॐ कृणुष्वपाज् ध्रसितिन्नपृर्व्वीं ख्वाहिराजे-वामवाँ २०इभेन। तृष्वीमनुष्यसितिन्द्रणानोस्तिसिव्बध्येरक्ष-सस्तिषिष्ठे ॥

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।। अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे।।
भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु यावत्कर्म करोम्यहम्।।
भूतप्रेतिपशाचाद्याः अपक्रामन्तु राक्षसाः।
स्थानादस्माद् ब्रजंत्वन्यत् स्वीकरोमि भुंवित्वमाम्।।

इन मन्त्रों से सरसों बिखेर देवें और बायें पैर तीन बार भूमि पर पटक कर (भूमि का ताड़न) करें। फिर—

दिग्रक्षण करने के बाद पञ्चगव्य मण्डप में छिड़के— 'आपोहिष्ठा०' इत्यादि मन्त्रों से ।

## अथ वास्तुपीठपूजनम्

मण्डपनैर्ऋत्यकोणे चतुःषष्टिपूजनम् वास्तुमण्डलं रुचितं तत्समीपे प्राङ्मुखोदङ्मुखो वा उपविश्याऽऽचम्य प्राणानायम्य ।

देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रः अमुकशर्माऽहं ड सनवग्रहमख-स प्रसाद स नन्दीश्वर शिवादि मूर्तीनां स्थिर प्राणप्रतिष्ठा कर्मणि. <sup>मण्डपाङ्ग</sup>वास्तु पूजनं करिष्ये।

ततो वास्तु वेदी चतुषट्कोणेषु लोहशंकुर्चतुष्टयमाग्नेयादि प्रदक्षिणं क्रमेण रोपयेत् ।

तत्र रोपणमन्त्रम् (कील गाडने का मंत्र)

ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालश्च सर्वतः। मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्वलकराः सदा।।

बिल देने का मंत्र—

इत्याग्नेय्याम् (अग्निकोण)

ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चाऽन्ये तान्समाश्रिताः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदनमुत्तमम्।।

नैर्ऋत्याम् (नैर्ऋत्यकोण)

ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां तान् समाश्रिताः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि सर्वे गृह्णन्तु मन्त्रितम्।।

वायव्याम् (वायव्यकोण)

ॐ वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः। बलि तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।।

इत्येशान्याम् (ईशानकोण)

ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चाऽन्ये तत्समाश्रिताः। बलि तेभ्यः प्रयच्छामि गृह्णन्तु सततोत्सुकाः।।

इति मन्त्रेण तत् क्रमेण तत्पार्श्वे माषभक्त बलिं दद्यात् । ततो वास्तुपीठे कुंकुमादिना कनकशलकया रजत पुटकेन नवरेखा कार्या। प्रथमं प्रागन्ताः नवरेखा कार्याः—ॐ द्यौः शान्ति----- सामाशन्तिरेधि।

इनकी पूजा करे। पश्चात् वास्तुपीठ पर वस्त्र फैलाकर पश्चिम से पूर्वतक उदकसंस्था समा "नवरेखा पूजनम्" रेखाओं का आहवान करें।

#### आवाहन-स्थापन

- १. ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- २. ॐ भूर्भुवः स्वः यशोवत्यै नमः यशोवतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ३. ॐ भूर्भुवः स्वः कान्तायै नमः कान्तामावाहयामि स्थापयामि ।
- ४. ॐ भूर्भुवः स्वः सुप्रियायै नमः सुप्रियामावाहयामि स्थापयामि ।
- ५. ॐ धूर्भुवः स्वः विमलायै नमः विमलामावाहयामि स्थापयामि ।
- ६. ॐ भूर्भुवः स्वः शिवायै नमः शिवामावाहयामि स्थापयामि ।
- ७. ॐ भूर्भुवः स्वः सुभगायै नमः सुभगामावाहयामि स्थापयामि ।

- ८. ॐ भूर्भुवः स्वः सुमत्यै नमः सुमितमावाहयामि स्थापयामि ।
- ९. ॐ भूर्भुवः स्वः इडायै नमः इडामावाहयामि स्थापयामि ।

तत उदगन्ता, नवरेखास्थापनम्

- १. ॐ भूर्भुवः स्वः धान्यायै नमः धान्यामावाहयामि स्थापयामि ।
- २. ॐ भूर्भुवः स्वः प्राणायै नमः प्राणामावाहयामि स्थापयामि ।
- ३. ॐ भूर्भुवः स्वः विशालायै नमः विशालामावाहयामि स्थापयामि ।
- ४. ॐ भूर्भुवः स्वः स्थिरायै नमः स्थिरामावाहयामि स्थापयामि ।
- ५. ॐ भूर्भुवः स्वः भद्रायै नमः भद्रामावाहयामि स्थापयामि ।
- ६. ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि ।
- ७. ॐ भूर्भुवः स्वः निशायै नमः निशामावाहयामि स्थापयामि ।
- ८. ॐ भूर्भुवः स्वः विरजायै नमः विरजामावाहयामि स्थापयामि ।
- ९. ॐ भूर्भुवः स्वः विभवायै नमः विभवामावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ मनोजूति • से प्रतिष्ठापूर्वक, रेखाओं का पूजन करें। इसके अनन्तर शिख्यादि चौंसठ वास्तु देवताओं का आवाहन तथा स्थापन करें।

## शिख्यादिवास्तुपूजनम्

ऐशानकोणदक्षिणार्धपदे (लाल)—

- १. ॐ शिखिने नमः शिखिनमावाहयामि स्थापयामि । तद्दक्षिणे सार्धपदे (पीला)—
- २. ॐ पर्जन्याय नमः पर्जन्यमावाहयामि स्थापयामि । तद्दक्षिणपदद्वये (पीला)—
- ३. ॐ जयन्ताय नमः जयन्तमावाहयामि स्थापयामि । तद्दक्षिणपदद्वये (पीला)
- ४. ॐ कुलिशायुधाय नमः कुलिशायुधमावाहयामि स्थापयामि । तद्दक्षिणपदद्वये (लाल)—
  - ५. ॐ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ।

#### तद्दक्षिणपदद्वये (सफेद)—

- ६. ॐ सत्याय नमः सत्यमावाहयामि स्थापयामि । तद्दक्षिणसार्द्ध पदे (काला)—
- ७. ॐ भृशाय नमः भृशमावाहयामि स्थापयामि । तद्दक्षिणाग्नेय पदार्घे (काला)—
- ८. ॐ आकाशाय नमः आकाशमावाहयामि स्थापयामि। तद्पश्चिमार्ब्हे (धूम्र)—
- ९. ॐ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि ।तद्पश्चिमे सार्द्धपदे (लाल)—
- १०. ॐ पूष्णे नमः पूष्णमावाहयामि स्थापयामि । तद्पश्चिमपदद्वये दक्षिणपार्श्चे (सफेद)—
- ११. ॐ वितथाय नमः वितथमावाहयामि स्थापयामि । तद्पश्चिमपदद्वये दक्षिणपार्श्चे (पीत)—
- १२. ॐ गृहक्षताय नमः गृहक्षतमावाहयामि स्थापयामि। तत्पश्चिमपदद्वये दक्षिणोरुभागे (काला)—
- १३. ॐ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि । तत्पश्चिमे पदद्वये (लाल)—
- १४. ॐ गन्धर्वाय नमः गन्धर्वमावाहयामि स्थापयामि । तत्पश्चिमे सार्द्धपदे (काला)—
- १५. ॐ भृङ्गराजाय नमः भृङ्गराजमावाहयामि स्थापयामि । तत्पश्चिमे नैर्ऋत्य पदार्ब्हे (पीला)—
- १६. ॐ मृगाय नमः मृगमावाहयामि स्थापयामि । तदुत्तरार्धपदे (लाल)—
- १७. ॐ पितृभ्यो नमः पितृनावाहयामि स्थापयामि । तदुत्तरे सार्द्धपदे (लाल)—
  - १८. ॐ दौवारिकाय नमः दौवारिकमावाहयामि स्थापयामि ।

तद्तर पदद्वये (सफेद)—

- १९. ॐ सुग्रीवाय नमः सुग्रीवमावाहयामि स्थापयामि । तदुत्तर पदद्वये (लाल)—
- २०. ॐ पुष्पदन्ताय नमः पुष्पदन्तमावाहयामि स्थापयामि । तदुत्तर पदद्वये (सफेद)—
- २१. ॐ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि । तदुत्तर पदद्वये (पीला)—
- २२. ॐ असुराय नमः असुरमावाहयामि स्थापयामि । तदुत्तर सार्द्धपदे (काला)—
- २३. ॐ शोषाय नमः शोषमावाहयामि स्थापयामि । तदुत्तरे वायव्यपदार्द्धे (पीला)—
- २४. ॐ पापाय नमः पापमावाहयामि स्थापयामि । तस्राक् पदार्द्धे (लाल)—
- २५. ॐ रोगाय नमः रोगमावाहयामि स्थापयामि । तत्प्राक् सार्द्धपदे (लाल)—
- २६. ॐ अहये नमः अहिमावाहयामि स्थापयामि । तत्प्राक् पदद्वये (लाल)—
- २७. ॐ मुख्याय नमः मुख्यमावाहयामि स्थापयामि । तस्राक् पदद्वये (काला)—
- २८. ॐ भल्लाटाय नमः भल्लाटमावाहयामि स्थापयामि । तत्प्राक् पदद्वये (सफेद)—
- २९. ॐ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि । तत्प्राक् पदद्वये (काला)—
- ३०. ॐ सर्पाय नमः सर्पमावाहयामि स्थापयामि । तत्प्राक् सार्ब्धपदे (पीला)—
  - ३१. ॐ अदित्यै नमः अदितिमावाहयामि स्थापयामि ।

#### तत्प्रागर्द्धपदे (पीला)—

- ३२. ॐ दित्यै नमः दितिमावाहयामि स्थापयामि । मध्यपदेषु ईशानपदोत्तरार्द्धे (सफेद)—
- ३३. ॐ आपाय नमः आपमावाहयामि स्थापयामि । आग्नेय पदोत्तरार्धे (सफेद)—
- ३४. ॐ सावित्राय नमः सावित्रमावाहयामि स्थापयामि। नैर्ऋत्यपदोत्तरार्धे (काला)—
- ३५. ॐ जयाय नमः जयमावाहयामि स्थापयामि। वायव्यपदोत्तरार्धे (लाल)—
- ३६. ॐ रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि स्थापयामि। मध्येप्राक् पदद्वये (लाल)—
- ३७. ॐ अर्यम्णे नमः अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि । आग्नेयपदपूर्वार्द्धे (सफेद)—
- ३८. ॐ सवित्रे नमः सवितारमावाहयामि स्थापयामि । तत्पश्चिम पदद्वये (लाल)—
- ३९. ॐ विवस्वते नमः विवस्वतमावाहयामि स्थापयामि । नैर्ऋत्यपदपूर्वार्द्धे (लाल)—
- ४०. ॐ विबुधाधिपाय नमः विबुधाधिपमावाहयामि स्थापयामि । तदुत्तरपदद्वये (सफेद)—
- ४१. ॐ मित्राय नमः मित्रमावाहयामि स्थापयामि । तदुत्तरे वायव्यपदपश्चिमार्द्धे (लाल)—
- ४२. ॐ राजयक्ष्मणे नमः राजयक्ष्माणमावाहयामि स्थापयामि । तत्प्राक् पदद्वये (लाल)—
- ४३. ॐ पृथ्वीधराय नमः पृथ्वीधरमावाहयामि स्थापयामि । ईशानपद दक्षिणार्द्धे (लाल)—
  - ४४. ॐ आपवत्साय नमः आपवत्समावाहयामि स्थापयामि ।

ततो मध्यपदचतुष्टये (लाल)—

४५. ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि । ततो मण्डलाद् बहिःईशान्यां (हरित)—

४६. ॐ चरक्यै नमः चरकीमावाहयामि स्थापयामि । आग्नेय्यां (लाल)—

४७. ॐ विदार्थे नमः विदारीमावाहयामि स्थापयामि । ततो मण्डलाद् बहिः नैऋत्याम् (पीला)—

४८. ॐ पूतनायै नमः पूतनामावाहयामि स्थापयामि । ततो मण्डलाद् बहिः वायव्याम् (काला)—

४९. ॐ पापराक्षस्यै नमः पापराक्षसीमावाहयामि स्थापयामि । ततो मण्डलाद् बहिः पूर्वे (लाल)—

५०. ॐ स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि । ततो मण्डलाद् बहिः दक्षिणे (काला)—

५१. ॐ अर्यमणे नमः अर्यमाणमावाहयामि स्थापयामि । ततो मण्डलाद् बहिः पश्चिमे (लाल)—

५२. ॐ जृम्भकाय नमः जृम्भकमावाहयामि स्थापयामि । ततो मण्डलाद् बहिरुत्तरे (पीला)—

५३. ॐ पिलिपिच्छाय नमः पिलिपिच्छमावाहयामि स्थापयामि । ततः पूर्वे (पीला)—

५४. ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि। ततः आग्नेय्याम् (लाल)—

५५. ॐ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि। ततो दक्षिणस्याम् (काला)—

५६. ॐ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि। ततो दक्षिणस्याम् (नीला)—

५७. ॐ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि। ततः पश्चिमे (सफेद)—

५८. ॐ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि । <sup>सं.पू.य.वि. ५</sup> ततः वायव्याम् (धूम्र)—

५९. ॐ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि। ततः उत्तरे (पीला)—

६०. ॐ कुबेराय नमः कुबेरमावाहयामि स्थापयामि। तत ऐशान्याम् (सफेद)—

६१. ॐ ईश्वराय नमः ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि। पूर्वेशानयोर्मध्ये (श्वेत)—

६२. ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि। नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये (काला)—

६३. ॐ अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि। वास्तुकलशोपरि (काला)—

६४. ॐ वास्तुपुरुषाय नमः वास्तुपुरुषमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ मनो'जूतिज्जीषतामाज्ज्यस्य बृह्स्प्यतिर्व्यज्ञ मिमं तेनोत्वरि'ष्ट्रं व्यज्ञिक्ष सिम्मं देधातु । व्यिश्व्वे' देवा से इह मोदयन्तामो३ँ म्प्रतिष्ठु ॥

इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा कर पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार से पूजन करें।

वेदी के ऊपर कलशस्थापन विधि पूर्वक कलश स्थापित करके उसके ऊपर वास्तुपुरुष की स्वर्णमयी प्रतिमा अग्न्युत्तारण पूर्वक रखें॥

## अग्न्युत्तारण विधिः

#### सङ्कल्प-

देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं अस्यौ वास्तु मूर्तौ अवद्यातादिदोषपिरहारार्थम् अग्न्युतारणं देवता सान्निध्यार्थं च प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये।

आचार्य वास्तु इत्यादि मूर्ति में घी लगाकर आग से तपावें। फिर किसी पात्र में रखकर ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने० - से लेकर

असमभ्य गुग् शिवोभव पर्यन्त पढ़कर मन्त्रों से जलधारा दे फिर प्राणप्रतिष्ठा करे।

मूर्तिं पात्रे विधाय घृतेनाऽभ्यज्यतदुपरि जलधारां पातयेत् तत्र

मन्त्राः।

30 समुद्रस्य त्त्वावक्याग्ने परि<sup>।</sup> ळ्ययामसि-पावकोऽअसम्मब्भ्यंट शिवो भव॥१॥

🕉 हिमस्यत्त्वा जुरायुणाग्ने परि व्ययामसि । पावको ऽअसम्मब्भ्येष्ट शिवो भव ॥२॥

🕉 उपुज्ज्मश्चर्पं वेत्सेऽवंतर न्दीष्ट्वा । अग्ग्ने पित्तम्पामीस मण्डू विज्ताभिरागीहि सेमं नो वज्रं पविकव्पर्णिट शिवं ङ्कृधि॥३॥

ॐ अपामिदं न्ययंनिः समुद्रस्यं निवेशनम् । अत्र्याँस्ते अस्मात्तपन्तु हेतयं÷ पावको अस्ममब्ध्यंट शिवो र्मव ॥४॥

ॐ अगने पावक रोचिषा मुन्द्रया देवजिह्नया । आ देवात्र्विक्क्ष यक्क्षे च ॥५॥

ॐ स नं÷ पावक दीदिवोऽग्ग्ने देवाँ२॥ ऽइहार्वह । उप युज्ञ हुविश्च न ।।६॥

ॐ पावकया यश्चितयेन्त्या कृपाकक्षामेन्त्रुकुच उषसो ने भानुना । तूर्व्वन्न यामुन्नेतेशस्य नू रण् ऽआ यो घृणे <sup>न तेतृषा</sup>णो अजरं÷ ॥७॥

ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वेर्चिषे । अन्यांस्ते<sup>।</sup> असम्मत्तपन्नु हेतयः पावको असम्मब्भ्यष्ट <sup>शिवो</sup> भेव ॥८॥

ॐ नृषदे व्येडप्पसुषदे व्येड्ड बर्हिषदे व्येड्ड व्येन्सदे व्येट् स्वर्थिदे व्येट्ड व्येन्सदे

ॐ वो देवा देवानीं व्याज्ञियां ग्राज्ञियांना छ संव्यत्सरीणमुपभागमासते । अहुतादो हिविषो यज्ञे अस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥१०॥

ॐ ये देवा देवेष्व्वधि देवृत्त्वमायृत्ये ब्ब्रह्मणः पुरऽपुतारो अस्य । येब्भ्यो नऽऋते पर्वते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिब्ब्या अधि स्त्रुषु ॥११॥

ॐ प्राण्वाऽअपानदा व्यनिदा व्यन्विदा व्यरिवोदाः। अन्यास्ते ऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयंः पावको ऽअसम्मब्ध्यंश शिवो भव ॥१२॥

इसके बाद स्वर्णमयी प्रतिमा को हाथ से स्पर्श करके इन बीज मन्त्रों को पढ़ें।

ॐ आँ हीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्य वास्तु मूर्तेः प्राणा इहप्राणाः । ॐ आं हीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः सोऽहम् अस्य वास्तु मूर्तेः जीव इहस्थितः ।। ॐ आं हीं क्रों यं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं अस्य वास्तुमूर्तेः वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वा-घ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।।

ॐ मनो जूतिज्जुषतामाज्ज्यस्य बृह्स्प्यतिर्व्यज्ञमिमं तेनोत्वरिष्टुं यज्ञ सिम्मन्दिधातु । विश्शे देवा से ऽड्ड मदियन्तामो इं म्प्रतिष्ठु ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।। वास्तुपुरूष सुप्रतिष्ठितो वरदोभव । वास्तुमूर्ति वस्त्रेण संप्रोक्ष्य पीठेसंस्थाप्य हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वाध्यायेत् –

आगच्छ भगवन्वास्तो सर्वदेवैरधिष्ठित। भगवन्कुरू कल्याणं यज्ञेस्मिन्सन्निधो भव।।

ॐ नमो व्यात्त्याय चरेषम्या'य चनमो' व्यास्त-व्यायच व्यास्तुपाय'चनम्ह सोमाय च रूद्राय'चन-मस्ताम्प्राय' चारूणायच् ॥

पञ्चामृतेन संस्थाप्य कलशोपरि स्थापयेत्।

वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वा वेशोऽअनमीवो भवा नः। यत्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुषमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ वास्तोष्प्रतये नमः इति पञ्चोपचारैः षोडशोपचारैर्वा सम्पूज्य अर्घ्यं दद्यात्—

पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञरक्षार्थ हेतवे। तिद्वनार्चनं सिध्यन्ति यज्ञदानान्यनेकशः।। अयोने भगवन् भर्गललाट स्वेद सम्भव। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वास्तोः स्वामिन् नमोऽस्तु ते।। वास्तु के सभी देवताओं को खीर से बिल देवें।

## पायसबलिः

ॐ शिखिने एष पायस बर्लिन मम ॐ पर्जन्याय एष पायस बर्लिन मम ॐ जयन्ताय एष पायस बर्लिन मम ॐ कुलिशायुधाय एष पायस बर्लिन मम ॐ सूर्याय एष पायस बर्लिन मम

🕉 सत्याय एष पायस बलिर्न मम 🕉 भृशाय एष पायस बलिर्न मम 🕉 आकाशाय एष पायस बलिर्न मम 🕉 वायवे एष पायस बलिर्न मम 🕉 पूष्णे एष पायस बलिर्न मम ॐ वितथाय एष पायस बलिर्न मम ॐ गृहक्षताय एष पायस बलिर्न मम 🕉 यमाय एष पायस बलिर्न मम 🕉 गन्धर्वाय एष पायस बलिर्न मम 🕉 भृङ्गराजाय एष पायस बलिर्न मम 🕉 मृगाय एष पायस बलिर्न मम 🕉 पितृभ्यो एष पायस बलिर्न मम 🕉 दौवारिकाय एष पायस बलिर्न मम 🕉 सुग्रीवाय एष पायस बलिर्न मम 🕉 पुष्पदन्ताय एष पायस बर्लिन मम 🕉 पृथ्विधराय एष पायस बलिर्न मम 🕉 ब्रह्मणे एष पायस बलिर्न मम 🕉 वरूणाय एष पायस बलिर्न मम 🕉 असुराय एष पायस बलिर्न मम 🕉 शेषाय एष पायस बलिर्न मम 🕉 पापाय एष पायस बलिर्न मम ॐ रोगाय एष पायस बलिर्न मम ॐ अहये एष पायस बलिर्न मम ॐ मुख्याय एष पायस बलिर्न मम ॐ भल्लाटाय एष पायस बलिर्न मम ॐ सोमाय एष प्रायस बलिर्न मम ॐ नागाय एष पायस बलिर्न मम

🕉 अदितये एष पायस बलिर्न मम

🕉 दितये एष पायस बलिर्न मम

🕉 अद्भ्यो एष पायस बलिर्न मम

🕉 आपवत्साय एष पायस बलिर्न मम

🕉 अर्यमणे एष पायस बलिर्न मम

🕉 सवित्राय एष पायस बलिर्न मम

🕉 सावित्रे एष पायस बलिर्न मम

🕉 विवस्वते एष पायस बलिर्न मम

ॐ विबुधाधिपाय एष पायस बलिर्न मम

🕉 जयाय एष पायस बलिर्न मम

ॐ मित्राय एष पायस बलिर्न मम

ॐ राजयक्ष्मणे एष पायस बलिर्न मम

ॐ रूद्राय एष पायस बलिर्न मम

ततः चरक्यादिभ्यो दश दिक्पालेभ्यश्चदधि माष (उड़द) बलीन् दद्यात् ।

ॐ चरक्यै एष दिधमाष बिलर्न मम एवं क्रमेण सर्वेभ्यः । दिध-उड़द बिलदान दें।

- १. चरक्यै एष दिधमाष बलिर्न मम
- २. विदार्थे एष दिधमाष बलिर्न मम
- ३. पूतनायै एष दिधमाष बलिर्न मम
- ४. पापराक्षस्यै एष दिधमाष बलिर्न मम
- ५. स्कन्दाय एष दिधमाष बलिर्न मम
- ६. अर्यमणे एष दिधमाष बलिर्न मम
- ७. जम्भकाय एष दिधमाष बलिर्न मम
- ८. पिलिपिच्छाय एष दिधमाष बलिर्न मम
- ९. इन्द्राय एष दिधमाष बलिर्न मम
- १०. अग्नये एष दिधमाष बलिर्न मम

११. यमाय एष दिधमाष बिलर्न मम

१२. निर्ऋतये एष दिधमाष बलिर्न मम

१३. वरूणाय एष दिधमाष बलिर्न मम

१४. वायवे एष दिधमाष बलिर्न मम

१५. कुबेराय एष दिधमाष बलिर्न मम

१६. ईशानाय एष दिधमाष बलिर्न मम

१७. ब्रह्मणे एष दिधमाष बलिर्न मम

१८. अनन्ताय एष दिधमाष बलिर्न मम

ततः प्रधान वास्तुं बलिं दद्यात्

नाना पक्कान्नसंयुक्तं नाना गन्धसमन्वितम्। बिलं गृहाण देवेश वास्तुदोषप्रणाशक।। ॐ वास्तुपुरूषाय एष बिलर्न मम।

प्रार्थना

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्ति श्रद्धा विवर्जितम्। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।। नमस्ते वास्तु देवेश सर्वदोष हरो भव। शांति कुरू सुखं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे।।

शिख्यादि कामे खलु वास्तु देवः
गृह्णन्ति पुष्पाञ्चलिमेति शीघ्रम्।
पीडाहारा भव्यकरा विशालाः
नमामि भूपाल न तत् पराश्च।।

इत्युक्ता वास्तु पुरूषाय नारिकेलरसं-सुवर्णं समर्प्य प्रणमेत् । ततः पावमानेन रक्षोहनेन च सूक्तेन त्रिसूत्र्या मण्डपं वेष्टयेत् ॥ (पवमान और रक्षोहन सूक्त पढ़ते हुए मण्डप को त्रिसूत्री से लपेटें)।

# अथ रक्षोध्नसूक्तम्

ॐ कृष्णुष्व पाज् प्रसितिन्नपृत्थ्वीं व्याहिरा जेवा मेवाँ २ ऽइभे न तृष्व्यी मनुप्पति तिन्द्रणा नोस्ता सिव्विद्धर्यस्थ सस्तिपिष्ठेशा

ॐ तर्वक्ष्ममासं÷ ऽआशुया पत्न्य नुस्पृश धृष्ताशो श्रीचानः । तपूर्छष्यगने जुह्य पत्झन सन्दितो व्विसृज् व्यिष्ट्यगुल्काः ॥

ॐ प्रतिस्प्पशो व्विसृज तूर्णिण तमो भवीपायुर्व्विशो ऽअस्या ऽअदेव्यक्ष । योनो दूरे ऽअघशेष्ट सोयो ऽअन्त्यगने माकिष्ट्रे व्याथिरा दंघर्षीत् ॥

ॐ उद्गिग्ने तिष्ठृप्पत्या त'नुष्क्वृत्र्युमित्र्रा'र ऽओषतात्तिग्गमहेते । योनो ऽअरातिष्ट समिधान च्वक्के नीचा तन्धंकक्ष्यत् सन्न शुष्कम् ॥

ॐ ऊर्ध्वो भव्पप्रतिविध्याध्यसम दाविष्कृणुष्व दैव्यात्र्यग्गने अवस्थि रातनुहि बातु जूनाङ्गामिम जामिम्प्रमृणी हिशत्रून् अग्गनेष्ट्वा तेजसा सादयामि॥

## पवमानसूक्तम्

ॐ पुनन्तुं मा पितरं सोम्म्यासं पुनन्तुं मा पिताम्हाः पुनन्तुंप्प्रितामहाः ॥ पुविन्नेंण शृतायुंषा पुनन्तुंमा पिताम्हाः प्विन्नेंण शृतायुंषा पुनन्तुंमा पिताम्हाः प्विन्नेंण शृतायुंषा विश्शा मायुर्व्यश्र्वं॥

ॐ अग्गन् ऽआयूंछिष । पवस् ऽआसु वोर्ज् मिषेञ्चनः। आरे बोधस्वदुच्छुनीम् ॥ ॐ पुनन्तुं मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधिये । पुनन्तु विश्वा भूतानि जातेवेद धुनीहिमा ॥

ॐ प्वित्र्त्रेण पुनीहि। माशुक्केणदेव दीद्यत्। अग्रेक्कत्वा क्रतुँ ऽरनुं॥

ॐ अत्ते प्वित्र मुर्चिचष्यग्गे व्वितंत मन्त्रा। ब्रह्मतेन पुनातुमा।

ॐ पर्वमान् सोऽअ्द्यर्नः प्वित्रेण व्विचर्षणिः। यः पोता सपुनातुमा ॥

ॐ ड्भाब्भ्यान्देव सवितः प्वित्रत्रेण स्वेनच। माम्पुनीहि विश्वतः ॥

ॐ वैश्वा देवी पुन्ती । देळ्या गाद्यस्याम्मा बृह्यस्तृत्र्वो व्वीत पृष्ठाः । तयामदेन्तः सध्मादेषुव्वय७ स्याम् पत्रयोगाम् ॥

इति पवमान सूक्तम् वास्तु पूजनम् द्वितीय दिन कृत्यं च समाप्तम् ॥

## अथ मण्डपपूजनम्

#### १. ब्रह्मा

निम्न सङ्कल्प करे—

देशकाली संकीर्त्य— अमुकगोत्रः अमुक शर्माऽहं (सपत्नीकोऽहं) अमुकयागाङ्ग भूतं मण्डप देवानां स्थापनं पूजनं करियो।

इति सङ्कल्प्य रक्तवर्णं मध्यवेदीशानस्तम्भे (नन्दायै)—

एहोहि विपेन्द्र पितामहेश हंसादिरूढ त्रिदशैकवन्द्य। श्वेतोत्पलाभासकुशाम्बुहस्त गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। हंस पृष्ठसमारूढ देवतागणपूजित। ईशानकोणस्थितं स्तम्भमलङ्कर जगत्पते।। ॐ ब्रह्मश्रज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद् द्विसी'मृतः सुरुचो'-ह्येनऽआवः स बुद्ध्न्या ऽउपमा अस्य व्विष्ठाः सृतश्र बोनिमसंतश्च्चविवेः॥

🕉 ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ।

🕉 सावित्रयै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि ।

🕉 वास्तुदेवतायै नमः वास्तुदेवतामावाहयामि स्थापयामि ।

🕉 ब्राह्यै नमः ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि ।

🕉 गंगायै नमः गंगामावाहयामि स्थापयामि ।

ब्रह्माद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि ।

इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे—

कृष्णाजिनाम्बरधर पद्मासन चतुर्भुज । जटाधार जगब्हातः प्रसीद कमलोद्भव ।।

नमस्कार-

वेदाधाराय वेदाय यज्ञगम्याय सूरये। कमण्डल्वक्षमालास्त्रुक्स्त्रुवहस्ताय ते नमः।।

स्तम्भमालभेत्-

ॐ ऊद्धर्वऽऊषुणीऽऊतयेतिष्ठदिवो न सिवता ऊद्ध्वी व्याजस्यसनिता्यदुञ्जिभिर्व्याघिद्भिर्विद्धयोमहे ॥ स्तम्भिशिरसि-

ॐ नागमात्रे नमः।

शाखाबन्धनम्-

ॐ आयङ्गी? पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः पितर भ्रप्यन्त्स्वः॥ अनुमन्त्रणम्-

ॐ वतो यतः समीहंसेततो नोऽअभयङ्कुरू। शर्त्र÷ कुरु प्राज्यवाभयंत्रः पृशुक्य्यं÷॥

अनेन कृतार्चनेन ब्रह्माद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।

२. विष्णु

आग्नेयस्तम्भे (वसुदायै) कृष्णवर्णं विष्णुं पूजयेत् — आवाहयेतं गरुडोपिर स्थितं रमार्धदेहं सुरराजवन्दितम्। कंशान्तकं चक्रगदाब्जहस्तं भजामि देवं वसुदेवसूनुम्।। पद्मनाभ हषीकेशं कंसचाणूरमर्दन। आगच्छ भगवन्विष्णो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव।।

ॐ इदं व्विष्णणुर्विचिक्कमे त्रेधा निदंधे प्दम्। समूढमस्य पाएं सुरे स्वाहां॥

ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ नन्दायै नमः नन्दामावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ आदित्यायै नमः आदित्यामावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ वैष्णव्यै नमः वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि ।

विष्ण्वाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि ॥

इस प्रकार पूजन कर नमस्कार करे।

ॐ नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते पुरुषोत्तम। नमस्ते सर्वलोकात्मन् विष्णावे ते नमो नमः।। देवदेव जगन्नाथ विष्णो यज्ञपते विभो। पाहि दुःखाम्बुधेरस्मान्भक्तानुग्रहकारक।।

स्तम्भमालभेत् - ॐ ऊद्धर्वं ऽऊषुणि।

स्तम्भशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः०। शाखाबन्धनम् - ॐ आयङ्गी३०। अनुमन्त्रणम् - ॐ यतो यत६०।

3% अनेन कृतार्चनेन विष्ण्वाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम ।

3. शंकर (भद्रायै) श्वेतं शंकरं पूजयेत् नैर्ऋत्य स्तम्भे (भद्रायै) श्वेतं शकरं पूजयेत्

एह्येहि गौरीश पिनाकपाण शशांकमौले वृषभाधिरूढ । देवादिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।। गंगाधर महादेव पार्वती प्राण वल्लभ । आगच्छ भगवन्नीश स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधोभव ।।

ॐ नर्म÷ शम्भ्वायं च मयो भ्वायं च नर्म÷ शङ्करायं च मयस्क्ररायं च नर्म÷ शिवायं च शिवतराय च ॥

🕉 गौर्ये नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि ।

🕉 माहेश्वर्य नमः माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ शोभनायै नमः शोभनामावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भद्रायै नमः भद्रामावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ शंकराय नमः शंकरमावाहयामि स्थापयामि ।

रुद्राद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

इस प्रकार पूजन कर नमस्कार करे—

वृषवाहनाय देवाय पार्वतीपतये नमः। वरदायार्द्धकायाय नमश्चन्द्रार्द्धमौिलने।। पञ्चवक्त वृषारूढ त्रिलोचन सदाशिव। चन्द्रमौले महादेव मम स्वस्तिकरो भव।। स्तम्भमालभेत् – ॐ ऊद्धर्वं ऽऊषुणि।

स्तम्भशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः०। शाखाबन्धनम् - ॐ आयङ्गी?०।

अनुमन्त्रणम् - ॐ ठाताे यता ६०।

ॐ अनेन कृतार्चनेन रुद्राद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।

#### ४. इन्द्र

वायव्यस्तम्भे— (अदित्यै) पीतस्तम्भं इन्द्रं पूजयेत्—

ॐ ऐह्योहि वृत्रघ्न गजाधिरूढ सहस्त्रनेत्र त्रिदशैकराज । शचीपते शक्र सुरेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।।

शचीपते महाबाहो सर्वाभरणभूषित।

आगच्छ भगवन्निन्द्र स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव।।

ॐ त्रातार्मिन्द्रमिवृतार्मिन्द्रष्ट् हवे हवे सुहवृष्ट् शूरमिन्द्रम् । स्वयोमि शुक्क्रम्पुरहूतमिन्द्रेशं स्वस्ति नो मुघवा धात्विन्द्रः ॥

ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि

ॐ इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ आनन्दायै नमः आनन्दामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ विभूत्यै नमः विभूतिमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ इन्द्राद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पूजन कर नमस्कार करे—

पुरन्दर नमस्तेऽस्तु वज्रहस्तनमोऽस्तु ते। शचीपते नमस्तुभ्यं नमस्ते मेघवाहन।। देवराज गजारूढ पुरन्दर शतक्रतो। वज्रहस्त महाबाहो वाञ्छितार्थप्रदो भव।।

स्तम्भमालभेत् - ॐ ऊन्द्रवं ऽऊषुणां।

स्तम्भिशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः०।

शाखाबन्धनम् - ॐ आयङ्गी १०। अनुमन्त्रणम् - ॐ ठातो यता ४०।

3 अनेन कृतार्चनेन इन्द्राद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।

५. सूर्य

ततो बाह्ये मण्डपे ईशानकोणे (भूत्यै) रक्तस्तम्भे सूर्यम्—

आवाहयेतं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्ववाहं द्युमणि ग्रहेशम्। सिन्दूरवर्णं प्रतिभावभासं भजामि सूर्य कुलवृद्धिहेतोः।।

पद्मनाभ महाबाहो सप्तश्वेताश्ववाहन । आगच्छ भगवन्भानो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ।।

ॐ आकृष्णणेन रजसा व्वर्तमानो निवेशयेत्रमृतं मत्येश्च । हिरण्णयथेन सविता रथेनादेवो यति भुवनानि पश्र्येन् ॥

🕉 सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ सावित्रये नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ मंगलायै नमः मंगलामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ सूर्याद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पूजन कर नमस्कार करे-

ॐ नमः सिवत्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूतस्थितिनाशहेतवे। त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरिश्चिनारायण शङ्करात्मने।।

पद्मासनसुमङ्गल। क्षमां कुरु दयालो त्वं ग्रहराज नमोऽस्तु ते।।

स्तम्भमालभेत् - ॐ ऊद्धर्वं ऽऊषुणी०।

स्तम्भशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः०।

शाखाबन्धनम् - ॐ आयङ्गी १०।

अनुमन्त्रणम् - ॐ खतो यत् ०।

ॐ अनेन कृतार्चनेन सूर्याद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम ।

## ६. गणेश

ईशानपूर्वयोरन्तराले (सरवस्यै) श्वेतस्तम्भे गणेशम्---

ॐ आवाहयेतं गणराजदेवं रक्तोत्पलाभासमशेषवन्द्यम् । विघानतकं विघ्नहरं गणेशं भजामि रौद्रं सहितं च सिद्ध्यया ।।

लम्बोदर महाकाय गजवक्त्र चतुर्भुज। आगच्छ गणनाथस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव।।

ॐ गुणानान्त्वा गुणपितिष्ट हवामहे प्रियाणन्त्वा प्रियपितिष्ट हवामहे निधिनान्त्वा निधिपितिष्ट हवामहे व्यसो मम । आहमजानि गर्ब्स्धमान्त्वमंजासिगर्ब्स्धम् ॥

ॐ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ विघ्नहारिण्यै नमः विघ्नहारिणीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ गणपत्याद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पूजन कर नमस्कार करे—

नमस्ते ब्रह्मरुपाय विष्णुरुपाय ते नमः। नमस्ते रुद्ररुपाय करिरुपाय ते नमः।। लम्बोदर महाकाय सततं मोदकप्रिय। गौरीसुत गणेश त्वं विघ्नराज प्रसीद मे।।

स्तम्भमालभेत् - ॐ ऊन्द्रवं उऊ्षुणी०।

स्तम्भिशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः०।

शाखाबन्धनम् - ॐ आयझैं १०।

अनुमन्त्रणम् - ॐ यतो यतः।

🕉 अनेन कृतार्चनेन गणेशाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।

७. यम

पूर्वाग्नेययोरन्तरालस्तम्भे— (पूर्वसन्ध्यायै) कृष्णवर्णस्तम्भेयमम्— एह्येहि दण्डायुध धर्मराज कालाञ्जनाभास विशालनेत्र। विशालवक्षस्थलरुद्ररुप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। दण्डमुद्गरधारक। चित्रगुप्तादि संयुक्त सप्तमस्तम्भमाविश।। भगवन्धर्म आगच्छ ॐ खुमार्य त्वा मुखार्य त्वा सूर्व्यस्य त्वा तर्पसे।

देवस्त्वी सवितामद्भवी नक्तु पृथिव्याः स्पृशस्पाहि । अर्चिचरीस शोचिरीस तपो ऽसि ।

🕉 यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

ॐ अञ्जन्यै नमः अञ्जनीमावाहयामि स्थापयामि।

🕉 क्रूरायै नमः क्रूरामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ नियन्त्रे नमः नियन्त्रीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ यमाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पूजन कर नमस्कार करे-

ईषत्पीन नमस्तेऽस्तु दण्डहस्त नमोऽस्तु ते। महिषस्य नमस्तेऽस्तु धर्मराज नमोऽस्तु ते।। धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिपते यम। रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय।।

\_ ॐ ऊद्धर्वं ऽऊषुणी०। स्तम्भमालभेत्

.. ॐ नागमात्रे नमः०। स्तम्भशिरसि

\_ ॐ आयङ्गी?०। शाखाबन्धनम्

\_ ॐ यतो<sup>।</sup> यत६०। अनुमन्त्रणम्

ॐ अनेन कृतार्चनेन यमाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम ।

## ८. नागदेवता

बाह्याग्नेयकोणस्तम्भे— (मध्यसंध्यायै.) कृष्णवर्णस्तम्भे— एह्येहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वन्दितपादपद्म। नानाफणामण्डलराजमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। आशीविषसमोपेत नागकन्या विराजित। आगच्छ नागराजेन्द्र स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव।।

ॐ नमो स्तु सूर्प्पेश्यो ये के च पृथिवीमनु । ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेब्ग्यं÷ सूर्प्पेब्श्यो नर्म÷ ॥

ॐ नागराजाय नमः नागराजमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ धरायै नमः धरामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ महापद्मायै नमः महापद्मामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ नागाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पूजन कर नमस्कार करे—

नमः खेटक हस्तेभ्यस्त्रिभोगेभ्यो नमो नमः। नमो भीषण देवेभ्यः खड्गधृग्भ्यो नमो नमः।। खड्ग खेट धराः सर्पाः फणामण्डलमण्डिताः। एकभोगाः साक्षसूत्रा वरदाः सन्तु मे सदा।।

स्तम्भमालभेत् - ॐ ऊद्धर्वं ऽऊषुर्गाः।

स्तम्भशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः०।

शाखाबन्धनम् - ॐ आयङ्गी१०।

अनुमन्त्रणम् - ॐ यतो यत६०।

ॐ अनेन कृतार्चनेन नागाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।

९. स्कन्दाय

अग्निदक्षिणयोरन्तरालस्तम्भे (पश्चिमसन्ध्यायै) श्वेतस्तम्भे स्कन्दम्—

आवाहयामि देवेशं षण्मुखं कृत्तिकासुतम्। रुद्रतेजसमुत्पन्नं देवसेना समन्वितम्।। मयूर वाहनं शक्ति पाणि वै ब्रह्मचारिणम्। आगच्छ भगवन् स्कन्द स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव।।

🕉 स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

🔧 🕉 जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ शक्तये नमः शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ स्कन्दाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठात् देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पूजन कर नमस्कार करे—

नमः स्कन्दायदेवाय घण्टाकुकुटधारिणे।
पिनाकशक्तिहस्ताय षण्मुखाय च ते नमः।।
मयूरवाहनस्कन्द गौरा सुत षडानन।
कार्तिकेयमहाबाहो दयां कुरु दयानिधे।।
स्तम्भमालभेत् - ॐ ऊद्धर्वं ऽऊषुणं।
स्तम्भिशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः।
शाखाबन्धनम् - ॐ आयङ्गै?।
अनुमन्त्रणम् - ॐ यतो यतः।

ॐ अनेन कृतार्चनेन स्कन्दाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम ।

### १०. वायु

दक्षिणनैऋत्ययोर्मध्ये— धूम्रस्तम्भे वायुम—

आवाहयामि देवेशं भूतानां देहधारिणम्। सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्चरम्।। ध्वजहस्तं गन्थवहं त्रैलोक्यान्तरचारिणाम्। आगच्छ भगवन् वायो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव।।

# ॐ तर्वं व्वाय वृहस्प्पते त्वष्ट्रुर्जामातरद्धत । अवा ७ स्यावृणीमहे ।

ॐ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ वायव्यै नमः वायवीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ गायत्र्ये नमः गायत्रीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ मध्यमसन्थ्यायै नमः मध्यमसन्थ्यामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ वायवाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पूजन कर नमस्कार करे—

नमो धरणीपृष्ठस्थ समीरण नमोऽस्तु ते। धूम्रवर्णनमस्तेऽस्तु शीघ्रगामिन्नमोऽस्तु ते।। धावन्थरणि पृष्ठस्थ ध्वजहस्त समीरण। दण्डदस्त मृगारूढ वरं देहि वरप्रद।।

स्तम्भमालभेत् - ॐ ऊद्धर्वं ऽऊषुणी०।

स्तम्भशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः०।

शाखाबन्धनम् - ॐ आटाङ्गौ१०।

अनुमन्त्रणम् - ॐ ठातारे यता ६०।

🕉 अनेन कृतार्चनेन वायवाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां

न मम। ११. सोम

नैऋित्य बाह्यस्तम्भे पीतस्तम्भे सोमम्—

आवाहयामि देवेशं शशांकं रजनीपतिम्। क्षीरोद्धिसमुद्भूतं हरमौलिविभूषणम्। सुधाकरं द्विजाधीशं त्रैलोक्यप्रीतकारकम्। औषध्याप्यायनकरं सोमं कन्दर्पवर्धनम्। आगच्छ भगवन्सोम स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधोभव।

ॐ आण्यायस्व समे तुते व्विश्धतं सोम् वृष्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्य सङ्ग्रथे ॥

🕉 सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

🕉 सावित्रयै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ अमृतकलायै नमः अमृतकलामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ सोमाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पूजन कर नमस्कार करे—

अत्रिपुत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते शशिलाञ्छन। श्वेताम्बर नमस्तेऽस्तु ताराधिप नमोऽस्तुते।। अत्रिपुत्र निशानाथ द्विजराज सुधाकर। सोमत्वं सौम्यभावेन ग्रहपीडां निराकुरु।।

स्तम्भमालभेत् - ॐ ऊद्धर्वं ऽऊषुणी०।

स्तम्भशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः०।

शाखाबन्धनम् - ॐ आयङ्गी१०।

अनुमन्त्रणम् - ॐ खतो यतः०।

ॐ अनेन कृतार्चनेन सोमाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम ।

#### १२. वरुण

नैऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे वरुणम् —

आवाहयामि देवेशं सिललस्याधिपं प्रभुम्। शंखपाशधरं सौम्यं वरुणं यादसां पितम्। कुम्भीरथसमारुढं मिणरत्नसमन्वितम्। आगच्छ देव वरुण स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव।

# इमम्मे व्यरुण रश्रुधीहर्वम्**द्या चे मृडय।** त्वा मेव्स्युराचेके।

ॐ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ वारुण्यै नमः वारुणामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ पाश्रधारिण्यै नमः पाश्रधारिणामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ बृहत्यै नमः बृहत्यामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ वरुणाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पूजन कर नमस्कार करे—

वरुणाय नमस्तेऽस्तु नमः स्फटिकदीप्तये। नमस्ते श्वेतहाराय जलेशाय नमो नमः।।

> शङ्खस्फटिकवर्णाभ श्वेतहाराम्बरावृत । पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे ।।

स्तम्भमालभेत् - ॐ ऊद्धर्वं ऽऊषुणी०।

स्तम्भिशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः०।

शाखाबन्यनम् - ॐ आयङ्गी १०।

अनुमन्त्रणम् - ॐ व्यतो¹ यत्र ६०।

🕉 अनेन कृतार्चनेन वरुणाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां

न मम।

१३. अष्टवसु

पश्चिमवायव्यान्तराले श्वेतस्तम्भे अष्टवसून्-

आवाहयामि देवेशान्वसूनष्टौ महाबलान्। सौम्यमूर्तिधरान्देवान्दिव्यायुधकरान्वितान् शुद्धस्फटिकसंकाशान्नानावस्त्रविराजितान् सर्वालङ्कारभूषितान्। अश्वारूढान्दिव्यवस्त्रान् स्तम्भेऽस्मिन्वसूनष्टौ सुखावहान्। आवाहयामि

ॐ व्यस्विभ्यस्त्वा रुद्रेब्ध्यस्त्वा दित्येब्ध्यस्त्वा-सञ्जानाथान्द्यावापृथिवी मित्रावर्रणौत्वा व्वष्ट्यावताम्। व्यन्तु ळयोक्तरं रिहाणाम्कताम्पृषतीर्गच्छळ्यशापृश्रिनं-र्मात्वादिवंङ्गच्छ ततो नो व्वृष्टिमावंह चृक्षुष्पाऽअग्रेऽसि चक्षुम्में पाहि ॥

ॐ अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसुनामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ अदितये नमः अदितिमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ अणिमायै नमः अणिमामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ भूत्यै नमः भूतिमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ गरिमायै नमः गरिमामावाहयामि स्थापयामि।

अष्टवसुवाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पूजन कर नमस्कार करे-

देवेशान्नानावस्त्र विराजितान्। नमस्करोमि शुद्धस्फटिकसंकाशान्दिव्यायुधधरान्वसून्। दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहाः पुष्पमालाविभूषिताः। वसवोऽष्टौ महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा।। स्तम्भमालभेत् - ॐ ऊद्धर्वं ऽऊ्षुणी०।

स्तम्भिशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः०।

शाखाबन्धनम् - ॐ आयङ्गी १०।

अनुमन्त्रणम् - ॐ यतो यत् ६०।

ॐ अनेन कृतार्चनेन अष्टवसुवाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।

#### १४. धनदाय

वायव्यकोणे पीतस्तम्भे धनदं---

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्ष पूजितम्। महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतं विभुम्। दिव्यमालाम्बरधरं गदाहस्तं महाभुजम्। आगच्छ यक्षराज त्वं यज्ञेऽस्मिन्सन्निधो भव।

ॐ सोमो धेनु ७ सोमोऽअब्बन्तमाशुट सोमो ब्बीरङ्कम्म्णणयन्ददाति। सादुन्त्यं ब्बिदुत्थ्य ६ सुभेयेम्पित् ४अवण् ब्बोददशिदसमै॥

ॐ घनदाय नमः धनदमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ अदित्यायै नमः अदित्यमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ लिघमायै नमः लिघमामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ धनदाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पूजन कर नमस्कार करे—

यक्षराजनमस्तेऽस्तु नमस्ते नरयानग । पीताम्बर नमस्तेऽस्तु गदापाणेनमोऽस्तुते ।। दिव्यदेह धनाध्यक्ष पीताम्बर गदाधर । उत्तरेश महाबाहो वाञ्छितार्थफलप्रद ।। स्तम्भमालभेत् - ॐ कुद्धर्वं ऽकुषुणी०। स्तम्भिशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः०। शाखाबन्धनम् - ॐ आधाङ्गी १०। अनुमन्त्रणम् - ॐ वतो यत्र ४०।

ॐ अनेन कृतार्चनेन धनदाद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।

१५. गुरु

उत्तरवायव्ययोः पीतस्तम्भे गुरुम् —

आवाहयामि देवेशं गुरुम् त्रिदशपूजितम् । हेमगोरोचनावर्णं पीनस्कन्धं सुवक्षसम् । शङ्खं च कलशं चैव पाणिभ्यामिहबिभ्रतम् ।

ॐ बृहंस्प्यतेऽअति यदुर्व्यो ऽअहाँ द्युमद्विभातिककर्तं-मुज्जने चु यदी दय्चछवं स ऋतप्प्रजात्तद्सम्मास्य द्रविणन्धेहि चित्रम् ॥

ॐ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ पौर्णमास्यै नमः पौर्णमासीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ सावित्रयै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

3ॐ गुरुद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि । पूजन कर नमस्कार करे—

ब्रह्मपुत्र नमस्तेऽस्तु पीतध्वज नमोऽस्तुते। त्रिदशार्चित देवेश सिन्धूद्भव नमोऽस्तुते।। पूजितोऽसि मया शक्त्या दण्डहस्तबृहस्पते। क्रूरग्रहाभिभूतस्य शान्ति देवगुरो कुरु।। स्तम्भमालभेत् – ॐ ऊद्धर्वं ऽऊषुणि। स्तम्भशिरिस - ॐ नागमात्रे नमः०। शाखाबन्धनम् - ॐ आयङ्गी?०। अनुमन्त्रणम् - ॐ यतो यत्र ६०।

ॐ अनेन कृतार्चनेन गुरुद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।

## १६. विश्वकर्मा

उत्तरेशानयोरन्तरे रक्तस्तम्भे विश्वकर्माणम्—

आवाहयामि देवेशं विश्वकर्माणमीश्वरम् । मूर्तामूर्तकरं देवं सर्वकर्तारमीश्वरम् । त्रैलोक्यसूत्रकर्तारं द्विभुजं विश्वदर्शितम् । आगच्छ विश्वकर्मस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ।

ॐ विश्वीकर्माऋविषा व्वद्धनेनत्रातार्मिन्री मकृणोरवृद्धयम् । तस्मौ व्विशाः समीनमन्त-पूर्वी रयमुग्गो व्विहव्यो यथासत् ॥

ॐ विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ सिनीवाल्यै नमः सिनीवालीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ सावित्रयै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः वास्तुदेवता आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ विश्वकर्माद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः सकलोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पूजन कर नमस्कार करे—

नमामि विश्वकर्माणं द्विभुजं सर्वदिशानम् । त्रैलोक्य सूत्रकर्तारं महाबलपराक्रमम् ।। प्रसीद विश्वकर्मस्त्वं शिल्पशास्त्रविशारद । सदण्डपाणे द्विभुजस्तेजो मूर्ति प्रताप्रवान् ।। स्तम्भमालभेत् - ॐ कृद्धर्वं ऽकुषुणं०। स्तम्भिशिरसि - ॐ नागमात्रे नमः०। शाखाबन्धनम् - ॐ आयङ्गी?०। अनुमन्त्रणम् - ॐ यतो यत्रे०।

ॐ अनेन कृतार्चनेन विश्वकर्माद्यावाहितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः

प्रीयन्तां न मम।

एतावत्कर्म मण्डपान्तः स्थित्वा कर्तव्यमिति प्रतिष्ठासारिणी इति मण्डपे षोडशस्तम्भपूजा रुद्रकल्पद्रुमप्रतिष्ठाभास्कराद्युक्ता । स्तम्भशिरसि बिलकासु— ॐ नागमात्रे नमः ।

सर्वेषां नागराजानां पातालतलवासिनाम्। नागमातर आयान्तु भवन्तु सगणाः स्थिरा।।

ॐ आयङ्गौ? पृश्चिरक्क्रमीदसंदन्मातरम्पुर? । पितरेञ्च प्ययन्त्स्वं÷।

पूजन कर नमस्कार करे— नमोऽस्तु बलिकावन्द्य सुदृढत्वं सुभाप्तिदम्। एनं महामण्डपन्तु रक्ष-रक्ष निरन्तरम्।।

ॐ व्यती यतः स्मीहिसे तती नोऽअभयङ्करः । शत्रेः कुरु प्युजाब्भ्योभयत्रः पृशुब्भ्यः ॥

निम्न श्लोक से प्रार्थना करे—

शेषादिनागराजनाः समस्ता मम मण्डपे। पूजाङ्गृह्णान्तु सततं प्रसीदन्तु ममोपरि।।

इस वैदिक मन्त्र व श्लोक का उच्चारण कर भूमि का स्पर्श

ॐ भूरिस् भूमिरस्यदितिरसि व्विश्श्यघोयाविश्सिस्य-भविनस्यध्र्त्री पृथिवीं ठठांच्छ पृथिवीन्दृं ६ ह पृथिवीम्मा हिं हे सीह ॥ भूमिभूमिमदगान्माता यथा मातरमप्यगात्। भूयास्म पुत्रैः पशुभिर्यो नो द्वेष्टि स भिद्यताम्।।

पुष्पाञ्जलि लेकर इस श्लोक का उच्चारण करे—

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन । नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज ।।

ॐ नृसिंह उग रुप ज्वलज्वल प्रज्वलप्रज्वल स्वाहा ।।

ॐ नमः शिवाय (अष्टवारं जपेत्) आठ बार पढें— उपरांत पुष्पाञ्जलि मण्डप में फेकें।

# तोरणपूजनम्

अब प्रचलित सम्प्रदाय के अनुसार अग्निपुराणोक्त तोरणपूजा लिखते हैं— अग्नि पुराणोक्त कलशद्वय स्थापन वर्जित है, कलश एक ही होना चाहिए जैसा कि प्रतिष्ठा रत्नमाला में निरर्देश है। (पूर्व में पीपल की लकड़ी)।

(१) पूर्व तोरण (प्रार्थना)

आयाहि वज्रसंघात पूर्वद्वार कृताधिप। ऋग्वेदाधिपते तुभ्यं सुशोभन नमोऽस्तु ते।। प्राचीं तु दिशमाश्रित्य सुदृढोनाम तोरणः। महावीर्यो महाकाय इन्द्रायुध समप्रभः।। एहोहि ऋग्वेदाधिष्ठित इन्द्रदेवत्यशान्त अश्वत्थ। सुदृढतोरण एनं यज्ञं रक्ष सर्वविध्नान्निवारय।।

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । ह्वोतारं रत्नधातमम् । ॐ स्योना पृथिवीतिवा-

ॐ सुदृढतोरणाय नमः सुदृढतोरणमावाहयामि स्थापयामि । ॐ त्रिशूलशृङ्गेषुशंखादिषु नमः त्रिशूलशृङ्गेषुशंरवा-मावाहयामि स्थापयामि ।

🕉 इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ।

🕉 धात्रे नमः धातारमावाहयामि स्थापयामि ।

🕉 भगाय नमः भगमावाहयामि स्थापयामि ।

इत्यादिनाबाह्य तोरणशाखयोः सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गे देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव।।

तत्र कलश विधिना कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशोपरि—इस प्रकार कलश विधि द्वारा कलश स्थापन कर कलश के ऊपर आवाह्न करे—

ॐ ध्रुवाय नमः धुवमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ अध्वराय नमः अध्वरमावाहयामि स्थापयामि ।

इति वसुद्वयमावह्य तत्रैव नन्दिने नमः।

अर्थ महाकालाय नमः महाकालमावाहयामि स्थापयामि ।

पुनस्तत्रैव---

ॐ धात्रे नमः धातारमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ विधात्रे नमः विधातारमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ द्वारिश्रयै नमः द्वारिश्रयमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ गणेशाय नमः गणेशमावाहयामि स्थापयामि ।

इत्यूर्ध्वम् । वास्तु पुरुषाय नमः –वास्तुमीत्यध आवाह्य पुनर्दारशाखयोः -भूलोकाय नमः भूलोकमावाहयामि। भुवलोकायनमः भुवलोकमावाहयामि। त्रैव-आदित्याय नमः। ॐ मध्ये-मेधां पतये नमः।

## (२) दक्षिण तोरण

इस प्रकार पूजन कर दक्षिण की ओर जाकर आचमन करके मौली बन्धन करें।

औदुम्बरं च विकटं याम्येतोरणमुत्तमम्। रक्षार्थञ्चेव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखायनः।।

ॐ इषे त्त्वोर्जेत्वी व्वायवस्त्य देवोवे÷ सिवता प्राप्पयतु श्लेष्ट्रीतमाय कर्म्मण्ऽआण्यायद्द्मगञ्या-ऽइन्द्रीय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मामावस्तेनऽ ईशित माघशे ६ सोध्द्रवाऽ अस्मिन्गोपतौस्यातब्रह्वीर्ळ्मानस्य प्शूत्र्याहि।

सुभद्रतोरणाय नमः सुभद्रतोरणामावाहयामि स्थापयामि।
विकटतोरणाय नमः विकटतोरणमावाहयामि स्थापयामि।
इति सम्पूज्य तत्र त्रिशूलशृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन —

ॐ सूर्यपूषाभ्यां० सूर्यपूषाणौ०। मध्ये- ॐ मित्राय ।मः। ॐ वरुणाङ्गारकाभ्यां नमः०।।

पूजन कर प्रार्थना करे—

यथामेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव।।

तत्र पूर्व विधिना कलश संस्थाप्य कलशोपरि— ॐ पर्यन्याय॰ मः। ॐ अशोकाय०। मध्ये- ॐ धरायै०।

## ३) पश्चिम तोरण

इस प्रकार पूजन कर पश्चिम की ओर जाकर आचमन कर मौली न्धन करे—

प्लाक्षं च पश्चिमे भीमं तोरणं स्वर्णसन्निभम्। रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखानयः।। ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सित्स बहिषि।।

ॐ सुभीमतोरणाय नमः सुभीमतोरणमा ।

🕉 सुकर्मतोरणाय नमः सुकर्मतोरणमा०।

इति सम्पूज्य तत्र त्रिशूलशृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन—

🕉 अर्यमणशुक्राभ्यां नमः अर्यमणशुक्रौ०।

मध्ये- ॐ अंशवे नमः अंशुम्०। ॐ विवस्वद्बुधाभ्यां०। ॐ विवस्वद्बुधौ०।

इस प्रकार पून कर प्रार्थना करे—

यथा मेरूगिरे शृङ्गे देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव।।
तत्रैकं कलशं संस्थाप्य कलशोपरि— ॐ अनिलाय०।

ॐ अनलायं । मध्ये-ॐ वाक्पतते नमः। ॐ वाक्पतिमा ।

## (४) उत्तर तोरण

इस प्रकार पूजन कर उत्तर की ओर जाकर आचमन कर मौली

न्यग्रोधतोरणिमव उत्तरे च शशिप्रभम्। रक्षार्थञ्चेव बध्नानि कर्मण्यस्मिन्सुशोभितम्।।

ॐ शन्नो' देवीरभिष्टयुऽआपो' भवन्तु पीतये'। शं <sup>छोर्भिस्त्र</sup>वन्तुनद्दा। सुहोत्रतोरणाय०।

इति सम्पूज्य—तत्र त्रिशूलशृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन—

ॐ त्वष्ट्रहासोमाभ्यां । ॐ सवितृकेतुभ्यां । ॐ विष्णुशनिभ्यां नमः।। इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गे देवानामालयः सदा। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव।।

तत्र एकं कलशं संस्थाप्य कलशोपरि— ॐ प्रत्यूषाय ०। ॐ प्रभासाय ०। मध्ये-विघ्नेशाय ०। इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

तोणाधिष्ठिता देवाः पूजिता भक्तिमार्गतः। ते सर्वे मम यज्ञेऽस्मिन् रक्षां कुर्वन्तु वः सदा।।

इति तोरणपूजा।

# अथ मण्डपस्यद्वारदेवतापूजनम्

# दशदिक्पाल पूजन बलिदानम्

पूर्वद्वार पर जाकर आचमन प्राणायाम कर निम्न सङ्कल्प करे। मण्डप द्वार पूजन करके तब दशदिक्पाल का पूजन कर बलिदान दें—

पूर्वेगत्वा आचम्य प्राणानायम्य ततो देशकालौ सङ्कीर्त्य अस्मिन् अमुकयाग कर्मणि पूर्वीदि द्वारपूजां करिष्ये। इति सङ्कल्प्य—

# आयाहि वज्रसंघात पूर्वद्वार कृपाधिप। ऋग्वेदाधिपते तुभ्यं सुशोभन नमोऽस्तु ते।।

उपर्युक्त श्लोक का उच्चारण कर दो कलशों को दरवाजे के दोनों तरफ स्थापित करे—

प्रथमदक्षिणकलशोपरि — ॐ प्रशान्ताय । द्वितीयोत्तरवामकलशोपरि — ॐ शिशिराय । ततो मध्ये तृतीय प्रथम स्थापित कलशोपरि — ॐ ऐरावताय ।

इति गन्धादिना सम्पूज्य प्रार्थयेत्—इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे—

## सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्लवसंयुतम्। सरतं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम्।।

3% द्वारिश्रयै नमः - इति ऊर्ध्वम्।

अधः

- देहल्यै नमः।

दक्षिणशाखायाम् — ॐ गणेशाय नमः।

वामशाखायाम् — ॐ स्कन्दाय नमः।

द्वारकलशयोः — ॐ गङ्गायै नमः।

ॐ यमुनायै नमः।

इस प्रकार पूजन कर ऋग्वेद का पूजन करे— इति सम्पूज्य ऋग्वेदिनौ पूजयामि—ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।

ब्राह्मण पूजन-

कर्मनिष्ठाः तपोयुक्ताब्राह्मणावेदपारगाः । जपार्थं चैव सूक्तानां यज्ञे भवत ऋत्विजौ।।

## १. इन्द्रः

मध्य कलशोपरि—

एहोहि सर्वामरसिद्धिसोद्ध्यैरिभष्टुतो वज्रधरामरेश। संवीज्यमानोऽप्सरसा गणेन रक्षाध्वरन्नो भगवन्नमस्ते।।

र्थं त्रातारिमन्द्रमिवतारिमन्द्र ६ हवे हवे सुहव ६ शूरिमन्द्रम्। ह्योमिश्वकंपुरूहृत मिन्द्र ७ स्वस्ति नो मुघवा धात्विन्द्र÷॥

इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ।

<sup>इति</sup> सम्पूज्य पीतध्वजपताकामालभ्य जपेत् - (पीली झण्डी)

के आशुः शिशाना व्हृष्यो नभीमो धनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। भूकर्पनो निम्पऽएकवीरः शृत ६ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रे÷॥ इमां पताकां पीतां च ध्वजं पीतं सुशोभनम्। आलभामि सुरेशाय शचीप्रीत्यै नमो नमः।।

ध्वजपताकायोर्मध्ये-ॐ हेतुकाराय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे—

इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तोमहाबलः। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः।।

ततोबलिदानम् -

माषभक्तवलिं देव गृहाणेन्द्र शचीपते। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

ॐ नमो भगवते इन्द्राय सकलसुराणामधिपतये सवाहनाय सपरिवारायसशक्तिकाय तत्पार्षदेभ्यः सर्वेभ्यः भूतेभ्यः इमं सदीपदिधभाषभक्तबिलं समर्पयामि।

#### प्रार्थना -

भो इन्द्र स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सुकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुः कर्त्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता अरोग्यकर्ता वरदोभव।

हाथ में जल लेकर-अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयतां न मम। २. अग्नि

अग्निकोण में जाकर पूर्व की तरह आचमन प्राणायाम कर पूजन करे—

अग्निकोणमागत्य पूर्वप्रकारेण संस्थाप्य आचम्य कलशोपरि-

ॐ पुण्डरीकाय नमः। ॐ अमृताय नमः। ॐ एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवर्येरिभतोऽभिजुष्ट। तेजोवता लोकगणेन सार्द्ध ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते।। ॐ सप्तार्चिषं च विभ्राणमक्षमालां कमण्डलुम्। ज्वालमालाकुलं रक्तं शक्तिहस्तभजासनम्।।

त्वन्नो ऽअग्नेतवं देव्पायुधिर्म्घोनो रक्का तृत्वश्चवन्य न्त्राता तोकस्य तनये गवीमस्य निमेष्ट रक्क्षमाण्स्तवेव्यते॥

अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि ।

इति सम्पूज्य ध्वजपताकामालभ्य - (लाल झण्डी)

इस प्रकार पूजन कर ध्वज पताका का पूजन करे —

पताकामग्नये रक्तां गन्धमाल्यादिभूषिताम्। स्वाहायुक्त देवाय ह्यालभामि हविर्भुजे।।

ॐ अग्निन्दूतं पुरोदेधे हव्यवाहुमुपं बुवे । देवाँ २ आसादयादिह॥

ध्वजपताकयो : ॐ कुमुदाय नम:। ॐ क्षेत्रपालाय नम:।।

पूजन कर नमस्कार करे —

आग्नेय पुरूषो रक्तः सर्वदेवमयोत्ययः। धूम्रकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥ ततो बलिदानम् –

इमं माष बलिं देव गृहाणाग्ने हुताशन। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।। <sup>अग्नेय</sup> साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तिकाय इम् <sup>सदीपद्</sup>धिमाषभक्त बलिं समर्पयामि ।

प्रार्थना— भो अग्ने स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य प्रारिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। हस्ते जलं गृहीत्वा- अनेन बलिदानेन अग्निः साङ्गः सपरिवारः सशक्तिकः प्रीयतां न मम ।

## ३. यम

दक्षिणे गत्वा आचम्य द्वारकलशौ स्थापयेत् - सम्पूज्य नमस्कुर्यात्। इस प्रकार दक्षिण की ओर जाकर आचमन एवं प्राणायाम कर दो कलशो को दोनों तरफ स्थापित करें।

> ॐ नमस्ते धर्मराजाय त्रेतायुगाधिपाय च। यजुर्वेदादिदेवाय सुभद्रं द्वार दक्षिणे।।

ततः कलशोपरि-ॐ पर्जन्याय नमः, ॐ अशोकाय नमः। मध्यकलशे - ॐ वामनाख्यदिग्गजाय नमः। इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे—

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्लवसंयुतम्। सरतं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम्।।

ततो द्वारोर्ध्व - ॐ द्वारिश्रयै नमः

अधः - ॐ देहल्यै नमः

द्वारशाखयोः - ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। द्वारकलशयोः - ॐ गोदावर्ये नमः। ॐ कृष्णाये नमः। इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे—

वैवस्वतः महादेव नमस्ते धर्मसाक्षिक। शिवाज्ञयाऽपिहितो देव दिशं रक्ष भवानिह।। यजुर्वेद का पूजन करे — ततो यजुर्वेदिनौ पूजयेत् —

ॐ इषे त्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वेः सविता प्राणीयपु श्रेष्ठतमाय कमीण्ऽआप्यायद्ध्वमग्ज्याऽइन्द्रायभागं प्रजावती रनमीवाऽअय्क्षमा मार्वस्तेनऽईशत् माघशि सोध्डुवाऽअस्मिन्नोपेतौस्यात बह्वीर्ळाजमानस्य पृश्क्रपाहि । इस प्रकार यजुर्वेद का पूजन कर यम का पूजन कर बलिदान देवे। ततो मध्यकलशोपरि (यम)—

एहोहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते। शुभाशुभानन्दशुचामधीश शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते।।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वतेपितृमते स्वाही। स्वाहा धर्माय स्वाही घुर्मा? पित्रे ॥

यमाय नमः यमं साङ्गं सपरिवारमावाहयामि स्थापयामि । इति सम्पूज्य ध्वजपताका मालभ्य—

कृष्णवर्णां पताकांच कृष्णवर्णध्वजं तथा। अन्तकायालभामीह क्रतुकर्मणि साक्षिणे।।

ॐ यमाय त्वां .. . . . . . . . . . ०

इमां पताकां रम्यां च ध्वजं माल्यादिभूषितम्। यमदेव गृहाण त्वं प्रसीद करुणाकर।।

ध्वज पताका का पूजन कर प्रार्थना करें—

यमस्तु महिषारुढो दण्डहस्तो महाबलः। धर्मसाक्षी विशुद्धात्मा तस्मै नित्यं नमो नमः।। प्रार्थना कर बलिदान देवे—

इमं माष बलि देव गृहाणान्तक वै यम। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

ॐ यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दिधमाषभक्त बलिं समर्पयामि ।

प्रार्थना— भो यम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अवि:कर्ता शान्तिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो

हस्ते जलं गृहीत्वा— अनेन बलिदानेन यमः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिः प्रीयतां न मम ।

## ४. नैर्ऋत्य

नैर्ऋत्य कोण में जाकर आचमन एवं प्राणायाम कर कलश स्थापित करे। नैर्ऋत्ये गत्वा कलशं संस्थाप्य—

# निर्ऋतिं खड्गहस्तं च सर्वलोकैकपावनम्। आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्यूजेयं प्रतिगृह्यताम्।।

कलशोपरि- ॐ कुमुदाय नमः । ॐ दुर्जीयाय नमः ।

इति सम्पूज्य कलशे— इस प्रकार पूजन कर कलश में नैऋत्य का पूजन करे।

एहोहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेतालिपशाचसङ्घैः। ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते।।

ॐ असुन्वन्तमयंजमानमिच्छ स्तेनस्येन्यामित्र्विह् तस्क्रीरस्य। अत्र्यमसम्मिद्धे सा तंऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्ध्यमस्तु। निर्ऋतिं सपरिवारं सायुधं आवाहयामि स्थापयामि।

इस प्रकार पूजन कर ध्वज पताका का पूजन करे (नीले रंग की झण्डी)— ध्वजपताकामालभ्य पताकानिऋितश्चेव नीलवर्ण ध्वजं तथा। पिशाचगणनाथाय आलभामि ममाध्वरे।

ॐ असुन्वतम् . . . . . . . ० — सम्पूज्य ध्वजपताकयोः। ॐ कुमुदाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।

पूजन कर प्रार्थना करे—

सर्वप्रेताधिपो देवो निर्ऋितर्गील विग्रहः। करे खड्गधारो नित्यं निर्ऋितये नमो नमः।। ततो बलिदानम् — इमं माषबलिं यक्षो गृहाण निर्ऋतेप्रभो । यज्ञ संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप द्धिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥

प्रार्थना— भो निर्ऋते बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य आयुः सपिरवारस्यः कर्ता शान्तिकर्ता पृष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता वरदो भव।

हस्ते जलं गृहीत्वा—अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

#### ५. वरुण

पश्चिम में जाकर आचमन एवं प्राणायाम करे तब कलश स्थापित कर पूजन कर नमस्कार करें—

नमोस्तुकामरूपाय पश्चिमद्वारश्चिताय च। सामवेदाधिपस्त्वं हि नाम्ना कल्याणकारक।।

कलशोपरि — ॐ भूतसञ्जीवनायः। ॐ अमृतायः।

मध्यकलशे — ॐ अनन्ताख्यदिग्गजाय०।

द्वारोर्ध्वम् — ॐ द्वारिश्रये नमः।

अधः — ॐ देहल्यै नमः।

द्वारशाखयोः — ॐ नन्दिन्यै०। चण्डायै नमः।

द्वारकलशयोः — ॐ रेवायै०। ॐ ताप्यै०।

इति सम्पूज्य सामवेदिनौ पूजयेत् — ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सित्सि बहिर्षि।

इति सम्पूज्य मध्य कलशे—

<sup>एहोहि</sup> यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः। विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्नाभगवन्नमस्ते।। ॐ तत्वांगामि ब्बह्मणा व्वन्दमान्स्तदाशास्ति वजमानो ह्विब्धिः । अहे'डमानो व्वरुणेहवोध्युर्रशः समान् ऽआयु ४ प्रमो'षी ।।

वरुणं साङ्गं सपरिवारम् आवाहयामि। वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः। इति सम्पूज्य ध्वजपताकामालभ्य—(सफेद झण्डी)—

श्वेतवर्णां पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम्। वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये।।

ॐ उदुंत्तमं व्यक्तिण्पाशीमसम्मदवीध्मं व्यिमध्यम् श्रिथाय । अथी व्ययमीदित्त्य व्यते तवा नीगसोऽअदितये स्याम॥

इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे—

पाशहस्तस्तु वरुणः साम्भसाम्पतिरीश्वर। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

ततो बिलदानम् — वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदिधमाषभक्तबिलं समर्पयामि ॥

प्रार्थना — भो वरुण बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदोभव।

जलं गृहीत्वा — अनेन बलिदानेन नमो भगवते सकलजलानामधिपतये न मम ।

## ६. वायु

वायवे गत्वा आचम्य कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशे— वायुकोण में जाकर आचमन कर कलश स्थापित कर पूजन करें—

ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ सिन्दार्थाय नमः। इति गन्धादिभिः मम्पुज्य कलशोपरि-

एहोहि यज्ञे मम रक्षणार्थं मृगाधिरुढः सह सिद्धसङ्घैः। प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ आनो नियुद्धिः शृतिनी भित्रव्यर संहस्त्रिणी भिरुपयाहि युज्जम्। व्वायो-ऽअस्मिन्त्सर्वने मादयस्व यूयं पति स्वस्तिभिद्धं सदी नः ॥ वायवे नमः वायु०।

सम्पूज्य ध्वजपताकामालभ्य—

पताकां वायवे धूम्रां धूमवर्णध्वजं तथा। आलभाम्यनुरुपाय प्राणदाय हिताय ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो स्थास्ते भिरागंहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये।

इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् —

अनाकारो महौजाश्च सर्वगन्धवहः प्रभुः। तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽहं नमामि च।। ततो बलिदानम् —

ॐ माषभक्त बलि वायो मया दत्तं गृहाण प्रभो। यज्ञ संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं द्धिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो वायु साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः मम सकुटुम्बस्य भपरिवारस्य आयु:कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन नमो भगवते वायवे सकलप्राणानामधिपतये प्रीयतां न मम ।

## ७. सोम

उत्तर की ओर जाकर आचमन कर द्वारकलश स्थापित कर पूजन करें—

नमस्ते दिव्यरुपत्वमथर्वाधिपते प्रभो। कालावधिपनिर्नाम्ना मङ्गलञ्चोत्तरानन।।

कलशोपरि — ॐ धनदाय नमः। ॐ श्रीप्रदाय नमः।

मध्य कलशे — ॐ सार्वभौमदिग्गजाय नमः।

इति सम्पूज्य द्वारोद्धर्वम् — ॐ द्वारिश्रयै नमः।

अधः — ॐ देहल्यै नमः।

द्वारशाखयोः — महाकालाय नमः ।

द्वारशाखयोः — भृङ्गिणे नमः।

द्वारकलशयोः — ॐ नर्मदायै नमः । ॐ ताप्यै नमः ।

इति सम्पूज्य अथर्ववेदिनौ पूजयेत्—ॐ शन्नो देवीरिभष्टेय् आपो भवन्तु पीतये। शंख्योरिभस्त्रेवन्तु न ।।

मध्ये कलशे —

एहोहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्धम्।। सर्वोषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ व्वय ६ सोम व्वृते तव मनस्तुनूषु बिब्धतः। प्रजावन्तः सचेमिह ॥ सोमाय नमः सोममा०।

इति सम्पूज्य ध्वजपताकामालभ्य (हरी झण्डी)—

हरितवर्णां पताकां च हरिद्वर्णमयं ध्वजम्।। कुबेराय लभाम्येव पूजये च सदार्थिना।।

# ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्यिश्यतं÷ सोम् ब्रह्मणार्यम्। भवाव्वाजस्य सङ्ग्रथे॥

सम्पूज्य प्रार्थना- गौरोपमपुमान्स्थूलः सर्वीषधिरसादयः। तक्षत्राधिपतिः सोमस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

ततो बलिदानम् — इमं माषभक्तबलि देव गृहाण त्वं धनप्रद। यज्ञसरक्षणार्थीय प्रसन्नो वरदो भव।

सोमाय साङ्गाय सपरिवारय सायुधाय इमं सदीप-दिधमाषभक्त बलि समर्पयामि ।

प्रार्थना — भो सोम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव।।

जलं गृहीत्वा — अनेन बलिदानेन नमो भगवते सोमाय सकलकोशाधि-पतये प्रीयतां न मम।

# ८. ईशान

ईशान कोण में जाकर आचमन कर कलश स्थापित करे— इशानेगत्वा आचम्य कलशं संस्थाप्य।

कलशे— ॐ सुप्रतीकाय नमः । ॐ मंगलाय नमः । इति सम्पूज्य पुन:-

कलशोपरि-

एहोहि विश्वेश्वर नित्रशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम्। लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ तमीशानु झर्गतस्तुस्थुषुस्प्पतिन्धियश्चिन्वमवसे र्महे व्यम् । पूषा नो यथा व्वेदं सामसंद्वृधे रिक्शुता ण्युरदेष्यः स्वस्तये । ईशानाय नमः ईशानमा०।

इति सम्पूज्य ध्वजपताकामालभ्य— (सफेद झण्डी)

ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां गन्धभूषिताम्। आलभामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने॥

🕉 तमीशानञ्जगतस्त — इस प्रकार पूजन कर प्रार्थना करे—

सर्वाधिपो महादेवः ईशानः शुक्ल ईश्वरः।

शूलपाणिर्विरुपाक्षः तस्मै नित्यं नमो नमः।।

ततो बलिदानम् —

इमं माषबलि देव गृहाणेशानशङ्कर। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप-दिधमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो ईशान बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदोभव।

हस्ते जलं गृहीत्वा — अनेन बलिदानेन ईशानः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

#### ९. ब्रह्मा

ईशानेन्द्रयोर्मध्ये गत्वा आचम्य कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशोपरि— (ईशान और पूर्व के मध्य में स्थित ब्रह्मा का पूजन कर बिलदान दे—) एह्मेहि विष्णवाधिपते सुरेन्द्र लोकेन सार्द्धिपतृदेवताभिः। सर्वस्य धातास्यिमतप्रभावो विशाध्वरत्रः सततं शिवाय।।

ॐ अस्ममेह्द्रा मेहना पर्व्वतासोव्वृत्रहत्ये भरेहृतौ सजोषिः । यः शष्ट सते स्तुवृते धार्यिवृज्ज्ञ उइन्द्रं ज्येष्ठा उअस्ममाँ२ ऽअवन्तु देवा? ॥ ब्रहमणे नमः ब्रह्माणं० । इति सम्पूज्य ध्वज पताकामालम्भ्य— पद्मवर्णा पताकां च पद्मवर्ण ध्वजं तथा। आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये।। अ ब्रह्मवज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुची व्येन ऽअविः। स ब्रुष्टन्याऽउपमा अस्य व्यिष्ठाः स्तश्च

ब्रोनिमसंतश्श्र व्विवेश।

पूजन कर प्रार्थना करें—

पद्मयोनिश्चतुमूत्ति वेदव्यासपितामहः।

यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः।।

ततो बलिदानम् —

इमं माषबलि ब्रह्मन् गृहाण कमलासन। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप-दिधमाषभक्त बलिं समर्पयामि ।

प्रार्थना-भो ब्रह्मन् मम सकुटुम्बकस्य सपरिवास्यायुः कर्ता शान्ति कर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वर दो भव।

हस्ते जलं गृहीत्वा — अनेन बिलदानेन नमो भगवते ब्रह्मणे सकलवेद-शास्त्रतत्वज्ञानाधिपतये प्रीयतां न मम ।

## १०. अनन्त

नैऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये गत्वा आचम्य कलशं प्रतिष्ठाप्य वरुणाय नेमः सम्पूज्य पुनः कलशोपरि — (नैऋत्य कोण और पश्चिम के मध्य में अनन्त का पूजन कर बलिदान देवें ।)

एहोहि पातालधरामरेन्द्र नागाङ्गिकन्नरगीयमान। यज्ञोरगेन्द्रामरलोक सङ्घर्थरनन्त रक्षाध्वरमस्मदीयम्।।

# ॐ स्योना पृथिवि नो भवात्रवश्चरा निवेशनी ॥ यच्छा न ३ शर्मी सुण्रथा ३ ।

अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि०। इति सम्पूज्य ध्वज-पताकामालम्भ — (पीली या काली झण्डी)

> ॐ मेघवर्णां पताकां च मेघवर्णं ध्वजन्तथा। आलभामि ह्यनन्ताय धरिणीधारिणे नमः।।

ॐ नमौऽस्तु सूर्पोब्क्यों ये के च पृथिवीमनु । येऽ अन्तरिक्षे ये दिवितेब्क्यं÷ सूर्पोक्यों नमं ÷ ॥

इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् – घनवर्णां पताकेमां ध्वजं गन्धविभूषितम्। स्थापयामि प्रसन्नाय अनन्ताय नमो नमः।।

ततो बलिदानम् -

इमं माषबलिं शेष गृहाणानन्तपन्नग। यज्ञसंरक्षणर्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

अन्ताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप-दिधभाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

प्रार्थना — भो अनन्त बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवास्यायुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ।

हस्ते जलं गृहीत्वा –

अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयतां न मम ।

# अथमहाध्वजपूजनं मण्डपमध्ये

ॐ इन्द्रस्य व्यष्णो वुर्लणस्य राज्ञऽआदित्यानीम्म्रकता-छ्राद्धिऽउग्ग्रम्। म्हामनसाम्भुवनच्च्य्वानाः द्वोषो । देवानाञ्जयतामुदेस्त्थात् ॥

इति षोडशहस्तवंशे महाध्वजं विचित्रवर्णं प्रान्तः किंकिण्यादियुतं त्रिहस्तविस्तृतं सप्तहस्तदीर्धं वा पञ्चहस्तविस्तृत

दशहस्तदीर्घं संस्थाप्य।

ॐ ब्ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्धि सीमृतः सुक्तची व्येन ऽआवंश स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्यिष्ठाः स्तश्च योनिमसंतश्च्य व्यवंशा

सम्पूज्य मण्डपषोडशस्तम्भेषु - ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । वंशेषु - ॐ किन्नरेभ्यो नमः । पृष्ठे - ॐ पन्नगेभ्यो नमः॥

-मण्डपाद्बहिः प्राच्यामुपलिप्त भूमावुपविश्य सम्पूज्य आलभेत् —

इमं विचित्रवर्णन्तु महाध्वजविनिर्मितम। महाध्वजञ्चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये।।

ॐ ब्ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरूचो व्वेन ऽअविदः। स बुध्न्या ऽउपमाऽ अस्य व्विष्ठ्ठाः स्तश्च योन्मसंतश्च व्विवे ॥

अमुमहाध्वजं चित्तं सर्वविघ्नविनाशकम्। महामण्डपमध्येतु स्थापयामि सुरार्चने।।

ॐ इन्द्रस्य व्वष्णो व्यक्षणस्य राज्ञं ऽआदित्या-नाम्म्कतां शब्दं ऽउग्गम्। मृहामनसाम्भुवनच्य-वानाङ्गोषो देवानाञ्जयतामुदस्थात्॥

अनया पूजया इन्द्रः प्रीयतां न मम ॥

ततो मण्डपषोडशालिकासु -

ॐ सर्विभ्यो नमः मण्डपपृष्ठैः - ॐ पन्नगेभ्यो नमः ३ तत्राष्टदलं विलिख्य तत्राष्टदलेषु ।।

ॐ नमो गुणेभ्यो गुणपतिबभ्यश्श्रवो नमो नमो व्याते भयो व्यातेपतिब्भ्यश्श्ववो नमो नमो गृत्ती ब्या गृत्स्पितिकम्यश्श्रवो नमो नमो व्यक्तपेक्यो। व्विष्धर्रापेकम्यश्श्रवो नमो नम् ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च। ब्रह्मविष्णुशिवैः साद्धरक्षां कुर्वन्तु तानि वै।। देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षस पन्नगाः। ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।। सर्वे ममाध्वरं रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः। ब्रह्मा विष्णुश्श्च क्षेत्रपालो गणैः सह।। रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घन्तुं रक्षांसि सर्वतः।।

इति पठित्वाऽक्षतपुञ्जेषु पूर्वादिक्रमेण-

- १. त्रैलोक्यस्थेभ्यः स्थावरेभ्यो नमः त्रैलोक्यस्थावारानावाहयामि।
- २. त्रैलोक्यस्थेभ्यश्चरेभ्यो नमः त्रैलोक्यस्थरेभ्यश्चरानावाहयामि।
- ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मणमावाहयामि।
- ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि।
- ५. ॐ शिवाय नमः शिवमावाहयामि।
- ६. ॐ देवेभ्यो नमः देवानावाहयामि।
- ७. ॐ दानवेभ्यो नमः दानवानावाहयामि।
- ८. ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः गन्धर्वानावाहयामि।
- ९. ॐ यक्षेभ्यो नमः यक्षानावाहयामि।

- १०. ॐ राक्षसेभ्यो नमः राक्षसानावाहयामि।
- ११. ॐ पन्नगेभ्यो नमः पन्नगानावाहयामि।
- १२. ॐ ऋषिभ्यो नमः ऋषीनावाहयामि।
- १३. ॐ मुनिभ्यो नमः मुनीनावाहयामि।
- १४. ॐ गोभ्यो नमः गाः आवाहयामि।
- १५. ॐ देवमातृभ्यो नमः देवमातृ आवाहयामि।

इत्यावाह्य सम्पूज्य- सर्वेभ्यो बर्लि दत्वा तत्रैव गणपतिमावाह्य सम्पूज्य बर्लि दत्वा-

ॐ नमो'ऽस्तुरुद्देब्भ्यो्बेदिवि ये'षां व्वर्षिमर्षवः। तेब्भ्यो-दश्प्पाचीर्दशं दिक्श्णादशंप्पृतीची र्दशोदीची-र्दशोद्धर्वाः॥ तेब्भ्यो नमोऽअस्तु तेनोऽवन्तु ते नो' मृडयन्तुते व्यन्दिद्धष्मोवश्च नोद्देष्ट्रितमे'षाञ्जम्भे'दद्धमः॥

इति मन्त्रेण दिक्षु विदिक्षु अक्षतपुञ्जेषु रुद्रमावाह्य सम्पूज्य बलि दत्वा सर्वान विसृज्य ईशाने सर्वभूतबलिदत्वा दद्यात् तत्र मन्त्रा:- ते च पूर्तकमलाकरोद्योता तावुक्ता उच्यन्ते-

अधश्रैवतु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः।
सपत्नीपरिवाराश्च प्रतिगृह्णन्त्वमं क्लिम्।।
नक्षत्राधिपतिश्चैव नक्षत्रैः परिवारितः।
स्थानं चैव पितृणां तु सर्वे गृह्णान्त्वमं बलिम्।।
ईशानोत्तरयोर्मध्ये क्षेत्रपालो महाबलः।
मीननामा महादष्ट्रः प्रतिगृह्णन्त्वमं बलिम्।।
ये केचित्वहलोकेषु आगता बलिकाङ्किणः।
तेभ्यो बलि प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः।।

कमलाकरादयः।

बलि गृह्णान्त्वमे देवा आदित्या वसवस्तथा। मरुतश्चाश्चिनौ रूद्राः सुपर्णाः पन्नगाः गृहाः।। असुरायातु धानाश्च पिशाचा मातरो गणाः। शाकिन्यो यक्ष वेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः।। जुम्भका सिद्धगन्धर्वा नागविद्याधरा नगाः। दिक्पालाश्च लोकपालाश्चये च विघ्नविनायकाः।। जगतां शान्तिकर्तारोब्रह्माद्याश्च महर्षय:। मां विघ्नं मा च ये पापा, मा सन्तु परिपान्थिनः।। सौम्य भवन्तु तृप्ताश्च देवा भूतगणास्तथा। ते गृह्णन्तु मया दत्तं बलि वै सार्वभौतिकम्।। अनेन बलिदानेन अधोलोकादयः प्रीयन्तां न मम।। ततः प्रक्षालितपादपाणिः प्राग्द्वारेणमण्डपं प्रविश्यं यजमानो दक्षिणत विहितं कर्म कुरुध्व मिति प्रेषयोदित उपविश्य यथा

हाथ-पैर धोकर मण्डप में प्रवेश करें। ।। इति मण्डपस्यद्वारदेवतापूजनं समाप्तः ।।

# अथ चतुःषष्टियोगिनी स्थापनम्

वेदी के ऊपर वस्त्र बिछाकर दक्षिण तथा उत्तर की तरफ से नव रेखा खींचे इस प्रकार चौंसठ कोष्ठ (खाने) बन जायेंगे। स्वोंपिर भाग में तीन त्रिकोण बनाकर तीन कलशों को स्थापित कर दक्षिण से उत्तर की ओर क्रमश: महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती की पूजा करें तथा चौंसठ खाना त्रिकोण बनाकर पश्चिम से पूर्व की ओर आवाहन तथा स्थापन करें। कलशों के ऊपर अग्न्युत्तारण पूर्वक महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती की स्वर्णमयी प्रतिमा स्थापित करें।

सङ्कल्पः-कर्ता दक्षिणहस्ते जलाक्षत द्रव्यं चादाय सङ्कल्पं क्यात्-देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं गुप्तोऽहं दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं अस्मिन् अमुकयागकर्मणि महाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीपूजनपूर्वक दिव्यादि चतःषष्टियोगिनीनां स्थापनं पूजनं करिष्ये।।

प्रथम कलशोपरि-

🕉 महाकाल्यै नमः महाकालीम् मावाहयामि स्थापयामि।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मी मावाहयामि स्थापयामि। तदुत्तरतः द्वितीय कलशपात्रोपरि।

महासरस्वत्यै नमः महासरस्वती मावाहयामि स्थापयामि। तदुत्तरतस्तृतीय कलशपात्रोपरि।

दक्षिण के प्रथम पङ्क्ति में नीचे के कोष्ठकों से ऊपर की ओर आवाहन करें।

#### प्रथम पंक्ति में-

- (१) प्रथम कोष्ठे- ॐ दिव्ययोगिन्यै नमः दिव्ययोगिनीम् आवा०स्था०।
- (२) द्वितीय कोष्ठे- ॐ महायोगिन्यै नमः महायोगिनीम् आवा०स्था०।
- (३) तृतीय कोष्ठे- ॐ सिद्धयोगिन्यै नमः सिद्धयोगिनीम् आवा०स्था०।
- (४) चतुर्थ कोष्ठे- ॐ माहेश्वर्यी नमः माहेश्वरी मावाहयामि स्थापयामि।
- (५) पञ्चमे कोष्ठे ॐ प्रेताक्ष्यै नमः प्रेताक्षीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (६) षष्ठे कोष्ठे ॐ डाकिन्यै नमः डाकिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७) सप्तमे कोष्ठे- ॐ काल्यै नमः कालीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८) अष्टमे कोष्ठे— ॐ कालरात्र्ये नमः, कालरात्रीमावाहयामि स्थापयामि। द्वितीय पंक्ति में-
- (१) प्रथम कोष्ठे- ॐ निशाकरौँ नमः निशाकरीम् आवा०स्था०।
- (२) हितीय कोष्ठे- ॐ हुङ्कार्यी नमः हुङ्कारीम् आवा०स्था०।
- (३) रितीय कोष्ठे- ॐ सिद्धिवैतालिकायै नमः सिद्धिवैतालिकामावा०स्था०।

- (४) चतुर्थ कोष्ठे- ॐ हींकाय्यैं नमः हींकारीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (५) पञ्चमे कोष्ठे- ॐ भूतडामरायै नमः भूतडामरामावाहयामि स्थापयामि।
- (६) षष्ठे कोष्ठे- ॐ ऊर्ध्वकेश्यै नमः ऊर्ध्वकेशीमावाहयामि स्थापयामि।
- (७) सप्तमे कोष्ठे- ॐ विरुपाक्ष्यै नमः विरुपाक्षीमावाहयामि स्थापयामि।
- (८) अष्टमे कोष्ठे- ॐ शुष्काङ्गयै नमः, शुष्काङ्गीमावाहयामि स्थापयामि। तृतीय पंक्ति में-
- (१) प्रथम कोष्ठे- ॐ नरभोजन्यै नमः नरभोजनीम आवा०स्था०।
- (२) द्वितीय कोष्ठे- ॐ फेत्कार्ये नमः फेत्कारीम् आवा०स्था०।
- (३) तृतीय कोष्ठे ॐ वीरभद्रायै नमः वीरभद्राम् आवा०स्था०।
- (४) चतुर्थ कोष्ठे- ॐ धूम्राक्ष्यै नमः धूम्राक्षी मावाहयामि स्थापयामि।
- (५) पञ्चमे कोष्ठे- ॐ कलहप्रियायै नमः कलहप्रिया मावा० स्थापयामि।
- (६) षष्ठे कोष्ठे- ॐ राक्षस्यै नमः राक्षसी मावाहयामि स्थापयामि।
- (७) सप्तमे कोष्ठे-ॐ घोररक्ताक्ष्यै नमः घोररक्ताक्षीम् आवा० स्थापयामि।
- (८) अष्टमे कोष्ठे- ॐ विशालाक्ष्यै नम:, विशालाक्षी मावा० स्थापयामि। चतुर्थ पंक्ति में-
- (१) प्रथम कोष्ठे- ॐ कौमार्ये नमः कौमारीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२) द्वितीय कोष्ठे- ॐ चण्ड्यै नमः चण्डीम् आवाहयामि स्थाप्यामि।
- (३) तृतीय कोष्ठे ॐ वाराह्यै नमः वाराहीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (४) चतुर्थ कोष्ठे-ॐ मुण्डधारिण्यै नमः मुण्डधारिणीमावा० स्थापयामि।
- (५) पञ्चमे कोष्ठे- ॐ भैरव्यै नमः भैरवीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (६) षष्ठे कोष्ठे- ॐ विरायै नमः वीराम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७) सप्तमे कोष्ठे- ॐ भयङ्कर्ये नमः भयङ्करीम् आवा० स्थापयामि।
- (८) अष्टमे कोष्ठे- ॐ वज्रधारिण्यै नमः, वज्रधारिणीम् आवा० स्थाप०। पञ्चम पंक्ति में-
- (१) प्रथम कोष्ठे- ॐ क्रोधायै नमः क्रोधाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२) द्वितीय कोष्ठे- ॐ दुर्मुख्यै नमः दुर्मुखीम् आवाहयामि स्थापयामि।

- (३) तृतीय कोष्ठे— ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः प्रेतवाहिनी मावाहयामि स्थाप०।
- (४) चतुर्थ कोष्ठे- ॐ कर्कायै नमः कर्कामा आवाहयामि स्थापयामि।
- (५) पञ्चमे कोष्ठे-ॐ दीर्घलम्बोष्ठौ नमः दीर्घलम्बोष्टीम् आवाह० स्थाप०।
- (६) षष्ठे कोष्ठे- ॐ मालिन्यै नमः मालिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७) सप्तमे कोष्ठे- ॐ मन्त्रयोगिन्यै नमः मन्त्रयोगिनीम् आवा० स्थाप०।
- (८) अष्टमे कोष्ठे- ॐ कालाग्निमोहिन्यै नमः, कालाग्निमोहिनीम् आवा० स्थाप०। षष्ठम पंक्ति में-
- (१) प्रथम कोष्ठे- ॐ मोहिन्यै नमः मोहिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२) द्वितीय कोष्ठे- ॐ चक्रायै नमः चक्राम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (३) तृतीय कोष्ठे- ॐ कुण्डलिन्यै नमं: कुण्डलिनी मावाहयामि स्थाप०।
- (४) चतुर्थ कोष्ठे- ॐ बालुकायै नमः बालुकाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (५) पञ्चमे कोष्ठे- ॐ कौबेर्ये नमः कौबेरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (६) षष्ठे कोष्ठे- ॐ यमदूत्यै नमः यमदूतीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७) सप्तमे कोष्ठे- ॐ करालिन्यै नमः करालिनीम् आवाहयामि स्थाप०।
- (८) अष्टमे कोष्ठे- ॐ कौशिक्यै नम:, कौशिकीम् आवाहयामि स्थाप०। सप्तम पंक्ति में-
- (१) प्रथम कोष्ठे- ॐ यक्षिण्यै नमः यक्षिणीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२) द्वितीय कोष्ठे- ॐ भक्षिण्यै नमः भक्षिणीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (३) तृतीय कोष्ठे- ॐ कौमार्ये नमः कौमारीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (४) चतुर्थ कोष्ठे- ॐ मन्त्रवाहिन्यै नमः मन्त्रवाहिनी मावाहयामि स्थाप ।
- (५) पञ्चमे कोष्ठे- ॐ विशालायै नमः विशालाम् आवाहयामि स्थाप०।
- (६) पष्ठे कोष्ठे- ॐ कार्मुक्यै नमः कार्मुकीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७) सप्तमे कोष्ठे- ॐ व्याध्यै नमः व्याधीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८) अष्टमे कोष्ठे- ॐ महाराक्षस्यै नमः, महाराक्षसीम् आवा० स्थाप०। अष्टम पंक्ति में-
- (१) प्रथम कोष्ठे— ॐ प्रेतभक्षिण्यै नमः प्रेतभक्षिणीम् आवाह० स्थाप०।

- (२) द्वितीय कोष्ठे- ॐ धूर्जट्यै नमः धूर्जटीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (३) तृतीय कोष्ठे- ॐ विकटायै नमः विकटाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (४) चतुर्थ कोष्ठे- ॐ घोररुपायै नमः घोररूपाम् आवाहयामि स्थाप०।
- (५) पञ्चमे कोष्ठे- ॐ कपालिकायै नमः कपालिकाम् आवाह० स्थाप०।
- (६) षष्ठे कोष्ठे- ॐ निकलायै नमः निकलाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७) सप्तमे कोष्ठे- ॐ अमलायै नमः अमलाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८) अष्टमे कोष्ठे- ॐ सिद्धिप्रदायै नमः, सिद्धिप्रदाम् आवा० स्थाप०।

### ॐ मनो जूतिज्जीषता माज्ज्यस्य बृहुस्प्पर्तिर्व्धज्ञ मिमं तेनोत्विरिष्ट्ंटे व्यज्ञ ६ सिम्मं देधातु । विश्श्वेदेवा से उड्ड मादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ ॥

योगिनी पीठ पर कलश की प्राण प्रतिष्ठा करके उस पर योगिनी का पूजन करे—

ॐ योगे-योगे तवस्तरं व्वाजे-वाजे हवामहे । सखाय इन्द्र मूतये।। योगिनी प्रार्थना-

आधारभूता जगतस्त्वमेका, महीस्वरुपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये।।
ढुं ढुं ढुमकत ढुम्ब ढुम्ब वहनं। भूमौ सदा यस्य सा।।
क्षुं क्षुं क्षुमकत क्षुम्ब क्षुम्ब घुँघरु। कर्णो सदा सर्वदा।।
रं रं रमकत रम्ब रम्ब रक्तं। कमलं तु हस्ते सदा।।
चं चं चमकत चम्ब चम्ब कङ्कण। दुर्गे सदा पाहि मां।।
चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः।

अनया पूजया चतुः षष्टि योगिन्य, प्रीयन्तां न ाम ।

### अथ क्षेत्रपाल पीठपूजनम्

क्षेत्रपाल पीठ पर सर्वप्रथम बीच के खाने से प्रारम्भ कर उसके अपर दाहिने तरफ से क्रमशः से आवाहन करें।

सङ्कल्पः — कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत द्रव्यं चादाय सङ्कल्पं कुर्यात्-देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं गुप्तोऽहं दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं अस्मिन् अमुकयागकर्मणि क्षेत्रपालपूजनं करिष्ये।।

पूर्वादिकोष्ठे षड्दले-

(१) ॐ अजराय नमः, अजरम् आवाहयामि स्थापयामि।

- (२) ॐ व्यापकाख्याय नमः, व्यापकाख्य मावाहयामि स्थापयामि।
- (३) ॐ इन्द्रचौराय नमः, इन्द्रचौरम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (४) ॐ इन्द्रमूर्तये नमः, इन्द्रमूर्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (५) ॐ उक्षाभिधाय नमः, उक्षाभिधम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (६) ॐ कूष्माण्डाय नमः, कूष्माण्डम् आवाहयामि स्थापयामि। आग्नेयादिकोष्ठे षड्दले-
- (७) ॐ वरुणाय नमः, वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८) 🕉 बाहुकाख्याय नमः, बाहुकाख्य मावाहयामि स्थापयामि।
- (९) ॐ विमुक्ताय नमः, विमुक्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१०) ॐ लिप्तकाय नमः, लिप्तकम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (११) ॐ लीलालोकाय नमः, लीलालोकम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१२) ॐ एकदंष्ट्राय नमः, एकदंष्ट्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

दक्षिणादिकोष्ठे षड्दले-

- (१३) ॐ ऐरावताख्याय नमः, ऐरावताख्य मावाहयामि स्थापयामि।
- (१४) ॐ ओषधीध्माय नमः, ओषधीघ्न मावाहयामि स्थापयामि।
- (१५) ॐ बन्धनाख्याय नमः, बन्धनाख्य मावाहयामि स्थापयामि।
- (१६) ॐ दिव्यकाय नमः, दिव्यका मावाहयामि स्थापयामि।
- (१७) ॐ कम्बलाख्याय नमः, कम्बलाख्य मावाहयामि स्थापयामि।

- (१८) ॐ क्षोभणाख्याय नमः, क्षोभणाख्य मावाहयामि स्थापयामि।
- (१९) ॐ गवे नमः, गवाम् आवाहयामि स्थापयामि। नैर्ऋत्यादिकोष्ठे षड्दले-
- (२०) ॐ घण्टाभिधाय नमः, घण्टाभिधान मावाहयामि स्थापयामि।
- (२१) ॐ व्यालाय नमः, व्यालम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२२) ॐ अणुस्वरूपाय नमः, अणुस्वरूपम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२३) ॐ चन्द्रवारुणाय नमः, चन्द्रवारुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२४) ॐ फटाटोपाय नमः, फटाटोपम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२५) ॐ जटालाय नमः, जटालम् आवाहयामि स्थापयामि। पश्चिमादिकोष्ठे षड्दले-
- (२६) ॐ क्रतवे नमः, क्रतु मावाहयामि स्थापयामि।
- (२७) ॐ घण्टेश्वराय नमः, घण्टेश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२८) ॐ विटङ्काय नमः, विटङ्कम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२९) ॐ मणिमतये नमः, मणिमतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (३०) ॐ गणबन्धाय नमः, गणबन्धम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (३१) ॐ डामराय नमः, डामरम आवाहयामि स्थापयामि। वायव्यादिकोष्ठे षड्दले-
- (३२) ॐ ढुण्ढिकर्णीय नमः, ढुण्ढिकर्णम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (३३) ॐ स्थविराय नमः, स्थविरम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (३४) ॐ दन्तुराय नमः, दन्तुरम् आवाहयामि स्थापया म।
- (३५) ॐ धनदाय नमः, धनदानम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (३६) ॐ नागकर्णाय नमः, नागकर्णम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (३७) ॐ मारीगणाय नमः, मारीगणम् आवाहयामि स्थापयामि। उत्तरादिकोष्ठे षड्दले-
- (३८) ॐ फेत्काराय नमः, फेत्कारम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (३९) ॐ चीकराय नमः, चीकरम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (४०) ॐ सिंहाकृतये नमः, सिंहाकृतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (४१) ॐ मृगाय नमः, मृगम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (४२) ॐ यक्ष्मप्रियाय नमः, यक्ष्मप्रिय मावाहयामि स्थापयामि।

उत्तरादिकोष्ठषड्दलस्यान्तिमद्लार्घे-

उत्तरादिकोष्ठषड्दलस्यान्तिमदलार्घे यक्षादुत्तरतः-

(४४) ॐ तीक्ष्णोष्ट्राय नमः, तीक्ष्णोष्ट्रम आवाहयामि स्थापयामि। हृशानादि कोष्ठे षड्दले-

(४५) ॐ अनलाय नमः, अनल मावाहयामि स्थापयामि।

(४६) ॐ शुक्लतुण्डाय नमः, शुक्लतुण्ड मावाहयामि स्थापयामि।

(४७) ॐ अन्तरिक्षाय नमः, अन्तरिक्षं मावाहयामि स्थापयामि।

(४८) ॐ बर्बरकाय नमः, बर्बरक मावाहयामि स्थापयामि। ईशानादिकोष्ठषड्दलस्यान्तिमदलार्घे पवनादुत्तरतः –

(४९) ॐ पावनाय नमः, पावनम् आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ निहस्प्यश्मविदन्नन्त्रम्माद्वैश्यान्रात्पुरऽएतारम्ग्ने । एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यव्वैश्यान्रङ्क्षेत्रजित्याय देवा ।।

प्रतिष्ठा— क्षेत्रपाल की स्थापना वेदी के मध्य भाग में करें।

ॐ मनो ज़ूतिज्जीषतामाज्जीस्य बृह्स्पतिर्व्यज्ञिम्मं तेनोत्वरिष्टुं व्यज्ञक्ष सिम्मन्दधातु । व्यिश्शे देवासं प्रह मीदयन्तामों ३ प्रतिष्ठ ॥

ॐ भूत प्रेत पिशाचैश्च आवृतं शूल पाणिनम्। आवाह्ये क्षेत्रपालं तु कर्मण्यस्मिन् सुखायनः।। ॐ भूर्भुवः स्वः अजरादि मण्डल देवता सिहत। श्री क्षेत्रपाल देवता सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।। तत्पश्चात् क्षेत्रपाल पीठ पर कलश की प्राणप्रतिष्ठा कर उस पर क्षेत्रपाल का पूजन कर प्रार्थना करे—

कर कलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिः। तस्त्रण तिमिरनील ब्यालयज्ञोपवीती।। क्रतु समये सपर्या विघ्नविच्छेद हेतुः। जयित बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।। ॐ यं यं यक्षरूपं दशिदिशि वदनं भूमिकम्पायमानम् सं सं सं संहार मूर्ति शिरमुकुट जटा शेखरं चन्द्रबिम्बम्। दं दं दं दीर्घकायं विकृतनखमुखं उध्वरीमं करालम् पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवंक्षेत्रपालम्।। प्रार्थना—

कौलीरे चित्रकूटे हिमगिरि शिखरेकाल जालान्थरेवा सौराष्ट्रे सिधु देशे मगधपुरवरे कौसलेवाकलिङ्गे। कर्णाटे कौङ्गणेवाभृगुषु पुरवरे कान्यकुब्जेस्थितेवा ते सर्वे यज्ञरक्षाकरण कृतिधयः पातुवः क्षेत्रपालाः॥ हस्ते जलमादाय—

ॐ अनेन कृतेन पूजनेन क्षेत्रपालसहिताजरादिदेवताः प्रीयन्ता न मम।।

## सर्वतोभद्रदेवता स्थापनम्

सङ्कल्पः — कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत द्रव्यं चादाय सङ्कल्पं कुर्यात् –देशकालौ स्मृत्वा, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं गुप्तोऽहं दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं अस्मिन् अमुकयागकर्मणि प्रधान पीठस्य सर्वतोभद्रमण्डलं स्थापनं पूजनं करिष्ये।।

- (१) मध्ये कर्णिकायाम् ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।
- (२) उत्तरे वाप्याम् सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।
- (३) **ईशान्यां खण्डेन्दौ** ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

(४) **पूर्वे वाप्याम् –** इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

(५) आग्नेय्यां खण्डेन्दौ -अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

- (६) दक्षिणे वाप्याम् यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।
- (७) **नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ** निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।
- (८) **पश्चिमे वाप्याम्** वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।
- (१) **वायव्यां खण्डेन्दौ** वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।
- (१०) वायु-सोमयोर्मध्ये भद्रे अष्टवसुभ्यो नमः, अष्टवसून् आवाहयामि स्थापयामि।
- (११) सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि।
- (१२) **ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे** द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि।
- (१३) **इन्द्राग्निमध्ये भद्रे** अश्विभ्यां नमः, अश्विनी आवाहयामि स्थापयामि।
- (१४) अग्नियममध्ये भद्रे स-पैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, स-पैतृकविश्वान् देवानामा-वाहयामि स्थापयामि।
- (१५) यम-निर्ऋतिमध्ये भद्रे सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि।
- (१६) निर्ऋति-वरुणमध्ये भद्रे -अष्टकुलनागेभ्यो नमः, अष्टकुलनागानावाहयामि स्थापयामि।

- (१७) वरुण-वायुमध्ये भद्रे गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो नमः, गन्धर्वाप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि।
- (१८) ब्रह्म सोममध्ये वाप्यां लिंगे वा स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।
- (१९) तत्रैव स्कन्दोत्तरतः वृषभाय नमः, वृषभमावाहयामि स्थापयामि।
- (२०) तदुत्तरे शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि।
- (२१) अनेनैव मन्त्रेण तदुत्तरे महाकालाय नमः, महाकालमावाहयामि स्थापयामि।
- (२२) ब्रह्मेशानमध्ये शृङ्खलायाम् दक्षादि सप्तगणेभ्यो नमः, दक्षादि सप्तगणानावाहयामि स्थापयामि।
- (२३) ब्रह्मेन्द्र मध्ये वाप्याम् दुर्गायै नमः, दुर्गमावाहयामि स्थापयामि।
- (२४) तत्पूर्वे विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।
- (२५) ब्रह्माग्निमध्ये शृङ्खलायाम् स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।
- (२६) ब्रह्म-यम मध्ये वाप्याम् मृत्युरोगेभ्यो नमः, मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि।
- (२७) ब्रह्म-निर्ऋति मध्ये शृङ्खलायाम् गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।
- (२८) **ब्रह्म-वरुण मध्ये वाप्याम्** अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि स्थापयामि।
- (२९) ब्रह्म-वायु मध्ये शृङ्खलायाम् मरुद्भयो नमः, मरुतः आवाहयामि स्थापयामि।
- (३०) ब्रह्मणः पादमूले पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।

- (३१) तदुत्तरं -गंगादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि।
- (३२) तदुत्तरे सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि।
- (३३) कर्णिका परिधौ मेरवे नमः, मेरूमावाहयामि स्थापयामि।
- (३४) ततः सत्वबाह्य परिधौ सोमादि क्रमेण गदाय नमः, गदमावाहयामि स्थापयामि।
- (३५) **ईशान्याम्** त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।
- (३६) **पूर्वे -**वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि।
- (३७) **आग्नेय्याम्** शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।
- (३८) दक्षिणे दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि।
- (३९) नैर्ऋत्याम् खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि।
- (४०) पश्चिमे पाशाय नम:, पाशमावाहयामि स्थापयामि।
- (४१) वायव्याम् अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि।
- (४२) तद्बाह्ये उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिक्रमेण -गौतमाय नमः, गौतमावाहयामि स्थापयामि।
- (४३) ईशान्याम् –
- (४४) पूर्वे -

विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि।

(४५) आग्नेय्याम् –

कश्यपाय नमः, कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।

(४६) दक्षिणे –

जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।

(४७) नैर्ऋत्याम् –

वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

(४८) पश्चिमे -

अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

(४९) वायव्याम् -

अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।

(५०) पूर्वे -

ऐन्द्रयै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

(५१) आग्नेय्याम् -

कौमार्थ्ये नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।

(५२) दक्षिणे -

ब्राह्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

(५३) नैर्ऋत्याम् -

वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

(५४) पश्चिमे -

चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

(५५) वायव्ये -

वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।

(५६) उत्तरे -

माहेश्वर्ये नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।

(५७) ईशान्याम् -

वैनायक्यै नमः, वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि। इस प्रकार आवाहन कर प्रतिष्ठा करें—

### ॐ मनो जूतिज्जुषतामाज्ज्यस्य खृह्स्प्यतिर्व्ध्न-भूमन्तनोत्वरिष्टं व्युज्ञ ६ सिम्मन्देधातु । विश्वेदेवा ऽसं इह मोदयन्तामाँऽ३ प्यतिष्ठु ॥

प्रतिष्ठा करके षोडशोपचार पूजन करें। उसके बाद प्रार्थना

ब्रह्माद्यावाहिताः देवाः सर्वतोभद्रमण्डले। पूजां गृह्णन्तु मद्दत्तां सर्वदा मे प्रसीदत।।

अनया पूजया सर्वतोभद्रमण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम।

### अथ एकलिङ्गतोभद्रदेवताविशेषाः

- (१) **पूर्वे -**असिताङ्गभैरवाय नमः, असिताङ्गभैरवमावाहयामि स्थापयामि।
  - (२) आग्नेय्याम् रूरूभैरवाय नमः, रूरूभैरवमावाहयामि स्थापयामि।
- (३) दक्षिणस्याम् चण्डभैरवाय नमः, चण्डभैरवमावाहयामि स्थापयामि।
- (४) नैर्ऋत्याम् -क्रोधभैरवाय नमः, क्रोधभैरवमावाहयामि स्थापयामि।
- (५) पश्चिमे -उन्मत्तभैरवाय नमः, उन्मत्तभैरवमावाहयामि स्थापयामि।
- (६) वायव्याम् कपालभैरवाय नमः, कपालभैरवमावाहयामि स्थापयामि।
- (७) उत्तरे भीषणभैरवाय नमः, भीषणभैरवमावाहयामि स्थापयामि।
- (८) ईशान्याम् संहारभैरवाय नमः, संहारभैरवमावाहयामि स्थापयामि।

(९) **पूर्वे -**भवाय नमः, भवमावाहयामि स्थापयामि।

(१०) आग्नेय्याम् – शर्वाय नमः, शर्वमावाहयामि स्थापयामि।

(११) दक्षिणे – पशुपतये नमः, पशुपतिमावाहयामि स्थापयामि।

(१२) नैर्ऋत्याम् – ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

(१३) पश्चिमे – रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।

(१४) वायव्याम् – उग्राय नमः, उग्रमावाहयामि स्थापयामि।

(१५) उत्तरे – भीमाय नमः, भीममावाहयामि स्थापयामि।

(१६) ईशान्याम् – महते नमः, महान्तमावाहयामि स्थापयामि।

(१७) पूर्वे -अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

(१८) आग्नेय्याम् – वासुकये नमः, वासुकिमावाहयामि स्थापयामि।

(१९) दक्षिणे – तक्षकाय नमः, तक्षकमावाहयामि स्थापयामि।

(२०) नैर्ऋत्याम् – कुलिशाय नमः, कुलिशमावाहयामि स्थापयामि। (२१) पश्चिमे –

कर्कोटकाय नमः, कर्कोटकमावाहयामि स्थापयामि।

(२२) **वायव्याम् –** शङ्खपालाय नमः, शङ्खपाल मावाहयामि स्थापयामि।

- (२३) उत्तरे -कम्बलाय नमः, कम्बलमावाहयामि स्थापयामि।
- (१४) **ईशान्याम्** अश्वतराय नमः, अश्वतरमावाहयामि स्थापयामि।
- (१**५) ईशानेन्द्रयोर्मध्ये** शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि।
- (२६) इन्द्राग्निमध्ये चन्द्रमौलिने नमः, चन्द्रमौलिन मावाहयामि स्थापयामि।
- (२७) अग्नियमयोर्मध्ये चन्द्रमसे नमः, चन्द्रमसमावाहयामि स्थापयामि।
- (२८) यमनिर्ऋतिमध्ये वृषभध्वजाय नमः, वृषभध्वजमावाहयामि स्थापयामि।
- (२९) निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये त्रिलोचनाय नम:, त्रिलोचनमावाहयामि स्थापयामि।
- (३०) वरुण-वायवोः मध्ये -शक्तिधराय नमः, शक्तिधरमावाहयामि स्थापयामि।
- (३१) वायु-सोमयोः मध्ये महेश्वराय नमः, महेश्वरमावाहयामि स्थापयामि।
- (३३) सोमेशानयोर्मध्ये शूलपाणये नमः, शूलपाणिमावाहयामि स्थापयामि।

नर्मः शम्भ्वायं च मयोभ्वायं च नर्मः शङ्कार्यं च मयस्वकरायं च नर्मः शिवायं च शिवंतराय च ॥ ॐ मनो'ज्जूतिजीषतामाज्ज्यंस्य बृह्स्प्पतिर्व्यज्ञ
िष्मन्तेनोत्वरिष्टुं व्यज्ञ समिमन्द्धातु । विश्शेदिवासंऽइह मियन्तामाँ प्रतिष्ठु ॥

कलश स्थापन विधि से वेदी पर कलश स्थापित करके रुद्र का

आवाहन कर ऊर्ध्वलिखित मन्त्र से प्रतिष्ठा करके षोडशोपचार पूजन करें। उसके बाद प्रार्थना करें—

प्रार्थना-

भूत्यालेपनभूषितः प्रविलसन्नेत्राग्निदीपाङ्कुरः कण्ठे पन्नगपुष्पदामसुभगो गङ्गाजलैः पूरितः। ईषत्ताम्रजटाऽग्रपल्लवयुतोन्यस्तो जगन्मण्डपे शम्भुर्मङ्गलकुम्भतामुपगतो भूयात्सतां श्रेयसे॥ यस्याङ्को च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरिस व्यालराट्। सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम्॥

अनया पूजया एकलिङ्गतोभद्र देवताः प्रीयन्ताम्।

#### द्वादशलिङ्गतो भद्रमण्डल- १

मण्डले कर्णिकान्तराले मध्ये ईशानतः ईशानकोणे खण्डेन्दौ।

- (१) **ईशान्याम्** ॐ गुरवे नमः, गुरूम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२) आग्नेय्याम् ॐ गणपये नमः, गणपति मावाहयामि स्थापयामि।
- (३) नैर्ऋत्याम् ॐ दुर्गायै नमः, दुर्गा मावाहयामि स्थापयामि।
- (४) वायव्याम् ॐ क्षेत्रपालाय नम:, क्षेत्रपाल मावाहयामि स्थापयामि। अष्टदल मध्ये –
- (५) भद्रमध्ये ॐ सदाशिवाय नमः, सदाशिवा मावाहयामि स्थापयामि।

द्वांदशलिङ्गतोभद्रदेवता पूजनम् पूर्वे -(६) ॐ कालाग्निरुद्राय नमः, कालाग्निरुद्रम् आवाहयामि स्थाप०। तत्रैव -(७) ॐ कूर्मीय नमः, कूर्मम् आवाहयामि स्थापयामि। तत्रैव -(4) ॐ मण्डूकाय नमः, मण्डूकम् आवाहयामि स्थापयामि। (९) आग्नेय्याम् -3ॐ वराहाय नमः, वराहम् आवाहयामि स्थापयामि। (१०) तत्रैव -ॐ अनंताय नमः, अनंतम् आवाहयामि स्थापयामि। (११) दक्षिणस्याम् -ॐ पृथिव्यै नम:, पृथिवीम् आवाहयामि स्थापयामि। (१२) तत्रैव ॐ स्कन्दाय नमः, स्कन्दम् आवाहयामि स्थापयामि। (१३) तत्रैव -ॐ सुधासिंधवे नमः, सुधासिंधुम् आवाहयामि स्थापयामि। (१४) नैर्ऋत्याम् – 🕉 ॐ नलाय नमः, नलम् आवाहयामि स्थापयामि। (१५) तत्रैव -ॐ पद्माय नमः, पद्मम् आवाहयामि स्थापयामि। (१६) पश्चिमायाम् -ॐ पत्रेभ्यो नमः, पत्रम् आवाहयामि स्थापयामि। (१७) तत्रैव -ॐ केसरेभ्यो नमः, केसरान् आवाहयामि स्थापयामि। (१८) तत्रैव -ॐ कर्णिकायै नमः, कर्णिकाम् आवाहयामि स्थापयामि। (११) वायव्याम् -

ॐ सिंहासनाय नमः, सिंहासनम् आवाहयामि स्थापयामि।

(२०) तत्रैव -

ॐ पद्मासनाय नमः, पद्मासनम् आवाहयामि स्थापयामि।

(२१) उत्तरस्याम् -

ॐ घर्माय नमः, घर्मम् आवाहयामि स्थापयामि।

(२२) तत्रैव -

ॐ ज्ञानाय नमः, ज्ञानम् आवाहयामि स्थापयामि।

(२३) तत्रैव -

ॐ वैराग्याय नमः, वैराग्यम् आवाहयामि स्थापयामि।

(२४) ईशान्याम् –

ॐ ऐश्वर्याय नमः, ऐश्वर्यम् आवाहयामि स्थापयामि।

(२५) तत्रैव -

ॐ चिदाकाशाय नमः, चिदाकाशम् आवाहयामि स्थापयामि। (२६) पद्ममध्ये –

ॐ योगपीठाय नमः, योगपीठम् आवाहयामि स्थापयामि। ततः कर्णिकोपरिपूर्वतश्चतुर्दिक्षु –

- (२७) ॐ पृथिव्ये नमः, पृथिवीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२८) ॐ कपालाय नमः, कपालम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (२९) ॐ सप्तसिरुद्ध्यो नमः, सप्तसिरत आवाहयामि स्थापयामि।
- (३०) ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरान् आवाहयामि स्थापयामि।

कर्णिका समीपे चत्वारि श्वेतभद्राणि सन्ति तेषु पूर्वादि चतुर्दिशु -

- (३१) ॐ तत्पुरुषाय नमः, तत्पुरुष मावाहयामि स्थापयामि।
- (३२) ॐ अघोराय नम:, अघोर मावाहयामि स्थापयामि।
  - (३३) ॐ सद्योजाताय नमः, सद्योजात मावाहयामि स्थापयामि।
  - (३४) ॐ वामदेवाय नमः, वामदेव मावाहयामि स्थापयामि। तत्समीपेकृष्णान्यष्टभद्राणि सन्ति तेषु ईशानाद्यष्टदिक्षु –
  - (३५) ॐ भगवत्यै नम:, भगवती मावाहयामि स्थापयामि।

- (३६) ॐ उमायै नमः, उमा मावाहयामि स्थापयामि।
- (३७) ॐ शंकरप्रियायै नमः, शंकरप्रियाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (३८) ॐ पार्वत्यै नमः, पार्वती मावाहयामि स्थापयामि।
- (३९) ॐ गौर्ये नम:, गौरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (४०) ॐ काल्यै नमः, काली मावाहयामि स्थापयामि।
- (४१) ॐ कौम्ये नमः, कौमारी मावाहयामि स्थापयामि।
- (४२) ॐ विश्वंभर्ये नम:, विश्वंभरी मावाहयामि स्थापयामि।

# ततः कृष्णभद्राण्यधः अष्टौ रक्तभद्राणि सन्ति तेषु ईशान्याद्यष्टिद्यु-

- (४३) ॐ नंदिने नमः, नंदी मावाहयामि स्थापयामि।
- (४४) ॐ महाकालाय नम:, महाकाल मावाहयामि स्थापयामि।
- (४५) ॐ महावृषभाय नम:, महावृषभ मावाहयामि स्थापयामि।
- (४६) ॐ भृंगिकरीटिने नमः, भृंगिकरीट मावाहयामि स्थापयामि।
- (४७) ॐ स्कन्दाय नमः, स्कन्द मावाहयामि स्थापयामि।
- (४८) ॐ उमापतये नमः, उमापात मावाहयामि स्थापयामि।
- (४९) ॐ चंडेश्वराय नमः, चण्डेश्वर मावाहयामि स्थापयामि।
- (५०) ॐ योगसूत्राय नमः, योगसूत्र मावाहयामि स्थापयामि।

### चतुर्लिंगोपरि श्वेतभद्राणि सन्ति तेषु पूर्वादि चतुर्दिशु -

- (५१) ॐ धात्रे नम:, धातारम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (५२) ॐ मित्राय नमः, मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (५३) ॐ यमाय नमः, यमम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (५४) ॐ रूद्राय नमः, रूद्रम् आवाहयामि स्थापयामि। तत्समीपे लिंगोपरि अष्टौ पीतभद्राणि सन्ति तेषु ईशान्याद्यष्ट दिक्षु -
  - (५५) ॐ वरूणाय नमः, वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
  - (५६) ॐ सूर्याय नमः, सूर्यम् आवाहयामि स्थापयामि।

- (५७) ॐ भगाय नमः, भगम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (५८) ॐ विवस्वते नमः, विवस्वतम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (५९) ॐ पुरुषोत्तमाय नमः, पुरुषोत्तमम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (६०) ॐ सवित्रे नमः, सवितारम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (६१) ॐ त्वष्ट्रे नमः, त्वष्टारम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (६२) ॐ विष्णवे नमः, विष्णुम् आवाहयामि स्थापयामि। ततो द्वादशिलंगतो देवतानां स्थापनम् –
- (६३) पूर्वे- ॐ शिवाय नम:, शिवम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (६४) तद्दक्षिणे- ॐ एकनेत्राय नमः, एकनेत्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (६५) तद्दक्षिणे- ॐ एकरुद्राय नमः, एकरुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (६६) दक्षिणस्याम् ॐ त्रिमूर्तये नमः, त्रिमूर्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (६७) तत्पश्चिमे- ॐ श्रीकंठाय नमः, श्रीकंठम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (६८) तत्पश्चिमे- ॐ वामदेवाय नमः, वामदेवम् आवाहयामि स्थाप०।
- (६९) पश्चिमायाम् ॐ ज्येष्ठाय नमः, ज्येष्ठयम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७०) तदुत्तरे- ॐ श्रेष्ठाय नमः, श्रेष्ठम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७१) तदुत्तरे- ॐ रुद्राय नमः, रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७२) उत्तरे तत्पूर्वे ॐ कालाय नमः, कालम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७३) तत्पूर्वं ॐ कलविकरणाय नमः, कलविकरणम् आवा० स्थाप०।
- (७४) तदुत्तरे- ॐ बलविकरणाय नमः, बलविकरणम् आवा० स्थाप०। ततः श्वेतषोडशवापीषु प्रत्येकं देवतास्थापनम् -
- (७५) ॐ अणिमायै नमः, अणिमाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७६) ॐ महिमायै नम:, महिमाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७७) ॐ लिघमायै नमः, लिघमाम् आवाहयामि स्थापयामि।

- (७८) ॐ गरिमायै नमः, गरिमाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (७९) ॐ प्राप्त्यै नमः, प्राप्तीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८०) ॐ प्राकाम्यै नमः, प्राकाम्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८१) ॐ ईशितायै नमः, ईशिताम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८२) ॐ वशितायै नमः, वशिताम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८३) ॐ ब्राह्मै नमः, ब्राह्मीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८४) ॐ माहेश्वर्ये नमः, माहेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८५) ॐ कौमार्ये नमः, कौमारीम् आवाहयामि स्थापयामि।

#### द्वादशालिङ्गतोभद्रमण्डले - २

- (८६) ॐ वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८७) ॐ वाराह्यै नमः, वाराहीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८८) ॐ इन्द्राण्ये नमः, इन्द्राणीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (८९) ॐ चामुण्डाये नमः, चामुण्डाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (९०) ॐ चण्डिकायै नमः, चण्डिकाम् आवाहयामि स्थापयामि।

#### ततो वापीसमीपे अष्टरक्तभद्राणि सन्ति तेषु ईषान्याद्यष्टदिक्षु -

- (९१) ॐ असितांगभैरवाय नमः, असितांगभैरवम् आवा० स्थापयामि।
- (९२) ॐ रुरुभैरवाय नमः, रुरुभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (९३) ॐ चंडभैरवाय नमः, चंडभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१४) ॐ क्रोधभैरवाय नमः, क्रोधभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१५) ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः, उन्मत्तभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१६) ॐ कालभैरवाय नमः, कालभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१७) ॐ भीषणभैरवाय नमः, भीषणभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१८) ॐ संहारभैरवाय नमः, संहारभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि।

#### ईशानाद्यष्टदिक्षु वल्लीदेवतास्थापनम् -

- (९९) ॐ घृताच्यै नमः, घृताच्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१००) ॐ मेनकायै नमः, मेनकाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१०१) ॐ रम्भायै नमः, रम्भाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१०२) ॐ उर्वश्यै नमः, उर्वशीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१०३) ॐ तिलोत्तमायै नमः, तिलोत्तमाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१०४) ॐ सुकेशायै नमः, सुकेशाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१०५) ॐ मंजुघौषायै नमः, मंजुघोषाम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१०६) ॐ अप्सरोभ्यो नमः, अप्सराम् आवाहयामि स्थापयामि।

### ततो मण्डलमध्येपरिधि समीपे शृंखला देवताः स्थापयेत् – आग्नेय्याम्-

- (१०७) ॐ भवाय नमः, भवम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१०८) ॐ शिवाय नमः, शिवम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१०९) ॐ रुद्राय नमः, रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (११०) ॐ पशुपतये नमः, पशुपतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१११) ॐ उग्राय नम:, उग्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (११२) ॐ भीमाय नमः, भीमम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (११३) ॐ महादेवाय नमः, महादेवम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (११४) ॐ ईशानाय नम:, ईशानम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (११५) ॐ अनन्ताय नम:, अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (११६) ॐ वासुकये नमः, वासुकिम् आवाहयामि स्थापयामि। नैर्ऋत्याम् –
- (११७) ॐ तक्षकाय नमः, तक्षकम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (११८) ॐ कुलीरकाय नमः, कुलीरकम् आवाहयामि स्थापयामि।

- (११९) ॐ ककोटकालाय नम:, ककोटकम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१२०) ॐ शंखपालाय नमः, शंखपालम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१२१) ॐ कंबलाय नमः, कंबलम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१२२) ॐ अश्वतराय नम:, अश्वतरम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१२३) ॐ वैन्याय नम:, वैन्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१२४) ॐ अंगाय नम:, अंगम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१२५) ॐ हैंहयाय नम:, हैहयम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१२६) ॐ अर्जुनाय नम:, अर्जुनम् आवाहयामि स्थापयामि।

#### वायव्याम् -

- (१२७) ॐ शाकुन्तलेयाय नमः, शाकुन्तलेयम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१२८) ॐ भरताय नम:, भरतम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१२९) ॐ नलाय नम:, नलम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१३०) ॐ रामाय नम:, रामम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१३१) ॐ सार्वभौमाय नम:, सार्वभौमम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१३२) ॐ निषधाय नम:, निषधम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१३३) ॐ विंध्याचलाय नम:, विन्ध्याचलम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१३४) ॐ माल्यवते नम:, माल्यवन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१३५) 🕉 यारियात्राय नमः, परिपात्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१३६) ॐ सह्याय नमः, सह्यम् आवाहयामि स्थापयामि।

#### ऐशान्याम् -

- (१३७) ॐ हेमकूटाय नमः, हेमकूटम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१३८) ॐ गंधमादनाय नमः, गंधमादनम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१३९) ॐ कुलाचलाय नमः, कुलाचलम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१४०) ॐ हिमवते नमः, हिमवन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।

- (१४१) ॐ रैवताय नमः, रैवतम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१४२) ॐ देवगिरये नम:, देवगिरिम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१४३) ॐ मलयाचलाय नमः, मलयाचलम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१४४) ॐ कनकाचलाय नमः, कनकाचलम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१४५) ॐ पृथिव्यै नमः, पृथिवीम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१४६) ॐ अनंताय नमः, अनंतम् आवाहयामि स्थापयामि।

#### आग्नेयादि चतुर्दिक्षु खण्डेन्दुषु -

- (१४७) ॐ अग्निकुमाराभ्यां विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, अग्निकुमारम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१४८) ॐ पितृभ्यो नमः, पितृन् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१४९) ॐ देवेभ्यो नमः, देवान् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१५०) ॐ नागेभ्यो नमः, नागान् आवाहयामि स्थापयामि।

#### ततो मण्डलाद्वहिः सत्वपरिधौ पूर्वादिक्रमेण -

- (१५१) ॐ अग्नये नम:, अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१५२) ॐ यमाय नमः, यमम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१५३) ॐ इंद्राय नमः, इद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१५४) ॐ निर्ऋतये नम:, निर्ऋतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१५५) ॐ वरुणाय नम:, वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१५६) ॐ वायवे नम:, वायुम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१५७) ॐ कुबेराय नम:, कुबेरम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१५८) ॐ ईशानाय नम:, ईशानम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१५९) ॐ ऊर्ध्वायाम् नम:, ऊर्ध्वम् आवाहयामि स्थापयामि।
- (१६०) ॐ ब्रह्मणे नम:, ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१६१) ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि। ततो रक्त परिधौ पूर्वादिक्रमेण –

(१६२) ॐ वज्राय नम:, वज्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१६३) ॐ शक्तये नम:, शक्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१६४) ॐ दण्डाय नम:, दण्डम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१६५) ॐ खड्गाय नम:, खड्गम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१६६) ॐ पाशाय नम:, पाशम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१६७) ॐ अंकुशाय नम:, अंकुशम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१६८) ॐ गदायै नम:, गदाम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१६९) ॐ त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१७०) ॐ ऊर्ध्वीय पद्माय नमः, ऊर्ध्वम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१७१) ॐ चक्राय नमः, चक्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

#### द्वादशलिङ्गतोभद्रमण्डल- ३

ततः कृष्ण परिधौ पूर्वादिक्रमेण -

(१७२) ॐ कश्यपाय नमः, कश्यपम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१७३) ॐ अत्रये नमः, अत्रिम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१७४) ॐ भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१७५) ॐ विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१७६) ॐ गौतमाय नमः, गौतमम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१७७) ॐ जमदग्नये नमः, जमदग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१७८) ॐ वशिष्ठाय नम:, वशिष्ठम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१७९) ॐ अरुंधत्यै नम:, अरुन्धतीम् आवाहयामि स्थापयामि।

(१८०) पूर्वे ॐ ऋग्वेदाय नमः, ऋग्वेदम् आवाहयामि स्थापयामि। (१८१) दक्षिणे ॐ यजुर्वेदाय नमः, यजुर्वेदम् आवाहयामि स्थापयामि। (१८२) पश्चिमे ॐ सामवेदाय नमः, सामवेदम् आवाहयामि स्थापयामि। (१८३) उत्तरे ॐ अथर्ववेदाय नमः, अथर्ववेदम् आवाहयामि स्थाप०। प्रतिष्ठा-

### ॐ मनो जूतिज्जुषतामाज्ज्यस्य बृह्स्प्यतिर्व्यज्ञिम्मं तनोत्वरिष्ट्टं व्यज्ञ सिम्मं देधातु । विश्श्वे देवा संऽर्ह मदियन्तामो र प्रतिष्ठु ॥

लिङ्गतोभद्र देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदाः भवन्तु । इनका पूजन कर प्रार्थना करें। नमः शम्भवाय । अनया पूजया द्वादशलिङ्गतोभद्रदेवताः प्रीयन्ताम्।

#### अथ रेखात्मक चतुर्लिङ्गतोभद्रस्थापनम्

- १. ॐ वीरभद्राय नमः, वीरभद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
  - २. ॐ शंभवे नमः, शम्भुम् आवाहयामि स्थापयामि!
  - ३. ॐ अजैक पदे नमः, अजैकपदम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ४. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः, अहिर्बुध्न्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ५. ॐ पिनाकने नम:, पिनाकिनम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ६. ॐ शूलपाणये नमः, शूलपाणिम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ७. ॐ भुवनाधीश्वराय नमः, भुवनाधीश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ८. ॐ कपालिने नमः, कपालिनम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ९. ॐ दिक्पतये नम:, दिकपतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
- १०.ॐ रुद्राय नम:, रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ११.ॐ शिवाय नम:, शिवम् आवाहयामि स्थापयामि।

१२.ॐ महेश्वराय नम:, महेश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि। १३.ॐ असितांगभैरवाय नम:, असितांगभैरवम् आवाहयामि स्थाप०। १४. ॐ रुरुभैरवाय नम:, रुरुभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि। १५.ॐ चण्डभैरवाय नम:, चण्डभैरवम्ं आवाहयामि स्थापयामि। १६.ॐ क्रोधभैरवाय नम:, क्रोधभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि। १७.ॐ उन्मत्तभैरवाय नम:, उन्मत्तभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि। १८.ॐ कपालभैरवाय नमः, कपालभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि। १९.ॐ भीषणभैरवाय नमः, भीषणभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि। २०.ॐ संहारभैरवाय नमः, संहारभैरवम् आवाहयामि स्थापयामि। २१.ॐ भवाय नमो नमः, भवम् आवाहयामि स्थापयामि। २२.ॐ शर्वाय नमः, शर्वम् आवाहयामि स्थापयामि। २३.ॐ महते नमः, महान्तम् आवाहयामि स्थापयामि। २४.ॐ रुद्राय नमः, रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि। २५.ॐ पशुपतये नमः, पशुपतिम् आवाहयामि स्थापयामि। २६.ॐ भीमाय नमः, भीमम् आवाहयामि स्थापयामि। २७.ॐ ईशानाय नमः, ईशानम् आवाहयामि स्थापयामि। २८.ॐ अनंताय नम:, अनंतम् आवाहयामि स्थापयामि। २९.ॐ तक्षकाय नमः, तक्षकम् आवाहयामि स्थापयामि। ३०.ॐ वासुकये नमः, वासुकिम् आवाहयामि स्थापयामि। ३१.ॐ कुलिशाय नम:, कुलिशम् आवाहयामि स्थापयामि। ३२.ॐ कर्कोटकाय नमः, कर्कोटकम् आवाहयामि स्थापयामि। ३३.ॐ शंखपालाय नमः, शंखपालम् आवाहयामि स्थापयामि। ३४.ॐ कंबलाय नमः, कंबलम् आवाहयामि स्थापयामि।

३५.ॐ अश्वतराय नमः, अश्वतरम् आवाहयामि स्थापयामि।

३६.ॐ शूलिने नम:, शूलिनम् आवाहयामि स्थापयामि।

३७.ॐ चन्द्रमौलये नमः, चन्द्रमौलिम् आवाहयामि स्थापयामि।

३८.ॐ चन्द्रमसे नम:, चन्द्रमसम् आवाहयामि स्थापयामि।

३९.ॐ वृषभध्वजाय नमः, वृषभध्वजम् आवाहयामि स्थापयामि।

४०.ॐ त्रिलोचनाय नमः, त्रिलोचनम् आवाहयामि स्थापयामि।

४१.ॐ शक्तिधराय नमः, शक्तिधरम् आवाहयामि स्थापयामि।

४२.ॐ महेश्वराय नमः, महेश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि।

४३.ॐ शूलधारिणे नमः, शूलधारिणम् आवाहयामि स्थापयामि।

४४. ॐ स्थाणवे नमः, स्थाणुम् आवाहयामि स्थापयामि।

४५.ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।

४६. ॐ सोमाय नम:, सोमम् आवाहयामि स्थापयामि।

४७. ॐ ईशानाय नमः, ईशानम् आवाहयामि स्थापयामि।

४८. ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

४९.ॐ अग्नये नमः, अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।

५०.ॐ यमाय नमः, यमम् आवाहयामि स्थापयामि।

५१.ॐ निर्ऋत्तये नमः, निर्ऋतिम् आवाहयामि स्थापयामि।

५२.ॐ वरुणाय नमः, वरुणम् आवाह्यामि स्थापयामि।

५३.ॐ वायवे नम:, वायुम् आवाहयामि स्थापयामि।

५४. ॐ अष्टवसुभ्यो नम:, अष्टवसुम् आवाहयामि स्थापयामि।

५५, ॐ एकादशरुप्रयो नम:, एकादशरुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

५६. ॐ द्वादशादित्येभ्यो नम:, द्वादशादित्यान् आवाहयामि स्थापयामि।

५७.ॐ अश्विभ्यां नम:, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

५८.ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नम:, विश्वदेवान् आवाहयामि स्थापयामि। ५९.ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षान् आवाहयामि स्थापयामि। ६०.ॐ भूतनागेभ्यो नमः, भूतनागान् आवाहयामि स्थापयामि। ६१.ॐ गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः, गन्धर्वसरसः आवाहयामि स्थापयामि। ६२.ॐ स्कन्दाय नमः, स्कन्दम् आवाहयामि स्थापयामि। ६३.ॐ नन्दीश्वराय नमः, नन्दीश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि। ६४.ॐ शूलमहाकालाभ्यां नमः, शूलमहाकालौ आवाहयामि स्थाप०। ६५.ॐ दक्षादिसप्तकाय नमः, दक्षादिसप्तकान् आवाह० स्थाप०। ६६.ॐ दुर्गायै नमः, दुर्गाम् आवाहयामि स्थापयामि। ६७.ॐ विष्णवे नमः, विष्णुम् आवाहयामि स्थापयामि। ६८.ॐ स्वधायै नमः, स्वधाम् आवाहयामि स्थापयामि। ६९.ॐ मृत्युरोगाभ्यां नमः, मृत्युरोगौ आवाहयामि स्थापयामि। ७०.ॐ गणपतयो नमः, गणपतिम् आवाहयामि स्थापयामि। ७१.ॐ अद्भ्यो नमः, अद्अपः आवाहयामि स्थापयामि। ७२. ॐ मरुद्भ्यो नमः, मरूतः आवाहयामि स्थापयामि। ७३. ॐ पृथिव्यै नमः, पृथिवीम् आवाहयामि स्थापयामि। ७४. ॐ गंगादि नदीभ्यो नमः, गंगादि नदीः आवाहयामि स्थापयामि।

# चतुर्लिङ्गतोभद्रमण्डल - २

७५. ३% सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागराम् आवाहयामि स्थापयामि।

७६. ३% मेरवे नमः, मेरूम् आवाहयामि स्थापयामि। ७७. ३% सद्योजाताय नमः, सद्योजातम् आवाहयामि स्थापयामि। ७८. ३% वामदेवाय नमः, वामदेवम् आवाहयामि स्थापयामि। ७९. ३% अघोराय नमः, अघोरम् आवाहयामि स्थापयामि। ८०.ॐ तत्पुरुषाय नमः, तत्पुरुषम् आवाहयामि स्थापयामि।

८१. ॐ ईशानाय नम:, ईशानम् आवाहयामि स्थापयामि।

८२.ॐ परिधवे नमः, परिधिम् आवाहयामि स्थापयामि।

८३.ॐ चतुःपरीभ्यो नमः, चतुःपुरीः आवाहयामि स्थापयामि।

· ८४.ॐ ऋग्वेदाय नमः, ऋग्वेदम् आवाहयामि स्थापयामि।

८५.ॐ यजुर्वेदाय नमः, यजुर्वेदम् आवाहयामि स्थापयामि।

८६.ॐ सामवेदाय नमः, सामवेदम् आवाहयामि स्थापयामि।

८७.ॐ अथर्ववेदाय नमः, अथर्ववेदम् आवाहयामि स्थापयामि।

८८.ॐ भवाय नमः, भवम् आवाहयामि स्थापयामि।

८९.ॐ शर्वाय नमः, शर्वम् आवाहयामि स्थापयामि।

९०.ॐ पशुपतये नमः, पशुपतिम् आवाहयामि स्थापयामि।

९१.ॐ ईशानाय नमः, ईशानम् आवाहयामि स्थापयामि।

९२.ॐ उग्राय नम:, उग्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

९३.ॐ रुद्राय नमः, रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

९४.ॐ भीमाय नमः, भीमम् आवाहयामि स्थापयामि।

९५.ॐ महते नम:, महान्तम् आवाहयामि स्थापयामि।

९६.ॐ भवान्यै नमः, भवानीम् आवाहयामि स्थापयामि।

९७.ॐ शर्वाण्यै नमः, शर्वाणीम् आवाहयामि स्थापयामि।

९८.ॐ पशुपत्यै नमः, पशुपतिम् आवाहयामि स्थापयामि।

९९.ॐ ईशान्यै नमः, ईशानीम् आवाहयामि स्थापयामि।

१००.ॐ उग्रायै नम:, उग्राम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०१.ॐ रुद्राण्यै नमः, रुद्राणीम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०२, ॐ भीमायै नम:, भीमाम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०३.ॐ महत्यै नम:, महतीम् आवाहयामि स्थापयामि। १०४. ॐ पृथ्वी तत्त्वाय नमः, पृथ्वीतत्त्वम् आवाहयामि स्थापयामि। १०५.ॐ जलतत्वाय नमः, जलतत्त्वम् आवाहयामि स्थापयामि। १०६.ॐ तेजस्तत्वाय नमः, तेजस्तत्त्वम् आवाहयामि स्थापयामि। १०७.ॐ वायुतत्वाय नमः, वायुतत्त्वम् आवाहयामि स्थापयामि। १०८.ॐ आकाशतत्वाय नमः, आकाशतत्त्वम् आवाहयामि स्थापयामि। १०९.ॐ गदायै नमः, गदाम् आवाहयामि स्थापयामि। ११०.ॐ त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलम् आवाहयामि स्थापयामि। १११.ॐ वज्राय नमः, वज्रम् आवाहयामि स्थापयामि। ११२. ॐ शक्तये नमः, शक्तिम् आवाहयामि स्थापयामि। ११३. ॐ दण्डाय नमः, दण्डम् आवाहयामि स्थापयामि। ११४. ॐ खड्गाय नमः, खंड्गम् आवाहयामि स्थापयामि। ११५. ॐ पाशाय नमः, पाशम् आवाहयामि स्थापयामि। ११६. ॐ अंकुशाय नमः, अंकुशम् आवाहयामि स्थापयामि। ११७. ॐ गौतमाय नमः, गौतमम् आवाहयामि स्थापयामि। ११८. ॐ भारद्वाजाय नमः, भारद्वाजम् आवाहयामि स्थापयामि। ११९. ॐ विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रम् आवाहयामि स्थापयामि। १२०.ॐ कश्यपाय नमः, कश्यपम् आवाहयामि स्थापयामि। १२१. ॐ जमदग्नये नमः, जमदग्निम् आवाहयामि स्थापयामि। १२२. ॐ वशिष्ठाय नमः, वशिष्ठम् आवाहयामि स्थापयामि। १२३. ॐ अत्रये नमः, अत्रिम् आवाहयामि स्थापयामि। १२४. ॐ अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीम् आवाहयामि स्थापयामि। १२५. ॐ ऐन्द्रयै नमः, ऐन्द्रीम् आवाहयामि स्थापयामि।

१२६. ॐ कौमार्ये नमः, कौमारीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२७. ॐ ब्राह्ये नमः, ब्राह्मीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२८. ॐ वाराह्ये नमः, वाराहीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२९. ॐ चामुण्डाये नमः, चामुण्डाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३०. ॐ वैष्णव्ये नमः, वैष्णवीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३१. ॐ माहेश्वर्ये नमः, माहेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३२. ॐ विनायिक्ये नमः, वैनायिकीम् आवाहयामि स्थापयामि।
प्रतिष्ठा-

#### ॐ मनो जूतिज्जीषतामाज्ज्यस्य बृह्स्प्यतिर्छ्ज्ञ मिमं तेनोत्विरष्ट्टं च्य्रज्ञ ६ सिम्मं देधातु । विश्धे देवा से ऽड्ड मोदयन्तामो३ प्रतिष्ठु ॥

कलश स्थापन विधि से वेदी पर कलश स्थापित करके रुद्र का आवाहन कर ऊर्ध्व लिखित मन्त्र से प्रतिष्ठा करके षोडशोपचार पूजन करें। उसके बाद प्रार्थना करें।

प्रार्थना—

आत्मा त्वं गिरिजामितः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रासमाधिस्थितिः। सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्तोत्राणि सर्वागिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदिखलं शम्भो तवाराधनम्।। करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम्। विहितमिविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।

अनया पूजया चतुर्लिंगतोभद्र देवताः प्रीयन्ताम् ।

# अथ गौरीतिलक मण्डल पूजनम्

🕉 गौर्ये नमः गौरीम् आवाहयामि स्थापयामि ।

१. ॐ महा विष्णवे नमः

रं अं महालक्ष्म्यै नमः, महालक्ष्मीम् आवाहयामि स्थापयामि ।

🗴 🕉 महेश्वराय नमः

<sub>५. ॐ</sub> महामायायै नमः

हुं 🕉 ऋग्वेदायै नमः

७. ॐ यजुर्वेदारौ नमः

८. ॐ सामवेदाय नमः

१. 🕉 अथर्ववेदाय नमः

१०.ॐ अद्भ्यो नमः

११. ॐ जलोद्धवाय नमः

१२. ॐ ब्रह्मणे नमः

१३. ॐ प्रजापतये नमः

१४. ॐ शिवाय नमः

१५. ॐ अनंताय नमः

१६. ॐ परमेष्ठिने नमः

१७. ॐ घात्रे नमः

१८. ॐ विधात्रे नमः

१९. ॐ अर्व्यमणे नमः

२०.ॐ मित्राय नमः

२१. ॐ वरुणाय नमः

२२. ॐ अंशुमते नमः

२३. ॐ भगाय नमः

२४. ॐ इन्द्राय नमः

२५. ॐ विवश्वते नमः

२६. ॐ पूष्णे नमः

२७. ॐ पर्जन्याय नमः

२८. ॐ त्वष्ट्रे नमः

२९. ॐ दक्षयज्ञाय नमः

३०.ॐ देववसवे नमः

३१. ॐ महासुताय नमः

३२. ॐ सुधर्मणे नमः

३३.ॐ शङ्खपदे नमः

३४. ॐ महाबाहवे नमः

३५. ॐ वपुष्मते नमः

३६. ॐ अनन्ताय नमः

३७. ॐ महेरणाय नमः

३८. ॐ विश्वावसवे नयः

३९. ॐ सुपर्वणे नमः

४०.ॐ विष्टराय नमः

४१. ॐ रुद्रदेवताय नमः

४२. ॐ घ्रुवाय नमः

४३. ॐ धराय नमः

४४. ॐ सोमाय नमः

४५.ॐ आपवत्साय नमः

४६. ॐ नलाय नमः

४७. ॐ अनिलाय नमः

४८. ॐ प्रत्युषाय नमः

४९, ॐ प्रभासाय नमः

५०.ॐ आवर्त्ताय नमः

५१. ॐ सावर्त्ताय नमः

५२. ॐ द्रोणाय नमः

५३. ॐ पुष्कराय नमः

५४. ॐ हीं कार्यों नमः

५५. ॐ हीयै नमः

५६. ॐ कात्यायन्यै नमः

५७. ॐ चामुण्डायै नमः

५८. ॐ महादिव्यायै नमः

५९.ॐ महाशब्दायै नमः

६०.ॐ सिब्हिदायै नमः

ि६१. ॐ हीं कार्य्ये नम:

६२. ॐ ऐं नमः

६३. ॐ श्रीं श्रियै नम:

६४. ॐ हीयै नमः

६५. ॐ लक्ष्म्यै नमः

६६. ॐ श्रियै नमः

६७. ॐ सुघायै नमः

६८. ॐ मेघायै नमः

६९. ॐ प्रज्ञायै नमः

७०.ॐ मत्यै नमः

स्वाहायै नमः

सरस्वत्यै नमः

७१. ॐ गौर्ये नमः

७२.ॐ पद्मायै नमः

७३. ॐ शच्ये नमः

७४. ॐ सुमेघायै नमः

७५. ॐ सावित्र्यै नमः

७६. ॐ विजयायै नमः

७७. ॐ देवसेनायै नमः

७८. ॐ स्वहायै नमः

७९. ॐ स्वद्यायै नमः

८०.ॐ मात्रे नमः

८१. ॐ गायत्र्ये नमः

८२. ॐ लोकमात्रे नमः

८३. ॐ घृत्यै नमः

८४. ॐ पुष्ट्यै नमः

८५. ॐ तुष्ट्यै नमः

८६. ॐ आत्मकुलदेवतायै नम्:

८७. ॐ गणेश्वर्ये नमः

८८. ॐ कुलमात्र्ये नमः

८९. ॐ शान्त्यै नमः

९०.ॐ जयन्त्यै नमः

९१. ॐ मङ्गलायै नमः

९२. ॐ काल्यै नमः

९३. ॐ भद्रकाल्यै नमः

९४. ॐ कपालिन्यै नमः

९५. ॐ दुर्गायै नमः

९६. ॐ क्षमायै नमः

९७. ॐ शिवायै नमः

९८. ॐ धात्र्यै नमः

९९. ॐ स्वधा स्वहाभ्यां ामः

१००. ॐ दीप्यमानायै नमः

१०१. ॐ दीप्तायै नमः

१०२. ॐ सूक्ष्मायै नमः

१०३. ॐ विभूत्यै नमः

१०४. ॐ विमलायै नमः

१०५. ॐ परायै नमः

१०६. ॐ अमोघायै नमः

१०७. ॐ विद्युतायै नमः

१०८. ॐ सर्वतोमुख्यै नमः

१०९. ॐ आनन्दायै नमः

११०. ॐ नंदिन्यै नमः

१११. ॐ शक्तयै नमः

११२. ॐ महासूक्ष्मायै नमः

११३. ॐ करालिन्यै नमः

११४. ॐ भारत्यै नमः

११५. ॐ ज्योतिष्मत्यै नमः

११६. ॐ ब्राह्मयै नमः

११७. ॐ माहेश्वर्ये नमः

११८. ॐ कौमार्ये नमः

११९. ॐ वैष्णव्यै नमः

१२०. ॐ वाराह्यै नमः

१२१. ॐ इन्द्राण्यै नमः

१२२. ॐ चण्डिकायै नमः

१२३. ॐ बुब्ह्यै नमः

१२४. ॐ लज्जायै नमः

१२५. ॐ वपुष्मत्यै नमः

१२६. ॐ शान्त्यै नमः

१२७. ॐ कान्त्यै नमः

१२८. ॐ रत्यै नमः

१२९. ॐ प्रीत्यै नमः

१३०. ॐ कीर्त्ये नमः

१३१. ॐ प्रभायै नमः

१३२. ॐ काम्यायै नमः

१३३. ॐ कान्त्यायै नमः

१३४. ॐ ऋब्द्यै नमः

१३५. ॐ दयायै नमः

१३६. ॐ शिवदूत्यै नमः

१३७. ॐ श्रन्हायै नमः

१३८. ॐ क्षमायै नमः

१३९. ॐ क्रियायै नमः

१४०. ॐ विद्यायै नमः

१४१. ॐ मोहिन्यै नमः

१४२. ॐ यशोवत्यै नमः

१४३. ॐ कृपावत्यै नमः

१४४. ॐ सलीलायै नमः

१४५. ॐ सुशीलायै नमः

१४६. ॐ ईश्वर्ये नमः

१४७. ॐ सिब्हेश्वर्ये नमः

१४८. ॐ द्वैपायनाय नमः

१४९. ॐ भारद्वाजाय नमः

१५०. ॐ गौतुमाय न्मः

१५१. ॐ सुमन्तवे नमः

१५२. ॐ देवलाय नमः

१५३. ॐ व्यासाय नमः

१५४. ॐ वसिष्ठाय नमः

१५५. ॐ च्यवनाय नमः

१५६. ॐ कण्वाय नमः

१५७. ॐ मैत्रेयाय नमः

१५८. ॐ कवये नमः

१५९. ॐ विश्वामित्राय नमः

१६०. ॐ वामदेवाय नमः

१६१. ॐ सुमन्ताय नमः

१६२. ॐ जैमिनये नमः

१६३. ॐ क्रतवे नमः

१६४. ॐ पिप्लादाय नमः

१६५. ॐ पाराशराय नमः

१६६. ॐ गर्गाय नमः

१६७. ॐ वैशम्पाय नमः

१६८. ॐ दक्षाय नमः

१६९. ॐ मार्कण्डेयाय नमः

१७०. ॐ मृकण्डाय नमः

१७१. ॐ लोमशाय नमः

१७२. ॐ पुलहाय नमः

१७३. ॐ पुलस्त्याय नमः

१७४. ॐ बृहस्पतये नमः

१७५. ॐ जमदग्नये नमः

१७६. ॐ जामदग्नाय नमः

१७७. ॐ दलभ्याय नमः

१७८. ॐ शिलोञ्छनाय नमः

१७९. ॐ गालवाय नमः

१८०. ॐ याज्ञवल्क्याय नमः

१८१. ॐ दूर्वासाये नमः

१८२. ॐ सौरभाये नमः

१८३. ॐ जावालये नमः

१८४. ॐ वाल्मीकये नमः

१८५. ॐ बहुचाय नमः

१८६. ॐ इन्द्र प्रमितये नमः

१८७. ॐ देविमित्राय नमः

१८८. ॐ जाजलये नमः

१८९. ॐ शाकल्याय नमः

१९०. ॐ मुद्गलाय नमः

१९१. ॐ जातुकणर्याय नमः

१९२. ॐ बलाकाय नमः

१९३. ॐ कृपाचार्याय नम:

१९४. ॐ सुकर्मणे नमः

१९५. ॐ कौशल्याय नम:

१९६. ॐ ब्रह्माग्नये नमः

१९७. ॐ गार्हष्पत्याग्नये नमः

१९८. ॐ ईश्वराग्नये नमः

१९९. ॐ दक्षिणाग्नये नमः

२००. ॐ वैष्णवाग्नये नमः

२०१. ॐ आहवानीयाग्नये नमः

२०२. ॐ सप्तजिह्वाग्नये नमः

२०३. ॐ इध्मजिह्वाग्नये नमः

२०४. ॐ प्रवर्ग्याग्नये नमः

२०५. ॐ वडवाग्नये नमः

२०६. ॐ जाठराग्नये नमः

२०७. ॐ लोकिकाग्नये नमः

२०८. ॐ सूर्याय नमः

२०९. ॐ वेदांगाय नमः

२१०. ॐ भानवे नमः

२११. ॐ इन्द्राय नमः

२१२. ॐ खगाय नमः

२१३. ॐ गभस्तिने नमः

२१४. ॐ यमाय नमः

२१५. ॐ अंशुमते नमः

२१६. ॐ हिरण्यरेतसे नमः

२१७. ॐ दिवाकराय नमः

२१८. ॐ मित्राय नमः

२१९. ॐ विष्णवे नमः

२२०. ॐ शम्भवे नमः

१२०. ॐ गिरिशयाय नमः

१२४. ॐ अजैकपदे नमः

२२२. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः

२२४. ॐ पिनाक पाणये नमः

२२५. ॐ अपराजिताय नमः

२२६. ॐ भुवानाधिश्वराय नमः

२२७. ॐ कपालिने नमः

२२८. ॐ विशाम्पतये नमः

२२९. ॐ रुद्राय नमः

२३०. ॐ वीरभद्राय नमः

२३१. ॐ अश्वनीकुमाराभ्यां नमः

२३२. ॐ आवहाय नमः

२३३. ॐ प्रवहाय नमः

२३४. ॐ उद्द्हाय नमः

२३५. ॐ सम्वहाय नमः

२३६. ॐ विवहाय नमः

२३७. ॐ परिवहाय नमः

२३८. ॐ परीवहाय नमः

२३९. ॐ धरायै नमः

२४०. ॐ अद्भ्यो नमः

२४१. ॐ अग्नये नमः

२४२. ॐ वायवे नमः

२४३. ॐ आकाशाय नमः

२४४. ॐ हिरण्यनाभाय नमः

२४५. ॐ पुष्पं जयाय नमः

२४६. ॐ द्रोणाय नमः

२४७. ॐ शृङ्गिणे नमः

२४८. ॐ वादराणाय नमः

२४९. ॐ अगस्त्याय नमः

२५०. ॐ मनवे नमः

२५१. ॐ कश्यवाय नमः

२५२. ॐ घौभ्याय नमः

२५३. ॐ भृगवे नमः

२५४. ॐ वीतिहोत्राय नमः

२५५. ॐ मधुछन्दसे नमः

२५६. ॐ वीरसेनाय नमः

२५७. ॐ कृतवृष्णवे नमः

२५८. ॐ अत्रये नमः

२५९. ॐ मेघातिथये नमः

२६०. ॐ अरिष्टनेमये नमः

२६१. ॐ अङ्गिरसाय नमः

२६२. ॐ इन्द्रप्रमदाय नमः

२६३. ॐ इध्यवाहवे नमः

२६४. ॐ पिप्पलादाय नमः

२६५. ॐ नारदाय नमः

२६६. ॐ अरिष्टसेनाय नमः

२६७. ॐ अरुणाय नमः

२६८. ॐ सनकाय नमः

२६९. ॐ सनन्दनाय नमः

२७०. ॐ सनातनाय नमः

२७१. ॐ सनत्कुमाराय नमः

२७२. ॐ कपिलाय नमः

२७३. ॐ कर्दमाय नमः

२७४. ॐ मरीचये नमः

२७५. ॐ कतवे नमः

२७६. ॐ प्रचेतसे नमः

२७७. ॐ उत्तमाय नमः

२७८. ॐ दघीचये नमः

२७९. ॐ श्राद्धदेवताभ्यो नमः

२८०. ॐ गणदेवेभ्यो नमः

२८१. ॐ विद्याधरेभ्यो नमः

२८२. ॐ अप्सरेभ्यो नमः

२८३. ॐ यक्षेभ्यो नमः

२८४. ॐ रक्षेभ्यो नमः

२८५. ॐ गंधर्वेभ्यो नमः

२८६. ॐ पिशाचेभ्यो नमः

२८७. ॐ गुह्यकेभ्यो नमः

२८८. ॐ सिन्द्रदेवताभ्यो नमः

२८९. ॐ औषधीभ्यो नमः

२९०. ॐ भूतग्रामाय नमः

२९१. ॐ चतुर्विध भूतग्रामाय नमः

कलशस्थापन विधि से वेदी पर कलश स्थापित करके भगवान शिव और पार्वती का आवाहन कर स्थापन करे। ॐ नमः शम्भवाय च०। ॐ अम्बे अम्बिके०। प्रतिष्ठा—

ॐ मनो जूतिज्जीषता माज्ज्यस्य बृह्स्प्यतिर्व्धज्ञ मिमं तनोत्वरिष्ट्टं व्यज्ञ ६ सिम्मं देधातु । विश्श्वेदेवा सं ऽड्डह मादयन्तामो ३ प्रतिष्ठु ॥

इस प्रकार प्रतिष्ठा कर षोडशोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् प्रार्थना करें— प्रार्थना—

ॐ नागाधीश्वरिवष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-भास्वद् देहलतां दिवाकरिनभां नेत्रत्रयोद्धासिताम्। माला-कुम्भ-कपाल-नीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये।।

अनेन कृतार्चनेन गौरीतिलक मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम ।

### गृहवास्तुपूजाप्रयोगः ———

# अथ वास्तुदेवतास्थापनम्

संकल्प:

अद्येत्यादि प्रारब्धस्य कर्मणः सांगतासिन्द्वयर्थं। वास्तु मण्डले देवतास्थापनं पूजनं चाहं करिष्ये।।

तत्रादौ वास्तुपीठस्य आग्नेयादिकोणेषु चतुरः शंकून् रोपयेत्। कील गाड़ने का मन्त्र

ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः । अस्मिन् गृहेऽवतिष्टन्तामायुर्बलकराः सदा ।।

इति मन्त्रेण रोपयेत् । आग्नेयादिकोणेषु क्रमेण शंकुपार्श्वें माषभक्तदध्योदन-बलिं दद्यात् । (उड़द और दहीं से बलि दें)। आग्नेय्याम् (अग्नि कोण में)

ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये समाश्रिताः तत् बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् । (अग्नये नमः इमं बिलं समर्पयामि)। नैऋत्याम् (नैऋत्य कोण में)

ॐ नैर्ऋत्याधि पतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः। बलि तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तम्।। (निर्ऋतये नमः इमं बलि समर्पयामि)।

वायव्याम् (वायव्य कोण में)

ॐ नमो वै वायुरक्षोभ्यो ये चान्ये तत् समाश्रिताः। बर्लि तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तम्।। (वायवे नमः इमं बर्लि समर्पयामि)।

ईशान्याम् (ईशान्य कोण में)

ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तत् समाश्रिताः। बलि तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तम्।।

#### (ईशानाय नमः इमं बलिं समर्पयामि)।

ततो वेद्युपरि प्रसारितवस्त्रे कुंकुमादिना सुवर्णरजतादिशलाकया नाममन्त्रैः पश्चाद् आरम्भ प्रागन्ता च उदक् संस्थाः समा अंगुलद्वयान्तरा गृहवास्तुत्वादेकाशीति पदमण्डले दश रेखाः कुर्यात् । तत्र च रेखादेवताः स्थापयेत् ।

- १. ॐ शान्तायै नमः शान्ताम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- २. ॐ यशोवत्यै नमः यशोवतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ३. ॐ कान्त्यै नमः कान्तीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ४. ॐ विशालायै नमः विशालाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ५. ॐ प्राणवाहिन्यै नमः प्राणवाहिनीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ६. ॐ सत्यै नमः सत्तीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ७. ॐ सुमत्यै नमः सुमत्तीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ८. ॐ नन्दायै नमः नन्दाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ९. ॐ सुभद्रायै नमः सुभद्राम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- १०. ॐ सुरथायै नमः सुरथाम् आवाहयामि स्थापयामि ।

# तथैव दक्षिणारम्भा उदगन्ताः प्राक्संस्थाः दश रेखाः कुर्यात् ।

- १. ॐ हिरण्यायै नमः हिरण्याम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- २. ॐ सुव्रतायै नमः स्व्रताम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ३. ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ४. ॐ विभूत्यै नमः विभूतीम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ५. ॐ विमलायै नमः विमलाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ६. ॐ प्रियायै नमः प्रियाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ७. ॐ जयायै नमः जयाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ८. ॐ ज्वालायै नमः ज्वालाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- ९. ॐ विशोकायै नमः विशोकाम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- १०. ॐ इडायै नमः इडाम् आवाहयामि स्थापयामि । रेखादेवताभ्यो नमः। इति मन्त्रेण यथाशक्त्या पूजयेत् ।

### अथ एकाशीति पदवास्तुमण्डलदेवतास्थापनम्-

- १. ऐशानकोणपदे
  - ॐ शिखिने नमः शिखिनम् आवाहयामि स्थापयामि ।
- २. तद्दक्षिणैकपदे
  - ॐ पर्जन्याय नमः पर्जन्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ३. तद्दक्षिणपदद्वये
  - ॐ जयन्ताय नमः जयन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ४. तद्दक्षिणपदद्वये
  - ॐ कुलिशायुधाय नमः कुलिशम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ५. तद्दक्षिणपदद्वये
  - ॐ सूर्याय नमः सूर्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ६. तद्दक्षिणपदद्वये
  - ॐ सत्याय नमः सत्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ७. तद्दक्षिणपदद्वये
  - ॐ भृशाय नमः भृशम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ८. तद्दक्षिणैकपदे
  - 🕉 आकाशाय नमः आकाशम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ९. तद्दक्षिणान्ग्रेयकोणपदे
  - ॐ वायवे नमः वायुम् आवाहयामि स्थापयामि।
- १०. तत्पश्चिमैकपदे
  - ॐ पुष्णो नमः पुष्णम् आवाहयामि स्थापयामि।
- ११. तत्पश्चिमपदद्वये
  - ॐ वितथाय नमः वितथम् आवाहयामि स्थापयामि।
- १२. तत्पश्चिमपदद्वये
  - ॐ गृहक्षताय नमः गृहक्षतम् आवाहयामि स्थापयामि।
- १३. तत्पश्चिमपदद्वये
  - ॐ यमाय नमः यमम् आवाहयामि स्थापयामि।

१४. तत्पश्चिमपदद्वये —

ॐ गन्धर्वाय नमः गन्धर्वम् आवाहयामि स्थापयामि।

१५. तत्पश्चिमपदद्वये —

ॐ भृङ्गराजाय नमः भृङ्गराजम् आवाहयामि स्थापयामि।

१६. पश्चिमो परिस्थितैक पदे —

ॐ मृगाय नमः मृगम् आवाहयामि स्थापयामि।

१७. तत्पश्चिमे नैर्ऋत्यकोण पदे —

ॐ पितृभ्यो नमः पितृन् आवाहयामि स्थापयामि।

१८. तदुत्तरैकपदे —

ॐ दौवारिकाय नमः दौवारिकम् आवाहयामि स्थापयामि।

१९. तदुत्तरपदद्वये —

ॐ सुग्रीवाय नमः सुग्रीवम् आवाहयामि स्थापयामि।

२०. तदुत्तरपद द्वये —

ॐ पुष्पदन्ताय नमः पुष्पदन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।

२१. तदुत्तरपद द्वये —

ॐ वरुणाय नमः वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।

२२. तदुत्तरपद द्वये —

ॐ असुराय नमः असुरम् आवाह्यामि स्थापयामि।

२३. तदुत्तरपद द्वये —

ॐ शोषाय नमः शोषम् आवाहयामि स्थापयामि।

२४. तदुत्तरो परिस्थितैक पदे —

ॐ पापाय नमः पापम् आवाहयामि स्थापयामि।

२५. तदुत्तर वायव्यकोणपदे —

ॐ रोगाय नमः रोगम् आवाहयामि स्थापयामि।

२६. तत्प्रागेकपदे —

ॐ अहये नमः अहिम् आवाहयामि स्थापयामि।

२७. तत्प्राक्पदद्वये —

🕉 मुख्याय नमः मुख्यम् आवाहयामि स्थापयामि।

२८. तत्प्राक्पदद्वये —

ॐ भल्लाटाय नमः भल्लाटम् आवाहयामि स्थापयामि।

२९. तत्प्राक्पदद्वये —

ॐ सोमाय नमः सोमम् आवाह्यामि स्थापयामि।

३०. तत्प्राक्पदद्वये —

ॐ सर्पाय नमः सर्पम् आवाहयामि स्थापयामि।

३१. तत्प्राक्पदद्वये —

🕉 अदित्यै नमः अदितीम् आवाहयामि स्थापयामि।

३२. तत्प्रागुपरिस्थितैकपदे —

ॐ दित्यै नमः दितीम् आवाहयामि स्थापयामि।

३३. तद्दक्षिणे शिखिपदाधः —

🕉 आपाय नमः आपम् आवाहयामि स्थापयामि।

३४. आग्नेय वायुपदाधः —

ॐ सावित्राय नमः सावित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

३५. नैर्ऋत्यापितृपदाधः —

ॐ जयाय नमः जयम् आवाहयामि स्थापयामि।

३६. वायव्यरोगपदाधः —

ॐ रुद्राय नमः रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

३७) मध्येनवपदात्पूर्वपदत्रये —

🕉 अर्यमणे नमः अर्यमणम् आवाहयामि स्थापयामि।

३८. तद्दक्षिणाग्नेय कोणैकपदे —

ॐ सिवत्रे नमः सिवतारम् आवाहयामि स्थापयामि।

३९. तत्पश्चिमपदत्रये —

ॐ विवस्वते नमः विवस्वतम् आवाहयामि स्थापयामि।

४०. तत्पश्चिमनैर्ऋत्यकोणैकपदे —

ॐ विबुधाय नमः विबुधम् आवाहयामि स्थापयामि।

४१. तदुत्तरपदत्रये —

ॐ मित्राय नमः मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

४२. तदुत्तरवायव्यकोणैकपदे —

ॐ राजयक्ष्मणे नमः राजयक्ष्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।

४३. तत्प्राकपदत्रये —

ॐ पृथ्वीधराय नमः पृथ्वीधरम् आवाहयामि स्थापयामि।

४४. तत्प्राकईशान कोणैकपदे —

ॐ आपवत्साय नमः आपवत्सम् आवाहयामि स्थापयामि।

४५. मध्येनवपदेषु —

ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।

४६. मण्डलाद्वहिः श्वेतपरिधौ-ईशान्याम् —

ॐ चरक्यै नमः चरकीम् आवाहयामि स्थापयामि।

४७. आग्नेय्याम् —

ॐ विदार्थे नमः विदारीम् आवाहयामि स्थापयामि।

४८. नैऋत्याम् —

ॐ पूतनायै नमः पूतनाम् आवाहयामि स्थापयामि।

४९. वायव्याम् —

ॐ पापराक्षस्यै नमः पापराक्षसीम् आवाहयामि स्थापयामि।

५०. मण्डलाद्वहिः पूर्वे —

ॐ स्कन्दाय नमः स्कन्दम् आवाहयामि स्थापयामि।

५१. दक्षिणे —

ॐ अर्यमणे नमः अर्यमणम् आवाहयामि स्थापयामि। ५२. पश्चिमे —

ॐ जृम्भकाय नमः जृम्भकम् आवाहयामि स्थापयामि।

५३. उत्तरे —

ॐ पिलिपिच्छाय नमः पिलिपिच्छम् आवाहयामि स्थापयामि। ५४. मण्डलाद्बहिः द्वितीयरक्तपरिधौ पूर्वे —

ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि। ५५. आग्नेय्याम् —

ॐ अग्नये नर्मः अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि। ५६. दक्षिणस्याम् —

ॐ यमाय नमः यमम् आवाहयामि स्थापयामि। ५७. नैर्ऋत्याम् —

ॐ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिम् आवाहयामि स्थापयामि। ५८. पश्चिमे —

ॐ वरुणाय नमः वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि। ५९. वायव्याम् —

ॐ वायवे नमः वायुम् आवाहयामि स्थापयामि।

६०. उत्तरे —

ॐ कुबेराय नमः कुबेरम् आवाहयामि स्थापयामि। ६१. ईशान्याम् —

ॐ ईश्वराय नमः ईश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि। ६२. पूर्वेशानयोर्मध्ये —

🕉 ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।

६३. निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये —

ॐ अनन्ताय नमः अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि। ६४. पूर्वे इन्द्रादुत्तरतः —

ॐ उग्रसेनाय नमः उग्रसेनम् आवाहयामि स्थापयामि। ६५. दक्षिणेयमादुत्तरतः —

ॐ डामराय नमः डामरम् आवाहयामि स्थापयामि।

६६. पश्चिमे वरूणादुत्तरतः —

ॐ महाकालाय नमः महाकालम् आवाहयामि स्थापयामि। ६७. उत्तरे सोमादुत्तरतः —

ॐ पिलिपिच्छाय नमः पिलिपिच्छम् आवाहयामि स्थापयामि। ६८. तृतीय कृष्णपरिधौ देवतास्थापनम् पूर्वे —

ॐ हेतुकाय नमः हेतुकम् आवाहयामि स्थापयामि।

६९. आग्नेय्याम् —

ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः त्रिपुरान्तकम् आवाहयामि स्थापयामि। ७०. दक्षिणे —

ॐ अग्निवैतालाय नमः अग्निवैतालम् आवाहयामि स्थापयामि। ७१. नैर्ऋत्याम् —

ॐ असिवैतालाय नमः असिवैतालम् आवाहयामि स्थापयामि। ७२. पश्चिमे —

ॐ कालाय नमः कालम् आवाहयामि स्थापयामि। ७३. वायव्याम् —

ॐ करालाय नमः करालम् आवाहयामि स्थापयामि। ७४. उत्तरे —

ॐ एकपादाय नमः एकपादम् आवाहयामि स्थापयामि। ७५. ईशान्याम् —

ॐ भीमरूपाय नमः भीमरूपम् आवाहयामि स्थापयामि। ७६. पूर्वेशानयोर्मध्ये —

ॐ खेचराय नमः खेचरम् आवाहयामि स्थापयामि। ७७. निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये —

ॐ तलतासिने नमः तलवासिनम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवा नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा।। शिख्यादिकामे खलुवास्तु देव
गृह्णान्ति पुष्पाञ्जलि मेतिशीघ्रम्।
पीडाहरा भव्यकरा विशाला
नमामि भूपालनतत्पराश्च।।

प्रतिष्ठा -

ॐ मनो जूतिज्जुषता माज्ज्यस्य बृहुस्प्यति र्छ्जज्ञ मिमं तेनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञ ६ सिम्मं देधातु । विश्शेदेवा सऽइह मोदयन्तामो ३ प्रतिष्ठु ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥ (वास्तुमण्डलदेवताभ्यो नमः)।

ततो मध्ये ताम्रकलशं संस्थाप्य तत्र वास्तु ध्रुवमूर्त्योः अग्न्युतारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूर्त्यौ कलशोपिर संस्थाप्य 'वास्तुध्रुवमूर्तिभ्यां नमः' इति मूलमंत्रेण षोडशोपचारैः संपूज्य प्रार्थयेत्।। प्रार्थना

ॐ वास्तुदेव नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो। मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा।। (अनया पूजया वास्तुदेवताः प्रीयन्ताम् )

### कुण्डपूजनम्

ततः कुण्डे उपिर मेखलायां श्वेतवर्णं विष्णुं पूजयेत्। ॐ इदं व्विष्णुर्विचिवक्रमे ऋेधा निदेधे पदम्। समूढमस्य पा ॐ सुरे स्वाहां॥ ततोमध्यमेखलायां रक्त वर्णं ब्रह्माणं पूजयेत्।

सं.पू.य.वि. ८

ॐ बही वज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सी'मृतः सुरुची' व्वे न ऽआवः । स बुध्न्या ऽउपमा अस्य व्विष्ठाः स्तरच्य वोन्मसतन्श्य व्विवे÷ ॥

ततः अधोमेखलायां कृष्णवर्णं नमस्ते रुद्रेति रूद्रं पूज्येत्। ॐ नमस्ते रुद्र मुन्न्यव ऽउतो त ऽइषवे नमे÷। बाहुब्भ्या मुतते नमे÷॥

ॐ अग्ने ऽअम्बिके इति योन्यां रक्तवर्णां गौरीं पूजयेत्। ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्श्यन। ससंस्त्यश्यकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। नाभि पूजनम् –

ॐ नाब्भ्यां ऽआसीदुन्तरि'क्ष ६ शीष्णों द्यौशे समीवर्तत पुद्भयां भूमिर्दिशः अशोत्रात्तथां लोकाँ १ ऽअंकल्पयन् ॥ कण्ठं पूजयेत् –

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठादिवे ६ रुद्रा ऽउपेश्रिताः । तेषां ७ सहस्रयो जुने व धन्वानि तन्न्मसि ॥

ॐ व्विश्धं कर्माऋविषा व्वद्धिनेन त्रातार्मिन्द्रमकृणो रवद्ध्यम्। तस्मौ व्विश् समीनमन्त पूर्वीर्यमुग्ग्रो व्विहळ्यो यथासत् ॥

ॐ वास्तुपुरुषाय नमः - वास्तु का भी पूजन कर लें। पञ्चभू संस्कार-

अस्मिन् स नवग्रह मख-अमुकयाग कर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्नि— स्थापनं करिष्ये।

कुशै: परिसमृह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य। हाथ में मुठ्ठी भर कुशा लेकर वेदी को झाड़े और उन कुशाओं को ईशान में रख दे॥
 २.' गोमयोदकेनोपलिप्य (जल मिश्रित गोबर से वेदी को लीपें)।

- ३. स्रुवेणोल्लिख्य (स्रुवा के मूल भाग के नीचे से ऊपर को तीन रेखा खींचे)।
- ४. अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धत्य— रेखा के अनुसार अनामिका और अँगूठे से जहाँ रेखा किया गया है उसमें से मिट्टी उठावे और बायें हाथ से दाहिने हाथ में रखकर ईशान कोण में फेंक दे॥
- ५. जलेनाऽभ्युक्ष्य (उन रेखाओं पर जल छिड़कें)। अग्निस्थापनम्

# ॐ अगिनं दूतं पुरो देधे हव्यवाहमुपं बुवे । देवाँ २ आसीदयादिह ॥

इति मन्त्रेणाग्नि मुपसमाधायाऽग्निं स्थापयेत्।

## अथ नवग्रहपूजनम्

सङ्कल्पः — कर्ता जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात् – देशकालौ सङ्कीर्त्य अभुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् अमुकयागकर्मणि सूर्यादिनवग्रहाणामधिदेवता-प्रत्यधि-देवता-पञ्चलोकपाल-दशदिक्पालानां चावाहनं स्थापनं च पूजनं करिष्ये।।

अग्निस्थापनपूर्वक सूर्यादि नवग्रहों का आवाहन तथा स्थापन करें—

- १. ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ।
- २. ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमसे नमः चन्द्रमसमावाहयामि स्थापयामि ।
- ३. ॐ भूर्भुवः स्वः भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि ।
- ४. ॐ भूर्भुवः स्वः बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि ।
- ५. ॐ भूर्भुवः स्वः गुरवे नमः गुरुमावाहयामि स्थापयामि ।
- ६. ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि ।
- ७. ॐ भूर्भुव: स्व: शनैश्चराय नमः शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि ।
- ८. ॐ भूर्भुवः स्वः राहवे नमः राहुमावाहयामि स्थापयामि ।
- ९. ॐ भूर्भुवः स्वः केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि ।

इस तरह आवाहन करके ग्रहों के दाहिने तरफ अधिदेवताओं का आवाहन करें—

#### अधिदेवता आवाहन

- १. ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि।
- २. ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि ।
- ३. ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।
- ४. ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।
- ५. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।
- ६. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।
- ७. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।
- ८. ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः कालमावाहयामि स्थापयामि।
- ९. ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि । ग्रहों के बायें तरफ प्रत्यधिदेवताओं का स्थापन करें—

#### प्रत्यधिदेवता आवाहन

- १. ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।
- २. ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अपमावाहयामि स्थापयामि ।
- ३. ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि ।
- ४. ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ।
- ५. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ।
- ६. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्ये नमः इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि ।
- ७. ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि ।
- ८. ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः सर्पानामावाहयामि स्थापयामि ।
- १. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ।
   ग्रहों के उत्तरदिशा पञ्चलोकपाल स्थापनम् –

#### पञ्चलोकपाल आवाहन

- १. ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।
- २. ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाह्यामि स्थापयामि ।

- ३. ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि ।
- ४. ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः आकाशमावाहयामि स्थापयामि ।
- ५. ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौमावाहयामि स्थापयामि ।
- ६. ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमावाहयामि
   स्थापयामि ।
- ७. ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपतिमावाहयामि, स्थापयामि ।
  - ग्रहों के दसों दिशा में दशदिक्पालस्थापनम् —
- १. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ।
- २. ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि ।
- ३. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि ।
- ४. ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि ।
- ५. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि ।
- ६. ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि ।
- ७. ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि ।
- ८. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि ।
- ९. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्मणमावाहयामि स्थापयामि ।
- १०.ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ।

# ॐ मनो'जूतिर्जीषतामाज्ज्यस्य बृह्स्प्यतिर्व्ज िम्मं तनोत्वरिष्टं व्यज्ज ६ सिम्मं देधातु । विश्धेदेवा से इह मदियन्ता मों३ प्रतिष्ठ ॥

सूर्याधनन्तान्त देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु । सबका षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करं—

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।। सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः। राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नित्म् नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूलाः ग्रहाः॥ आदित्यादिनवग्रहाः शुभकरा मेषादयो राशयो नक्षत्राणिसयोगकाश्च तिथयस्तद्देवतास्तद्गणाः। मासाब्दाऋतवस्तथैव दिवसाः सन्ध्यास्तथारात्रयः सर्वेस्थावरजङ्गमाः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वोमङ्गलम्॥

ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयो व्ययन्तो व्यिप्प्रांय मृतिम्। तेषां व्यिशिप्प्रियाणां व्योऽहिमष्मूर्ज् १ समग्रभ-मुणयामगृहीतोऽसीन्द्रांय त्वाजुष्टङ्गृह्णाम्म्येष ते वोनितन्द्रांय त्वा जुष्टतमम्॥

अनया पूजया सूर्याद्यानन्तान्त देवताः प्रीयन्ताम् । असङ्ख्यात रुद्रकलशस्थापनम्

इसके बाद ग्रहों के ईशान भाग में असंख्यात कलशस्थापन विधि से स्थापित कर आवाहन करें—

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽअधि भूमयीम्। तेषा ७ सहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्नमसि।

असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः। प्राणप्रतिष्ठा कर षोडशोपचारपूजन करके प्रार्थना करें-

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी। लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालम् तदिप तव गुणानामीश पारं न याति।। अनया पूजया असंख्याता कलशस्थ देवताः प्रीयन्ताम्, न

# कुशकण्डिकाकरणम्

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम् । अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम् । ब्रह्मा और प्रणीता के लिए तीन कुशा का आसन दें। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम् । ''यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव'' इति यजमानः। ''भवामि'' इति ब्रह्मा वदेत्।

ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम्। तद्यथा- प्रणीतापात्रं पूरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात्। ईशानादि-पूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्। तद्यथा- ततो बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय। आग्नेयादि ईशानान्तं उदगग्रैर्वा। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं प्रागग्रैः, नैऋत्यात् वायव्यान्तम्, उदगग्रैर्वा। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रैः, इतरथावृत्तिः।

पात्रासादनम् – ततः पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा– त्रीणि पवित्रे द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जन कुशाः पञ्च। उपयमन कुशाः सप्त। समिधस्तिस्तः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। वृष निष्क्रयदक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय।

ततो द्वयोरुपिर त्रीणि निद्याय। द्यौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य, सर्वान् युगपदनामिकाऽङ्गुष्ठाभ्यां घृत्वा। त्रिभिष्टिद्द्य। द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्यः, प्रोक्षणीपात्रे, प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिः पूर्णं, पिवत्राभ्यामृत्यवनम्। प्रोक्षणयाः सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणेनोदिङ्गनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्। प्रोक्षणयुदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। सम्मार्जन कुशानां प्रोक्षणम्। यपयमन कुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। सुवस्य प्रोक्षणम्। अज्यस्य प्रोक्षणम्। तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। अपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम्। असञ्चरे प्रोक्षणीर्निधाय।

आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेकपूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः। ब्रह्मणे दक्षिणत आज्याधिश्रयणम्। चरोरधिश्रयणं

स्वयमाज्यस्योत्तरतः। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोपस्पर्शः।। अर्धिश्रते चरौ अद्योमुखस्य स्रुक्त्य प्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतोमूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मृज्य। प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम्। सम्मार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः। पुनः प्रतपनम्। दक्षिणदेशे निधानम्। आजोद्वासनम्। चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य आज्यस्योत्तरत चरुं स्थापयेत्। आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्यन्तिरसनम् पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमन-कुशानादाय। उत्तिष्ठन् समिद्योभ्यादाय, घृताक्ताः समिद्यस्तिन्नः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नैः प्रदक्षिणं पर्युक्षणम्। इतरथावृत्तिः।।

पवित्रयोः प्रणीतासुनिधानम् । दक्षिणं जान्वाच्य । ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः । समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाऽज्यहोमः ।

अग्नेरुत्तरभागे— ॐ प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतये न मम॥ अग्नेर्दक्षिणभागे— ॐ इन्द्राय स्वाहा - इदं इन्द्राय न मम॥ समिद्धतमे— ॐ अग्नये स्वाहा - इदं अग्नये न मम॥ ॐ सोमाय स्वाहा - इदं सोमाय न मम॥

ततः सूर्यादिग्रहाणामधिदेवता - प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादि-पञ्चलोकपाल-वास्तोष्पति-क्षेत्रपालदेवतानां इन्द्रादि दश दिक्पालदेवतानां च प्रत्येकं समिच्चरुतिलाऽज्य द्रव्यैरष्टोत्तरशत-मष्टाविंशतिमष्टौ वाऽहुतीर्जुहुयात्।।

संकल्प:- अस्मिन्.....कर्मणि इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम। यथा दैवतानि सन्तु।।

कुशकण्डिका - तत्पश्चात् कुशकण्डिका करे, जो इस प्रकार है— अग्नि के दक्षिण भाग में ब्रह्मा के लिए एक छोटी चौकी-आसन रूप में रखे। अग्नि के उत्तर तरफ प्रणीता के लिए दो कुश रखे। अग्नि की प्रदक्षिणा कराकर ब्रह्मा की रखी हुई चौकी पर यजमान "यावत्कर्म समाप्यते" यह कहकर बैठावे। 'भवामि' यह वाक्य कहकर पूर्व स्थापित आसन पर ब्रह्मा को स्थापित करे। तदनन्तर ब्रह्मा की आज्ञा से प्रणीतापात्र को जल से भरे। उसका क्रम इस प्रकार है—प्रणीतापात्र को अपने सामने रखकर ब्रह्मा के मुख को देखकर द्वितीय आसन पर उस प्रणीता को रख दे।

पश्चात् अग्निकोण से ईशानादि पर्यन्त परिस्तरण करे, वह यों है—
बहिं-कुश (इक्यासी, चौसठ या मुट्ठी भर कुश-समूह को बहिं कहते हैं) के
चतुर्थ भाग को अपने बायें हाथ में लेकर अग्रभाग वाली कुशाओं से दाहिने
हाथ से उत्तर की ओर, अग्नि कोण से ईशान कोण तक, पूर्व की ओर
अग्रभाग वाली कुशाओं से ब्रह्मा के आसन से अग्निकुण्ड तक, उसी प्रकार
उत्तर की ओर, अग्रभाग वाली कुशाओं से नैर्ऋत्य कोण से लेकर वायव्य
कोण तक एवं पूर्व की ओर अग्रभाग वाली कुशाओं से अग्निकुण्ड से
प्रणीता पात्र तक कुशा बिछावे। पुन: हाथ में लेकर जल उल्टा घुमावें।

पात्रासादन तदनन्तर पात्रासादन करे। वह इस प्रकार है— एक जगह तीन कुशा एवं दूसरी जगह दो कुशा, प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली (घी का पात्र), चरुस्थाली, सम्मार्जन कुशा पाँच, उपयमन कुशा सात, तीन सिमधा, स्त्रुवा, घी, चावल, पूर्णपात्र, वृषमूल्य दक्षिणा एवं और भी स्थापन करने योग्य पदार्थों को रखे।

पितन छेदन क्रम यह है कि स्थापित दो कुशाओं पर तीन कुशाएँ रखें और दो कुश के मूल भाग में प्रदक्षिणा कर सभी को दो बार अनामिका अँगूठे से पकड़ कर तीन कुशाओं को तोड़ दे अर्थात् उनमें दो को ग्रहण कर और तीन को त्याग दे। हाथ में उन कुशाओं को लेकर प्रणीता के जल को तीन बार प्रोक्षणीपात्र में छोड़े। पुन: अनामिका और अँगूठे से पिवत्री पकड़ कर तीन बार प्रोक्षणी के जल को प्रादेश मात्र उछाले। फिर प्रोक्षणीपात्र को बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से उस प्रोक्षणी जल को ऊँचा उछाले। प्रणीतापात्र के जल से प्रोक्षणी का प्रोक्षण

करे। फिर प्रोक्षणी के जल से आज्यस्थाली को प्रोक्षण (सिंचन) करे। इसी तरह चरूस्थाली, सम्मार्जन कुशा, उपयमन कुशा, सिमधा, ख्रुवा, आज्य, तण्डुल, पूर्णपात्र तथा वहाँ रखे हुए सभी पदार्थों का प्रोक्षणी जल से प्रोक्षण करे। पश्चात् अग्नि और प्रणीतापात्र के मध्य में उस प्रोक्षणी पात्र को रख दे।

पुनः आज्यपात्र में घी भरे, अग्नि के पश्चिम पवित्र सहित चरूपात्र में प्रणीता जल से आसेचन पूर्वक चावलों को छोड़े। ब्रह्मा के दक्षिण तरफ उस घृतपात्र को रखे। घृतपात्र के उत्तर से चरूपात्र अग्नि पर चढ़ावे। जलती हुई लकड़ी लेकर उस घी के कटोरे के चारों तरफ सीधा घुमावे, पुन: उसी तरह उसको उलटा घुमावे। फिर ज़ल का स्पर्श करे। तथा चरु के आधे पक जाने पर सुवा को हाथ में लेकर उसके छेद को नीचे तरफ करके अग्नि में तपा कर सम्मार्जन कुशा के अग्रभाग से सुवा के ऊर्ध्वमुख का सम्मार्जन एवं अन्तर तथा मूल खुवा के बाहरी भाग का सम्मार्जन (शुद्ध) कर प्रणीता के जल से खुवा का अभ्युक्षण करें और सम्मार्जन कुशाओं को अग्नि में छोड़ दें। फिर स्नुवा को अग्नि में तपा कर उसको अपनी दाहिनी ओर रखें। घृतपात्र को अग्नि पर से उतार कर चरु को पूर्व दिशा से ले आकर अग्नि के उत्तर तरफ स्थापित कर दे। पुनः चरु को अग्नि पर से उतार कर अग्नि के उत्तर तरफ से ही घृतपात्र की प्रदक्षिणा कर घी के उत्तर तरफ चरु को रख दे। पुन: कुशा से घृत को कुछ उछाले। इसके बाद घी को अच्छी तरह देख ले, और उसमें पड़े हुए तृण आदि अपद्रव्य को निकाल दे। पुन: प्रोक्षणी-जल छिड़क दे। उपयमन संज्ञक सात कुशाओं को बायें हाथ में लेकर खड़े होकर दाहिने हाथ में घृत-मिश्रित तीन समिधाओं को लेकर प्रजापति को मन में ध्यान कर अग्नि में छोड़ें। पुन: पवित्र धारण किये हुए हाथ से प्रोक्षणी जल से ईशान कोण से ईशान कोण तक अग्नि का प्रदक्षिण क्रम से पर्युक्षण करे। पुन: अप्रदक्षिण क्रम से ईशान कोण पर्यन्त अपने दाहिने हाथ की घुमा दे — इसी को इतरथावृत्ति कहते हैं।

तत्पश्चात् उन दोनों कुशाओं को प्रणीतापात्र में रख, अपने दाहिने घुटने को मोड़कर, ब्रह्मा से कुशाओं द्वारा सम्बन्ध कर, प्रदीप्त अग्नि में स्रुवा से घी की आहुति करे।

# आवाहित देवानां हवनम्

"ॐ गणनां त्वा॰" - यहाँ से लेकर "ॐ स्योना पृथिवी॰" पर्यन्त प्रत्येक मन्त्र द्वारा आवाहित देवताओं का हवनीय पदार्थ से आहूित देवें।

ॐ गुणानी त्वा गुणपित छ हवामहे प्रियाणी त्वा प्रियपित छ हवामहे निधीनां त्वी निधीपित छ हवामहे व्यसो मम । आहमीजानि गर्ब्स्धमा त्वमंजासि गर्ब्स्धम् स्वाहा ॥

ॐ अम्बेऽअम्बिके उम्बोलिके न मा नयित कश्चन । ससस्त्यश्यकः सुभिद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा ॥

मदार-ॐ आ वृत्रष्णोन् रजसा व्वर्तमानो निवेश यन्नमृतं मर्त्यं च । हिर्ण्यये न सिवता रथेना देवो यति भुवनानि पश्यन् स्वाहा ॥

पलास-ॐ इमं देवाऽअसप्त्न सुंबद्धं महुते क्ष्न्ञार्य महुते ज्ज्यैष्ट्याय महुते जानेराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियार्य । इमम्मुष्ये पुत्रम्मुष्ये पुत्रम्स्ये व्विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्मार्कं ब्राह्यणाना एं राजी स्वाहा ॥

खैर-ॐ अगिगनम्मू द्धा दिवः वृज्वुत्त्पति स्वाहा ॥ पृथिव्याऽअयम् । अपा एं रेति ऐसि जिन्वति स्वाहा ॥ अपामार्ग-ॐ उद्बुध्यस्वागने प्रतिजागृहि त्विमिष्टापूर्ते

ॐ इदं विष्णुर्विचेक्क्रमे त्रेधा निदंधे प्दम्। समूढमस्य पाएं सुरे स्वाहां॥

ॐ इन्द्रं ऽअग्नसां नेता बृह्स्पितिईक्षिणा यूज्ञाः पुरऽप्तु सोर्म÷ । देवसेनानमिभभञ्जतीनां जयन्तीनां मुरूती यन्त्वग्रम् स्वाहा ॥

ॐ आदित्यै रास्नासीन्द्राण्णया उष्णणीर्ष÷ । पूषासि घुर्म्माय दीष्व स्वाहा ॥

ॐ प्रजीपते न त्वदेतात्र्यत्र्यो विश्वा रूपाणि परि ता बिभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्त्व यम्मुष्ये पितासावस्य पिता व्वय७ स्याम् पत्रयो रयीणा७ स्वाहां॥

ॐ नमो उस्तु सूर्प्पेब्म्यो ये के च पृथिवीमन्। ये ऽअन्त्रिरेशे ये दिवि तेब्म्यं÷ सूर्पेब्म्यो नर्म÷ स्वाहा॥

ॐ ब्ब्रह्म बज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसी मतः सुक्तवी व्वेन ऽआवः । स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः स्तश्श्च बोन्मिसतश्श्च व्विवे÷ स्वाहा ॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपंतिष्ठ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपंतिष्ठ हवामहे निधीनां त्वां निधिपतिष्ठ हवामहे व्वसो मम । आहमंजानि गर्ब्स्धमा त्त्वमंजासि गर्ब्स्धम् स्वाहा ॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बलिके न मा नयति कश्चन । सर्सस्त्यश्युकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा ॥

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथास्रस्तेभिरागिह । नियुत्वान्त्सोमेपीतये स्वाहा ॥ ्रे ॐ घृतं घृतपावानः पिबत् व्वसं व्यसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हुविरिस् स्वाहा । दिशं पृदिशं ऽआदिशो विविदिशं ऽउदिशो दिग्क्यः स्वाहा ॥

ॐ या वां कशा मधुमृत्यिश्यिना सूनृतीवती । तयी युज्ञं मिमिक्षतम् स्वाहा ॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मानस्वावेशोऽअनमी वो भवानः । अत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥

ॐ नृहि स्पश् मिविदशृत्यम्स्माद्वै श्वान्रात्पुर ऽएतारम्ग्ने । एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्शान्रङ् क्षैत्रिजित्याय देवा स्वाहा ॥

ॐ त्रातार्मिन्द्रमिवृतार्मिन्द्र हवे हवे सृहव शूरिमन्द्रम् । ह्वयामि श्वकं पुर्कहृतिमन्द्रे स्वस्ति नो मुघवा धात्विन्द्रे स्वाहा॥

ॐ त्वन्नो ऽअगने तर्व देव पायुभिम्मिघोनो रक्ष तुन्व्यृश्च व्यन्द्य । ज्ञाता तोकस्य तनिये गर्वामस्य निमेष्ठ रक्षमणास्तव व्यते स्वाहा ॥

ॐ श्रमाय त्त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा धुर्माय स्वाहा घुर्माः पिन्ने स्वाहा ॥

ॐ असुंत्र्वन्तमयंजमानिमच्छस्ते नस्ये त्यामिन्विह् तस्करस्य । अत्र्यम्सम दिच्छ सा ते उद्दृत्या नमो देवि निर्ऋते तुष्म्यमस्तु स्वाहा ॥ ॐ तत्वा गामि ब्बहाणा व्वन्दमान्स्तदाशास्ति वर्जमानो ह्विब्मि÷। अहेडमानो व्वरूणे ह बोद्ध्युरूषश्रष्ट स मा न ऽआयुर प्रमोषीर स्वाहा ॥

ॐ आनो नियुद्धिः शृतिनी भिरद्धव्रष्ट संहुस्त्रिणी भिरूपयाहि यज्ञम् । व्वायो ऽअस्मिन्सर्वने मादयस्व यूयं पति स्वस्तिभिः सदी नः स्वाहा ॥

ॐ व्वयश् सो म वृते तव मनस्तुनूषु बिब्धतः प्रजावन्तः सचेमहि स्वाहा ॥

ॐ तमीशानं जगतस्त्रस्थुष्रस्पति धियं जिञ्चमवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा व्वेदसामसंद्वृधे रिक्षता पायुरदेब्धः स्वस्तये स्वाहा ॥

ॐ असमे रूद्रा मेहना पूर्वितासो व्वृत्त्रहत्ये भरहूतौ सुजोषा । यह शह सति स्तुवृते घायि वुज्रऽइन्द्रे ज्येष्ठा .ऽअस्मा । ऽअवन्तु देवाः स्वाहा ॥

ॐ स्यो ता पृथिवि नो भवात्रक्षरा निवेशनी । अच्छी नु शमी सुप्पथी स्वाहा ॥

## ततः प्रधानहोमः

शिवस्य- नमस्तेरुद्रमन्यवः रौद्राध्यायेनहोमः ०। ततो शक्त्याः -- हिरण्यवर्णाम् ० श्रीसूक्तेनहोमः। प्रधानहोमानन्तरं ब्रह्मादिमण्डलदेवताश्च एकैकया-आज्याहुत्याहोमः।

# अथ षोडशमातृकाहवनम्

१. 🕉 गणपतये नमः स्वाहा

२. ॐ गौर्ये नमः स्वाहा

३. ॐ पद्मायै नमः स्वाहा

४. ॐ शच्ये नमः स्वाहा

५. ॐ मेधायै नमः स्वाहा

६. ॐ सावित्र्यै नमः स्वाहा

७. ॐ विजयायै नमः स्वाहाा

८. ॐ जयायै नमः स्वाहा

९. ॐ देवसेनायै नमः स्वाहा

|१०. ॐ स्वधायै नम: स्वाहा

११. ॐ स्वाहायै नम: स्वाहा

१२. ॐ मातृभ्यो नमः स्वाहा

१३. ॐ लोकमातृभ्यो नमः स्वाहा

१४. ॐ धृत्यै नमः स्वाहा

१५. ॐ पृष्ट्यै नमः स्वाहा

१६. ॐ तुष्ट्यै नमः स्वाहा

१७. ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः

स्वाहा

### अथ सप्तघृतमातृकाहवनम्

१. ॐ श्रियै नमः स्वाहा

२. ॐ लक्ष्म्यै नमः स्वाहा

३. ॐ धृत्यै नमः स्वाहा

४. ॐ मेधायै नमः स्वाहा

५. ॐ स्वाहायै नमः स्वाहा

६. ॐ प्रज्ञायै नमः स्वाहा

७. ॐ सरस्वत्यै नमः स्वाहा

# अथ वास्तुपीठहवनम् - १

१. ॐ लक्ष्म्यै नमः स्वाहा

२. ॐ यशोवत्यै नमः स्वाहा

३. ॐ कान्तायै नमः स्वाहा

४. ॐ सुप्रियायै नमः स्वाहा

५. ॐ विमलायै नमः स्वाहा

६. ॐ शिवायै नमः स्वाहा

७. ॐ शुभगायै नमः स्वाहा

८. ॐ सुमत्यै नम: स्वाहा

९. ॐ इडायै नम: स्वाहा

१०. ॐ धान्यायै नमः स्वाहा

११. ॐ प्राणायै नमः स्वाहा

१२. ॐ विशालायै नमः स्वाहा

१३. ॐ स्थिरायै नम: स्वाहा

१४. ॐ भद्रायै नमः स्वहा

१५. ॐ जयायै नमः स्वाहा

१६. ॐ निशायै नमः स्वाहा

१७. ॐ विरजायै नमः स्वाहा

१८. ॐ विभवायै नमः स्वाहा

### अथ वास्तुपीठहवनम् – २

१. ॐ शिखिने नम: स्वाहा

२. ॐ पर्जन्याय नमः स्वाहा

३. ॐ जयन्ताय नमः स्वाहा

४. ॐ कुलिशायुधाय नमः स्वाहा

५. ॐ सूर्यीय नम: स्वाहा

६. ॐ सत्याय नमः स्वाहा

७. ॐ भृशाय नम: स्वाहा

८. ॐ आकाशाय नमः स्वाहा

९. ॐ वायवे नमः स्वाहा

१०. ॐ पूष्णे नमः स्वाहा

११. ॐ वितथाय नम: स्वाहा

१२. ॐ गृहक्षताय नम: स्वाहा

१३. ॐ यमाय नम: स्वाहा

१४. ॐ पितृभ्यो नम: स्वाहा

१५. ॐ दैवारिकाय नमः स्वाहा

१६. ॐ सुग्रीवाय नमः स्वाहा

१७. ॐ गन्धर्वाय नमः स्वाहा

१८. ॐ भृंगराजाय नमः स्वाहा

१९. ॐ मृगाय नम: स्वाहा

२०. ॐ पुष्पदन्ताय नमः स्वाहा

२१. ॐ वरुणास नम: स्वाहा

२२. ॐ असुरायं नम: स्वाहा

२३. ॐ शेषाय नम: स्वाहा

२४. ॐ पापाय नर्मः स्वाहा

२५. ॐ रोगाय नम: स्वाहा

२६, ॐ अहये नम: स्वाहा

२७. ॐ मुख्याय नम: स्वाहा

२८. ॐ भल्लाटाय नम: स्वाहा

२९. ॐ सोमाय नम: स्वाहा

३०. ॐ सर्पाय नम: स्वाहा

३१. ॐ अदित्यै नम: स्वाहा

३२. ॐ दित्यै नम: स्वाहा

३३. ॐ आपाय नम: स्वाहा

३४. ॐ सावित्राय नमः स्वाहा

३५. ॐ जयाय नमः स्वाहा

३६. ॐ रुद्राय नम: स्वाहा

३७. ॐ अर्यम्णे नम: स्वाहा

३८. ॐ सवित्र्ये नम: स्वाहा

३९. ॐ विवस्वते नमः स्वाहा

४०. ॐ विबुधाय नमः स्वाहा

४१. ॐ मित्राय नम: स्वाहा

४२. ॐ राजयक्ष्मणे नमः स्वाहा

४३. ॐ पृथ्वीधराय नमः स्वाहा

४४. ॐ आपवत्साय नम: स्वाहा

४५. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा

४६. ॐ चरक्यै नम: स्वाहा

४७. ॐ विदार्ये नम: स्वाहा

४८. ॐ पूतनायै नम: स्वाहा

४९. ॐ पापराक्षस्यै नमः स्वाहा

५०. ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा

५१. ॐ अर्यमणे नमः स्वाहा

५२. ॐ जम्भकाय नमः स्वाहा

५३. ॐ पिलिपिच्छाय नम: स्वाहा

५४. ॐ इन्द्राय नम: स्वाहा

५५. ॐ अग्नये नमः स्वाहा

५६. ॐ यमाय नमः स्वाहा

५७. ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहा

५८. ॐ वरुणाय नम: स्वाहा

५९. ॐ वायवे नमः स्वाहा

६०. ॐ कुबेराय नम: स्वाहा

६१. ॐ ईश्वराय नम: स्वाहा

६२. ॐ ईशानाय नम: स्वाहा

६३. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा

६४. ॐ वास्तु पुरुषाय नमः स्वाहा

## मण्डपतोरणादिहवनम्

१. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा

२. ॐ सावित्र्ये नमः स्वाहा

३. ॐ वास्तु देवतायै नमः स्वाहा

४. ॐ ब्राहम्यै नमः स्वाहा

५. ॐ गंगायै नमः स्वाहा

६. ॐ नागमात्रे नमः स्वाहा

७. ॐ शाखाबन्धनाय नमः स्वाहा

८. ॐ सर्पेभ्यो नमः स्वाहा

९. ॐ विष्णवे नमः स्वाहा

१०. ॐ लक्ष्म्यै नमः स्वाहा

११. ॐ नन्दायै नम: स्वाहा

१२. ॐ आदित्यायै नमः स्वाहा

१३. ॐ वैष्णव्ये नमः स्वाहा

१४. ॐ रुद्राय नमः स्वाहा

१५. ॐ गौर्ये नम: स्वाहा

१६. ॐ माहेश्वरायै नमः स्वाहा

१७. ॐ शोभनायै नमः स्वाहा

१८. ॐ भद्रायै नमः स्वाहा

१९. ॐ शंकराय नम: स्वाहा

२०. ॐ इन्द्राय नम: स्वाहा

२१. ॐ इन्द्राण्यै नम: स्वाहा

२२. ॐ आनन्दायै नम: स्वाहा

२३. ॐ विभूत्ये नमः स्वाहा

२४. ॐ अदित्यै नम: स्वाहा

२५. ॐ सूर्याय नमः स्वाहा

२६. ॐ सूर्ये नमः स्वाहा

२७. ॐ सावित्र्ये नम: स्वाहा

२८. ॐ मंगलायै नमः स्वाहा

२९. ॐ भूत्यै नमः स्वाहा

३०. ॐ गणपतये नमः स्वाहा

३१. ॐ विघ्नहारिण्यै नम: स्वाहा

३२. ॐ जयायै नम: स्वाहा

३३. ॐ यमाय नमः स्वाहा

३४. ॐ अञ्जन्यै नमः स्वाहा

३५. ॐ क्रूरायै नम: स्वाहा

३६. ॐ नागराजाय नमः स्वाहा

३७. ॐ पटनायै नमः स्वाहा

३८. ॐ महापटनायै नम: स्वाहा

३९. ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा

४०. ॐ जयायै नमः स्वाहा

४१. ॐ शक्तये नमः स्वाहा

४२. ॐ वायवे नमः स्वाहा

४३. ॐ वायव्यै नम: स्वाहा

४४. ॐ गायत्र्ये नमः स्वाहा

४५. ॐ मन्ध्यम संन्धायै नमः स्वाहा ५७. ॐ भूत्यै नमः स्वाहा

४६. ॐ सोमाय नमः स्वाहा

४७. ॐ सावित्र्ये नम: स्वाहा

४८. ॐ अमृतकलायै नमः स्वाहा ६०. ॐ अदित्यायै नमः स्वाहा

४९. ॐ विजयायै नमः स्वाहा

५०. ॐ वरुणाय नम: स्वाहा

५१. ॐ वारुण्यै नम: स्वाहा

५२. ॐ पाशधारिण्यै नमः स्वाहा ६४. ॐ सावित्र्यै नमः स्वाहा

५३. ॐ बृहत्यै नमः स्वाहा

५४. ॐ अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहा

५५ ॐ अदितये नमः स्वाहा

५६. ॐ अणिमायै नमः स्वाहा

५८. ॐ गरिमायै नम: स्वाहा

५९. ॐ धनदाय नम: स्वाहा

६१. ॐ लिघमायै नमः स्वाहा

६२. ॐ बृहस्पतये नमः स्वाहा

६३. ॐ पौर्णमास्यै नम: स्वाहा

६५. ॐ विश्वकर्मणे नमः स्वाहा

६६. ॐ सिनीवाल्यै नमः स्वाहा

६७. ॐ सावित्र्ये नमः स्वाहा

## पूर्वतोरणहवनम्

१. ॐ स्योना पृथ्वी वा इन्द्राय नमः स्वाहा

२. ॐ धात्रे नमः स्वाहा

३. ॐ भगाय नमः स्वाहा

४. ॐ ध्रुवाय नम: स्वाहा

५. ॐ अध्वराय नमः स्वाहा

६. ॐ नन्दिने नमः स्वाहा

७. ॐ महाकालाय नम: स्वाहा

८. ॐ विधात्रे नमः स्वाहा

९. ॐ द्वारिश्रयै नमः स्वाहा

१०. ॐ गणेशाय नमः स्वाहा

११. ॐ भुर्लोकाय नमः स्वाहा

१२. ॐ भुवर्लोकाय नमः स्वाहा

१३. ॐ आदित्याय नम: स्वाहा

१४. ॐ मेधा पतये नमः स्वाहा

## दक्षिणतोरणहवनम्

१. ॐ शुभद्रतोरणाय नमः स्वाहा । ५. ॐ वरुणांगारकाभ्यां नमः स्वाहा

२. ॐ विकटतोरणाय नमः स्वाहा ६. ॐ पर्जन्याय नमः स्वाहा

३. ॐ सूर्यपूषाभ्यां नमः स्वाहा ७. ॐ अशोकाय नमः स्वाहा

४. ॐ मित्राय नम: स्वाहा

८. ॐ धारयै नमः स्वाहा

### पश्चिमतोरण हवनम्

- १. ॐ सुभीमतोरणाय नमः स्वाहा|६. ॐ अनिलाय नमः स्वाहा
- २. ॐ सुकर्मतोरणाय नमः स्वाहा ७. ॐ अनलाय नमः स्वाहा
- ३. ॐ अर्यमशुक्राभ्यां नमः स्वाहा
- ४. ॐ अशुभाय नम: स्वाहा
- ५. ॐ विवस्वदबुधाभ्यां नमः स्वाहा

- ८. ॐ वक्त्र पतये नम: स्वाहा
- ९. ॐ अश्वे नमः स्वहा

## उत्तरतोरणहवनम्

- १. ॐ सुहोत्रतोरणाय नमः स्वाहा
- २. ॐ त्वएट्ट्टसोमाभ्यां नम: स्वाहा
- ३. ॐ सविवृकेतुभ्यां नमः स्वाहा
- ४. ॐ विष्णु शनिभ्यां नमः स्वाहा
- ५. ॐ प्रत्युषाय नमः स्वाहा
- ६. ॐ प्रभासाय नमः स्वाहा
- ७. ॐ विघ्नेशाय नमः स्वाहा

#### मण्डपद्वारहवनम्

- ८. ॐ प्रशान्ताय नमः स्वाहा
- ९. 🕉 शिशिराय नम: स्वाहा
- १०.ॐ ऐरावताय नमः स्वाहा
- ११.ॐ शिशिराय नमः स्वाहा
- १२.ॐ द्वारिश्रयै नमः स्वाहा
- १३.ॐ देहल्यै नम: स्वाहा
- १४.ॐ गणेशाय नमः स्वाहा
- १५.ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा
- १६.ॐ गङ्गायै नमः स्वाहा
- १७.ॐ जमुनायै नमः स्वाहा
- १८.ॐ हेतु कराय नमः स्वाहा
- १९.ॐ क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा
- २०.ॐ पुण्डरीकाय नमः स्वाहा
- २१.3% अमृताय नम: स्वाहा

- २२.ॐ कुमुदाक्षाय नमः स्वाहा
- २३.ॐ क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा
- २४.ॐ पर्जन्याय नमः स्वाहा
- २५.ॐ अशोकाय नमः स्वाहा
- २६. ॐ वामनारुत्यदिग्गजाय नम: स्वाहा
- २७.ॐ द्वारिश्रयै नमः स्वाहा
- २८.ॐ देहल्यै नमः स्वाहा
- २९.ॐ पुष्पदन्ताय नमः स्वाहा
- ३०.ॐ कपर्दिने नमः स्वाहा
- ३१.ॐ गोदावये नमः स्वाहा
- ३२.ॐ कृष्णायै नमः स्वाहा
- ३३.ॐ यमाय नमः स्वाहा
- ३४.ॐ कुमुदाय नमः स्वाहा
- ३५.ॐ दुर्ज्याय नमः स्वाहा
- ३६.ॐ कुमुदाय नमः स्वाहा
- ३७.ॐ क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा
- ३८.ॐ भूतसञ्जीवनाय नमः स्वाहा
- ३९.ॐ अमृताय नमः स्वाहा
- ४०.ॐ अनन्ताख्यदिग्गजाय नम: स्वाहा
- ४१.ॐ द्वारिश्रयै नमः स्वाहा
- ४२.ॐ देहल्यै नमः स्वाहा
- ४३.ॐ रेखायै नमः स्वाहा

४४.ॐ ताप्यै नमः स्वाहा ४५.ॐ वरुणाय नमः स्वाहा ४६.ॐ पुष्पदन्ताय नमः स्वाहा ४७.ॐ सिद्धार्थीय नम: स्वाहा ४८.ॐ वायवे नमः स्वाहा ४९.ॐ धनदाय नमः स्वाहा ५०.ॐ श्रीप्रदाय नमः स्वाहा ५१. ॐ सार्वभौमादिग्गजाय नम: स्वाहा ५२.ॐ द्वारिश्रयै नमः स्वाहा ५३.ॐ देहल्ये नमः स्वाहा ५४.ॐ सोमाय नम: स्वाहा ५५.ॐ सुप्रतीकाय नमः स्वाहा ५६.ॐ मङ्गलाय नमः स्वाहा ५७. ॐ ईशानाय नम: स्वाहा ५८.ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा ५९.ॐ अनन्ताय नम: स्वाहा ६०.ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नम: स्वाहा ६१.ॐ किन्नरेभ्यो नमः स्वाहा ६२.ॐ पत्रगेभ्यो नमः स्वाहा

६३.ॐ सर्वेभ्यो नम: स्वाहा ६४.ॐ पत्रगेभ्यो नम: स्वाहा ६५.ॐ त्रैलोक्यस्थेभ्योस्या वरेभ्यो नमः स्वाहा ६६.ॐ त्रैलोक्यस्थेभ्यश्चरेभ्यो नमः स्वाहा ६७.ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा ६८.ॐ विष्णवे नमः स्वाहा ६९.ॐ शिवाय नम: स्वाहा ७०.ॐ देवेभ्यो नमः स्वाहा ७१.ॐ दानवेभ्यो नम: स्वाहा ७२.ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः स्वाहा ७३.ॐ यक्षेभ्यो नम: स्वाहा ७४.ॐ यक्षसेभ्यो नमः स्वाहा ७५.ॐ पत्रगेभ्यो नमः स्वाहा ७६.ॐ ऋषिभ्यो नमः स्वाहा ७७. ॐ मुनिभ्यो नमः स्वाहा ७८.ॐ गोभ्यो नमः स्वाहा ७९.ॐ देवमातृभ्यो नमः स्वाहा

# योगिनीपीठहवनम्

ॐ महाकाल्यै नमः स्वाहा ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा ॐ महासरस्वत्यै नम: स्वाहा

ॐ गजाननायै नमः स्वाहा

ॐ सिंहमुख्यै नम: स्वाहा

ॐ गृधास्यायै नम: स्वाहा

ॐ काकतुण्डिकायै नमः स्वाहा १२.ॐ विकटाननायै नमः स्वाहा

ॐ उष्ट्रग्रीवायै नम: स्वाहा

६. ॐ हयग्रीवायै नमः स्वाहा

७. ॐ वाराह्ये नमः स्वाहा

८. ॐ शरभाननायै नमः स्वाहा

९. ॐ उलूकायै नमः स्वाहा

१०,ॐ शिवाख्यायै नमः स्वाहा

११.ॐ मयूर्ये नमः स्वाहा

१३.ॐ अष्टवक्रायै नमः स्वाहा

१४,ॐ कोटराक्ष्यै नमः स्वाहा १५.ॐ कुब्जायै नमः स्वाहा १६.ॐ विकटलोचनायै नमः स्वाहा १७.ॐ शुष्कढ्यैं नमः स्वाहा १८.ॐ ललाजिह्नायै नमः स्वाहा १९.ॐ श्वदंष्ट्राये नमः स्वाहा २०.ॐ वानराननायै नमः स्वाहा २१.ॐ केकराक्ष्यै नमः स्वाहा २२.ॐ वृहत्ततुण्डायै नमः स्वाहा २३.ॐ सुराप्रियायै नमः स्वाहा २४.ॐ कपालहस्तायै नमः स्वाहा २५.ॐ रक्ताक्ष्यै नमः स्वाहा २६.ॐ शुष्वयै नमः स्वाहा २७.ॐ श्येन्यै नमः स्वाहा २८.ॐ कपोतिकायै नमः स्वाहा २९.ॐ पाशहस्तायै नमः स्वाहा ३०.ॐ दण्डहस्तायै नमः स्वाहा ३१.ॐ प्रचण्डायै नमः स्वाहा ३२.ॐ चण्डविक्रमायै नमः स्वाहा 🝂 ३३.ॐ शिशुघ्न्यै नमः स्वाहा ३४. ॐ पापहन्त्रयै नमः स्वाहा ३५.ॐ काल्यै नमः स्वाहा ३६.३ॐ रुधिरपायिन्यै नम: स्वाहा ३७, ॐ वसाधरायै नम: स्वाहा ३८.३% गर्भभक्षायै नमः स्वाहा ३९.ॐ शवहस्तायै नम: स्वाहा

४०.ॐ आन्त्रमालिन्यै नम: स्वाहा ४१.ॐ स्थूलकेश्यै नमः स्वाहा ४२.ॐ बृहत्कुक्ष्यै नमः स्वाहा ४३.ॐ सर्पास्यायै नम: स्वाहा ४४.ॐ प्रेतवाहनायै नम: स्वाहा ४५.ॐ दन्तशूकरायै नमः स्वाहा ४६.ॐ क्रौङ्यै नमः स्वाहा ४७.ॐ मृगशीर्षायै नमः स्वाहा ४८.ॐ वृषननायै नमः स्वाहा ४९.ॐ व्यान्तास्यायै नमः स्वाहा ५०.ॐ धूमनि:श्वसायै नमः स्वाहा ५१. ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः स्वाहा ५२.ॐ तापिन्यै नम: स्वाहा. ५३.ॐ शोषणीदृष्टयै नमः स्वाहा ५४.ॐ कोटये नमः स्वाहा ५५. ॐ स्थूलनासिकायै नमः स्वाहा ५६.ॐ विद्युत्प्रभायै नमः स्वाहा ५७.ॐ बलाकास्यायै नमः स्वाहा ५८.ॐ माजार्ये नमः स्वाहा ५९.ॐ कटपूतनायै नमः स्वाहा ६०.ॐ अट्टाटहासायै नम: स्वाहा ६१.ॐ कामाक्ष्यै नमः स्वाहा ६२.ॐ मृगाक्ष्यै नमः स्वाहा ६३.ॐ मृगलोचनायै नमः स्वाहा ६४.ॐ ऋणाक्ष्यै नमः स्वाहा ।। इति मण्डपतोरणादि हवनम् ॥

### क्षेत्रपालपीठहवनम्

१. ॐ क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा

२. ॐ अजराय नम: स्वाहा

३. ॐ व्यापकाय नमः स्वाहा

४. ॐ इन्द्रचौराय नमः स्वाहा

५. ॐ इन्द्रमूर्तये नमः स्वाहा

६. ॐ उक्षाय नमः स्वाहा

७. ॐ कूष्माण्डाय नम: स्वाहा

८. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा

९. ॐ बटुकाय नमः स्वाहा

१०.ॐ विमुक्ताय नमः स्वाहा

११.ॐ लिप्तकामाय नमः स्वाहा

१२.ॐ लीलाकाय नमः स्वाहा

१३.ॐ एकदंष्ट्राय नमः स्वाहा

१४.ॐ ऐरावताय नमः स्वाहा

१५.ॐ ओषधीघ्नाय नम: स्वाहा

१६.ॐ बन्धनाय नमः स्वाहा

१७.ॐ दिव्यकाय नम: स्वाहा

१८.ॐ कम्बलाय नमः स्वाहा

१९.ॐ भीषणाय नमः स्वाहा

२०.ॐ गवयाय नमः स्वाहा

२१.ॐ घण्टाय नमः स्वाहा

२२.ॐ व्यालाय नम: स्वाहा

२३.ॐ अणवे नम: स्वाहा

२४.ॐ चन्द्रवारुणाय नमः स्वाहा

२५.ॐ घटाटोपाय नम: स्वाहा

२६.ॐ जटालाय नम: स्वाहा

२७. ॐ क्रतवे नम: स्वाहा

२८.ॐ घटेश्वराय नम: स्वांहा

२९.ॐ विटङ्काय नम: स्वाहा

३०.ॐ मणिमानाय नम: स्वाहा

३१.ॐ गणबन्धने नमः स्वाहा

३२.ॐ डामराय नम: स्वाहा

३३.ॐ ढुण्डिकर्णाय नम: स्वाहा

३४.ॐ स्थविराय नम: स्वाहा

३५.ॐ दन्तुराय नमः स्वाहा

३६.ॐ धनदाय नमः स्वाहा

३७.ॐ नागकर्णाय नम: स्वाहा

३८.ॐ महाबलाय नम: स्वाहा

३९.ॐ फेत्कराय नमः स्वाहा

४०.ॐ चीकराय नम: स्वाहा

४१.ॐ सिंहाय नम: स्वाहा

४२.ॐ मृगाय नमः स्वाहा

४३.ॐ यक्षाय नम: स्वाहा

४४. ॐ मेघवाहनाय नम: स्वाहा

४५.ॐ तीक्ष्णोष्ठाय नमः स्वाहा

४६.ॐ अनलाय नम: स्वाहा

४७.ॐ शुक्लतुण्डाय नेम: स्वाहा

४८.ॐ सुधापालाय नमः स्वाहा

४९.ॐ बर्वरकाय नमः स्वाहा

५०.ॐ पवनाय नमः स्वाहा

५१.ॐ पावनाय नमः स्वाहा

॥ इति क्षेत्रपालपीठ हवनम् ॥

# सर्वतोभद्रहवनम्

🕉 ब्रह्मणे नमः स्वाहा ॐ सोमाय नमः स्वाहा ॐ ईशानाय नम: स्वाहा ४. ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा ॐ अग्नये नमः स्वाहा ६. ॐ यमाय नमः स्वाहा ॐ निऋतये नमः स्वाहा ८. ॐ वरुणाय नम: स्वाहा ९. ॐ वायवे नम: स्वाहा १०.ॐ अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहा ११.ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः स्वाहा १२.ॐ द्वादशरुद्रेभ्यो नमः स्वाहा १३.ॐ अश्विभ्यां नमः स्वाहा १४.ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः स्वाहा १५.ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः स्वाहा १६.ॐ अष्टकुलनागेभ्यो नमः स्वाहा १७.ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः स्वाहा १८.ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा १९.ॐ नन्दिने नमः स्वाहा २०.ॐ शूलमहाकालाभ्यां नमः स्वाहा २१. ॐ दक्षादि सप्तगणेभ्यो नमः स्वाहा २२.ॐ दुर्गायै नमः स्वाहा २३.ॐ विष्णवे नमः स्वाहा २४.3ॐ स्वधायै नमः स्वाहा २५. ॐ मृत्युरोगेभ्यों नमः स्वाहा २६.ॐ गणपतये नमः स्वाहा २७.3% अद्भ्यो नमः स्वाहा २८.ॐ मरुद्भ्यो नम: स्वाहा

'२९.ॐ पृथिव्यै नम: स्वाहा

३०.ॐ सप्तसागरेभ्यो नम: स्वाहा ३१.ॐ मेरवे नम: स्वाहा ३२.ॐ गदायै नम: स्वाहा ३३.ॐ त्रिशूलाय नम: स्वाहा ३४.ॐ वज्राय नम: स्वाहा ३५.ॐ शक्तये नमः स्वाहा ३६.ॐ दण्डाय नमः स्वाहा ३७.ॐ खड्गाय नमः स्वाहा ३८.ॐ पाशाय नमः स्वाहा ३९.ॐ अङ्कशाय नमः स्वाहा ४०.ॐ गौतमाय नमः स्वाहा ४१.ॐ भरद्वाजाय नमः स्वाहा ४२.ॐ विश्वामित्राय नमः स्वाहा ४३.ॐ कश्यपाय नमः स्वाहा ४४.ॐ गंगानदीभ्यो नमः स्वाहा ४५.ॐ जमदग्ने नमः स्वाहा ४६.ॐ वसिष्ठाय नमः स्वाहा ४७.ॐ अत्रये नमः स्वाहा ४८.ॐ अरुन्धत्यै नमः स्वाहा ४९.ॐ ऐन्द्रयै नमः स्वाहा ५०.ॐ कौमार्ये नमः स्वाहा ५१.ॐ ब्राह्मये नमः स्वाहा ५२.ॐ वाराह्ये नमः स्वाहा ५३.ॐ चामुण्डायै नमः स्वाहा ५४.ॐ वैष्णव्ये नम: स्वाहा ५५.ॐ माहेश्वय्यै नमः स्वाहा ५६.ॐ वैनायक्यै नमः स्वाहा ॥ इति सर्वतोभद्र हवनम् ॥

## एकलिङ्गतोभद्रस्थापनहवनम्

१. ॐ असितांग भैरवाय नमः स्वाहा १७. ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा

२. ॐ रुरुभैरवाय नमः स्वाहा

३. ॐ चण्डभैरवाय नमः स्वाहा

४. ॐ क्रोध भैरवाय नमः स्वाहा

५. ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः स्वाहा

६. ॐ कपाल भैरवाय नमः स्वाहा

७. ॐ भीषण भैरवाय नमः स्वाहा

८. ॐ संहार भैरवाय नमः स्वाहा

९. ॐ भवाय नमः स्वाहा

१०.ॐ शर्वाय नमः स्वाहा

११.ॐ पशुपतये नमः स्वाहा

१२.ॐ ईशानाय नम: स्वाहा

१३.ॐ रुद्राय नमः स्वाहा

१४.ॐ उग्राय नम: स्वाहा

१५.ॐ भीमाय नमः स्वाहां

१६.ॐ महते नम: स्वाहा

१८.ॐ वासुकये नमः स्वाहा

१९.ॐ तक्षकाय नम: स्वाहा

२०.ॐ कुलिशाय नमः स्वाहा

२१.ॐ कर्कोटकाय नमः स्वाहा

२२.ॐ शंखपालाय नमः स्वाहा

२३.ॐ कम्बलाय नमः स्वाहा

२४.ॐ अश्वतराय नमः स्वाहा

२५.ॐ चन्द्रमौलिने नमः स्वाहा

२६.ॐ चन्द्रमसे नमः स्वाहा

२७. ॐ त्रिलोचनाय नमः स्वाहा

२८.ॐ शक्तिधराय नमः स्वाहा

२९.ॐ महेश्वराय नमः स्वाहा

३०.ॐ वृषभध्वजाय नमः स्वाहा

३१.ॐ शूलाय नमः स्वाहा

३२.ॐ शूलपाणये नमः स्वाहा

# अथ द्वादशलिङ्गतोभद्रस्थापनहवनम्

ॐ गुरवे नमः स्वाहा

ॐ गणपतये नमः स्वाहा

३. ॐ दुर्गायै नम: स्वाहा

४. ॐ क्षेत्रपालाय नम: स्वाहा

५. ॐ सदाशिवाय नम: स्वाहा

ॐ मण्डूकाय नम: स्वाहा

७. ॐ कूर्माय नम: स्वाहा

ॐ कालाग्निरुद्राय नमः स्वाहा

९. ॐ वराहाय नम: स्वाहा

१०. ॐ पृथिव्यै नम: स्वाहा

११. ॐ अनन्ताय नम: स्वाहा

१२. ॐ स्कन्दाय नम: स्वाहा

१३. ॐ सुधासिंधवे नम: स्वाहा

१४. ॐ नलाय नम: स्वाहा

१५. ॐ पद्याय नम: स्वाहा

१६. ॐ पत्रेभ्यो नम: स्वाहा

१७. ॐ केसरेभ्यो नमः स्वाहा

१८. ॐ कर्णिकायै नमः स्वाहा

१९. ॐ सिंहासनाय पद्मासनाय नम: स्वाहा

२०. ॐ धर्माय नम: स्वाहा

२१. ॐ ज्ञानाय नमः स्वाहा २२. ॐ वैराग्याय नम: स्वाहा २३. ॐ ऐश्वर्याय नम: स्वाहा २४. ॐ अधर्माय नम: स्वाहा २५. ॐ अज्ञानाय नम: स्वाहा २६. ॐ अवैराग्यायै नमः स्वाहा २७. ॐ अनैश्वर्याय नमः स्वाहा २८. ॐ चिदाकाशाय नमः स्वाहा २९. ॐ योगपीठाय नमः स्वाहा ३०. ॐ साम्बसदाशिवायं नमः स्वाहा ३१. ॐ पृथिव्यै नमः स्वाहा ३२. ॐ कपालाय नमः स्वाहा ३३. ॐ सप्तसागरेभ्यो नम: स्वाहा ३४. ॐ सप्तसरदिभ्यो नम: स्वाहा ३५. ॐ तत्प्रषाय नमः स्वाहा ३६. ॐ अघोराय नम: स्वाहा ३७. ॐ सद्योजाताय नमः स्वाहा ३८. ॐ वामदेवाय नमः स्वाहा ३९. ॐ भगवत्यै नमः स्वाहा ४०. ॐ उमायै नम: स्वाहा ४१. ॐ शंकरप्रियायै नम: स्वाहा ४२. ॐ पार्वत्यै नमः स्वाहा ४३. ॐ गौर्य्ये नम: स्वाहा ४४. ॐ काल्यै नमः स्वाहा ४५. ॐ कौमार्ये नम: स्वाहा ४६. ॐ विश्वभर्ये नम: स्वाहा ४७. ॐ नन्दिने नमः स्वाहा ४८. ॐ महाकालाय नम: स्वाहा ४९. ३% महावृषभाय नमः स्वाहा ५०. ॐ भृंग किरीटने नमः स्वाहा ५१. ॐ स्कंदाय नम: स्वाहा

५२. ॐ उमापतये नमः स्वाहा ५३. ॐ चण्डेश्वराय नम: स्वाहा ५४. ॐ योगसूत्राय नमः स्वाहा ५५. ॐ धात्रे नमः स्वाहा ५६. ॐ मित्राय नमः स्वाहा ५७. ॐ यमाय नमः स्वाहा ५८. ॐ रूद्राय नमः स्वाहा ५९. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा ६०. ॐ सूर्यीय नमः स्वाहा ६१. ॐ भगाय नम: स्वाहा ६२. ॐ विवस्वते नमः स्वाहा ६३. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः स्वाहा ६४. ॐ सावित्रे नमः स्वाहा ६५. ॐ त्वष्ट्रें नमः स्वाहा ६६. ॐ विष्णवे नमः स्वाहा ६७. ॐ शिवाय नम: स्वाहा ६८. ॐ एकनेत्राय नमः स्वाहा ६९. ॐ एकरुद्राय नमे: स्वाहा ७०. ॐ त्रिमूर्तये नमः स्वाहा ७१. ॐ श्रीकण्ठाय नमः स्वाहा ७२. ॐ वामदेवाय नमः स्वाहा ७३. ॐ ज्येष्ठाय नमः स्वाहा ७४. ॐ श्रेष्ठाय नम: स्वाहा ७५. ॐ रूद्राय नम: स्वाहा ७६. ॐ कालाय नमः स्वाहा ७७. ॐ कलविकरणाय नमः स्वाहा ७८. ॐ बलविकरणाय नमः स्वाहा ७९. ॐ अणिमायै नमः स्वाहा ८०. ॐ महिमायै नमः स्वाहा ८१. ॐ लिघमायै नमः स्वाहा ८२. ॐ गरिमायै नमः स्वाहा

८३. ॐ प्राप्त्यै नमः स्वाहा ८४. ॐ प्राकाम्यै नमः स्वाहा ८५.ॐ ईशितायै नम: स्वाहा ८६. ॐ वशितायै नम: स्वाहा ८७. ॐ ब्रह्माणै नम: स्वाहा ८८. ॐ माहेश्वर्ये नमः स्टाहा ८९. ॐ कौमार्ये नम: स्वाहा ९०. ॐ वैष्णव्ये नम: स्वाहा ९१. ॐ वाराह्ये नम: स्वाहा ९२. ॐ इन्द्राण्यै नम: स्वाहा ९३. ॐ चामुण्डायै नमः स्वाहा ९४. ॐ चण्डिकायै नमः स्वाहा ९५. ॐ असितांगाय नमः स्वाहा ९६. ॐ रुरुभैरवाय नमः स्वाहा ९७. ॐ चण्डभैरवाय नम: स्वाहा ९८. ॐ क्रोधभैरवाय नम: स्वाहा ९९.ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः स्वाहा १००. ॐ कालभैरवाय नम: स्वाहा १०१. ॐ भीषणभैरवाय नम: स्वाहा १०२. ॐ संहारभैरवाय नम: स्वाहा १०३. ॐ घृताच्यै नम: स्वाहा १०४. ॐ मेनकायै नमः स्वाहा १०५. ॐ रम्भायै नम: स्वाहा १०६. ॐ उर्वश्यै नम: स्वाहा १०७. ॐ तिलोत्तमायै नमः स्वाहा ,१०८. ॐ सुकेशायै नम: स्वाहा १०९. ॐ मंजुघोषायै नम: स्वाहा ११०. ॐ अप्सरोभ्यो नम: स्वाहा १११. ॐ भवाय नम: स्वाहा ११२. ॐ शिवाय नम: स्वाहा ११३. ॐ रूद्राय नम: स्वाहा

११४. ॐ पशुपतये नमः स्वाहा ११५. ॐ उग्राय नम: स्वाहा ११६. ॐ भीमाय नम: स्वाहा ११७. ॐ महादेवाय नम: स्वाहा ११८. ॐ ईशानाय नम: स्वाहा ११९. ॐ अनंताय नम: स्वाहा १२०. ॐ वासुकये नमः स्वाहा १२१. ॐ तक्षकाय नम: स्वाहा १२२. ॐ कुलीरकाय नम: स्वाहा १२३. ॐ कर्कोटकाय नमः स्वाहा १२४. ॐ शङ्खपालाय नम: स्वाहा १२५.ॐ कम्बलाय नमः स्वाहा १२६.ॐ अश्वतराय नमः स्वाहा १२७.3ॐ वैन्याय नम: स्वाहा १२८.ॐ अंगाय नम: स्वाहा १२९.ॐ हैहयाय नम: स्वाहा १३०.ॐ अर्जुनाय नम: स्वाहा १३१.ॐ शाकुन्तलोपाय नम: स्वाहा १३२.ॐ भरताय नम: स्वाहा १३३.ॐ नलाय नम: स्वाहा १३४.ॐ रामाय नम: स्वाहा १३५.ॐ सार्वभौमाय नम: स्वाहा १३६.ॐ निषधाय नम: स्वाहा १३७.ॐ विन्ध्याचलाय नम: स्वाहा १३८.ॐ माल्यवते नम: स्वाहा १३९.ॐ परियात्राय नम: स्वाहा १४०.ॐ सहाय नम: स्वाहा १४१.ॐ हेमकूटाय नमः स्वाहा १४२.ॐ गंधमादनाय नम: स्वाहा १४३. ॐ कुलाचलाय नमः स्वाहा १४४.३ॐ हिमवते नम: स्वाहा

१४५.ॐ रैवताय नम: स्वाहा १४६.ॐ देवगिरये नमः स्वाहा १४७. ॐ मलयाचलाय नम: स्वाहा १४८.ॐ कनकाचलाय नम: स्वाहा १४९.ॐ पृथिव्यै नम: स्वाहा १५०.ॐ विश्वेभ्यो नमः स्वाहा १५१.ॐ अनन्ताय नम: स्वाहा १५२. ॐ अग्निकुमाराभ्यां नम: स्वाहा १५३.ॐ पितृभ्यो नमः स्वाहा १५४.ॐ नागेभ्यो नमः स्वाहा १५५.ॐ इन्द्राय नम: स्वाहा १५६.ॐ अग्नये नमः स्वाहा १५७.ॐ यमाय नमः स्वाहा १५८.ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहा १५९.ॐ वरूणाय नम: स्वाहा १६०.ॐ वायवे नमः स्वाहा १६१.ॐ कुबेराय नमः स्वांहा १६२.ॐ ईशानाय नमः स्वाहा १६३.ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा १६४.ॐ अनन्ताय नमं: स्वाहा १६५,3ॐ वज्राय नम: स्वाहा

१६६.ॐ शक्तये नम: स्वाहा १६७.ॐ दण्डाय नम: स्वाहा १६८.ॐ खड्गाय नम: स्वाहा १६९.ॐ पाशाय नम: स्वाहा १७०.ॐ अंकुशाय नम: स्वाहा १७१.ॐ गदायै नम: स्वाहा १७२.ॐ त्रिशूलाय नमः स्वाहा १७३. ॐ पद्याय नम: स्वाहा १७४.ॐ चक्राय नम: स्वाहा १७५.ॐ कश्यपाय नमः स्वाहा १७६.ॐ अत्रवे नमः स्वाहा १७७.ॐ भरद्वाजाय नमः स्वाहा १७८.ॐ विश्वामित्राय नम: स्वाहा १७९.ॐ गौतमाय नमः स्वाहा १८०.ॐ जमदग्ने नमः स्वाहा १८१.ॐ वसिष्ठाय नमः स्वाहा १८२.ॐ अरून्धत्यै नमः स्वाहा १८३.ॐ ऋग्वेदाय नम: स्वाहा १८४.ॐ यजुर्वेदाय नमः स्वाहा १८५.ॐ सामवेदाय नमः स्वाहा १८६.ॐ अथर्ववेदाय नम: स्वाहा

# अथ चतुर्लिङ्गतोभद्रमण्डलहवनम्

१. ॐ वीरभद्राय नम: स्वाहा

२. ॐ शम्भवे नमः स्वाहा

३. ॐ अजैकपदे नमः स्वाहा

४. ॐ अहिर्बुध्न्याय नम: स्वाहा

५. ॐ पिनाकिने नम: स्वाहा

६. ॐ शूलपाणये नमः स्वाहा

७. ॐ भुवनाधीश्वराय नमः स्वाहा

८. ॐ कपालिने नमः स्वाहा

९. ॐ दिक्पतये नमः स्वाहा

१०. ॐ रूद्राय नमः स्वाहा

११. ॐ शिवाय नमः स्वाहा

१२. ॐ महेश्वराय नमः स्वाहा

१३. ॐ असितांगभैरवाय नमः स्वाहा

१४. ॐ रुरुभैरवाय नमः स्वाहा

१५. ॐ चण्डभैरवाय नमः स्वाहा

१६. ॐ क्रोधभैरवाय नमः स्वाहा

१७. ॐ उन्मत्तभैरवाय नम: स्वाहा १८. ॐ कपालभैरवाय नम: स्वाहा १९. ॐ भीषणभैरवाय नम: स्वाहा २०. ॐ संहारभैरवाय नमः स्वाहा २१. ॐ भवाय नम: स्वाहा २२. ॐ शर्वीय नमः स्वाहा २३. ॐ महते नमः स्वाहा २४. ॐ रूद्राय नम: स्वाहा २५. ॐ पशुपतये नमः स्वाहा २६. ॐ भीमाय नमः स्वाहा २७. ॐ ईशानाय नमः स्वाहा २८. ॐ अनंताय नमः स्वाहा २९. ॐ तक्षकाय नमः स्वाहा ३०. ॐ वासुकये नमः स्वाहा ३१. ॐ कुलिशाय नम: स्वाहा ३२.ॐ कर्कोटकाय नमः स्वाहा ३३.ॐ शंखपालाय नमः स्वाहा ३४. ॐ कंबलाय नम: स्वाहा ३५. ॐ अश्वतराय नमः स्वाहा ३६. ॐ शुलिने नमः स्वाहा ३७. ॐ चन्द्रमौल्ये नम: स्वाहा ३८. ॐ चन्द्रमसे नमः स्वाहा ३९. ॐ वृषभध्वजाय नमः स्वाहा ४०. ॐ त्रिलोचनाय नमः स्वाहा ४१. ॐ शक्तिधराय नमः स्वाहा ४२. ॐ महेश्वराय नम: स्वाहा ४३. ॐ शूलधारिणे नमः स्वाहा ४४. ॐ स्थाणवे नम: स्वाहा ४५. ॐ ब्रह्मणे नम: स्वाहा ४६. ॐ सोमाय नमः स्वाहा

४७. ॐ ईशानाय नम: स्वाहा ४८. ॐ इन्द्राय नम: स्वाहा ४९. ॐ अग्नये नमः स्वाहा ५०. ॐ यमाय नमः स्वाहा ५१. ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहा ५२. ॐ वरूणाय नमः स्वाहा ५३. ॐ वायवे नम: स्वाहा ५४. ॐ अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहा ५५. ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः स्वाहा ५६. ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः स्वाहा ५७. ॐ अश्विभ्यां नम: स्वाहा ५८. ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः स्वाहा ५९. ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः स्वाहा ६०. ॐ भूतनागेभ्यो नमः स्वाहा ६१. ॐ गंधवाप्सारेभ्यो नमः स्वाहा ६२. ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा ६३. ॐ नन्दीश्वराय नमः स्वाहा ६४. ॐ शूलमहाकालाभ्यां नमः स्वाहा ६५. ॐ दक्षादिसप्तकाय नमः स्वाहा ६६. ॐ दुर्गायै नम: स्वाहा ६७. ॐ विष्णवे नमः स्वाहा ६८. ॐ स्वधायै नमः स्वाहा ६९. ॐ मृत्युरोगाभ्यां नमः स्वाहा ७०. ॐ गणपतये नमः स्वाहा ७१. ॐ अद्भ्यो नमः स्वाहा ७२. ॐ मरुद्भ्यो नमः स्वाहा ७३. ॐ पृथिव्यै नमः स्वाहा ७४. ॐ गंगादि नदीभ्यो नमः स्वाहा ७५. ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः स्वाहा ७६. ॐ मेरवे नम: स्वाहा

७७. ॐ सद्योजाताय नम: स्वाहा ७८. ॐ वामदेवाय नमः स्वाहा ७९. ॐ अघोराय नमः स्वाहा ८०. ॐ तत्पुरुषाय नमः स्वाहा ८१. ॐ ईशानाय नम: स्वाहा ८२. ॐ परिधवे नमः स्वाहा ८३. ॐ चतुःपुरीभ्यो नमः स्वाहा ८४. ॐ ऋग्वेदाय नम: स्वाहा ८५. ॐ यजुर्वेदाय नमः स्वाहा ८६. ॐ सामवेदाय नमः स्वाहा ८७. ॐ अथर्ववेदाय नमः स्वाहा ८८. ॐ भवाय नम: स्वाहा ८९. ॐ शर्वाय नमः स्वाहा ९०. ॐ पशुपतये नमः स्वाहा ९१. ॐ ईशानाय नम:्स्वाहा ु ९२. ॐ उग्राय नम: स्वाहा ९३. ॐ भीमाय नमः स्वाहा ९४. ॐ महते नम: स्वाहा ९५. ॐ भवान्यै नमः स्वाहा ९६. ॐ शर्वाण्यै नमः स्वाहा ९७. ॐ पश्पत्यै नमः स्वाहा ९८. ॐ ईशान्ये नमः स्वाहा ९९. ॐ उग्रायै नमः स्वाहा १००.३% रूद्राण्ये नमः स्वाहा १०१.ॐ भीमायै नम: स्वाहा १०२.३% महत्ये नम: स्वाहा १०३.३% पृथ्वीतत्त्वाय नमः स्वाहा १०४.३% जलतत्त्वाय नमः स्वाहा

१०५.ॐ तेजस्तत्त्वाय नम: स्वाहा १०६.ॐ वायुतत्त्वाय नम: स्वाहा १०७.ॐ आकाशतत्त्वाय नम: स्वाहा १०८.ॐ गदायै नम: स्वाहा १०९.ॐ त्रिशूलाय नमः स्वाहा ११०.ॐ वज्राय नम: स्वाहा १११.3% शक्तये नमः स्वाहा ११२.ॐ दण्डाय नम: स्वाहा ११३.ॐ खड्गाय नम: स्वाहा ११४.ॐ पाशाय नम: स्वाहा ११५.ॐ अंकुशाय नम: स्वाहा ११६.ॐ गौतमाय नम: स्वाहा ११७.ॐ भारद्वाजाय नम: स्वाहा ११८.ॐ विश्वामित्राय नम: स्वाहा ११९.ॐ कश्यपाय नमः स्वाहा १२०.ॐ ज्मदग्नये नमः स्वाहा १२१.ॐ वशिष्ठाय नम: स्वाहा १२२.ॐ अत्रये नमः स्वाहा १२३.ॐ अरून्थत्यै नमः स्वाहा १२४.ॐ ऐन्द्रायै नम: स्वाहा १२५.ॐ कौमार्ये नम: स्वाहा १२६.ॐ ब्राहम्यै नम: स्वाहा १२७.ॐ वाराह्ये नम: स्वाहा १२८.ॐ चामुण्डायै नमः स्वाहा १२९.ॐ वैष्णव्यै नम: स्वाहा १३०.3% माहेश्वर्ये नमः स्वाहा १३१.ॐ विनायिक्यै नमः स्वाहा ॥ इति॥

#### अथ गौरीतिलकमण्डलहवनम्

१. ॐ गौर्ये नमः स्वाहा

२. ॐ महाविष्णवे नमः स्वाहा

३. ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा

४. ॐ महेश्वराय नमः स्वाहा

५. ॐ महामायायै नम: स्वाहा

६. ॐ ऋग्वेदाय नमः स्वाहा

७. ॐ यजुर्वेदाय नमः स्वाहा

८. ॐ सामवेदाय नमः स्वाहा

९. ॐ अथर्ववेदाय नमः स्वाहा

१०. ॐ अद्भ्यो नमः स्वाहा

११. ॐ जलोद्भवाय नमः स्वाहा

१२. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा

१३. ॐ प्रजापतये नमः स्वाहा

१४. ॐ शिवाय नम: स्वाहा

१५. ॐ अनंताय नमः स्वाहा

१६. ॐ परमेष्ठिने नमः स्वाहा

१७. ॐ धात्रे नम: स्वाहा

१८. ॐ विधात्रे नम: स्वाहा

१९. ॐ अर्य्यमणे नमः स्वाहा

२०. ॐ मित्राय नम: स्वाहा

२१. ॐ अंशुमते नमः स्वाहा

२२. ॐ भगाय नम: स्वाहा

२३. ॐ इन्द्राय नम: स्वाहा

२४. ॐ विवश्वते नम: स्वाहा

२५. ॐ पृष्णे नम: स्वाहा

२६. ॐ पर्ज्जन्याय नम: स्वाहा

२७. ॐ त्वष्ट्रे नमः स्वाहा

२८. ॐ दक्षयज्ञाय नमः स्वाहा

२९. ॐ देव वसवे नम: स्वाहा

३०. ॐ महासुताय नम: स्वाहा

३१. ॐ सुवर्मणे नमः स्वाहा

३२. ॐ शङ्खपादे नमः स्वाहा

३३. ॐ महाबाहवे नम: स्वाहा

३४. ॐ वसुष्मते नमः स्वाहा

३५. ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा

३६. ॐ महेरणाय नमः स्वाहा

३७. ॐ विश्वावसवे नमः स्वाहा

३८. ॐ सुपर्णवे नमः स्वाहा

३९. ॐ विष्टराय नमः स्वाहा

४०. ॐ रुद्रदेवाय नमः स्वाहा

४१. ॐ ध्रुवाय नम: स्वाहा

४२. ॐ धराय नमः स्वाहा

४३. ॐ सोमाय नमः स्वाहा

४४. ॐ आपवत्साय नम: स्वाहा

४५. ॐ नलाय नमः स्वाहा

४६. ॐ अनिलाय नमः स्वाहा

४७. ॐ धौम्याय नमः स्वाहा

४८. ॐ प्रत्युषाय नमः स्वाहा

४९. ॐ आपवर्त्ताय नम: स्वाहा

५०. ॐ सांवर्ताय नम: स्वाहा

५१. ॐ द्रोणाय नम: स्वाहा

५२. ॐ पुष्कराय नमः स्वाहा

५३. ॐ हीं कार्य्ये नमः स्वाहा

५४. ॐ ह्रिये नम: स्वाहा

५५. ॐ कात्यायन्यै नमः स्वाहा

५६. ॐ चामुण्डायै नमः स्वाहा

५७. ॐ महादिव्यायै नमः स्वाहा

५८. ॐ सिद्धिदायै नमः स्वाहा

५९. ॐ हीकार्य्ये नमः स्वाहा

६०. ॐ ऐ नमः स्वाहा

६१. ॐ श्री श्रिये नम: स्वाहा

६२. ॐ हीयै नमः स्वाहा

६३. ॐ लक्ष्म्यै नमः स्वाहा

६४. ॐ श्रिये नम: स्वाहा

६५. ॐ सुधायै नमः स्वाहा

६६. ॐ मेधायै नम: स्वाहा

६७. ॐ प्रज्ञायै नम: स्वाहा

६८. ॐ मत्यै नम: स्वाहा

६९. ॐ स्वाहायै नम: स्वाहा

७०. ॐ सरस्वत्यै नमः स्वाहा

७१.ॐ गौर्ये नम: स्वाहा

७२. ॐ पद्यायै नम: स्वाहा

७३. ॐ शच्ये नम: स्वाहा

७४. ॐ सुमेधायै नमः स्वाहा

७५. ॐ सावित्र्ये नमः स्वाहा

७६. ॐ विजयायै नमः स्वाहा

७७. ॐ देवसेनायै नमः स्वाहा

७८. ॐ स्वाहायै नमः स्वाहा

७९. ॐ मात्रे नम: स्वाहा

८०. ॐ गायत्र्ये नमः स्वाहा

८१. ॐ लोकमात्रे नमः स्वाहा

८२. ॐ महादिव्याये नम: स्वाहा

८३, ॐ धृत्यै नम: स्वाहा

८४. ॐ पुष्ट्यै नम: स्वाहा

८५. ॐ तुष्ट्यै नम: स्वाहा

८६. ॐ आत्मकुलदेवतायै नमः स्वाह

८७. ॐ गणेवश्वर्य्यं नम: स्वाहा

सं.पू.य.वि. ९

८८. ॐ कुलमात्र्ये नम: स्वाहा

८९. ॐ शान्त्यै नमः स्वाहा

९०. ॐ जयन्त्यै नमः स्वाहा

९१. ॐ मङ्गलायै नम: स्वाहा

९२. ॐ काल्यै नमः स्वाहा

९३. ॐ भद्रकाल्यै नमः स्वाहा

९४. ॐ कपालिन्यै नम: स्वाहा

९५. ॐ दुर्गायै नम: स्वाहा

९६. ॐ क्षमायै नम: स्वाहा

९७. ॐ शिवायै नम: स्वाहा

९८. ॐ धात्यै नमः स्वाहा

९९. ॐ स्वधास्वधाभ्यां नमः स्वाहा

१००.ॐ दीप्यमानायै नम: स्वाहा

१०१.ॐ दीप्तायै नम: स्वाहा

१०२.ॐ सूक्ष्मायै नमः स्वाहा

१०३.ॐ विभूत्यै नम: स्वाहा

१०४.ॐ विमलायै नम: स्वाहा

१०५.ॐ परायै नमः स्वाहा

१०६.ॐ अमोघायै नमः स्वाहा

१०७.ॐ विद्युतायै नम: स्वाहा

१०८.ॐ सर्वतोमुख्यै नमः स्वाहा

१०९.ॐ आनन्दायै नमः स्वाहा

११०.ॐ नन्दिन्यै नमः स्वाहा

१११.ॐ शक्तये नमः स्वाहा

११२.ॐ महासुक्ष्मायै नमः स्वाहा

११३.ॐ करालिन्यै नमः स्वाहा

११४.3ॐ भात्यै नम: स्वाहा

११५.ॐ ज्योतिष्मत्यै नमः स्वाहा

११६.ॐ ब्राह्मयै नमः स्वाहा

११७.ॐ माहेश्वर्ये नम: स्वाहा ११८.ॐ कौमार्य्ये नम: स्वाहा ११९.ॐ वैष्णव्ये नम: स्वाहा १२०.ॐ वाराह्ये नम: स्वाहा १२१.ॐ इन्द्राण्ये नम: स्वाहा १२२.ॐ चण्डिकायै नम: स्वाहा १२३.ॐ बुद्धये नमः स्वाहा १२४.ॐ लज्जायै नम: स्वाहा १२५.ॐ वपुष्मत्यै नमः स्वाहा १२६.ॐ शान्त्यै नमः स्वाहा १२७.ॐ कान्त्यै नम: स्वाहा १२८.ॐ रत्त्यै नम: स्वाहा १२९.ॐ प्रीत्ये नम: स्वाहा १३०.ॐ कीत्त्यै नमः स्वाहा १३१.ॐ प्रभाये नमः स्वाहा १३२.ॐ काम्यायै नमः स्वाहा १३३.ॐ कान्त्यायै नमः स्वाहा १३४.ॐ ऋद्ये नमः स्वाहा १३५.3ॐ दयायै नमः स्वाहा १३६.ॐ शिवदूत्ये नमः स्वाहा १३७.3% श्रद्धायै नम: स्वाहा १३८.ॐ क्षमायै नम: स्वाहा १३९.ॐ क्रियायै नमः स्वाहा १४०.३% विद्याये नम: स्वाहा १४१.ॐ मोहिन्यै नम: स्वाहा १४२.ॐ यशोवत्यै नमः स्वाहा १४३.ॐ कृपावत्यै नम: स्वाहा १४४.ॐ सलीलायै नम: स्वाहा १४५.ॐ सुशीलायै नम: स्वाहा

१४६.ॐ ईश्वर्ये नम: स्वाहा १४७.ॐ सिद्धेश्वर्ये नम: स्वाहा १४८.ॐ द्वैपायनाय नम: स्वाहा १४९.ॐ भरद्वाजाय नम: स्वाहा १५०.ॐ गौतमाय नम: स्वाहा १५१.ॐ सुमन्तवे नमः स्वाहा १५२.ॐ देवलाय नम: स्वाहा १५३.ॐ व्यासाय नम: स्वाहा १५४.ॐ वसिष्ठाय नम: स्वाहा १५५.3 च्यवनाय नम: स्वाहा १५६.ॐ कण्वाय नमः स्वाहा १५७.3ॐ मैत्रेयाय नमः स्वाहा १५८.ॐ कवये नमः स्वाहा १५९.ॐ विश्वामित्राय नमः स्वाहा १६०.ॐ वामदेवाय नमः स्वाहा १६१.ॐ स्मन्ताय नमः स्वाहा १६२.ॐ जैमिनये नमः स्वाहा १६३.ॐ क्रतवे नमः स्वाहा १६४.ॐ पिल्लादाय नमः स्वाहा १६५.ॐ पाराशराय नमः स्वाहा १६६.ॐ गर्गाय नमः स्वाहा १६७. ॐ वैशम्पाननाय नमः स्वाहा १६८.ॐ दक्षाय नम: स्वाहा १६९.ॐ मार्कण्डेयाय नमः स्वाहा १७०.ॐ मृकण्डाय नमः स्वाहा १७१.ॐ लोमशाय नमः स्वाहा १७२. ॐ पुलशाय नम: स्वाहा १७३. ॐ पुलस्त्याय नमः स्वाहा १७४. ॐ बृहस्पतये नमः स्वाहा

१७५.ॐ जमदग्नये नमः स्वाहा १७६.ॐ जामदग्न्याय नम: स्वाहा १७७.3% दलभ्याय नम: स्वाहा १७८.ॐ शिलोञ्छनाय नम: स्वाहा १७९.ॐ गालवाय नम: स्वाहा १८०.ॐ याज्ञवल्क्याय नमः स्वाहा १८१.ॐ दुर्वासायै नमः स्वाहा १८२.ॐ सौरभायै नमः स्वाहा १८३.ॐ जाबालये नर्मः स्वाहा १८४.ॐ वाल्मीकये नमः स्वाहा १८५.ॐ ब्रह्मचर्याय नमः स्वाहा १८६.ॐ इन्द्रप्रमितये नमः स्वाहा १८७.ॐ देविमत्राय नमः स्वाहा १८८.ॐ जाजलये नमः स्वाहा १८९.ॐ शाकल्याय नमः स्वाहा १९०.ॐ मुद्गलाय नमः स्वाहा १९१.ॐ जातुकर्णाय नमः स्वाहा १९२.ॐ बलाकाय नमः स्वाहा १९३.ॐ कृपाचार्याय नमः स्वाहा १९४.ॐ सुकर्मणे नमः स्वाहा १९५.ॐ कौशल्याय नमः स्वाहा १९६.ॐ ब्रह्माग्नये नमः स्वाहा १९७.ॐ ग्रार्हष्पत्याग्नये नमः स्वाहा १९८.३% ईश्वराग्नये नम: स्वाहा १९९.ॐ दक्षिणाग्नये नम: स्वाहा २००.३% वैष्णवाग्नये नम: स्वाहा २०१.३% आहवानीयाग्नये नमः स्वाहा २३०.३% वीरभद्राय नमः स्वाहा २०२.ॐ सप्तजिह्वाग्नये नमः स्वाहा २०३.ॐ इध्मजिह्नाग्नये नमः स्वाहा

२०४.ॐ प्रवर्ग्याग्नये नमः स्वाहा २०५.ॐ वडवाग्नये नम: स्वाहा २०६.ॐ जाठराग्नये नम: स्वाहा २०७.ॐ लौकिकाग्नये नम: स्वाहा २०८.ॐ सूर्यीय नम: स्वाहा २०९.ॐ वेदांगाय नमः स्वाहा २१०.ॐ भानवे नमः स्वाहा २११.ॐ इन्द्राय नम: स्वाहा २१२.ॐ खगाय नम: स्वाहा २१३.ॐ गभस्तिने नमः स्वाहा २१४.ॐ यमाय नम: स्वाहा २१५.ॐ अंशुमृते नमः स्वाहा २१६.ॐ हिरण्यरेतसे नमः स्वाहा २१७.3% दिवाकराय नमः स्वाहा २१८.ॐ मित्राय नम: स्वाहा २१९.ॐ विष्णवे नमः स्वाहा २२०.ॐ शम्भवे नमः स्वाहा २२१.ॐ शिरिशयाय नम: स्वाहा २२२.ॐ अज़ैकपदे नमः स्वाहा २२३.ॐ अहिर्बुघ्न्याय नमः स्वाहा २२४.ॐ पिनाकपाणये नमः स्वाहा २२५.ॐ अपराजिताय नमः स्वाहा २२६.ॐ भुवनाधिश्वराय नमः स्वाहा २२७.ॐ कपालिने नम: स्वाहा २२८.ॐ विशाम्पतये नमः स्वाहा २२९.ॐ रूद्राय नमः स्वाहा ,२३१,३ॐ अश्वनीकुमाराभ्यां नम: स्वाहा २३२.ॐ आवहाय नम: स्वाहा

२३३.ॐ प्रवहाय नम: स्वाहा २३४.ॐ उछहाय नम: स्वाहा २३५.ॐ सम्बहाय नम: स्वाहा २३६:ॐ विवहाय नम: स्वाहा २३७.ॐ परिवहाय नम: स्वाहा २३८.ॐ परीवहाय नम: स्वाहा २३९.ॐ धरायै नम: स्वाहा २४०.ॐ अद्भ्यो नम: स्वाहा २४१.ॐ अग्नये नमः स्वाहा २४२.ॐ वायवे नमः स्वाहा २४३.ॐ आकाशाय नम: स्वाहा २४४.ॐ हिरण्यनाभाय नम: स्वाहा २४५.ॐ पुष्पञ्जयाय नमः स्वाहा २४६.ॐ अगस्त्याय नम: स्वाहा २४७.ॐ मनवे नमः स्वाहा २४८.ॐ कश्यपाय नमः स्वाहा २४९.ॐ धौभ्याय नम: स्वाहा २५०.ॐ भृगवे नमः स्वाहा २५१.ॐ वीतिहोत्राय नम: स्वाहा २५२.ॐ मधुछन्दसे नम: स्वाहा २५३.ॐ वीरसेनाय नम: स्वाहा २५४.ॐ कृतवृष्णवे नमः स्वाहा २५५.ॐ अत्रये नम: स्वाहा २५६.ॐ मेधातिधये नम: स्वाहा २५७. ॐ अरिष्टनेमये नमः स्वाहा २५८.ॐ अंगिरसाय नम: स्वाहा २५९.ॐ इन्द्रप्रमदाय नम: स्वाहा २६०.ॐ इध्मबाहवे नम: स्वाहा

२६१.ॐ पिप्पलादाय नम: स्वाहा २६२.ॐ नारदाय नमः स्वाहा २६३.ॐ अरिष्टसेनाय नमः स्वाहा २६४.3% अरूणाय नम: स्वाहा २६५.3ॐ सनकाय नम: स्वाहा २६६.ॐ सनन्दनाय नमः स्वाहा २६७.ॐ सनातनाय नमः स्वाहा २६८.ॐ सनत्कुमाराय नम: स्वाहा २६९.ॐ कपिलाय नम: स्वाहा २७०.ॐ कर्दमाय नमः स्वाहा २७१.ॐ मरीचये नमः स्वाहा २७२.ॐ क्रतवे नम: स्वाहा २७३.ॐ प्रचेतसे नमः स्वाहां २७४.ॐ उत्तमाय नम: स्वाहा २७५.ॐ दिधचये नमः स्वाहा २७६.ॐ श्राद्धदेवताभ्यो नम: स्वाहा २७७.ॐ गणदेवेभ्यो नम: स्वाहा २७८.ॐ विद्याधरेभ्यो नम: स्वाहा २७९.ॐ अप्सरेभ्यो नम: स्वाहा २८०.ॐ यक्षेभ्यो नम: स्वाहा २८१.ॐ रक्षेभ्यो नम: स्वाहा २८२.ॐ गन्धर्वभ्यो नमः स्वाहा २८३.ॐ पिशाचेभ्यो नम: स्वाहा २८४.ॐ गृह्यकेभ्यो नम: स्वाहा २८५.ॐ सिद्धदेवताभ्यो नमः स्वाहा २८६.३% औषधीभ्यो नमः स्वाहा २८७. ॐ भूतग्रामाय नमः स्वाही २८८. ॐ चतुर्विधभूतग्रामाय नमः स्वाहा

### स्विष्टकृत् हवनम्

तदनन्तर यथोपचार अग्निदेवता का पूजन करें।

मन्त्र (अग्नि) – ॐ अग्ग्ने नयं सुपर्या रायेऽअस्मान् विश्वानि देव व्ययुनानि व्यद्धान्। युयोध्यसम्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमं ऽउक्तिं व्यिधेम॥

ॐ स्वाहा स्वधायुताग्नये वैश्वानराय नमः। इस मन्त्र से अग्नि पूजन करें।। तदनन्तर बचे हुए शाकल्य से ब्रह्मा से अन्वारब्ध होकर ''ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा'' कहते हुए हवन करें। पश्चात् ''इदमग्नये स्विष्टकृते न मम'' कहकर स्नुव में बचे घृत को प्रोक्षणीपात्र में छोड़ देवें।।

# भूरादिनवाहुतिप्रदानम्

इदनन्तर भूरादि नवाहुति करें। इस प्रकार—

ॐ भूः स्वाहा - इदमग्नये न मम ।।

ॐ भुवः स्वाहा - इदं वायवे न मम ।।

ॐ स्वः स्वाहा - इदं सूर्याय न मम ।।

ॐ त्वन्नो ऽअग्ग्ने व्वर्क्षणस्य व्विद्वान्द्वेवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठुो व्वह्नितम् शोश्चानो व्विश्या देषां असि प्रमुगुग्ध्यसम्मत् स्वाहा॥

इदमग्निवरुणाभ्यां न मम।।

ॐ सत्वन्नो ऽअग्ग्नेऽवृमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या उषसो ळ्यूष्ट्दौ। अवश्वक्ष्य नो व्वर्तणुष्ट रर्गणो व्यीहि पृडीक्ष्ट सुहवो न एधि स्वाहा॥

इदम् अग्निवरुणाभ्यां न मम।।

ॐ अयाश्चाग्ग्नेऽस्यनिभशस्तिपाश्च सत्यिमत्वमयाऽअसि। अयानो यज्ञं व्वहास्ययानो धेहि भेषजॐस्वाहा॥ इदम् अग्नये अयसे न मम।।

ॐ ये ते शतं व्यरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। ते भिर्जोऽअद्य सवितोत व्यिष्णुर्विश्वे मुञ्जन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥

इदं वरुणाय सिवत्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्ध्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।।

ॐ उर्दुत्तमं व्येरुण् पाशेमस्मदविध्मं व्यिमध्यम छ श्रिथाय। अथा व्ययमीदित्य व्यते तवानीगसो ऽअदितये स्याम स्वाहा।।

इदं वरुणादित्यायाऽदितये न मम।।

🕉 प्रजापतये स्वाहा - इदं प्रजापतये न मम।।

# एकतन्त्रेण दिक्पालादीनां बलिदानम्

ततो दिक्पालेभ्यः एकतन्त्रेणैकमेव बलि दद्यात्। तदनन्तर एकतन्त्र से अधोलिखित मन्त्र द्वारा नमस्कार पूर्वक इन्द्रादि दशदिक्पालों की पूजा करें।

ॐ प्राच्ये दिशे स्वाहार्व्वाच्ये दिशे स्वाहा दक्षिणाये दिशे स्वाहार्व्वाच्ये दिशे स्वाहा प्रात्तीच्ये दिशे स्वाहार्व्वाच्ये दिशे स्वाहार्वाच्ये दिशे स्वाहार्थे

इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यो नमः, देवबलये नमः।।

गन्धाक्षतपुष्प से बलि की पूजा करें तथा हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र वाक्य उच्चारण करके इन्द्रादि दश दिक्पालों को बलि समर्पण कर जल छोड़ें। इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः शक्तिकेभ्यः एतान् सदीप-दिध-माष भक्त बलीन् समर्पयामि।।

ततः प्रार्थयेत् - भो भो इन्द्रादि दशदिक्पालाः साङ्गाः सपिरवाराः सायुधाः सशक्तिकाः मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पृष्टिकर्तारः तृष्टिकर्तारः वरदाः भवत।। इस प्रकार प्रार्थना करके हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करें।

हस्ते जलमादाय- अनेन बलिदानेन इन्द्रादि दशदिक्पाला: प्रीयन्ताम्। इसी प्रकार सूर्यादि नवग्रहों की एक तन्त्र से बलि देवे।

## नवग्रहबलिदानम्

सङ्कल्पः — कर्ता दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय सङ्कल्पं कुर्यात्–देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य अमुकयागसाङ्गतासिद्ध्यर्थम् बलिदानं करिष्ये।

ॐ ग्रहा ऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो व्यिप्रीय मृतिम्। तेषां विशिप्प्रियाणां व्योहिमष्मूर्जिष्ट समेग्ग्रभमुपयामगृहीतो-सीन्द्रीयत्वा जुष्टेङ्गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्रीयत्वा जुष्टेतमम्॥

सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः। ऐसा कहकर सूर्यादिनवग्रहों का पूजन करें तथा हाथ में जल लेकर बलि समर्पण करें।

सूर्यादि नवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्ति-केभ्यः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता गणपत्यादि पञ्चलोकपाल वास्तोष्पतिसहितेभ्यः एतं सदीप दिध माष भक्तबिलं समर्पयामि।। बिल प्रदान करके जल छोड़ देवें।।

#### प्रार्थना

ततो प्रार्थयेत् - भो भो सूर्यादिग्रहाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता गणपत्यादि पञ्चलोकपाल वास्तोष्पतिसहिताः मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः वरदा भवत ।। पुनः हाथ में जल ले लेवें।।

हस्ते जलमादाय— अनेन बिलदानेन साङ्गाः सूर्यादि नवग्रहाः प्रीयन्ताम्।।

# वास्तुबलिदानम्

आचार्य निम्न मन्त्र और वाक्य का उच्चारण वास्तुपीठ में करें— (ॐ) वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे। वास्तोष्पतये नमः।।

शिख्यादिभ्यश्च साङ्गेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपदिध माषभक्त बलिं समर्पयामि।

प्रार्थयेत्—भो वास्तोष्पते शिख्यादिदेवताश्च इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्यः क्षेमकर्त्यः शान्तिकर्त्रः पुष्टिकर्त्र्य स्तुष्टिकर्त्र्यो वरदा भवत।

हस्ते जलमादाय—अनेन बिलदानेन वास्तोष्पतिः शिख्यादयश्च प्रीयन्ताम्।।

## चतुः षष्टियोगिनीबलिदानम्

आचार्य योगिनी वेदी के पास जाकर निम्न मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए कर्ता से बलि प्रदत्त करायें—

ॐ अम्बे ऽअम्बिके उम्बलिके न मी नयति कश्श्यन ससंस्त्यश्वकः सुभिद्रि काङ्काम्पील वासिनीम्॥ ॐ महाकाल्यै नमः।

ॐ श्रीश्च्चे ते लृक्ष्मीश्च्च पत्त्यांवहोराञ्जे पा्श्वें नक्षेत्र्ञाणि रूपमृश्चिनौ ळ्यात्तम्। दृष्णिज्ञिषाणाुमुं में ऽइषाण सर्व्वलोकम्मे ऽइषाण॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

# ॐ पावका न् सरस्वती व्वाजेभिर्व्याजिनीवति। यूज्ञं व्वष्टु धियावसुः॥

चतुःषष्टियोगिनीभ्यश्च साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपदिधमाषभक्तविलं समर्पयामि।

प्रार्थयेत्— भोः भोः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यः चतुःषष्टियोगिन्यश्च देवताः अमुं बलिं गृहीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्राः क्षेमकर्त्राः शान्तिकर्त्राः पृष्टिकर्त्र्यस्तुष्टिकर्त्र्यो वरदा भवत्।।

हस्ते जल मादाय—अनेन बिलदानेन महाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वत्यो योगिन्यश्च प्रीयन्ताम्।।

#### कूष्माण्डबलिदानम्

आचमन और प्राणायाम कर, दाहिने हाथ में अक्षत, पुष्प, कुश तथा द्रव्य लेकर संकल्प करें।

सङ्कल्प: - देशकालाद्युच्चार्य० मम सकुटुम्बस्य सर्वाऽरिष्ट प्रशान्ति सर्वाभीष्ट कामसिद्धि कल्पोक्तफलवाप्तिद्वारा श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती त्रिगुणात्मिकास्वरुपिणी श्रीदुगदिवीप्रीत्यर्थं कूष्माण्ड-बलिदानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन पञ्चापचारैः बलिपूजनं च करिष्ये।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

इस मन्त्र से दुर्गादेवी का पूजन करें (यदि चण्डीयज्ञ हो तो) मूर्ति के आगे यजमान उत्तरमुख हो कपड़ा लपेटकर, उस कूष्माण्डबलि को पूर्वमुख करके प्रधान वेदी पर रखें तथा 'कूष्माण्डबलये नमः' से गन्ध पुष्पादि पञ्चोपचार से पूजन कर, अधोलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करें।

पशुस्त्वं बलिरुपेण मम भाग्यादवस्थितः। प्रणमामि ततः सर्वरुपिणं बलिरुपिणम्।।

नोट-नवचण्डी, लक्षचण्डी, सहस्रचण्डी तथा देवी के किसी भी पूजन में कृष्माण्ड बिलदान का विधान है।

चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद् विनाशनम्। चामुण्डाबलिरुपाय बले तुभ्यं नमोऽतु ते।। यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वम्भुवा। अतस्त्वां घातयाम्यद्य यस्माद्यज्ञे मतोबधः।। ततः शस्त्रं गन्धादिना सम्पूज्य, अभिमन्त्रयेत्— ऐं हीं श्रीं। रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोक प्रसाधकः।

ऐसा कहते हुए शस्त्र पर जल छिड़के। ॐ हां ही खड्ग, आं हुं फट् ऐसा कहकर हाथ में शस्त्र ले लेवें।।

वीरासन में बैठकर अधोलिखित मन्त्रोच्चार करते हुए बलि छेदन करें।

ॐ कालि कालि वज्रेश्वरि लोहदण्डायै नमः।

(बलि छेदन करते समय बलि को देखना निषेध हैं।)

कटी हुई बलि पर रोली लगावें तथा अधोलिखित मन्त्र से एक हिस्सा देवी (इष्टदेव) को निवेदित करें।

(कौशिकी रुधिरेणाप्यायताम् )

तदनन्तर आधे भाग का पाँच भाग करके बलि निकालें।

- १. पूतनायै बलिभागं निवेदयामि।।
- २. चरक्यै बलिभागं निवेदयामि।।
- ३. विदार्ये बलिभागं निवेदयामि।।
- ४. पापराक्षस्यै बलिभागं निवेदयामि।।
- ५. क्षेत्रपालं बलिभागं निवेदयामि।।

# क्षेत्रपालबलिदानम्

एकस्मिन् वंशादिपात्रे कुशानास्तीर्य तदुपरि मनुष्याहारचतुर्गुणं द्विगुणं वा माष दध्योदनं जलपात्रं च निधाय, चतुर्मुखं दीपं प्रज्वाल्य हरिद्रा कुङ्कुमादि पताकायुतं कृत्वा। प्रार्थयेत्।।

बाँस के बने डलिया आदि पर कुशा बिछाकर, उस पर एक व्यक्ति

के भोजन से चौगुना, द्विगुना अथवा यथाशक्ति उड़द, दही मिश्रित चावल और जल पात्र रखकर, उस पर चतुर्मुख दीप जलाकर हल्दी, रोली, सिन्दूर और लाल पुष्प युक्त बिल रख अधोलिखित मंत्र से पंचोपचार अथवा यथोपचार पूजन करें।

मंत्र :-निह स्प्पश्मिविदन्नन्यम्स्माद् वैश्वानुरात्पुरं ऽपुतारंम्ग्गे?। एमेनमवृधन्नमृता ऽअमेर्त्यं व्वैश्वानुरङ्क्षेत्र्वजित्याय देवा ?॥

क्षेत्रपालाय नमः इति पंचापचारैः सम्पूज्य।

ततो प्रार्थयेत्

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूत प्रेतगणैः सह। पूजाबलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा।। पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे। आयुरारोग्यं मे देहि निर्विध्नं कुरु सर्वदा।।

हाथ में जल लेकर मंत्र वाक्य उच्चारण करते हुए बलि समर्पण करें।

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय स शक्तिकाय मारीगण भैरव राक्षस कूष्माण्ड वेताल भूत-प्रेत पिशाच-डािकनी-शािकनी पिशाचिनी गणसहिताय एतं सदीप दिध माष भक्तबलं समर्पयािम।

ततः पुनः प्रार्थयेत् :— भो क्षेत्रपाल क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ताः क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव।।

हाथ में जल ले लेवें।

अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्।।

विल समर्पण के पश्चात् उस बाँस पात्र को यज्ञकर्ता के मस्तक पर घुमाकर निकृष्ट जाति के किसी व्यक्ति से चौराहे पर रखवा देवें।

इसके पश्चात् यजमान बलि ले जाने वाले के पीछे-पीछे द्वार तक जाकर अधोलिखित मंत्र से जल छिड़के।

३० हिडकाराय स्वाहा हिडकृताय स्वाहा क्रन्द्रित् के हिडकाराय स्वाहा हिडकृताय स्वाहा स्वाह्य अवस्कुन्दाय स्वाह्य प्रोर्थते स्वाहा प्राप्रोथाय स्वाह्य गुन्धाय स्वाहा ग्रमाताय स्वाहा निर्विष्ट्वाय स्वाहोपविष्ट्वाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा व्वलाते स्वाहासी नाय स्वाहा शयीनाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्ग्रेते स्वाहा कूर्जते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा व्विज्म्भमाणाय स्वाहा व्विचृताय स्वाहा संभेहानाय स्वाहोपेस्त्थिताय स्वाहाऽयेनाय स्वाहा प्रायेणाय स्वाहा॥

तत्पश्चात् हाथ-पैर धो लेवें।

# पूर्णाहुतिः

ततो यजामनः नारिकेलफलं रक्तवस्रवेष्टितं द्वादशषट् चतुः स्रुवेण गृहीतमाज्यं सुच्यां कृत्वां तस्योपरि नारिकेलफलं संस्थाप्य, 🕉 पूर्णाहुत्यै नमः' इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य पूर्णाहुतिं जुहुयात्।।

(नारियल को लाल वस्त्र में लपेटकर बारह, छह या चार बार सुवा से घी निकाल कर, सुची में रखकर उसके ऊपर नारियल के गोले को स्थापित कर ॐ पूर्णाहुत्यै नमः कहकर षोडंशोपचार द्वारा पूजन कर पूर्णाहृति मंत्रों द्वारा हवन करें।)

ॐ समुद्द्रादूर्मिर्ध्मधुमाँ २॥ ऽउदरि दुपा्छंशुना सममृत्तत्वमानट। घृतस्य नाम् गुह्यं व्यदस्ति जिह्ना देवानीम्मृतस्य नाभि÷॥१॥

व्वयन्नाम् प्रब्बवामा घृतस्यासमम्बन्ने धार्यामा नमोंभिर। उप ब्ब्रह्माश्शृणवच्छस्यमानुञ्चतुं÷ शृङ्गोऽवमीद् गौर उपुतत् ॥२॥

चुत्त्वारि शृङ्ग त्र्रायो ऽअस्य पादाद्द्वे शीर्षे सृप्त हस्तांसो ऽअस्य । त्रिधा बुद्धो व्वृष्यो रौरवीति मृहो देवो मर्त्या २। ऽआविवेश॥३॥

त्रिधा हितं पणिभिग्र्युह्ममानुङ्गिव देवासो घृत-मन्त्रविन्दन्। इन्द्रऽएक्ट सूर्व्युऽएक् ज्जान व्वेनादेक ७ स्वधया निष्टृतकशुः ॥४॥

एताऽअर्षन्ति हद्यात्समुद्राच्छतव्यंजा रिपुणा नाव चकक्षे। धृतस्य धाराऽअभिचाकशीमि हिर्णणययो व्येत्सो मद्ध्यंऽआसाम् ॥५॥

सम्यक् स्रवित्ति स्रितो न धेनी ऽअन्तर्ह्दा मनसा पूयमानाः। एते ऽअर्धन्त्यूर्म्यो घृतस्य मृगा ऽईव क्किप्णोरी षमाणाः ॥६॥

सिन्धो रिव प्यादध्वने शूंघनासो व्वातप्यिक्षियं पतयन्ति युह्वा ? घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ट्ठी भिन्दन्नमिभिद्दं पिन्न्वमानः ॥७॥

४अ भिष्प्रवन्त समिनेव योषा कल्ल्याणण्यः सम्मर्थमानामसोऽअगिनम्। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो इर्व्यति जातवेदा ह ॥८॥

क्त्र्याऽइव व्बहुतुमेत्वाऽउं ऽअञ्ज्यञ्जानाऽअभि-चिकशीमि। यत्र्य सोर्म÷ सूयते यत्र्यं यज्ञी घृतस्य धारा ऽअभि तत्त्वन्ते ॥९॥ ॐ अब्ब्ध्यर्षत सुष्ट्वृतिङ्गळ्यमाजिम्स्मास् भूत्रा द्रविणानि धत्त। इमं व्यज्जन्नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥१०॥

धार्मन्ते व्विश्शवं भुवेन्मधि शिश्रातम्नतः ? समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके सिम्थे य ऽआर्थृतस्तमेश्श्याम् मधु मन्तन्त ऽटुर्म्मम् ॥११॥

पुनेस्त्वाऽदित्या रुद्रा व्यसेव् सिमन्धतां पुनेर्ब्ह्याणी व्यसुनीथ युजै?। घृतेन त्वन्तन्वं व्वर्द्धयस्व सृत्याः सन्तु यजीमानस्य कामी ॥१२॥

स्पत ते ऽअग्गे स्मिधं स्पत जिह्ना? स्पतऽऋषेयः स्पप्त धार्म प्प्रियाणि। स्पत होन्त्री ह सप्त्धा त्वी वजन्ति स्पत् बोनी्रापृणीस्व घृतेन् स्वाही॥१३॥

मुर्द्धानं दिवो अर्ति पृथिक्या व्यैश्वान्रमृत ऽआ जातम्गिनम्। कृविष्ट सम्प्राज्मितिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवा? ॥१४॥

पूर्णा देर्बि परीपत् सुपूर्णा पुन्रापत। व्वस्नेव व्विक्कीणावहा ऽइष्मूर्जिट शतक्तो स्वाहा॥१५॥

ऊपर लिखे मन्त्रों से पूर्णाहुति हवन करें।

स्रुवे में बचे हुए घृत को अधोलिखित मन्त्र वाक्य पढ़ते हुए प्रणीता पात्र में डालें।

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न ममा।

# वसोर्घाराहोम:

तदनन्तर अधोलिखित मंत्र से स्नुचि द्वारा अविच्छिन्न घृतधारा अग्नि में दें।

ॐ सप्त ते ऽअग्गे सिमध सप्त जिह्ना? सप्त ऽऋषेयः सप्त धार्मिप्रयाणि। सप्त होल्लाः सप्तधा त्वां यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहां ॥१॥

शुक्क्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्श्च्य सृत्यज्योतिश्श्च्य ज्योतिष्माँश्श्च्य। शुक्क्रश्चऽऋतुपाश्चात्य ६ हा ॥२॥

र्कृ दृङ् चान्यहङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च। मितश्च सम्मितश्र्व्य सभराहः ॥३॥

ऋतश्च स्त्यश्चे द्धुवश्च्चे ध्रुणिश्च्च । ध्रुर्ता चे व्विधर्ता चे व्यारुयः ॥४॥

ऋतजिच्चे सत्यजिच्च सेन्जिच्चे सुषेणश्च्य। अन्ति मित्रश्च हुरे ऽअमित्रश्च गुण? ॥५॥

र्ष्ट्रिक्क्षांस ऽणुतादृक्क्षांस ऽऊषुणंः सहक्क्षांस् । प्रितासंश्च सम्मितारो नो ऽअ्द्य सभरतो मरुतो युज्ञे ऽअस्मिन् ॥६॥

स्वतंवाँ श्रेष्ठ प्रघासी चे सान्तप्नश्र्य गृहमेधी चे । क्क्रीडी चे शाकी चो जोषी ॥७॥

इन्द्रं वैवि विविशो मुरुतोनुवत्कर्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवी विविशो मुरुतोनुवत्वर्मानोऽभवन् एव मिमं व्यजमानं दैवी शच्य विशो मानुषीशच्यानुवत्वर्मानो भवन्तु॥८॥ इमछं स्तन्मूर्जीस्वन्तन्धयापां प्रपीनमगने सिर्स्य मद्धये । उत्सञ्जुषस्य मधुमन्तमर्व्यन्त्सम् द्विय १ सदन्माविशस्य॥९॥

घृतिमिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते शिश्रातो घृतम्बस्य धामे। अनुष्ट्यधमार्वह मादयस्य स्वाहकृतं त्वृषभ व्यक्षि हुव्यम्।।१०॥

व्वसो । प्वित्रीमिस शृतधारं वसो । प्वित्रिसि सहस्रिधारम्। देवस्त्वां सिवृता पुनातु व्वसो । प्वित्रेण शृतधरिण सुष्वा कामधुक्षः स्वाहा॥११॥

इदमग्नये वैश्वानराय न मम पढ़कर शेष घृत को प्रणीता में छोड़े। ततो: प्रार्थयेत्

श्रद्धां मेघां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्। तेज आयुष्यमारोग्यं देहि में हव्यवाहन।। भो भो अग्ने! महाशक्ते सर्वकर्गप्रसाधन। कर्मान्तरेपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सर्वदा।। प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि।।

#### त्र्यायुषकरणम्

अग्नि की प्रदक्षिणा कर अग्नि के पश्चिम में बैठकर अर्थात् पूर्वाभिमुख होकर स्रुव से भस्म निकालें।

> ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने इति ललाहे। कश्यपस्य त्र्यायुषम् इति ग्रीवायाम्। यद्देवेषु त्र्यायुषम् इति दक्षिण बाहुमूले। तन्नीऽअस्तु त्र्यायुषम् इति हृदि।

ततो प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षिप्तस्याऽऽज्यस्य संस्रवप्राशनं यजमानं कुर्यात् । पश्चादाचमनं, पवित्रभ्यां मार्जनम् , अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिश्च कर्त्तव्या।।

तत्पश्चाद् प्रोक्षणीपात्र में स्थित घृत को यजामन सूँघे। आचमन करके प्रणीता पात्र में रखी हुई पवित्री से प्रणीता जल को अपने मस्तक पर छिड़के । तथा इन दोनों कुशाओं को अग्नि में छोड़ देवें।

### पूर्णपात्रदानम्

तदनन्तर ब्रह्मा के लिये पूर्णपात्र दान देवें।

सङ्कल्पः — अद्य कृतस्य अमुक देवतार्चन होमकर्मणोऽङ्गतया विहितमिदं पूर्णपात्रं स-दक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

अग्ने:- पश्चात् प्रणीता विमोकः कुर्यात्। अग्नि के पीछे प्रणीता पलट दें।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।।

ऊपर लिखे मन्त्र वाक्य से गिरे हुए प्रणीता के जल से यजमान का सपरिवार मार्जन करें। उपयमन कुशा को अग्नि में छोड़ दें तथा ब्रह्मा कुशनिर्मित ब्रह्मग्रन्थि को खोल देवें।

### श्रेयोदानम्

ततः आचार्यः श्रेयोदानम् कुर्यात्।

आचार्य हाथ में जल, अक्षत तथा सुपारी लेकर अधोलिखित मन्त्रों से यजमान के हाथ में देवें।

अद्येत्यादि कृतस्य अमुकार्चनाख्यस्य कर्मणो यजमानाय श्रेयोदानं किरिष्ये। भवन्नियोगेन मया अस्मिन् अमुकार्चनाख्ये कर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं तदुत्पन्नं श्रेयः तत् अमुना साक्षतेन सजलेन पूंगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

यजमान - प्रतिगृह्यताम्।

विप्र - देवस्यत्वेति प्रतिगृह्णामि।

यजमान - तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव।

विप्र - भवामि।

इस प्रकार आचार्य आशीर्वाद देवें।

### दक्षिणदानम्

तत् पश्चात् दक्षिणा के लिये संकल्प करें।

सङ्कल्पः-अद्य कृतस्य अमुकार्चनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्तयर्थं च आचार्यादिभ्यो महर्त्विग्भ्यः सूक्तपाठकेभ्यो मन्त्रजापकेभ्यो हवनकर्तृभ्योऽन्येभ्यः च दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।।

इस प्रकार ब्राह्मणों की दक्षिणा का सङ्कल्प करें।

#### ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः

ततो ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः कुर्यात् :—

अद्य कृतस्य अमुकार्चनकर्मणः साङ्गतासिन्द्वयर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च यथासङ्गचकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथोत्पन्नेन अहं भोजियष्ये। भोजनान्ते तेभ्यस्ताम्बूलदक्षिणां च दास्ये।।

## पीठदानसङ्कल्पः

ततो ग्रह पीठ देवानां गन्धादि पञ्चोपचारैः उत्तरपूजनं कुर्यात् । गणपत्याद्यावाहित देवताभ्यो नमः। आचार्याय पीठदानम् दद्यात्।।

तदनन्तर यजमान गणेशादि देवताओं का उत्तरपूजन कर पीठ दान सङ्कल्प करके पीठदान करें।

सङ्कल्प:- अद्य कृतस्य अमुकार्चन कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल प्राप्त्यर्थं च इदं प्रधानपीठं ग्रहपीठं मातृका पीठं सोपस्करं दक्षिणासहितम् आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

#### अथाभिषेक:

ततो रुद्र कलशं देवतान्तर कलशो दकमेकस्मिन् पात्रे कृत्वा दूर्वा पञ्चपल्लवैरुदङमुख आचार्यास्तिष्ठन् चत्वारो ऋत्विजश्च सकुटुम्बं स्वोत्तरतः सपत्नीकं यजमानं प्राङ्मुखमुप-विष्टमभिषिञ्चेयुः।।

तदनन्तर रुद्रकलश तथा अन्य कलशों से जल को एक पान में रखकर दूर्वा एवं पंचपल्लवों से आचार्य तथा अन्य चार ऋत्विज् भी उत्तर पूर्वाभिमुख बैठे हुए सपरिवार एवं सपत्नीक यजमान का अभिषेक करें।

#### तत्र मन्त्राः

कं देवस्य त्वा सिवतुः प्रस्वेऽिश्वनीर्ब्ह्वाहुक्यां पूष्णणो हस्तिक्याम् । सरस्वत्यै व्वाचो यन्तु र्व्यान्त्रये द्याम् वृह्स्प्यतेष्ट्वा साम्प्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥१॥

ॐ देवस्यं त्त्वा सिवतुः प्रस्वेश्थिनोर्ब्बाहुब्ध्यां पूष्णणो हस्ताब्ध्याम् । सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्व्यन्त्र्रेणाऽग्नेः साम्प्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥२॥

ॐ देवस्यं त्वा सिवृतुः प्रस्वेऽिश्यनो ब्रिंहिक्यां पूछणो हस्ताब्ध्याम् । अश्यानाब्धीषंज्येन तेजसे व्यम्हावर्च्याम् । अश्यानाब्धीषंज्येन व्वीर्थ्यां व्यानाद्यां पिषिञ्चाम् सरस्वत्ये भैषंज्येन व्वीर्थ्यां यानाद्यां यानिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रयेण् बलाय श्रिश्र्ये यशसेभिषिञ्चामा ॥३॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः। वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणे विभुः॥१॥ प्रद्युम्नश्चाऽ निरुद्धश्च भदन्तु विजयाय ते। आखण्डलोऽग्निर्भगवान यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥२॥

पवनश्चेव धनाध्यक्षस्तथा शिव:। ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।३।। कीर्ति-र्लक्ष्मी-र्धृति-र्मेधापुष्टि: श्रब्द्वा क्रिया मित:। बुद्धिर्लज्जा तपः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः।।४॥ एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः। आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुद्ध-जीव-सिताऽर्कजाः॥५॥ ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहु-केतुश्च तर्पिताः। देव-दानव-गन्थर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः॥६॥ ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च। देवपत्यो हुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः॥७॥ अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च। औषधानि च रत्नानि कालस्याऽवयवाश्च ये।।८।। सरितः सागराः शैलस्तीर्थानि जलदा नदाः। एते त्वामिभषिञ्चन्तु सर्वकामाऽर्थसिद्धये।।९।। अमृताभिषकोऽस्तु। शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चाऽस्तु।

#### छायापात्रदानम्

यजमान एकस्मिन् कांस्यपात्रे स सुवर्ण सदक्षिणाकं च। आज्यं स्थाप्य, आत्मप्रकृतिं निरीक्ष्य ब्राह्मणाय दद्यात्।।

यजमान एक कांसे की कटोरी में घी रखकर उसमें दक्षिणा सिहत सुवर्ण छोड़कर अपनी मुख की छाया को देखकर ब्राह्मण को देवें।

ॐ रुपेण वो रुपम्ब्स्यागेन्तुथो वो व्विश्सवेदा व्विभेजतु। ऋतस्य पृथा प्येतं चन्द्रदेक्षिणा व्विस्वः पश्रय व्यान्तरिक्षं व्यतस्य सदुस्यैः॥

ऊपर दिये मन्त्र से अपनी छाया देखें। तदनन्तर सङ्कल्प करें।

सङ्कल्पः - देश कालौ सङ्कीर्त्य मम एतत् शरीरावच्छित्र समस्त पापक्षय सर्वग्रहपीडा शान्ति शरीरोत्थार्तिनाशाय प्रासादवाञ्छा ऽऽयुरोग्यादि सर्वसौभाग्यप्राप्तये सर्वसौख्यप्राप्तये च इदं स्वमुखद्दायाविक्षिताज्यपूरितं कांस्यापात्रं स सुवर्ण सदक्षिणाकं श्रीविष्णुदैवतम् अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

इस प्रकार संकल्प करके छायादान करें। तदनन्तर प्रार्थना करें।

#### प्रार्थना

याऽलक्ष्मीर्यच्च में दौस्थं सर्वाङ्ग समुपस्थितम्। तत्सर्वं नाशयऽऽज्य त्वं श्रियमायुश्च वर्द्धय।।१।। आज्यं सुराणामाहारं सर्वमाज्ये प्रतिष्ठितम्। आज्य पात्र प्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम।।२।। भूयसीदक्षिणासङ्कल्पः

तत अन्यभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां दद्यात्।। यथाशक्ति ब्राह्मणों को दक्षिणा देवें।

सङ्कल्पः — कृतस्य अमुकार्चनहवनकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं तन्मध्ये न्यूनाऽतिरिक्तदोष परिहारार्थं नाना नाम गोत्रेभ्यो नाना शर्मब्राह्मणेभ्यः समाश्रित-बन्धुवर्गेभ्यो नट-नर्तक गायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथोत्साहं भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।।

सङ्कल्प करके गायक नट-नर्तक दीन-अनाथों को दक्षिणा देवें।

# आवाहित देवानां विसर्जनम्

ततो देवताऽग्निं सानुनयं विसृजेत्-

आवाहित देवताओं का विसर्जन तत्पश्चात् देवताओं और अग्नि का अधोलिखित मन्त्रों द्वारा प्रार्थना पूर्वक अक्षत छिड़कते हुए विसर्जन करें।

ब्ब्रह्मणस्प्यते देव्यन्तस्त्वेमहे। उत्तिष्ठं å उप प्रयन्तु मुरुते÷ सुदानेव उइन्द्रे प्याशूर्व्मवा सची॥ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टं कामार्थसिद्धयर्थं पुनरागमनाय आवाहित देवताः स्वस्थाने गच्छत ।

ॐ यर्ज युज्ञङ्गच्छ युज्ञपतिङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा । एष ते युज्ञो यज्ञपते सहसूक्त वाकः सर्व्ववीरस्तञ्चषस्य स्वाही॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥१॥ यज्ञनारायण स्वस्थाने गच्छ। ॐ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चिभिरेव च।।२।। गच्छ देवि ! निजं स्थानं मह्यं दत्वा वरान बहून। गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि।।३।। दुर्गे देवि ! जगन्मातः! स्वस्थानं गच्छ पूजिता। संवत्सर - व्यतीते तु पुनरागमनाय वै।।४।। इमां पूजां मया देवि! यथाशक्त्युपपादिताम। रक्षार्थं च समागच्छ व्रज स्वस्थानमुत्तमम्।।५।। हाथ में कुश और जल लेकर विसर्जन करें।

मया यत्कृतं यथाकालं यथाऽऽदेशं यथाज्ञानं यथाशक्ति अमुकर्चनाख्यं कर्म तेन श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्।। प्रार्थयेत्

मया यत्कृतं अमुकार्चनाख्यं कर्म तत् कालहीनं भक्तिहीनं श्रन्द्वाहीनं भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीसूर्याद्यावाहित-देवता-प्रसादात् सर्वविधेः परिपूर्णमस्त्वित भवन्तो ब्रुवन्तु। अस्तु परिपूर्णम् इति

ब्राह्मणाः वदेयुः।।

#### क्षमा-प्रार्थना

हाथ को सम्पुटी कृत्य करके प्रार्थना करें—
जपच्छिद्रं तपिष्ठछद्रं यच्छिद्रं शान्ति कर्मणि।
सर्व भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः।।१।।
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।२।।
यस्य स्मृत्या च नमोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।३।।

### तिलकाशीर्वाद:

ॐ पुनेस्त्वा ऽदित्या रुद्राव्यसंवर सिमेन्धतां पुनेर्ब्ब्ह्याणो व्यसुनीथ युज्ञै?। घृतेन् त्वन्तुत्रवृ व्यर्द्धयस्व सृत्याः सन्तु यजमानस्य कामारः ॥

ॐ दीर्ग्धायुस्त ऽओषधे खनिता यसमी च त्वा खनीम्म्यहम् । अथो त्व न्दीर्ग्धायुर्ब्भूत्त्वा शृतवित्शा व्विरोहितात् ॥

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु गो-वाजि-हस्ति-धन-धान्य-समृद्धिरस्तु। ऐश्चर्यमस्तु बलमस्तु रिपुक्षयोऽस्तु वंशे सदैव भवतां हरि भक्ति रस्तु।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते। धनं धान्यं पशु बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥ यावद् भागीरथी गङ्गा तावद्देवो महेश्वरः। यावद् वेदा प्रवर्तन्ते तावन्त्वं विजयी भव।। आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र-गौत्रस्तथैव च। आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु मे।। मन्त्रार्थाः सफला सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।

ॐ स्वस्ति प्रजाभ्यः प्रतिपाल यन्तां न्यायेन मार्गेण महीं महीशा। गो ब्राह्मणेभ्यश्च शुभस्तु नित्यं लोका समस्ता सुखिनः भवन्तु॥ अथ यजमानरक्षाबन्धनमंत्रम् —

ॐ यदार्बद्ध्नन्दाकक्षाय्णा हिरंण्ण्यक्ष शृतानी काय सुमनुस्य मानाः।

तन्म ऽआ बेद्ध्नामि शृतशारदायायुष्मान्जरदिष्ट्विर्यथासम्॥

इति मन्त्रेण यजमानस्य दक्षिणहस्ते कङ्कणबन्धनं कुर्यात् ।।

## यजमानपत्नीरक्षाबन्धन मन्त्रः

ॐ तं पत्नी भिरनुं गच्छेम देवा? पुत्त्रैब्ध्रातिभिरुत बा हिरंणयै?।

नाक झब्म्णाना सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्टे ऽअधि रोचने दिव?॥

इति मन्त्रेण यजमान पत्याः वामहस्ते कङ्कणबन्धनं कुर्यात्।।

ॐ शृतिमन्नु शृरदो ऽअन्ति देवा यत्र्या नश्च्युक्का ज्रसन्तुनूनाम्।

पुत्रासो यत्रं पितरो भवित्रि मा नो मुद्ध्या री'रिष्ता युर्गन्तो' ॥

शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा। ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु ब्राह्माणानां प्रसादतः।। अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिण सन्तु पौत्रिणः। निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्।। गणपत्यङ्ग पूजनम्

वाम हस्ते गन्धादिगृहीत्वा दक्षिण हस्तेन पूजयेत्—
ॐ श्रीगणेशाय नमः पादौ पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ आखुवाहनाय नमःउरुं पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ हेरम्बाय नमः किंटं पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ कामारिसूनवे नमः नाभिं पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ गणनायकाय नमः हृदयं पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ स्थूलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ स्कन्दाग्रजाय नमः स्कन्धौ पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ पाशहस्ताय नमः हस्तौ पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ गजवक्राय नमः वक्रं पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ विध्नहर्त्रे नमः ललाटं पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ सर्वेश्वराय नमः शिरः पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ गणाधिपाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि तर्पयामि नमः।

## गणपत्यावरणपूजनम्

पुन: गन्धाक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा अर्चयेत्—

१. ॐ समुखाय नमः ७. ॐ विघ्ननाशाय नमः

२.ॐ एकदन्ताय नमः ८.ॐ विनायकाय नमः

३.ॐ कपिलाय नमः ९.ॐ धूम्रकेतवे नमः

४.ॐ गजकर्णाय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

५.ॐ लम्बोदराय नमः ११. ॐ भालचन्द्राय नमः

६.३% विकटाय नमः १२. ३% गजाननाय नमः

3% अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम् ॥

समस्ता वरणार्चन देवेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि हस्ते जलं गृहीत्वा । अनेन समस्तावरणार्चनेन श्री सिद्धि सहित श्रीमहागणपतिः प्रीयतां न मम।।

पुन: पुष्पादि गृहीत्वा

१. ॐ ऋद्यै नमः २. ॐ सिद्धयै नमः

३. ॐ शुभाय नमः ४. ॐ लाभाय नमः

५. ॐ षडाननाय नमः ६. ॐ कन्याकुमार्ये नमः

७. ॐ जगदम्बिकायै नमः ८. ॐ शिवाय नमः

९. ॐ वृषभाय नमः १०.ॐ सिंहाय नमः

११. ॐ भूपकाय नमः १२. ॐ मयूराय नमः

१३. ॐ पाशाय नमः १४.ॐ अङ्कुशाय नमः

१५. ॐ सकलायुधाय नमः

गणपतेः एकविंशति नामानि पूजयेत्-

पुष्पादीन् धृत्वा—

१. ॐ गणञ्जयाय नमः २. ॐ गणपतये नमः

३. ॐ हेरम्बाय नमः ४. ॐ धरणीधराय नमः

५. ॐ महागणपतये नमः ६. ॐ लक्षप्रदाय नमः

७. ॐ क्षिप्रप्रसादाय नमः ८. ॐ अमोघसिद्धयै नमः

९. ॐ अमृताय नमः १०. ॐ मन्त्राय नमः

११. ॐ चिन्तामणये नमः १२. ॐ निधये नमः

१३. ॐ समङ्गलाय नमः १४. ॐ बीजाय नमः

१५. ॐ आशापूरकाय नमः १६. ॐ वरदाय नमः

१७. ॐ शिवाय नमः १८. ॐ कश्यपाय नमः

१९. ॐ नन्दनाय नमः २०. ॐ वाचासिद्धाय नमः

२१. ॐ ढुण्ढि विनायकाय नमः

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम्।। षट् पञ्चाशद् गणपति नामान्यर्चयेत्। हस्तेगन्धाक्षत पुष्पाणि दुर्वाङ्कुरान् गृहीत्वा-प्रथमावरणम्

- १. ॐ अर्क विनायकाय नमः
- २. ॐ श्री दुर्ग विनायकाय नमः
- ३. ॐ चण्ड विनायकाय नमः
- ४. ॐ देहली विनायकाय नमः
- ५. ॐ उद्दण्ड विनायकाय नमः
- ६. ॐ पाशपाणिविनायकाय नमः
- ७. ॐ खर्वविनायकाय नमः
- ८. ॐ सिद्धिवनायकाय नमः

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।। एवमेवद्वितीयाद्यावरणेऽपि सर्वत्र योजनीयम्

द्वितीयावरणम्

- ९. ॐ लम्बोदरविनायकाय नमः
- १०. ॐ कूटदन्तविनायकाय नमः
- ११. ॐ शालकण्टकविनायकाय नमः
- १२. ॐ कुष्माण्डविनायकाय नमः
- १३. ॐ मुण्डविनायकाय नमः
- १४. ॐ विकटदन्तविनायकाय नमः
- १५ ॐ राजपुत्रविनायकाय नमः
- १६. ॐ प्रणवविनायकाय नमः

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पयेतुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।। तृतीयावरणम्

- १७. ॐ वक्रतुण्डविनायकाय नमः
- १८. ॐ एकदन्तविनायकाय नमः

- १९. ॐ त्रिमुखविनायकाय नमः
- २०. ॐ पञ्चास्यविनायकाय नमः
- २१. ॐ हेरम्बविनायकाय नमः
- २२. ॐ विघ्नराजविनायकाय नमः
- २३. ॐ वरदविनायकाय नमः
- २४. ॐ मोदकप्रियविनायकाय नमः

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल । भक्त्या समर्पयेतुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

#### चतुर्थावरणम्

- २५. ॐ अभयद विनायकाय नमः
- २६. ॐ सिंहतुण्डविनायकाय नमः
- २७. ॐ कुणिताक्षविनायकाय नमः
- २८. ॐ क्षिप्रप्रसादनविनायकाय नमः
- २९. ॐ चिन्तामणिविनायकाय नमः
- ३०. ॐ दन्तहस्तविनायकाय नमः
- ३१. ॐ पिचण्डिलविनायकाय नमः
- ३२. ॐ उद्दण्डमुण्डविनायकाय नमः

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यंचतुर्थावरणावरणार्चनम् ॥

#### पंचमावरणम्

- ३३. ॐ स्थूलदन्त विनायकाय नमः
- ३४. ॐ कलिप्रियविनायकाय नमः
- ३५. ॐ चतुर्दन्तविनायकाय नमः
- ३६. ॐ द्वितुण्डविनायकाय नमः
- ३७. ॐ ज्येष्ठविनायकाय नमः
- ३८. ॐ गजविनायकाय नमः
- ३९. ॐ कालविन।यकाय नमः

४०. ॐ निगशिवनायकाय नमः अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल । भक्त्या समर्पयेतुभ्यं पंचमावरणार्चनम् ॥

#### षष्ठावरणम्

४१. ॐ मणिकर्णविनायकाय नमः

४२. ॐ आशाविनायकाय नमः

४३. ॐ सृष्टिविनायकाय नमः

४४. ॐ यक्षविनायकाय नमः

४५. ॐ गजकर्णविनायकाय नमः

४६. ॐ चिप्रघण्टविनायकाय नमः

४७. ॐ स्थूलजङ्घविनायकाय नमः

४८. ॐ मङ्गल विनायकाय नमः

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल । भक्त्या समर्पयेतुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥

#### सप्तमावरणम्

४९. ॐ मोदविनायकाय नमः

५०. ॐ प्रमोदिवनायकाय नमः

५१. ॐ सुमुखविनायकाय नमः

५२. ॐ दुर्मुखविनायकाय नमः

५३. ॐ गणनाथविनायकाय नमः

५४. ॐ ज्ञानविनायकाय नमः

५५. ॐ द्वारविनायकाय नमः

५६. ॐ अविमुक्तविनायकाय नमः

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल । भक्त्या समर्पयेतुभ्यं समस्तावरणार्चनम् ॥

षट्पञ्चाशद् विनायकेभ्यो नमः सकलपूजार्थे। गन्धाद्युपचारान् समर्पयामि। षट्पञ्चाशतद्देवाः प्रीयन्तां न मम।

# दुर्गाङ्गवरणपूजनम्

वामहस्ते पुष्पं गृहीत्वा दक्षिणेनार्चयेत्-

- १. ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि
- २. ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ पूजयामि
- ३. ॐ मङ्गलायै नमः जानुद्वयं पूजयामि
- ४. ॐ कात्यायन्यै नमः हृदयं पूजयामि
- ५. ॐ भद्रकाल्यै नमः कटिं पूजयामि
- ६. ॐ कमलवासिन्यै नमः नाभिं पूजयामि
- ७. ॐ शिवायै नमः उदरं पूजयामि
- ८. ॐ क्षमायै नमः हृदयं पूजयामि
- ९. ॐ कौमार्ये नमः स्तनौ पूजयामि
- १०. ॐ उमायै नमः हस्तौ पूजयामि
- ११. ॐ महागौर्ये नमः दक्षिणबाहुं पूजयामि
- १२. ॐ वैष्णव्ये नमः वामबाहुं पूजयामि
- १३. ॐ रमायै नमः स्कन्धौ पूजयामि
- १४. ॐ स्कन्दमात्रे नमः कण्ठं पूजयामि
- १५. ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि
- १६. ॐ सिंहवाहिन्यै नमः मुखं पूजयामि
- १७. ॐ माहेश्वर्ये नमः शिरः पूजयामि
- १८. ॐ कात्यायन्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि

#### आवरण पूजा

प्रथमावरणम्

वामेन तत्त्वमुद्रया तर्पणम् । दक्षिणेन ज्ञानुमुद्रया पूजनम् । प्रार्थना

संचिन्मयपरे देवि! परामृतचरुप्रिये। अनुज्ञा देहि मे मातः! परिवारार्चनायते।। यथा दक्षिणेनाऽक्षत— पुष्पादिना पूजयामीति सम्पूज्य वामकुरधृतार्द्रखण्डेन विशेषार्घ्यजलैस्तर्पयाम्येवं सर्वत्र। हीं ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै-सशक्तिकायै श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासस्वती— श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकाल्यै नमः श्रीमहाकाली शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहालक्ष्म्यै नमः श्रीमहालक्ष्मी शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

हीं ऐं हीं क्लीं श्री चामुण्डायै विच्चै साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै महासरस्वत्यै नमः श्रीमहासरस्वतीं शक्ति—श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

बिन्दोः परितो गुरुचतुष्टयं पूजयेत्

हीं गुरवे नमः गुरुशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
हीं परमगुरवे नमः परमगुरुशक्ति, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
हीं परात्परगुरुवे नमः परात्पर गुरुशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
हीं परमेछिगुरवे नमः परमेछिगुरुशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
घडङ्ग पूजयेत्-हीं ऐं हृदयाय नमः हृदयशक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
हीं शिरसे स्वाहा शिरः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
हीं क्लीं शिखाये वषट् शिखाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
हीं वामुण्डाये कवचाय हुँ कवचशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
हीं विच्चेनेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
मूलेन अस्त्राय फट्, अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
प्रथमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धं पुष्पं समर्पयामि।
सामान्यार्ध्यजलमादाय — एताः प्रथमावरण देवताः साङ्गाः।

सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सुपूजितास्तर्पिताः सन्तु। पुष्पाञ्जलिमादाय

अभिष्ट सिद्धिं में देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरर्णर्चनम्।।

पुष्पाञ्चितं दत्वा। अनेन प्रथमावरणदेवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गादेवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् । द्वितीयावरणम्

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन पूजयेत्-

हीं सावित्र्या सह विधात्रे नमः विधातृशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं श्रिया सह विध्यावे नमः विध्युशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं उमये सह शिवाय नमः शिवशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्षुं सिंहाय नमः, सिंह शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं हुं महिषाय नमः, महिषशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्षुं सिंहाय नमः, सिंह शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं हुं महिषाय नमः, सिंह शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं हुं महिषाय नमः, महिष शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः गन्थं पुष्पं च समर्पयामि। सामान्यार्घजलमादाय एताः द्वितीयावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिता सन्तु पुष्पाञ्जलिमादाय।

> अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन द्वितीयावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गदिवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् । इति द्वितीयावरणम्। । तृतीयावरणम्

षट्कोणेऽग्नीशासुरवायव्ये मध्ये दिक्षु च पूजयेत् -हीं ऐं नन्दजायै नमः, नन्दजाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं रक्तदिनकायै नमः, रक्तदिनका-शक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्लीं शाकम्भर्ये नमः, शाकम्बरी शक्ति-श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं दुं दुर्गाये नमः दुर्गाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं हुं भीमाये नमः भीमाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं भ्रामर्ये नमः भ्रामरीशक्ति - श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

तृतीयावरण - देवताभ्यो नमः, गन्धं पुष्पं समर्पयामि। सामान्यार्घजलमादाय एतास्तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिता सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय— अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन तृतीयावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् । इति तृतीयावरणम्। चतुर्थावरणम्

ततोऽष्टपत्रे स्वाग्रादिप्रादिकष्येन पूजयेत्—

हीं ऐं आं ब्राह्मयै नमः ब्राह्मीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं माहेश्वर्ये नमः माहेश्वरी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्लीं कौमार्ये नमः कौमारी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं लं वाराह्मै नमः वाराहीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं लं ऐन्द्रयै नमः नारसिंहीशक्ति - श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं लं ऐन्द्रयै नमः, ऐन्द्रीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं स्त्र्यै चामुण्डायै नमः चामुण्डाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। मध्ये हीं लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।

चतुर्थावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि। सामान्यार्घजलमादाय - एताश्चतुर्थारणदेवताः साङ्गा सपरिवाराः सायुधा सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिता सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय-

सं.पू.य.वि. १०

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्चिलं दत्वा । अनेन चतुर्थावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुगदिवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् । इति चतुर्थावरणमपम्। पञ्चमावरणम्

ततश्चतुर्विंशतिदले स्वाग्रादिप्रादिक्षण्येन-

हीं विं विष्णुमायायै नमः, विष्णुमायाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं चें चेतनायै नमः चेतनाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं बुं बुद्धयै नमः बुद्धि शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं निं निद्राये नमः निद्रा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्षुं क्षुघायै नमः क्षुघा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं छां छायायै नमः छायाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं शं शक्तयै नमः शक्तिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं तृं तृष्णायै नमः तृष्णाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं क्षां क्षान्त्यै नमः क्षान्तिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं जां जात्यै नमः जातिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं लं लज्जायै नमः लज्जाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं शां शान्त्यै नमः शान्तिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं श्रं श्रद्धायै नमः श्रद्धाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं कां कान्त्यै नमः कान्तिशक्ति श्री पादुकां पूज्यामि तर्पयामि। हीं लं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं धृं धृत्यै नमः धृतिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं वृं वृत्यै नमः वृत्तिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं श्रुं श्रुत्यै नमः श्रुंतिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं स्मृं स्मृत्यै नमः स्मृतिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं दं दयायै नमः दयाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि

हीं तुं तुष्टयै नमः तुष्टिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं पुं पुष्टयै नमः पुष्टिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं मां मातृभ्यो नमः मातृशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । हीं भ्रां भ्रान्त्यै नमः भ्रान्तिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

पञ्चमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि। सामान्यार्घजलमादाय-एताः पञ्चमावरणदेवताः साङ्गा सपरिवाराः सायुधा सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिता सन्तु। पुष्पाञ्जलिमादाय-

> अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन पञ्चमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गादेवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् । इति पञ्चमावरणमपम् । षष्ठावरणम्

भूपुरे कोणचतुष्टये आग्नेयादिकोणमारभ्य -

हीं गं गणपतये नमः गणपितशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्षं क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं वं बटुकाय नमः बटुकशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं यां योगिन्ये नमः योगिनीशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

षष्ठावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि । सामान्यार्घजलमादाय- एताः षष्ठावरणदेवताः साङ्गा सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिता सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय-

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन षष्ठावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गादेवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् । इति षष्ठावरणम्। सप्तमावरणम

हीं लं इन्द्राय नमः इन्द्रशक्ति श्री पादुकां पूजयामि पूर्वादिदशदिक्षु-तर्पयामि। हीं रं अग्नये नमः अग्निशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं यं यमाय नमः यमशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋतिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं वं वरुणाय नमः वरुणशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं यं वायवे नमः वायुशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं सं सोमाय नमः सोमशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं हं ईशानाय नमः ईशानशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं ब्रं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं अं अनन्ताय नमः अनन्तशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सप्तमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि । सामान्यार्घजलमादाय - एताः सप्तमावरणदेवताः साङ्गा सपरिवाराः सायुधा सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिता सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय-

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन सन्तमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गादेवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् । इति सप्तमावरणमपम्। अष्टमावरणम्

तद्बहिः पूर्वीदिदिक्षु -

हीं वं वन्नाय नमः वन्नशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं शं शक्तये नमः शक्तिशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं दं दण्डाय नमः दण्डशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं खं खड्गाय नमः खड्गशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं पां पाशाय नमः पाशशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं अं अङ्कु शाय नमः अंङ्कु शशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं गं गदायै नमः गदाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं गं गदायै नमः गदाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

हीं त्रिंत्रिशूलाय नमः त्रिशूलशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं पं पद्माय नमः पद्माशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं चं चक्राय नमः चक्रशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अष्टमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि । सामान्यार्घजलमादाय - एताः अष्टमावरणदेवताः साङ्गा सपरिवाराः सायुधा सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिता सन्तु। पुष्पाञ्जलिमादाय-

> अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्।।

पुष्पञ्जिलिं दत्वा । अनेन अष्टमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गादेवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् । इति अष्टमावरणम्। नवमावरणम्

कलशात् पूर्वादिदिक्षु---

हीं वज्रहस्तायै गजारुढायै कादम्बरी देव्यै नमः कादम्बरी देवीशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

शक्तिहस्तायै शववाहनायै उल्कादेव्यै नमः उल्कादेवीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

दण्डहस्तायै महिषारूढायै करालीदेव्यै नमः करालीदेवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै नमः रक्ताक्षीदेवीशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

पाशहस्तायै मकर वाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै नमः श्वेताक्षीदेवीशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अङ्कुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षी देव्यै नमः हरिताक्षीदेवीशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

गदाहस्तायै सिंहारुढायै यक्षिणीदेव्यै नमः यक्षिणी देवीशक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि । शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः कालीदेवीशक्ति

श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमः सुरज्येष्ठादेवीशक्ति

श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः सर्पराज्ञी देवी -

शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

नवमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि ।

सामान्यार्घजलमादाय - एताः नवमावरणदेवताः साङ्गा

सपरिवाराः सायुधा सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिता सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय-

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन नवमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गदिवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् । इति नवमावरणम्।

॥ इति आवरणपूजनम् ॥

# अथ रूद्राङ्ग पूजनम्

- १. ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि ।
- २. ॐ शङ्क राय नमः जङ्घे पूजयामि ।
- ३. ॐ शिवाय नमः जानुनी पूजयामि ।
- ४. ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि ।
- ५. ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि ।
- ६. ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि ।
- ७. ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि ।
- ८. ॐ सर्वतोमुखाय नमः नेत्रयोः पूजयामि ।
- ९. ॐ नागभूषणाय नमः शिरसि पूजयामि ।
- १०. ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ।
- ११. ॐ विश्वतश्रक्षुरुत-पाद, नाभि, वक्षस्थल, शिरांसि आलभेत्।

# अथएकादशरुद्र पूजनम्

१. ॐ अघोराय नमः २. ॐ पशुपतये नमः

३. ॐ शिवाय नमः ४. ॐ विरुपाय नमः

५. ॐ विश्वरुपाय नमः ६. ॐ भैरवाय नमः

७. ॐ त्र्यम्बकाय नमः ८.ॐ शूलपाणये नमः

९. ॐ कपर्दिने नमः १०. ॐ ईशानाय नमः

११.ॐ महेशाय नमः

एकादश रुद्रेभ्यो नमः सकलोपचारार्थेगन्धाद्युपचारान् समर्पयामि । अथ्रएकादशशक्तिपूजनम्

१. ॐ भगवत्यै नमः। २. ॐ उमादेव्यै नम:।

३. ॐ शङ्कर प्रियायै नमः। ४. ॐ पार्वत्यै नमः।

५. ॐ गौर्ये नमः। ६. ॐ कालिन्द्यैः नमः।

७. ॐ काटिव्यै नमः। ८.ॐ विश्वधारिण्यै नमः।

९. ॐ विश्वेश्वर्ये नमः।

१०. ॐ विश्वमात्रे नम:।

११.ॐ शिवायै नमः।

ॐ एकादशशक्ति देवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाद्युपचारान् समर्पयामि।

## अथ अष्टमूर्त्तिपूजनम्

🕉 शर्वाय क्षिति मूर्तये नमः।

ॐ भवाय जल मूर्तये नमः।

३. ॐ रुद्राय अग्नि मूर्तये नमः।

ॐ उग्राय वायु मूर्तये नमः।

🕉 भीमाय आकाश मूर्तये नमः।

ॐ पशुपतये यज्ञ मूर्तये नमः।

ॐ महादेवाय सोम मूर्तये नमः।

🕉 अष्टमूर्तिभ्यो नमः। सकलोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

### अथ अष्टमूर्तितर्पणम्

- १. ॐ भं देवं तर्पयामि।
- २. ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।
- ३. ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
- ४. ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि।
- ५. ॐ शर्वंदेवं तर्पयामि।
- ६. ॐ रुद्रदेवं तर्पयामि।
- ७. ॐ भीमंदेवं तर्पयामि।
- ८. ॐ महान्तदेवं तर्पयामि।
- ९. ॐ भवस्यदेवस्य पत्नीं तर्पयामि।
- १०.ॐ सर्वस्यदेवस्य पत्नीं तर्पयामि।
- ११.ॐ ईशानस्यदेवस्य पत्नीं तर्पयामि।
- १२.ॐ पशुपतेः देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
- १३.ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
- १४.ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
- १५.ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।

अथपञ्चवक्त्र पूजनम्

१. ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि०

पश्चिमवक्राय नमः सर्वोपचारार्थेगन्धाक्षतं पुष्पा बिल्वपत्राणि समर्पयामि ।

२. ॐ अघोरेभ्योथो०

ॐ दक्षिणवक्राय नमः सर्वोपचारार्थेगन्धाक्षत पुष्प विल्वपत्राणि समर्पयामि ।

३. ॐ तत्पुरुषाय विहाहे०

ॐ पूर्ववक्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्प बिल्वपत्राणि समर्पयामि ।

### ४. ॐ ईशान: सर्व विद्याना०

ऊँ ऊर्ध्वक्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्प बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

ॐ नमो भगवते रुद्राय गन्धादिभिः सम्पूज्य।

# अथावरणपूजनम्

#### प्रथमावरणम्

प्राच्याम् - ॐ सद्योजाताय नमः । दक्षिणस्याम् - ॐ वामदेवाय नमः । प्रतीच्याम् - ॐ तत्पुरुषाय नमः । उदीच्याम् - ॐ तत्पुरुषाय नमः । मध्ये - ॐ ईशानाय नमः ।

तद्वहिः पूर्वादिक्रमेण —

१. ॐ नन्दिने नमः। २. ॐ महाकालाय नमः।

३. ॐ गणेशाय नमः। ४. ॐ वृषभाय नमः।

५. ॐ भृङ्गिणे नमः। ६. ॐ स्कन्दाय नमः।

७. ॐ उमायै नमः। ८. ॐ चण्डेश्वराय नमः।

ॐ गन्धाक्षतपुष्प बिल्वपत्राणि समर्पयामि प्रथमावरणार्चन देवताभ्यो नमः। प्रार्थयेत् –

> ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

हस्ते जलं गृहीत्वा - प्रथमावरणार्चन देवाः प्रीयन्तां न मम । द्वितीयावरणम्

१. ॐ अन्ताय नमः। २. ॐ सूक्ष्माय नमः।

३. ॐ शिवाय नमः। ४. ॐ एकपदे नमः।

५. ॐ एकरुद्राय नमः। ६. ॐ त्रिमूर्त्तये नमः।

७. ॐ श्रीकण्ठाय नमः। ८. ॐ वामदेवाय नमः।

९. ॐ ज्येष्ठाय नमः। १०. ॐ श्रेष्ठाय नमः।

११. ॐ रुद्राय नमः। १२. ॐ कालाय नमः।

१३. ॐ कलविकरणाय नमः। १४. ॐ बलविकरणाय नमः।

१५. ॐ बलाय नमः। १६. ॐ बलप्रमथनाय नमः।

ॐ गन्धाक्षतपुष्प बिल्वपत्राणि समर्पयामि द्वितीयावरणार्चन देवताभ्यो नमः। प्रार्थयेत् –

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

हस्ते जलं गृहीत्वा – द्वितीयाावरणार्चनदेवाः प्रीयन्तां न मम् । तृतीयावरणम्

१. ॐ अणिमायै नमः। २. ॐ महिमायै नमः।

३. ॐ लिघमायै नमः। ४. ॐ गरिमायै नमः।

५. ॐ प्राप्यै नमः। ६. ॐ प्राकाम्यै नमः।

७. ॐ ईिशात्वायै नमः। ८. ॐ विशत्वायै नमः।

९. ॐ ब्राह्मयै नमः। १०. ॐ माहेश्वर्यै नमः।

११. ॐ कौमार्थे नमः। १२. ॐ वैष्णव्ये नमः।

१३. ॐ वाराह्यै नमः। १४. ॐ माहेन्द्रयै नमः।

१५. ॐ चामुण्डायै नमः। १६. ॐ चण्डिकायै नमः।

१७. ॐ असिताङ्ग भैरवाय नमः। १८. ॐ रुरुभैरवाय नमः।

१९. ॐ चण्डभैरवाय नमः। २०. ॐ क्रोधभैरवाय नमः।

२१. ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः। २२. ॐ कालभैरवाय नमः।

२३. ॐ भीषणभैरवाय नमः। २४. ॐ संहारभैरवाय नमः।

ॐ गन्धाक्षतपुष्पबिल्वपत्राणि समर्पयामि तृतीयावरणार्चन देवताभ्यो नमः। प्रार्थयेत् –

ॐ दयाङ्ये ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।। हस्ते जलं गृहीत्वा – तृतीयावरणार्चन देवाः प्रीयन्तां न मम।

# चतुर्थावरणम्

ॐ भवाय नमः।

२. ॐ शर्वाय नमः।

ॐ ईशानाय नमः।

४. ॐ पशुपतये नमः।

५. ॐ रुद्राय नमः।

६. ॐ उग्राय नमः।

७. ॐ भीमाय नमः।

८. ॐ महते नमः।

९. ॐ अनन्ताय नमः। १०. ॐ वासुकये नमः।

११. ॐ तच्क्षकाय नमः। १२. ॐ कुलीरकाय नमः।

१३. ॐ कर्कोटकाय नमः। १४. ॐ शङ्खपालाय नमः।

१५. ॐ कम्बलाय नमः। १६. ॐ अश्वत्तराय नमः।

१७. ॐ वैन्याय नमः। १८. ॐ पृथवे नमः।

१९. ॐ हैहयाय नमः। २०. ॐ अर्जुनाय नमः।

२१. ॐ शाकुन्तलेयाय नमः। २२. ॐ भरताय नमः।

२३. ॐ नलाय नमः। २४. ॐ रामाय नमः।

२५. ॐ हिमवते नमः। २६. ॐ निपधाय नमः।

२७. ॐ विन्ध्याय नमः। २८. ॐ माल्यवते नमः।

२९. ॐ पारिजाय नमः। ३०. ॐ मलयाय नमः।

३१. ॐ हेमकूटाय नमः। ३२. ॐ गन्धमादनाय नमः।

ॐ गन्धाक्षतपुष्प बिल्वपत्राणि समर्पयामि चतुर्थावरणार्चन देवताभ्यो नमः। प्रार्थयेत् -

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।। हस्ते जलं गृहीत्वा - चतुर्थावरणार्चन देवाः प्रीयन्तां न मम् ।

### समस्तावरणम्

१. ॐ इन्द्राय नमः।

२. ॐ अग्नये नमः।

३. ॐ यमाय नमः।

४. ॐ निर्ऋतये नमः। ६. ॐ वायवे नमः।

५. ॐ वरुणाय नमः।

७. ॐ कुबेराय नमः। ८. ॐ ईशानाय नमः।

7 0 0	
९. ॐ शच्यै नमः।	१०. ॐ स्वाहायै नमः।
११. ॐ वाराह्ये नमः।	१२. ॐ खङ्गिन्यै नमः।
१३. 🕉 वारुण्यै नमः। 🦠	१४. ॐ वायव्यै नमः।
१५. ॐ कौबेर्य्ये नम:।	१६. ॐ ईशान्यै नम:।
१७. ॐ वज्राय नमः।	१८. ॐ शक्तये नमः।
१९. ॐ दण्डाय नम:।	२०. ॐ खड्गाय नमः।
२१. ॐ पाशाय नमः।	२२. ॐ अङ्कु शाय नम:।
२३. ॐ गदायै नमः।	२४. ॐ त्रिशूलाय नम:।
२५. ॐ ऐरावताय नमः।	२६. ॐ मेषाय नमः।
२७. ॐ महिपाय नमः।	२८. ॐ प्रेताय नमः।
२९. ॐ मकराय नमः।	३०. ॐ मृगाय नम:।
३१. ॐ नराय नम:।	३२. ॐ वृषभाय नमः।
३३. ॐ ऐरावताय नमः।	३४. ॐ पुण्डरीकाय नमः।
३५. ॐ वामनाय नम:।	३६. ॐ कुमुदाय नमः।
३७. ॐ अञ्चनाय नमः।	३८. ॐ पुष्पदन्ताय नमः।
३९. ॐ सार्वभौमाय नमः।	४०. ॐ सुप्रतीकाय नमः।
	ाणि समर्पयामि समस्तावरणार्चन

देवताभ्यो नमः। प्रार्थयेत् -

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पानमां शरणागतम्। भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम्।। हस्ते जलं गृहीत्वा - समस्तावरणार्चन देवाः प्रीयन्तां न मम । अथविष्णोः अङ्गपूजनम् –

दामोदराय नमः पादौ पूजयामि तर्पयामि। Š माधवाय नमः जानुनी पूजवामि तयेयामि। ॐ कामपतये नमः गुह्यं पूजयामि तर्पयामि। ॐ वामनाय नमः कटिं पूजयामि तर्पयामि। άE पद्मनाभाय नमः नाभिं पूजयामि तर्पयामि।

ॐ विश्वमूर्तये नमः उदरं पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ज्ञानगम्याय नमः हृदयं पूजयामि तर्पयामि।
ॐ श्री कण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि तर्पयामि।
ॐ सहस्त्र बाहवे नमः बाहुं पूजयामि तर्पयामि।
ॐ योगिने नमः नेत्रे पूजयामि तर्पयामि।
ॐ उग्राय नमः ललाटं पूजयामि तर्पयामि।
ॐ नागसुरेश्वराय नमः नासिकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ श्रवणेशाय नमः श्रोत्रे पूजयामि तर्पयामि।
ॐ सर्वकार्म प्रदाय नमः शिखां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ सहस्त्रशीर्ष्णे नमः शिखां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ सर्वस्वरूपिणे नमः सर्वाङ्गं पूजयामि तर्पयामि।
ॐ सर्वस्वरूपिणे नमः सर्वाङ्गं पूजयामि तर्पयामि।

# आवरणपूजनम्

#### प्रथमावरणम्

१. ॐ हृदयाय नमः। २. ॐ शिरसे स्वाहा।

३. ॐ शिखायै वषट्। ४. ॐ कवचाय हुम्।

५. ॐ नेत्रत्रयाय वौषट । ६. ॐ अस्त्राय फट्।

७. ॐ वासुदेवाय नमः। ८. ॐ प्रद्युम्ननाय नमः।

९. ॐ सङ्कर्षणाय नमः। १०. ॐ अनिरुद्धाय नमः।

११. ॐ शाङ्गाय नमः। १२. ॐ चक्राय नमः।

१३. ॐ गदायै नमः। १४. ॐ पद्माय नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

### द्वितीयावरणम्

१. ॐ कौस्तुभाय नमः। २. ॐ खङ्गाय नमः।

३. ॐ मुशलाय नमः। ४. ॐ वनमालायै नमः।

 4. 3歩 ध्वजाय नमः।
 6. 3歩 गरुडाय नमः।

 9. 3歩 शङ्खिनधये नमः।
 2. 3歩 पद्मिवये नमः।

 8. 3歩 पद्मिवये नमः।
 2. 3歩 आचार्याय नमः।

 8. 3歩 गणपतये नमः।
 2. 3歩 विश्वक्सेनाय नमः।

 8. 3歩 विश्वक्सेनाय नमः।
 2. 3歩 विश्वक्सेनाय नमः।

 8. 3歩 अग्रये नमः।
 2. 3歩 वरुणाय नमः।

 8. 3歩 वरुणाय नमः।
 3歩 वरुणाय नमः।

 8. 3歩 वरुणाय नमः।
 2. 3歩 वरुणाय नमः।

२१. ॐ अनन्ताय नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

## **तृतीयावरणम्**

 १. ॐ वज्राय नमः।
 २. ॐ शक्तये नमः।

 ३. ॐ दण्डाय नमः।
 ४. ॐ खङ्गाय नमः।

 ५. ॐ पाशाय नमः।
 ६. ॐ अङ्कुशाय नमः।

 ७. ॐ ध्वजाय नमः।
 ८. ॐ शूलाय नमः।

 १. ॐ पद्माय नमः।
 १०. ॐ चक्राय नमः।

 ११. ॐ अर्जुनाय नमः।
 १२. ॐ प्रह्लादाय नमः।

 १३. ॐ नारदाय नमः।
 १४. ॐ पुण्डरीकाय नमः।

 १५. ॐ पराशराय नमः।
 १६. ॐ व्यासाय नमः।

 १७. ॐ शुकाय नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

# चतुर्थावरणम्

 १. ॐ अम्बरीषाय नमः।
 २. ॐ विशष्टाय नमः।

 ३. ॐ दालभ्याय नमः।
 ४. ॐ शौनकाय नमः।

 ५. ॐ बलये नमः।
 ६. ॐ बिभीषणाय नमः।

७. ॐ भीष्माय नमः। ८. ॐ रुक्माङ्गदाय नमः।

९. ॐ मार्कण्डेयाय नमः। १०. ॐ भृगवे नमः।

११. ॐ सनकाय नमः। १२. ॐ सनन्दनाय नमः।

१३. ॐ वासुदेवाय नमः। १४. ॐ शुक्राय नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

#### पंचमावरणम्

१. ॐ स्वगुरुभ्यो नमः। २. ॐ परमगुरुभ्यो नमः।

३. ॐ परापरगुरुभ्यो नमः। ४. ॐ असिताङ्गाय नमः।

५. ॐ हंसकेतवे नमः। ६. ॐ वंशपाणये नमः।

७. ॐ केशवाय नमः। ८. ॐ माधवाय नमः।

९. ॐ कृष्णाय नमः। १०. ॐ गोविन्दाय नमः।

११. ॐ मधुसूदनाय नमः। १२. ॐ गङ्गाधराय नमः।

१३. ॐ शंखधराय नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम् ॥

#### षष्ठमावरणम्

१. ॐ चक्रपाणिने नमः। २. ॐ चतुर्भुजाय नमः।

३. ॐ पद्मायुधाय नमः। ४. ॐ कैटभारिणे नमः।

५. ॐ घोरदंष्ट्राय नमः। ६. ॐ जनार्दनाय नमः।

७. ॐ वैकुण्ठाय नमः। ८. ॐ वामनाय नमः।

९. ॐ गरुडध्वजाय नमः। १०. ॐ संहाराय नमः।

११. ॐ रूरुकाय नमः। १२. ॐ चण्डाय नमः।

१३. ॐ भूतेशाय नमः। १४. ॐ कालभैरवाय नमः।

१५. ॐ कपालाय नमः। १६. ॐ भीषणाय नमः।

१७. ॐ रमेशाय नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम् ॥

### सप्तमावरणम्

- १. ॐ लक्ष्मी विष्णवे नमः।
- २. ॐ लक्ष्मी वासुदेवाय नमः।
- ३. ॐ लक्ष्मी दामोदराय नम:।
- ४. ॐ लक्ष्मी नृसिंहाय नम:।
- ५. ॐ लक्ष्मी महादेव्यै नमः।
- ६. ॐ लक्ष्मी सङ्कर्षणाय नमः।
- ७. ॐ लक्ष्मी त्रिविक्रमाय नमः।
- ८. ॐ लक्ष्मी विश्वसेनाय नमः।
  ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्।
  भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥

#### समस्तावरणम्

- १. ॐ गङ्गायै नमः। २. ॐ यमुनायै नमः।
- ३. ॐ सरस्वत्यै नमः। ४. ॐ लक्ष्मीनारायणाय नमः।
- ५. ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ६. ॐ राज्यलक्ष्म्यै नमः।
- ७. ॐ सिन्दलक्ष्म्यै नमः। ८. ॐ शंखाय नमः।
- ९. ॐ चक्राय नमः। १०. ॐ गदायै नमः।

#### ११. ॐ पद्मायै नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्धं समस्तावरणार्चनम् ॥ ॥ इति आवरण पूजनम् ॥

# लक्ष्म्याङ्गवरणपूजनम्

- १. ॐ चंचलायै नमः पादौ पूजयामि तर्पयामि ।
- २. ॐ चपलायै नमः गुल्फौ पूजयामि तर्पयामि ।
- ३. ॐ कान्त्यै नमः जानुनीं पूजयामि तर्पयामि ।
- ४. ॐ मङ्गलायै नमः जङ्घे पूजयामि तर्पयामि ।
- ५. ॐ भद्रकाल्यै नमः उरुं पूजयामि तर्पयामि ।
- ६. ॐ कमलिन्यै नमः कटिं पूजयामि तर्पयामि ।
- ७. ॐ शिवायै नमः नाभिं पूजयामि तर्पयामि ।
- ८. ॐ क्षमायै नमः उदरं पूजयामि तर्पयामि ।
- ९. ॐ गौर्ये नमः हृदयं पूजयामि तर्पयामि ।
- १०. ॐ सिंहवाहिन्यै नमः स्तनद्वयं पूजयामि तर्पयामि ।
- ११. ॐ स्कन्दमात्रे नमः भुजद्वयं पूजयामि तर्पयामि ।
- १२. ॐ कम्बुकण्ठायै नमः कण्डं पूजयामि तर्पयामि ।
- १३. ॐ सरस्वत्यै नमः मुखं पूजयामि तर्पयामि ।
- १४. ॐ सुवासिन्यै नमः नासिकां पूजयामि तर्पयामि ।
- १५. ॐ स्वर्णकुण्डलायै नमः कर्णद्वयं पूजयामि तर्पयामि ।
- १६. ॐ चण्डायै नमः नेत्रद्वयं पूजयामि तर्पयामि ।
- १७. ॐ शिवायै नमः ललाटं पूजयामि तर्पयामि ।
- १८. ॐ कुमार्ये नमः शिरः पूजयामि तर्पयामि ।
- १९. ॐ सर्वस्वरुपिण्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि तर्पयामि । कमलपुष्येण देव्युपरि अष्टोत्तरशतम् लक्ष्मीनाममन्त्रैरर्चयेत् —

ॐ प्रकृत्यै नमः

ॐ विकृत्यै नमः

३. ॐ विद्यायै नमः

४. ॐ सर्वभूतिहत प्रदायै नमः ३२. ॐ आघायै नमः

ॐ श्रद्धायै नम:

ॐ विभूत्यै नम:

ॐ सुरभ्यै नमः

ॐ परमात्मिकायै नमः

९. ॐ वाचे नम:

१०. ॐ पद्मालयायै नमः

११. ॐ पद्मायै नम:

१२. ॐ शुच्यै नमः

१३. ॐ स्वाहायै नम:

१४. ॐ स्वधायै नम:

१५. ॐ सुधायै नमः

१६. ॐ धान्यायै नम:

१७. ॐ हिरण्मय्ये नमः

१८. ॐ लक्ष्म्यै नमः

१९. ॐ नित्यपुष्टायै नमः

२०. ॐ विभावये नमः

२१. ॐ आदित्यै नमः

२२. ॐ दित्यै नमः

२३. ॐ दीप्तायै नम:

२४. ॐ वसुधायै नम:

२५. ॐ वसुधारिणये नम:

२६. ॐ कमलायै नमः

२७. ॐ कान्तायै नमः

२८. ॐ कामाक्ष्यै नम:

२९. ॐ क्रोधसंभवायै नमः

३०. ॐ अनुग्रहप्रदायै नम:

३१. ॐ बुद्धयै नम:

३३. ॐ हरिवल्लभायै नमः

३४. ॐ अशोकायै नमः

३५. ॐ अमृतायै नमः

३६. ॐ दीप्तायै नमः

३७. ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः

३८. ॐ धर्मनिलयायै नमः

३९. ॐ करुणायै नमः

४०ं. ॐ लोकमात्रे नमः

४१. ॐ पद्ममुख्यै नम:

४२. ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः

४३. ॐ रमायै नम:

४४. ॐ पद्मनप्रियायै नमः

४५. ॐ पद्मनहस्तायै नमः

४६. ॐ पद्माक्षायै नम:

ॐ पद्मानसुन्दर्ये नमः 86.

४८. ॐ पद्मोद्भवायै नमः

४९. ॐ पद्मनमाला धरायै नमः

५०. ॐ देव्यै नम:

५१. ॐ पद्मिनन्यै नमः

५२. ॐ पद्मगन्धिन्यै नम.

५३. ॐ पुष्पगन्धायै नमः

५४. ॐ सुप्रसन्नायै नमः

५५. ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः

५६. ॐ प्रभायै नमः

५७. ॐ चन्द्रवदनायै नमः

५८. ॐ चन्द्रायै नमः

५९. ॐ चन्द्रसहोदर्य्यं नमः

६०. ॐ चतुर्भुजायै नमः

६१. ॐ चन्द्ररुपायै नमः

६२. ॐ इन्दिरायै नमः

६३. ॐ इन्दुशीतलायै नमः

६४. ॐ अह्नत्पादजनन्यै नमः

६५. ॐ पुष्ट्यै नम:

६६. ॐ शिवायै नमः

६७. ॐ शिवकर्ये नमः

६८. ॐ सत्यै नमः

६९. ॐ विमलायै नमः

७०. ॐ विश्वजनन्यै नमः

७१. ॐ दारिद्रनाशिन्यै नमः

७२. ॐ प्रीतिपुष्करायै नमः

७३. ॐ शान्तायै नमः

७४. ॐ शुक्लमाल्याम्बरायै नमः १०१. ॐ दारिद्रध्वंसिन्यै नमः

७५. ॐ श्रियै नमः

७६. ॐ भास्कर्ये नमः

७७. ॐ विम्बनिलयायै नमः

७८. ॐ परारोहायै नमः

७९. ॐ यशिश्वन्यै नमः

८०. ॐ उदाराङ्गायै नम:

८१. ॐ वसुन्धरायै नमः

८२. ॐ हरिण्ये नमः

८३. ॐ हेममालिन्यै नम:

८४. ॐ धनधान्यकर्ये नम:

८५. ॐ सिद्धयै नम:

८६. ॐ स्रेणसौम्यायै नम:

८७. ॐ शुभप्रदायै नम:

८८. ॐ नृपवेश्मगता नन्दायै नमः

८९. ॐ वरदलक्ष्म्यै नमः

९०. ॐ वसुप्रदायै नमः

९१. ॐ शुभायै नमः

९२. ॐ हिरण्य प्राकारायै नमः

९३. ॐ समुद्रतनायै नमः

९४. ॐ जयायै नमः

९५. ॐ मङ्गलायै नमः

९६. ॐ विष्णुवक्षस्थलस्थितायै नमः

९७. ॐ विष्णुपत्न्यै नमः

९८. ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः

९९. ॐ प्रसन्नाननायै नमः

१००. ॐ नारायण समाश्रितायै नमः

१०२. ॐ सर्वोपद्रववारिण्यै नमः

१०३. ॐ नवदुर्गीयै नमः

१०४. ॐ महाकाल्यै नम:

१०५. ॐ ब्रह्माविष्णुशिवात्मिकायै नमः

१०६. ॐ त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः

१०७, ॐ भुवनेश्वर्ये नमः

१०८. ॐ कार्यसाधिकायै नमः

॥ इति ॥

# अथ आवरण पूजनम्

हस्तेगन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि – बिन्दौ -प्रथमावरणम्

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ शङ्करनन्दनाय नमः। ॐ शङ्खिनिधये नमः। ॐ पुष्पाञ्जलिपुठाय नमः। ॐ पद्मानिधये नमः। ॐ पुष्पधन्विने नमः। ॐ दक्षिणपादप्रक्षालनोघतनायै नमः। ॐ जुद्वसुतायै नमः। ॐ वामपादप्रक्षलनोघतायै नमः। ॐ सूर्यसुतायै नमः। ॐ वरुणायै नमः।

> ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

## द्वितीयावरणम्

त्रिकोण – ॐ पद्मायै नमः। ॐ कमलायै नमः। ॐ इन्दिरायै नमः

> ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

# तृतीयावरणम्

ॐ हिरण्यमयै नमः। ॐ चन्द्रायै नमः। ॐ रजतस्त्रजायै नमः। ॐ हिरण्यस्त्रजायै नमः। ॐ हिरण्यपवर्णायै नमः।

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

# चतुर्थावरणम्

अष्टपत्रे – ॐ महाकन्यायै नमः। ॐ महादेव्यै नमः। ॐ भक्तानुग्रहकारिण्यै नमः। ॐ स्वप्रकाशात्मरुपिण्यै नमः। ॐ महामायायै नमः। ॐ माहेश्वर्ये नमः। ॐ वागीश्वर्ये नमः। ॐ जगब्दात्र्यै नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

#### पंचमावरणम्

दशदले - ॐ उमायै नमः। ॐ महाकाल्यै नमः। ॐ महासरस्वत्यै नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ महाशौर्ये नमः। ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ रमायै नमः। ॐ त्रिलोचनायै नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं पंचमावरणार्चनम् ॥

#### षष्ठमावरणम्

दशदले – ॐ भद्रकाल्ये नमः। ॐ त्रिलोकात्मिकाये नमः। ॐ क्रियालक्ष्म्ये नमः। ॐ लोकमार्ग प्रादिन्ये नमः। ॐ अरूपाये नमः। ॐ सरुपाये नमः। ॐ विश्वरुपिण्ये नमः। ॐ पञ्चभूतात्मिकाये नमः। ॐ देवमात्रे नमः। ॐ सुरेश्वर्ये नमः। ॐ दारिद्रध्वंसिन्ये नमः। ॐ सर्वशक्तये नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥

### सप्तमावरणम्

चतुर्दशदले - ॐ भैरव्ये नमः। ॐ विशालाक्ष्ये नमः। ॐ रिवमण्ये नमः। ॐ नारायण्ये नमः। ॐ मित्रविन्दाये नमः। ॐ पद्माक्ष्ये नमः। ॐ क्षेमकर्ये नमः। ॐ सत्याये नमः। ॐ कालिन्द्ये नमः। ॐ विजयाये नमः। ॐ कान्तिमत्ये नमः। ॐ रुपण्ये नमः। ॐ शारदाये नमः। ॐ वेण्ये नमः।

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।

#### अष्टमावरणम्

ॐ वलाकायै नमः। ॐ विमलायै नमः। ॐ वनमालिकायै नमः। ॐ विभीषिकायै नमः। ॐ शाङ्कार्ये नमः। ॐ वसुमालिकायै नमः। ॐ मुक्तयै नमः। ॐ सर्वशस्त्रधारिण्यै नमः। ॐ समुद्रवसनायै नमः। ऋ ह्याण्डमेखलायै नमः। ॐ अवस्थात्रयविमुक्तायै नमः। ॐ गुणत्रय विवार्जितायै नमः। योगध्यानैकसंन्यासिन्यै नमः। ॐ योगध्यानैकपरायणायै नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्।।

### नवमावरणम्

अष्टादशदले - ॐ आद्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः। ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः। ॐ काम लक्ष्म्यै नमः। ॐ सत्य लक्ष्म्यै नमः। ॐ भोग लक्ष्म्यै नमः। ॐ योग लक्ष्म्यै नमः। ॐ मुक्तिदात्रे नमः। ॐ ऋद्धयै नमः। ॐ समृद्धयै नमः। ॐ तुष्टयै नमः। ॐ पुष्टयै नमः। ॐ धनेश्वर्यै नमः। ॐ श्रद्धायै नमः। ॐ श्रोगिन्यै नमः। ॐ धान्यायै नमः। ॐ वेदत्रयविशोकायै नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं नवमावरणार्चनम्।।

### दशमावरणम्

द्वाविशंदले - ॐ वेदान्तज्ञानरुपिणयै नमः। ॐ नाग-यज्ञोपवीतिन्यै नमः। ॐ शैलपुत्र्यै नमः। ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः। ॐ चित्रघण्टायै नमः। ॐ कूष्माण्डायै नमः। ॐ स्कन्दमात्रे नमः। ॐ कात्यायन्यै नमः। ॐ कालरात्र्यै नमः। ॐ महागौर्यै नमः। ॐ सिद्धिदायै नमः। ॐ सर्वात्मिकायै नमः। ॐ विश्वप्रसूत्यै नमः। ॐ रसायै नमः। ॐ नवखण्डवत्यै नमः। ॐ क्षित्यै नमः। ॐ अनन्तायै नमः। ॐ धरायै नमः। ॐ सर्वसंहारायै नमः। ॐ कैवल्यदायै नमः।

> ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं दशमावरणार्चनम्।।

### एकादशावरणम्

विंशतिदले – ॐ वेदिकायै नमः। ॐ वेदरुपिण्यै नमः। ॐ सोम मण्डलमध्यस्थायै नमः। ॐ वायु मण्डलस्थायै नमः। ॐ विह्नमण्डलस्थायै नमः। ॐ वायु मण्डलस्थायै नमः। ॐ विह्नमण्डलस्थायै नमः। ॐ चिक्रकायै नमः। ॐ चिक्रमध्यसंस्थितायै नमः। ॐ चिक्रमार्ग प्रदायै नमः। ॐ सर्वद्धान्तमार्गप्रदायै नमः। ॐ षडवर्ग वर्जितायै नमः। ॐ प्रत्यक्षादिप्रवृतायै नमः। ॐ विद्यामूर्तायै नमः। ॐ त्रेलोक्य मोहिन्यै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ क्रक्लायै नमः। ॐ करुणायै नमः। ॐ करुणायै नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं एकादशावरणार्चनम्।।

#### द्वादशावरणम्

चतुर्विशतिदले - ॐ नित्यशुद्धायै नमः। ॐ नित्यैतृप्तायै नमः। ॐ निर्विकारायै नमः। ॐ निरिक्षणायै नमः। ॐ निराधारायै नमः। ॐ निरसङ्कल्पायै नमः। ॐ निराध्रयायै नमः। ॐ निर्विकल्पायै नमः। ॐ निर्वाणदायिन्यै नमः। ॐ निराणदायिन्यै नमः। ॐ निराणदायि नमः। ॐ निर्वाणदायिन्यै नमः। ॐ निराणदायि नमः।

नमः। ॐ नवात्मकायै नमः। ॐ नीत्यै नमः। ॐ निवृत्यै नमः। ॐ नृसिंह्यै नमः। ॐ निशितृप्तायै नमः। ॐ नित्योदितायै नमः। ॐ दयान्थे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं द्वादशावरणार्चनम्।।

### त्रयोदशावरणम्

ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ सामवेदाय नमः। ॐ अथर्ववेदाय नमः। ॐ छन्दोभ्यो नमः। ॐ ज्यौतिषाय नमः। ॐ निरुक्ताय नमः। ॐ शिक्षाय नमः। ॐ कल्पाय नमः। ॐ व्याकरणाय नमः। ॐ पुराणेभ्यो नमः। ॐ जम्बूद्वीपाय नमः। ॐ प्लक्षद्वीपाय नमः। ॐ क्रोञ्चद्वीपाय नमः। ॐ शाकद्वीपाय नमः। ॐ शाकद्वीपाय नमः। ॐ अमरावत्य नमः। ॐ भोगवत्य नमः। ॐ नयनवत्य नमः। ॐ सिद्धवत्य नमः। ॐ गान्धर्ववत्य नमः। ॐ लङ्कावत्य नमः। ॐ यशोवत्य नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं त्रयोदशावरणार्चनम्।।

# चतुर्दशावरणम्

अष्टाविंशतिदले -ॐ सूर्याय नमः। ॐ चन्द्रमसे नमः। ॐ भौमाय नमः। ॐ बुधाय नमः। ॐ गुरवे नमः। ॐ शुकाय नमः। ॐ शनये नमः। ॐ राहवे नमः। ॐ केतवे नमः। ॐ ईश्वराय नमः। ॐ उमायै नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ अद्थ्यो नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ प्रजापतये नमः। ॐ सर्वेथ्यो नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ गणपत्यादि सप्तलोक पालेभ्यो नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं चतुर्दशावरणार्चनम्।।

#### पञ्चदशावरणम्

त्रिंशत्दले - ॐ आश्वन्ये नमः। ॐ भरण्ये नमः। ॐ कृत्तिकाये नमः। ॐ रोहिण्ये नमः। ॐ मृगशिराये नमः। ॐ आद्राये नमः। ॐ पुनर्वसवे नमः। ॐ पुष्पाय नमः। ॐ श्लेषाय नमः। ॐ मघाये नमः। ॐ पूर्वाफाल्गुन्ये नमः। ॐ उत्तराफाल्गुन्ये नमः। ॐ हस्ताय नमः। ॐ चित्राये नमः। ॐ स्वात्ये नमः। ॐ विशाखाये नमः। ॐ अनुराधाये नमः। ॐ ज्येष्ठाये नमः। ॐ मूलाय नमः। ॐ पूर्वाषाढाभ्यो नमः। ॐ उत्तराषाढाभ्यो नमः। ॐ श्रवणाय नमः। ॐ धनिष्ठाये नमः। ॐ श्रतिभषाये नमः। ॐ पूर्वाभाद्रपदाय नमः। ॐ रेवत्ये नमः। ॐ सप्त ऋषिभ्यो नमः। ॐ भूरादिसप्तलोकेभ्यो नमः। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं पञ्चदशावरणार्चनम्।।

### षोडशावरणम्

द्वातिंशत्दले - ॐ मेषाय नमः। ॐ वृषाय नमः। ॐ कन्यायै नमः। ॐ कर्काय नमः। ॐ किन्यायै नमः। ॐ तुलायै नमः। ॐ वृश्चिकाय नमः। ॐ धनाय नमः। ॐ मकराय नमः। ॐ कुम्भाय नमः। ॐ मिनाय नमः। ॐ विष्कुम्भादि योगेभ्यो नमः। ॐ अनन्दाद्यष्टाविंशतियोगेभ्यो नमः। ॐ ववादि सप्त करणेभ्यो नमः। ॐ स्थिरादि सप्तकरणेभ्यो नमः। ॐ सप्तवासरेभ्यो नमः। ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ एकोनपञ्चाशन्मरुभ्यो नमः। ॐ षोडशमातृभ्यो नमः। ॐ षड्त्रहतुभ्यो नमः। ॐ द्वादशमारोभ्यो

नमः। ॐ द्वयनाभ्यां नमः। ॐ पञ्चादश तिथिभ्यो नमः। ॐ षष्ठीसंवत्सरेभ्यो नमः। ॐ सुपर्णेभ्यो नमः। ॐ यज्ञेभ्यो नमः। ॐ विद्याधरेभ्यो नमः। ॐ अप्सरेभ्यो नमः। ॐ रक्षोभ्यो नमः। ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं षोडशावरणार्चनम् ॥

#### समस्तावरणम्

पूर्वादिक्रमेणभगृहे – ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ व्रायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ व्याय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदाये नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ चक्राय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ ऐरावताय नमः। ॐ पुण्डरीकाय नमः। ॐ वायनाय नमः। ॐ कुमुदाय नमः। ॐ अञ्जनाय नमः। ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ सार्वभौमाय नमः। ॐ सुप्रतिकाय नमः। ॐ अणिम्ने नमः। ॐ लिघम्ने नमः। ॐ गिरम्ने नमः। ॐ मिहम्ने नमः। ॐ प्राप्त्ये नमः। ॐ प्राक्ताये नमः। ॐ ईशिताये नमः। ॐ विश्वताये नमः।

ॐ दयाब्धे ! त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् । भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं षोडशावरणार्चनम् ॥

समस्तावरणार्चनदेवेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थेगन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। जलंगृहीत्वा – समस्तावरणार्चनदेवाः प्रीयन्तां न मम ।

इति लक्ष्म्याङ्गावरण पूजनम्।

# हनुमदङ्गपूजनम्

# गन्धाक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा -

- १. ॐ हनुमते नमः पादौ पूजयामि।
- २. ॐ सुग्रीवाय नमः गुल्फौ पूजयामि।
- ३. ॐ अङ्गदमित्राय नमः जङ्घे पूजयामि।
- ४. ॐ रामदासाय नमः उरुं पूजयामि।
- ५. ॐ अक्षघ्नाय नमः कटिं पूजयामि।
- ६. ॐ लंकादहनाय नमः पुच्छं पूजयामि।
- ७. ॐ राममणिप्रदाय नमः नाभिं पूजयामि।
- ८. ॐ सागरोल्लङ्घाय नमः मध्यं पूजयामि।
- ९. ॐ लंकामर्दनाय नमः केशावलिं पूजयामि।
- १०. ॐ संजीवनी हर्त्रे नमः स्तनौ पूजयामि।
- ११. ॐ सौमित्रिप्राणदाय नमः वक्ष स्थलं पूजयामि।
- १२. ॐ कुण्ठित दशवदनाय नमः कण्ठं पूजयामि।
- १३. ॐ रामाभिषेककारिणे नमः हस्तौ पूजयामि।
- १४. ॐ मन्त्ररचितरामायणाय नमः वक्रं पूजयामि।
- १५. ॐ प्रसन्नवदनाय नमः बदन कपौलौ पूजयामि।
- १६. ॐ पिङ्गलनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि।
- १७. ॐ श्रुतिपारगाय नमः श्रुतिं पूजयामि।
- १८. ॐ उर्ध्वपुण्ड्रधारिणे नमः ललाटं पूजयामि।
- १९. ॐ मणिकण्ठमालिने नमः शिरः पूजयामि।
- २०. ॐ सर्वाभीष्ट प्रदाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

# पुनः गन्धाक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा —

- १. ॐ गोदावर्य्यं नमः पादौ पूजयामि।
- २. ॐ कृष्णायै नमः गुल्फौ पूजयामि।
- ३. ॐ ज्याभिपापहारिण्यै नमः जंघे पूजयामि।
- ४. ॐ सुश्रुवे नमः जानुनी पूजयामि।

- ५. ॐ अरूतरङ्गिण्यै नमः ऊरुं पूजयामि।
- ६. ॐ तडिदुज्ज्वलाभायै नमः कटिं पूजयामि।
- ७. ॐ अम्बुशोभिन्यै नमः नितम्बं पूजयामि।
- ८. ॐ अणुमध्यायै नमः मध्यं पूजयामि।
- ९. ॐ सुस्तनायै नमः स्तनौ पूजयामि।
- १०. ॐ कम्बुकण्ठायै नमः कण्ठं पूजयामि।
- ११. ॐ ललितावाहुतरङ्गायै नमः बाहुं पूजयामि।
- १२. ॐ दीर्घ वेण्यै नमः वेणीं पूजयामि।
- १३. ॐ सुवक्रायै नमः वक्रं पूजयामि।
- १४. ॐ दुर्वारवारिपूरायै नमः शिरः पूजयामि।
- १५. ॐ सहस्त्रमुखायै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

भूर्भुवः स्वः भगवते श्री रामोपेताय हनुमते सर्वोपचारार्थेगन्याक्षत पुष्पाणि समर्पयामि। पुनः हस्ते गन्धाक्षतपुष्पाणि तुलसीपत्राणि मेलियत्वा हस्तेगृहीत्वा-

## प्रथमावरणम्

आवरणं सम्पूज्य —

ॐ सविन्मय कपिशान परामृत चरुप्रिय। अनुज्ञां देहि देवेश! परिवारार्चनायमे।।

इत्यनुज्ञां प्रार्थ्य विन्दौ – श्री हनुमते नमः। केसरेषुहौं हृदयाय नमः। हस्फ्रें शिरसे स्वाहा। ख्रें शिखायै वषट्। हस्त्रौं कवचाय हुम्। हस्ख्रें नेत्रत्रयाय वौषट्। हस्तौं अस्त्राय फट्। पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा —

> अभीष्टसिद्धं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्यासमर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

ॐ भगवते श्री रामोपेताय हनुमते नमः प्रथमा वरणार्चनार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि तुलसी पत्राणि समर्पयामि। हस्ते जलं गृहीत्वा-अनेन प्रथमावरणार्चनेन श्री हनुमान् प्रीयतां न मम । नमस्करोमि। द्वितीयावरणम्

अथ द्वितीया वारणार्थं पुनः गन्धादीन् गृहीत्वा— पूर्वाद्यष्टदलेषु— श्री रामभक्ताय नमः। ॐ महातेजसे नमः। ॐ कपिराजाय नमः। ॐ महाबलाय नमः। ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः। ॐ मेरुपीठकार्चनकारकाय नमः। ॐ दक्षिणाभास्कराय नमः। ॐ सर्वविध्ननिवारकाय नमः।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा —

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्यासमर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

ॐ भगवते श्री रामोपेताय हनुमते नमः। द्वितीया वरणार्चनार्थे गन्धाक्षत समर्पयामि। जलं गृहीत्वा – कृतेन द्वितीयावरणार्चनेन श्री हनुमान् प्रीयतां न मम। नमस्करोमि। तृतीयावरणम्

पुनः गन्धादीन् गृहीत्वादलाग्रेषु – ॐ सुग्रीवाय नमः। ॐ अङ्गदाय नमः। ॐ नीलाय नमः। ॐ जाम्बवते नमः। ॐ नलाय नमः। ॐ सुपेणाय नमः। ॐ द्विविदाय नमः। ॐ मैन्दाय नमः। पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा —

अभीष्टसिद्धं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्यासमर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

ॐ भगवते श्री रामोपेताय हनुमते नमः। तृतीया वरणार्चनार्थे गन्धाक्षत समर्पयामि। जलं गृहीत्वा – कृतेन तृतीयावरणार्चनेन श्री हनुमान् प्रीयतां न मम। नमस्करोमि।

# चतुर्थावरणम्

पुनः गन्धादीन् गृहीत्वादलाग्रेषु – ॐ रक्षोघ्नाय नमः। ॐ विपघ्नाय नमः। ॐ व्याधिघ्नाय नमः। ॐ व्याधिघ्नाय नमः। ॐ घोरघ्नाय नमः। ॐ परशस्त्रास्त्रमन्त्रघ्नाय नमः। ॐ परशस्त्रास्त्रमन्त्रघ्नाय नमः। ॐ भयघ्नाय नमः।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा —

अभीष्टसिद्धं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्यासमर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥

ॐ भगवते श्री रामोपेताय हनुमते नमः। चतुर्था वरणार्चनार्थे गन्धाक्षत समर्पयामि। जलं गृहीत्वा – कृतेन चतुर्थावरणार्चनेन श्री हनुमान् प्रीयतां न मम। नमस्करोमि।

पंचमावरणम्

पुनः गन्धादीन् गृहीत्वादलाग्रेषु – ॐ ऐरावताय नमः। ॐ पुण्डरीकाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ कुमुदाय नमः। ॐ अञ्जनाय नमः। ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ सार्वभौमाय नमः। ॐ सुप्रतीकाय नमः।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा —

अभीष्टिसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्यासमर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ।।

ॐ भगवते श्री रामोपेताय हनुमते नमः। पंचमा वरणार्चनार्थे गन्धाक्षत समर्पयामि। जलं गृहीत्वा – कृतेन पंचमावरणार्चनेन श्री हनुमान् प्रीयतां न मम्। नमस्करोमि।

### षष्ठावरणम्

पुनः गन्धादीन् गृहीत्वादलाग्रेषु – ॐ लं इन्द्राय नमः। ॐ रं अग्रये नमः। ॐ मं यमाय नमः। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः। ॐ वं वरुणाय नमः। ॐ यं वायवे नमः। ॐ लं सं कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ हीं ब्रह्मणे नमः। ॐ अं अनन्ताय नमः। पुष्पाञ्जलि गृहीत्वा —

अभीष्टिसिन्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्यासमर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ।। ॐ भगवते श्री रामोपेताय हनुमते नमः। षष्ठाख्य वरणार्चनार्थे गन्धाक्षत समर्पयामि। जलं गृहीत्वा – कृतेन षष्ठाख्यवरणार्चनेन श्री हनुमान् प्रीयतां न मम्। नमस्करोमि। समस्तावरणम्

पुनः गन्धादीन् गृहीत्वादलाग्रेषु – ॐ वज्रय नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अङ्कुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा —

अभीष्टसिद्धं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्यासमर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम्॥

ॐ भगवते श्री रामोपेताय हनुमते नमः। समस्ता वरणार्चनार्थे गन्धाक्षत समर्पयामि। जलं गृहीत्वा – कृतेन समस्तावरणार्चनेन श्री हनुमान् प्रीयतां न मम्। नमस्करोमि।

पुनः गन्धादीन् गृहीत्वा -

ॐ संविन्मय कपिशान परामृतचरुप्रिय। अनुज्ञां देहि देवेश! परिवारार्चनाय मे।।

समस्तविन्तुषु —

ॐ हं हनुमते नमः।

ॐ महातेजसे नमः।

ॐ महाबलाय नमः।

ॐ मेरुपीठार्चन कारकाय नमः।

ॐ अङ्गदाय नमः।

ॐ जाम्बवते नमः।

ॐ सुपेणाय नमः।

ॐ महारोग विनाशिने नमः।

ॐ विपघ्नाय नमः।

ॐ रामभक्ताय नमः।

ॐ कपिराजाय नमः।

ॐ द्रोणादिहारकाय नमः।

ॐ सुग्रीवाय नमः।

ॐ नीलाय नमः।

ॐ नलाय नमः।

ॐ द्विविदाय नमः।

ॐ रक्षोघ्राय नमः।

ॐ दिव्यायुधाय नमः।

🕉 व्याधिष्राय नमः। 🕉 कालरुपाय नमः। 🕉 भयघ्नाय नमः। 🕉 पुण्डरीकाय नमः। ॐ कुमुदाय नमः। ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ सुप्रतीकाय नमः। ॐ केशरिणे नम:। ॐ लङ्काविदारकाय नमः। ॐ श्रीरामिकङ्कराय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ पिङ्गललोचनाय नमः। ॐ कपीश्वराय नमः। ॐ लङ्काविभञ्जनाय नमः। ॐ अनिलात्मजाय नमः। ॐ शिवप्रियाय नमः। ॐ कपिश्रेष्ठाय नमः। ॐ अचलोद्धारकाय नमः। ॐ मारुतसूनवे नमः। ॐ पिङ्गाक्षाय नमः। ॐ वानरवीराय नमः। ॐ सीताशोकविनाशकाय नमः। ॐ भक्त्याय नमः। ॐ मेघनादध्वंसकरिणे नमः। ॐ आकाशोदरगामिने नमः। ॐ दीर्घलाङ्गलधारिणे नमः।

ॐ चौरघ्नाय नम:। ॐ महापापहारिणे नम:। ॐ ऐरावताय नमः। ॐ वामवाय नमः। ॐ अञ्जनाय नमः। ॐ सार्वभौमाय नम:। ॐ लक्ष्मण्याय नमः। ॐ पवनाय नमः। ॐ प्लवगेश्वराय नम:। ॐ हरीश्वराय नमः। ॐ रुद्रपियाय नमः। ॐ सुरार्चिताय नमः। ॐ मुद्रापहारिणे नमः। ॐ रामदूताय नमः। ॐ महाप्रज्ञाय नमः। ॐ लङ्काप्रासादमञ्जनाय नमः। ॐ महावलाय नम:। ॐ भास्करसन्निभाय नमः। ॐ अमित विक्रमाय नमः। ॐ श्यामालाङ्काय नमः। ॐ सुग्रीवासठयकारिणे नमः। ॐ राममुद्राय नमः। ॐ रावणान्तकुलच्छेद कारिणे नमः। ॐ वायुपुत्राय नमः। ॐ लङ्काप्रासादभिञ्जने नमः। ॐ ब्रह्मशाप निवारिणे नमः।

### विशिष्ट पुष्पाञ्जलि गृहीत्वा —

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्। भक्त्यासमर्पयेतुभ्यं विशिष्टावरणार्चनम्॥

ॐ भगवते श्री विशिष्टावरणार्चन देवताभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः सवाहनेभ्यः अर्चेभ्यः श्री हनुमद्देवतासहितेभ्यः विशिष्ट पुष्पाञ्जलि समर्पयामि।

जलं गृहीत्वा – कृतार्चनेन समस्त देवतासहित श्री अञ्जनी नन्दन रामभक्तो हनुमान् प्रीयतां न मम ततः हनुमन्तं प्रणमेत् ।

पुनः पुष्पादीन् गृहीत्वा – द्वादश सूर्यकला पूजनं कर्तव्यम् -

ॐ दीर्घलाङ्गूलधारिणे नमः। ॐ ब्रह्मशाप निवारिणे नमः।

ॐ कं भं तापिनीकलायै नमः। ॐ खं वं तापिनीकलायै नमः।

ॐ धुम्रकलायै नमः। ॐ मरीचिकलायै नमः।

ॐ ज्वालिनीकलायै नमः। ॐ रुचिकलायै नमः।

ॐ सुपुम्बाकलायै नमः। ॐ भोगदाकलायै नमः।

ॐ विश्वकलायै नमः। ॐ गोधिनीकलायै नमः।

ॐ धारिणीकलायै नमः। ॐ क्षमाकलायै नमः।

ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने समाान्यार्धमृताय नमः।

ॐ षोडशचन्द्रकलायै नमः। ॐ अमृतकलायै नमः।

ॐ मानदा कलायै नमः। ॐ पूणा कलायै नमः।

ॐ तुष्टि कलायै नमः। ॐ पुष्टि कलायै नमः।

ॐ रतिकलायै नमः। ॐ धृतिकलायै नमः।

ॐ शशिनीकलायै नमः। ॐ चन्द्रिकाकलायै नमः।

ॐ कान्तिकलायै नमः। ॐ ज्योत्स्त्राकलायै नमः।

ॐ श्रीकलायै नमः। ॐ प्रीतिकलायै नमः।

ॐ अङ्गदाकलायै नमः। ॐ पूर्णाकलायै नमः।

ॐ पूर्णामृताकलायै नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सं.पू.य.वि. ११

```
ॐ द्वादश सूर्य कलात्मने नमः। नमस्करोमि पुनः पुष्पदीन् गृहीत्वा-
                       ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः।
    मं मण्डुकाय नमः।
άE
🕉 कुं कूर्माय नमः।
                       ॐ आं आधारशक्तये नमः।
    मुं मूलप्रकृत्यै नमः।
                       ॐ वं वाराह्यै नम:।
🕉 अं अनन्ताय नमः। 🕉 पं पृथिव्यै नमः।
ॐ अं अमृत सागराय नमः। ॐ रं रत्नदीपाय नमः।
ॐ हे हेमगिरये नमः।
                    ॐ नं नन्दनोधानाय नमः।
ॐ कं कल्पवृक्षेभ्यो नमः।
                       ॐ मं मणिभूपति भूतलाय नमः।
άE
    रं रत्नमण्डलाय नमः। 🕉 रत्नसिंहाय नमः।
ॐ घं धमयि नमः।
                      ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः।
ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः।
ॐ अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः।
ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ अनैश्वययि नमः।
ॐ आनन्दमय कन्दाय नमः। ॐ संविन्नाताय नमः।
    विश्वमय पह्याय नमः। ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः।
ૐ
ॐ विकारमयकेशरभ्यो नमः । ॐ पञ्चाशणदियकर्णिकायै नमः।
    द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः।
ૐ
ॐ षोडशकलात्मने सोममण्डललाय नमः
    दशकलात्मने विह्नमण्डलाय नमः। ॐ सत्वाय नमः।
જંદ
άE
    रजसे नमः ।
                       ॐ तमसे नमः ।
άE
    आत्मने नमः । ॐ अन्तरात्मने नमः ।
ॐ परमात्मने नमः । ॐ ज्ञानात्मने नमः ।
άE
    मायातत्वाय नमः । ॐ कला तत्त्वाय नमः ।
    विद्यातत्त्वाय नमः । ॐ परतत्वाय नमः ।
άE
```

पत्रमध्ये पीठशक्तिं ध्यायेत् । ॐ श्वेता कृष्णारुणापीता श्यामा रक्तासितासिताः । रक्ताम्बराथपधरा ध्येयाः स्युः पीठशक्तयः ।।

🕉 विमलायै नमः । उत्किषिणयै नमः । જંદ 🕉 ज्ञानायै नमः । 🌞 ॐ क्रियायै नम:ा 🕉 योगायै नमः । ॐ प्रह्वायै नमः । 🕉 सत्यायै नमः । ॐ ईशानायै नमः । 🕉 अनुग्रहायै नमः । 🕉 हीं नमो भवावर्ते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताखानन्ताय योगपीठात्मने नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत तुलसी पत्राणि समर्पयामि पीठस्थदेवताभ्यो नमः। नमस्करोमि पुनः पुष्पादीन् गृहीत्वा -विशिष्टपीठदेवान् सम्पूज्य - पीठस्य अधो भागे -ॐ वितलाय नमः । अतलाय नमः । ॐ सुतलाय नमः । 🕉 रसातलाय नमः । 🕉 महातलाय नमः । ॐ तलातलाय नमः। 🕉 सप्ततलाय नमः । 🕉 तत्रागाधसर्वतः शब्दात्मने नमः । कमलेकण्ठाय नमः । तदुपरि - ॐ सहस्त्रमणि प्रकाशमान शेपाय नमः। अष्टदिग्गजेभ्यो नमः। ॐ भूमण्डलाय नमः। ॐ भूर्लोकाय नमः । ॐ भुवर्लोकाय नमः । स्वर्लीकाय नमः । ॐ जनलोकाय नमः । ॐ तपोलोकाय नमः । ॐ महर्लोकाय नमः । ॐ सत्यलोकाय नमः । ॐ अष्टदिक्पालेभ्यो नमः । तन्मध्ये - मेरवे नमः। मेरोदक्षिण दिग्भागे - कस्मैचिद्रोणशैलाय नमः। – सुरतरवे नमः। तन्मध्ये तन्मूले - सुवर्णवेदिकायै नमः।

वेद्यांवृक्षस्यपूर्वभागे

- ॐ नवरतनरवचित चारुरत्नपीठाय नमः।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि । पीठस्थ देवताभ्यो नमः ।।

पम्पापूजनम् – आवाहनम् हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॐ हेमकूतं गिरिप्रान्त जनानां गिरिसानुगाम्।
पम्पामावाहयाम्यस्यां नद्यां हृद्यां प्रयत्नतः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पम्पासरोवरस्थदेवेभ्यो नमः। आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।।

पुष्पं गृहीत्वा -

ॐ तरङ्गशत कल्लोलैरिङ्गत्तामरसोज्ज्वले। पम्पानदि । नमस्तुभ्यं गृहाणासनमुत्तमम्।। पम्पास्थदेवेभ्यो नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

जलं गृहीत्वा -

ॐ हद्यं सुगन्धसम्पन्नं शुद्धंशुद्धाम्बुसत्कृतम् । पाद्यं गृहाण पम्पाख्ये महानदि नमोऽस्तुते ।। पादयो पाद्यं सर्मयामि पम्पा तीर्थेभ्यो नमः। ॐ भागीरिथ। नमस्तुभ्यं सिललेन सुशोभने ।। अनर्घ्यमर्घ्यमनद्ये। गृह्यतामिदमुत्तमम् । हस्तयोः अर्घ्य समर्पयामिपम्पानदीभ्यो नमः।।

आचमनम् -

पम्पानिद ! महापुण्ये ! सम्पादित सुशोमने । गोदाविर ! जलेनाऽद्य गृहाणाचमनीयकम् ।। अर्घ्यान्ते आचनीयं जलं समर्पयामि पम्पनदीभ्यो नमः।

पञ्चामृत स्नानम् -

ॐ दुग्धाऽज्येक्षुरसैः पुण्यैर्दघ्ना च मधुना तथा । पञ्चामृतैः स्त्रापयिष्ये पम्पानदि। नमोस्तुते ।। पञ्चामृतस्त्रानं समर्पयामि पम्पायै नमः। शुद्धस्नानम् -

ॐ शुद्धनीलैः शुद्धजलैर्नारिकेलाम्बुभिस्तथा । पुण्यैः कृष्णानदी तायैः सिञ्जामित्वां सरिद्वरे ।।

पञ्चामृत स्त्रानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि शुद्धोदक स्त्रानान्ते आचमनीयं जलं सर्मपयामि। पम्पायै नमः।

वस्त्रम् -

ॐ महामूल्यं च कार्पासं दिव्यवस्त्रभनुत्तमम् । पम्पानदि । महापुण्ये पम्पाशोभाऽतिशोभने ।। वस्त्रं समर्पयामि । पम्पायै नमः। तदन्ते आचमनीयं जलं

समर्पयामि।

गन्धम् -

कर्पूरगुटिकामिश्रं कस्तूर्या च विमर्दितम् । यत्नेन कल्पितं गन्धं लेपयेदङ्ग सरिद्वरे ।।

गन्धं समर्पयामि । अक्षतान् समर्पयामि । पुष्पाणि समर्पयामि। माल्यं समर्पयामि। परिमल - धुप - द्वीपनैवेद्यं च समर्पयामि। पम्पायै नमः। आचमनीयं समर्पयामि। पम्पायै नमः। ताम्बूल वीटिकाम् ऋतुलम् - दक्षिणाद्रव्यं च समर्पयामि।

पुष्पं गृहीत्वा प्रार्थयेत् -

ॐ नमस्ते नमस्ते विशालोज्वलाङ्गे नमस्ते नमस्ते लसत्सरङ्गे । नमस्ते नमस्ते गिरिप्रान्तरङ्गे नमस्ते नमस्ते चलद्वर्हिरङ्गे ।। प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि । पम्पायै नमः

ॐ अपराधशतं देवि । मत्कृतं च दिने दिने । क्षम्यतां पावने देवि! पम्पानदि नमोऽस्तुते ।। श्री हनुमद्देवस्यहृदये एकविंशतिदेवान् सम्पूज्य

हस्ते गन्धाक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा —

१. ॐ मङ्गलाय नमः २. ॐ भूमिपुत्राय नमः

४. ॐ धनप्रदाय नमः ॐ ऋणहर्त्रे नमः

ॐ स्थिरासनाय नमः ६. ॐ महाकयाय नमः

७. ॐ सर्वकामविरोधकाय नमः ८. ॐ लोहिताय नमः

९. ॐ लोहिताङ्गाय नमः १०. ॐ सामनाङ्कुपाकराय नमः

११. ॐ धरात्मजाय नमः १२. ॐ कुजाय नमः

१३. ॐ रक्ताय नमः १४. ॐ भूतिदाय नमः

१५. ॐ भूमिदाय नमः १६. ॐ अङ्गारकाय नमः

१८. ॐ सर्वरोगपहारकाय नमः १७. ॐ यमाय नमः

१९. ॐ सृष्टिकर्त्रे नमः २०. ॐ प्रहर्त्रे नमः

२१. ॐ सर्वकामफल प्रदाय नमः

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि । एकविंशति मङ्गलस्य देवताभ्यो नमः।।

ॐ कमलायै नमः । मकरध्वजाय नमः सकलपूजार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि। तुलसीदलङ्गृहीत्वा प्रार्थयेत् -

ॐ भौमे दक्षिणदिक्त्रिकोणयमदिग् विघ्नेश्वरोरक्तमः। स्वामीवृश्चिकमेषयोः सुरगुरुश्चार्कः शशीसौहदः।।

ज्ञोऽरिः षट् त्रिफलप्रदश्च वसुधा स्कन्दौ क्रमाद्दैवते भारतद्वाज कुलोद्धवः क्षितिसुतः कुर्यात् सदा मङ्गलम्। प्रार्थनां पूर्वकं तुलसीपत्रं समर्पयामि श्री रामोपेताय हनुमते नमः।

पुनः दक्षिणे संपूज्य -

१. ॐ ब्रह्मपुत्राय नमः। २. ॐ दर्शाय नमः।

३. ॐ पौर्णमासाय नमः। ४. ॐ बृहत्ताय नमः।

५. ॐ रथन्तराय नमः। ६. ॐ वित्ताय नमः।

७. ॐ विवित्ताय नमः। ८. ॐ आकृत्यै नमः।

९. ॐ कृत्यै नमः। १०. ॐ विज्ञाताय नमः।

११. ॐ विज्ञाततमाय नमः। १२. ॐ मानाय नमः।

१४. ॐ त्रयोदश ब्रह्मपुत्रेभ्यो नृम:। १३. ॐ यज्ञाय नम:। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पनः वामे सम्पूज्य -

१. ॐ मनवे नमः।

२. ॐ अनुमन्ताय नम:।

३. ॐ प्राणाय नमः।

४. ॐ नराय नम:।

५. ॐ अपानाय नम:।

६. ॐ वित्तिमते नम:।

७. ॐ नयाय नम:।

८. ॐ तयाय नम:।

९. ॐ हंसाय नमः। १०. ॐ नरायणाय नमः।

११. ॐ विभवे नमः। १२. ॐ प्रयवे नमः।

१३. ॐ धर्मपुत्राय नमः। १४. ॐ त्रयोदश ब्रह्मपुत्रेभ्यो नमः।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । चतुःषष्टि अम्भास्वरदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि। शतद्वयं विंशति महाराजिकदेवेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्ष त पुष्पाणि समर्पयामि।।

पुनः दक्षिणे -

१. ॐ मन्यवे नमः।

२. ॐ मनवे नमः।

३. ॐ महिनसाय नमः।

४. ॐ महानसाय नम:।

५. ॐ शिवाय नमः।

६. ॐ ऋतध्वजाय नम:।

७. ॐ उग्ररेताय नमः।

८. ॐ भवाय नमः।

९. ॐ कालाय नमः।

१०. ॐ वामदेवाय नमः।

११. ॐ धृत व्रताय नमः।

ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पुनः वामे -

१. ॐ धृत्यै नमः। २. ॐ वृत्यै नमः।

३. ॐ उशनायै नमः। ४. ॐ उमायै नमः।

५. ॐ नियुतायै नमः। ६. ॐ सर्पिणयै नमः।

७. ॐ इलायै नमः। ८. ॐ अम्बिकायै नमः।

९. ॐ इरावत्यै नमः।

१०. ॐ सुघायै नम:।

११. ॐ दीक्षायै नमः।

ॐ एकादशरुद्राण्ये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

पुनः पुरतः -

१. ॐ धात्रे नमः।

२. ॐ अर्यम्णे नमः।

३. ॐ मित्राय नमः।

४. ॐ वरुणाय नमः।

५. ॐ इन्द्राय नमः।

६. ॐ विवश्वते नमः।

७. ॐ विष्णवे नमः।

८. ॐ अंशवे नमः।

९. ॐ भगाय नमः।

१०. ॐ पूष्णे नमः।

११. ॐ पर्जन्याय नमः।

दशादित्येभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि। अष्टकोणेषु बहि -

१. ॐ द्रोणाय नमः।

२. ॐ प्राणाय नमः।

३. ॐ घ्रुवाय नमः।

४. ॐ अर्काय नमः।

५. ॐ अग्नये नमः।

६. ॐ दोपाय नमः।

७. ॐ वसवे नमः।

८. ॐ विभावसे नमः।

ॐ अष्टसुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि। पुरतः – ॐ साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय श्रीमतेरामचन्द्रोपेताय हनुमते मङ्गलादिविभान्तदेवेभ्यो नमः। प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि ।

अथत्रयोदशग्रन्थिदेवता पूजनम् -

१. ॐ अञ्जनी सूनवे नमः। प्रथमाग्रन्थि पूजयामि तर्पयामि।

२. ॐ हनुमते नमः। द्वितीयाग्रन्थि पूजयामि तर्पयामि।

३. ॐ वायुपुत्राय नमः। तृतीयाग्रन्थि पूजयामि तर्पयामि।

४. ॐ महावलाय नमः। चतुर्थग्रन्थि पूजयामि तर्पयामि।

५. ॐ रामेष्टाय नमः। पंचमग्रन्थि पूजवामि तर्पयामि।

६. ॐ फाल्गुनसखाय नमः। षष्ठग्रन्थि पूजयामि तर्पयामि।

७. ॐ पिङ्गाक्षाय नमः। सप्तमग्रन्थि पूजयामि तर्पयामि।

८. ॐ अमितविक्रमाय नमः। अष्टमग्रन्थि पूजयामि तर्पयामि।

९. ॐ कपीश्वराय नमः। नवमग्रन्थि पूजयामि तर्पयामि।

१०. ॐ सीताशोकविनाशनाय नमः। दशमग्रन्थि पूजयामि तर्पयामि।

११. ॐ लक्ष्मणप्राणक्षत्रे नमः। एकादशग्रन्थि पूजयामि तर्पयामि।

१२. ॐ दशग्रीवदर्पघ्नाय नमः। द्वादशग्रन्थि पूजयामि तर्पयामि।

१३. ॐ भविष्यद् ब्रह्मणे नमः ।

त्रयोदशग्रन्थिपूजयामि नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि । त्रयोदशग्रन्थि देवताभ्यो नमः। जलं गृहीत्वा – त्रयोदशग्रन्थिदेवताः प्रीयन्तां न मम ।

हस्ते सिन्दूरं गृहीत्वा -

ॐ सिन्धो'रिवप्पादुध्वने शू'घनासो व्यात'प्रमियं पतयन्ति बृह्वाः। घृतस्यधारा'ऽअरूषोनव्याजी काष्ठा'भिन्दन्नूर्मिभः पिन्न्व'मानः ॥

ॐ सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्रीरामोपेताय हनुमते नमः सिन्दूरा भूषणं समर्पयामि।

परिमलम् अभ्रकञ्च गृहीत्वा -

ॐ अहि'रिवभोगै? पर्व्वे'तिबाहुं ञ्ज्याया हे ति-म्प'रिबाध'मानः। हुस्तुग्छ्गोव्विश्धा'व्वयुना'निव्विद्धान्पुमान्पुमा' ७ सम्परि'पातुविश्धत'÷॥

नानापरिमलैर्दव्यै निर्मितं चूर्णमुत्तमम्। अवीरनामकंचूर्ण गन्धं चारुप्रगृह्यताम्।।

🕉 भूर्भुवः स्वः भगवते श्रीरामोपेताय हनुमते नमः परिमलम् अभ्रकं च समर्पयामि।

तुलसीदलेन – मोदकेन वा हनुमद् अष्टोत्तरशतेन अर्चयेत् -

## श्री आञ्जनेयष्टोत्तरशत नामावलिः

१. ॐ आञ्चनेयाय नमः

२. ॐ महावीराय नमः

३. ॐ हनुमते नमः

४. ॐ मारुतात्मजाय नमः

५. ॐ तत्वज्ञानप्रदाय नमः

ॐ सीतादेवीमुद्राप्रदायकाय नमः

७. ॐ अशोकवनिकाक्षेप्ने नमः

८. ॐ सर्वमायाविभञ्जनाय नमः

९. ॐ सर्ववन्यविमोक्रे नमः

१०. ॐ रक्षोविध्वंसकारकाय नमः

११. ॐ परविद्याप्रदाय नमः

१२. ॐ परशौर्यविनाशाय नमः

१३. ॐ परयन्त्रनिराकर्त्रे नमः

१४. ॐ परयन्त्रप्रभेदकाय नमः

१५. ॐ सर्वग्रहविनाशिने नमः

१६. ॐ भीमसेनसहायकृते नमः

१७. ॐ सर्वदु:खहराय नम:

१८. ॐ सर्वलोकाचारिणे नमः

१९. ॐ मनोजवाय नमः

२०. ॐ परिजातद्वुममूलवासाय नमः ४०. ॐ प्राज्ञाय नमः

२१. ॐ सर्वमन्त्रस्वरुपिणे नमः

२२. ॐ सर्वमन्त्रस्वरूपवते नमः

२३. ॐ सर्वतन्त्रात्मकाय नमः

२४. ॐ कपीश्वराय नमः।

२५. ॐ महाकायाय नमः

२६. ॐ सर्वरोगहराय नमः।

२७. ॐ प्रभवे नमः

२८. ॐ बलसिब्धिकराय नमः।

२९. ॐ सर्वविद्यासंवित्प्रदायकाय

३०. ॐ कपिसेनानायकाय नमः

३१. ॐ भविष्यच्यतुराननाय नमः

३२. ॐ कुमार ब्रह्मचारिणे नमः

३३. ॐ रत्नकुण्डलदीप्तिमते नमः

३४. ॐ सञ्चलद्वालसंत्रद्धरविमण्डल ग्रासोज्ज्वलाय नमः

३५. ॐ गन्धर्वविद्यातत्वज्ञानाय नमः

३६. ॐ महाबलपराक्रमाय नमः

३७. ॐ काराग्रहविमोके नमः

३८. ॐ शुद्धलाबन्धमोचकाय नमः

३९. ॐ सागरोद्धारकाय नमः

४१. ॐ रामदूताय नमः

४२. ॐ प्रजाभवते नमः

४३. ॐ वानराय नमः

४४. ॐ केशरिसुताय नमः

४५. ॐ सीताशोकनिवारणाय नमः

४६. ॐ अञ्जनागर्भसम्भूताय नमः

४७. ॐ बालार्कसदृशाननाय नमः

४८. ॐ विभीषणप्रियकराय नमः

४९. ॐ दशग्रीवकुलान्तकाय नमः

५०. ॐ लक्ष्मण प्राणदात्रे नमः

५१. ॐ वज्रकायाय नमः

५२. ॐ महाद्युतये नमः

५३. ॐ चिरञ्जीविने नमः

५४. ॐ रामभक्ताय नमः

५५. ॐ दैत्यकार्यविधातकाय नमः

५६. ॐ यक्षहन्त्रे नमः

५७. ॐ काञ्चनाभाय नमः

५८. ॐ पञ्चवक्राय नमः

५९. ॐ महातपसे नमः

६०. ॐ लङ्किनीभञ्जनाय नमः

६१. ॐ श्रीमते नमः

६२. ॐ सिहिंकाप्राणभञ्जनाय नमः

६३. ॐ गन्धमादनशैलहस्ताय नमः

६४. ॐ लङ्कापुरविदाहकाय नमः

६५. ॐ सुग्रीवसचिवाय नमः

६६. ॐ धीराय नमः

६७. ॐ शूराय नमः

६८. ॐ दैत्यकुलान्तकाय नमः

६९. ॐ सूरार्चिताय नमः

७०. ॐ महातेजसे नमः

७१. ॐ रामचूड़ामणिप्रदाय नमः

७२. ॐ कामरुपिणे नमः

७३. ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः

७४. ॐ वाधिमैनाकपूजिताय नमः

७५. ॐ कर्पूरीकृतमार्तण्डमण्डलाय नमः

७६. ॐ विजितोन्द्रियाय नमः

७७. ॐ रामसुग्रीवसन्यात्रे नमः

७८. ॐ महारावणमर्दनाय नमः

७९. ॐ स्फटिकाभाय नमः

८०. ॐ वागधीशाय नमः

८१. ॐ नवव्याकृतिपण्डिताय नमः

८२. ॐ चतुर्वाहवे नमः

८३. ॐ दीनवन्धवे नमः

८४. ॐ महात्मने नमः

८५. ॐ भक्तावत्सलाय नमः

८६. ॐ सञ्जिवनगदाखङ्गिने नमः

८७. ॐ शुचये नमः

८८. ॐ वाग्मिने नमः

८९. ॐ दृढव्रताय नमः

९०. ॐ कालनेमिप्रमथनाय नमः

९१. ॐ हरिमर्कटमर्कटाय नमः

९२. ॐ ध्वान्त ध्वंसि ने नमः

९३. ॐ शान्ताय नमः

९४. ॐ प्रसन्नात्मने नमः

९५. ॐ दशकण्ठभदसंहते नमः

९६. ॐ योगिने नमः

९७. ॐ रामगदालोताय नमः

९८. ॐ सीतान्वेषणपण्डिताय नमः १०५. ॐ दशवाहवे नमः

९९. ॐ वज्रष्ट्राय नमः

१००. ॐ वज्रनखाय नमः

१०१. ॐ रुद्रवीर्यसमुद्भवाय नमः

१०२. ॐ इन्द्रजीतप्रहारामोद्य ब्रह्मास्त्र निवारकाय नमः १०३. ॐ पार्थध्वजाग्रसंवासिने नमः

१०४. ॐ शरपञ्जरभेदकाय नमः

१०६. ॐ लोकपूज्याय नमः

१०७. ॐ जाम्बवतप्रीतिवर्द्धनाय नमः

१०८. ॐ सीतासहित श्रीरामपादसेवा धुर-धराय नमः। (कलिकातन्त्रे)

## अथ आञ्जनेयपञ्चवक्रपूजनम्

पूर्वे - ॐ हरिमर्कट मर्कटाय पञ्चवदनाय पूर्वकिप मुखाय सकलशत्रु संहारणाय हरिमर्कट मर्कट वामकरे परिमुञ्जतिमुञ्जति श्रृङ्खलिकां नमः।। १।।

दक्षिणे - ॐ भगवते पञ्चवदनाय दक्षिणमुखाय करालवदनाय नरसिंहाय सकलभूत प्रमथनाय हरिमर्कट मर्कटवामकरे परिमुञ्जतिमुञ्जति शृङ्खलिकां नमः॥ २॥

पश्चिमे - ॐ भगवते पञ्चवदनाय पश्चिममुखाय गरुडाननाय सकल विपहराय हरिमर्कट मर्कटवामकरे परिमुञ्जतिमुञ्जति श्रृङ्खलिकां नमः।। ३।।

उत्तरे - ॐ भगवते पञ्चवदनाय उत्तरमुखाय आदिवा राहाय सकल सम्पत्कराय हरिमर्कट मर्कटवामकरे परिमुञ्जतिमुञ्जति श्रृङ्खलिकां नमः।। ४।।

उर्ध्व - ॐ भगवते पञ्चवदनाय उर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकलजनवशङ्कराय हरिमर्कट मर्कटवामकरे परिमुञ्जितिमुञ्जिति श्रृङ्खलिकां नमः॥ ५॥

सकलार्चनार्थे गन्धाक्षतपुष्प तुलसीदलानि समर्पयामि। आञ्जनेयायपञ्चवक्राय नमः। धुपम् –

#### अथ रामाङ्गपूजनम्

#### हस्ते पुष्पादीन् गृहीत्वा -

- 🕉 श्रीरामाय नमः पादौ पूजयामि तर्पयामि ।
- 🕉 राजीवलोचनाय नमः गुल्फे पूजयामि तर्पयामि ।
- 🕉 रावणान्तकाय नमः जानुनीं पूजयामि तर्पचामि ।
- ॐ वाचस्पतये नमः उरुं पूजयामि तर्पयामि ।
- ॐ विश्वरुपाय नमः जङ्घे पूजयामि तर्पयामि ।
- ॐ लक्ष्मणाग्रजाय नमः कटिं पूजयामि तर्पयामि ।
- ॐ व्विश्वमूर्तये नमः मेढ्रं पूजयामि तर्पयामि ।
- ॐ परमात्मने नमः हृदयं पूजयामि तर्पयामि ।
- ॐ सर्वास्त्रधारिणे नमः पूजयामि तर्पयामि ।
- ॐ रघूद्वराय नमः मुखं पूजयामि तर्पयामि ।
- ॐ पह्मनाभाय नमः जिह्नां पूजयामि तर्पयामि ।
- ॐ दामोदराय नमः दन्तान् पूजयामि तर्पयामि ।
- 🕉 सीतापतये नमः ललाटं पूजयामि तर्पयामि ।
- ॐ ज्ञानगम्याय नमः शिरः पूजयामि तर्पयामि ।
- ॐ सर्वात्मने नमः सर्वाङ्ग पूजयामि तर्पयामि ।

#### अष्टवारम् —

ॐ श्रीसीतासहितं श्रीरामं पूजयामि तर्पयामि नमः। वामभागे —

ॐ सीतायै नमः पूजयामि तर्पयामि ।

#### दक्षिणे —

- ॐ भरतायं नमः पूजयामि तर्पयामि ।
  - 🕉 शार्ङ्गाय नमः पूजयामि तर्पयामि ।
- ॐ शरेभ्यो नमः पूजयामि तर्पयामि।

🎎 🍀 इत्यङ्गपूजनम्

#### आवरण पूजनम्

#### प्रथमावरणम्

हस्ते पुष्पाणि गृहीत्वा —

१. ॐ रां हृदयाय नमः। ४. ॐ रैं कवचाय हुम् नमः।

२. ॐ रीं शिरसे स्वाहा नमः। ५. ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट् नमः।

३. ॐ रुं शिखायै वषट् नमः। ६. ॐ रः अस्त्राय फट् नमः।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

#### द्वितीयावरणम्

१. ॐ आं आत्मने नमः। ५. ॐ निवृत्यै नमः।

२. ॐ अं अन्तरात्मने नमः। ६. ॐ प्रतिष्ठायै नमः।

३. ॐ पं परमात्मने नमः। ७. ॐ विद्यायै नमः।

४. ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः। ८. ॐ शान्त्यै नमः।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

### तृतीयावरणम् कार्या

१. ॐ वासुकये नमः। ५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः।

२. ॐ श्रियै नमः। ६. ॐ प्रीत्यै नमः।

३. ॐ सङ्कपर्णाय नमः। ७. ॐ अनिरुद्धाय नमः।

४. ॐ सरस्वत्यै नमः। ८. ॐ रत्यै नमः।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

# चंतुर्थावरणम्

१. ॐ हं हनुमते नमः। ५. ॐ लक्ष्मणाय नमः।

२. ॐ सुग्रीवाय नमः। ६. ॐ अङ्गदाय नमः।

- ३. ॐ भरताय नमः। ७. ॐ शत्रुघ्नाय नमः।
- ४. ॐ विभीषणाय नमः। ८. ॐ जाम्ववते नमः।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थवरणार्चनम्।।

#### पंचमावरणम्

१. ॐ घृष्ट्यै नमः।

४. ॐ राष्ट्रवर्द्धनाय नमः।

२. ॐ जयन्ताय नमः।

५. ॐ अकोपाय नमः।

३. ॐ सुराष्ट्राय नमः।

६. ॐ धर्माय नम:।

७. ॐ सुमन्ताय नमः।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्।।

#### षष्ठावरणम्

१. ॐ नारदाय नमः।

६. ॐ कौशिकाय नमः।

२. ॐ वशिष्ठाय नमः।

७. ॐ वल्मीकये नमः।

३. ॐ जावालये नमः।

८. ॐ सनकाय नमः।

४. ॐ गौतमाय नमः।

९. ॐ सनन्दनाय नमः।

५. ॐ भारद्वाजाय नमः। १०. ॐ सनातनाय नमः।

११. ॐ सनत्कुमाराय नमः।

3% अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।

#### सप्तमावरणम्

१. ॐ नीलाय नमः । २. ॐ नलाय नमः ।

३. ॐ सुपेणाय नमः । ४. ॐ मैन्दाय नमः ।

५. ॐ शरण्याय नमः । ६. ॐ द्विविदाय नमः ।

७. ॐ चन्दनाय नमः । ८. ॐ गवाक्षाय नमः ।

९. ॐ किरीटने नमः । १०. ॐ कुण्डलाय नमः ।

११. ॐ श्रीवत्साय नमः । १२. ॐ कौस्तुभाय नमः ।

१३. ॐ शङ्खाय नमः । १४. ॐ चक्राय नमः ।

१५. ॐ गदायै नमः । १६. ॐ पद्माय नमः ।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥

#### अष्टमावरणम्

१. ॐ ध्रुवाय नमः । २. ॐ धरायै नमः ।

३. ॐ सोमाय नमः । ४. ॐ अनिलाय नमः ।

५. ॐ अनलाय नमः । ६. ॐ प्रत्यूपाय नमः ।

७. ॐ प्रभात्याय नमः । ८. ॐ वीरभद्राय नमः ।

९. ॐ शम्भवे नमः । १०. ॐ गिरिशाय नमः ।

११. ॐ अजैकपदाय नमः । १२. ॐ अहिर्बुध्याय नमः ।

१३. ॐ पिनाकिने नमः । १४. ॐ भुवनाधीशाय नमः।

१५. ॐ कपालिने नमः । १६. ॐ दिक्पतये नमः ।

१७. ॐ स्थाणवे नमः । १८. ॐ भवाय नमः ।

१९. ॐ वरुणाय नमः । २०. ॐ सूर्याय नमः ।

२१. ॐ वेदान्तिने नमः । २२. ॐ भानवे नमः ।

२३. ॐ इन्द्राय नमः । २४. ॐ रवये नमः ।

२५. ॐ गभस्ते नमः । २६. ॐ यमाय नमः ।

२७. ॐ हिरण्यरेतसे नमः । २८. ॐ दिवाकराय नमः ।

२९. ॐ मित्राय नमः । ३०. ॐ विष्णावे नमः ।

३१. ॐ धात्रे नम: ।

3ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्।।

#### नवमावरणम्

१. ॐ इन्द्राय नमः । २. ॐ अग्नये नमः ।

३. ॐ यमाय नमः । ४. ॐ निऋतये नमः ।

- ५. ॐ वरुणाय नमः । ६. ॐ वायवे नमः ।
- ७. ॐ सोमाय नमः । ८. ॐ ईश्वराय नमः ।
- ९. ॐ ब्रह्मणे नमः । १०. ॐ अनन्ताय नमः ।
  ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
  भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।।

#### दशमावरणम्

- १. ॐ वज्राय नमः । २. ॐ शङ्खाय नमः ।
- ३. ॐ दण्डाय नमः । ४. ॐ खड्गाय नमः ।
- ५. ॐ पाशाय नमः । ६. ॐ अङ्कुशाय नमः ।
- ७. ॐ ध्वजाय नमः । ८. ॐ गदायै नमः ।
- ९. ॐ त्रिशूलाय नमः । १०. ॐ अम्बुजाय नमः ।
- ११. ॐ चक्राय नमः।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम्।।

सर्वोपचारार्थेगन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। श्रीरामसहितदशमावरणार्चन देवेभ्यो नमः।।

ॐ दशरथाय विद्यहे सीता वल्लभाय धीमहि। तन्नोरामः प्रचोदयात्।।

श्रीरामाय नमः सर्वोपचारार्थेगन्धाक्षतितल तुलसीदल पुष्पाणि समर्पयामि-

### ॐ यन्त्रराजाय नमः ।

### यन्त्रपरितः अष्टपार्षदान् सम्पूज्य ।

- १. ॐ नन्दनायपार्षदाय नमः। २. ॐ कुमुदेश्वरायपार्षदाय नमः।
- ३. ॐ सुदाम्रेपार्षदाय नमः। ४. ॐ कुमुदायपार्षदाय नमः।
- ५. ॐ प्रचण्डायपार्षदाय नमः। ६. ॐ महाबलायपार्षदाय नमः।

७. ॐ बलायपार्षदाय नमः। ८. ॐ चण्डायपार्षदाय नमः।

९. ॐ अनन्तायपार्षदाय नमः। १०. ॐ कुलिशायपार्षदाय नमः।

११. ॐ वासुकयेपार्षदाय नमः। १२. ॐ शङ्खपालायपार्षदाय नमः।

१३. ॐ तक्षायपार्षदाय नमः। १४. ॐ महाद्यायपार्षदाय नमः।

१५. ॐ पद्मायपार्षदाय नमः। १६. ॐ कर्कोटकायपार्षदाय नमः।

१७. ॐ मेषाय नम:।

१८. ॐ वृषाय नम:।

१९. ॐ मिथुनाय नम:।

२०. ॐ कर्काय नमः।

२१. ॐ सिंहाय नम:।

२२. ॐ कन्यायै नमः।

२३. ॐ तुलायै नमः। २४. ॐ वृश्चिकायै नमः।

२५. ॐ धनुषे नम:।

२६. ॐ मकराय नम:।

२७. ॐ कुम्भाय नमः। २८. ॐ मीनाय नमः।

ॐ नमो भगवते श्री रामाय दशरथाय संयोगपीठात्मने नमः। ॐ सत्यज्ञानानन्दरूपं परमधामैव सकलपीठात्मने नमः।

> ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम्।। इति रामाङ्गावरणपूजनम्।

> > THE REPORT THE LIFT BURER AS

Service of Tentingment properties. The private

ALTERNATION OF THE STREET

THE SECTION AS A SECTION OF THE SECTION AS A SECTION AS A

TO THE OWNER WHEN A SHARE THE PROPERTY OF

## श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्

🕉 भद्रङ्कर्णेभिरित शान्तिः

हरिः ॐ।। नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि । त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि । त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खिल्वदं ब्रह्मासि । त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं विच्म। सत्यं विच्म। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम् । अव धातारम् । अवानूचानमविशिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात् । अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्घ्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो माँ पाहि पाहि समन्तात। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयोविज्ञान मयोऽसि । सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति सर्वं जगदिदं त्विय लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्विय प्रत्येति। त्वं भूमिरापो नलोऽ निलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वंवस्था त्रयातीतः कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वंमूलाधार-स्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम् । त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्विमन्द्रस्त्वमिग्नस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम् । गणादिन् पूर्व मुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम् ॥१॥ तारेण रूद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपं। गकारः पूर्वरूपम् अकारो-मध्यमरूपम् अनुस्वाश्चान्त्यरूपम् बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। सहिता संधिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।।

एक दन्तं चतुर्हस्तं पाश मङ्कुश धारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर्ब्रिभ्राणं मूषकध्वजम्।।
रक्तं लम्बोदरं शूर्प कर्णकं रक्तवाससम्।
रक्त गन्धानुलिप्ताङ्गं रक्त पुष्पैः सुपूजितम्।।
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भृतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।।

एवं ध्यायित यो नित्यं स योगी योगिनां वर:। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बो दरायैकदन्ताय विघ्न विनाशिने शिवसुताय श्री वरद मूर्तये नमो नमः।।

।। इति श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् ॥

# श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हिरणीं सुवर्ण रजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१।। तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्चं पुरुषानहम्।।२।। अश्चपूर्वां रथमध्यां हिस्तनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवी मुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३।। कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामाद्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।।४।। चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्। तां पद्मिनीमी शरणं प्रपद्मे अलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृणे।।५।।

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽश्र बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मी:।।६।। उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।७।। क्षत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।८।। गन्ध द्वारा दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामि होपह्वये श्रियम्।।९।। मनसः काममाकूतिं वाचः सत्य मशीमहि। पशूनां रूपमन्यस्य मिय श्रीः श्रयतां यशः।।१०।। कर्दमेन प्रजा भूता मिय सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।। आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।। आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आ वह।।१३।। आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आ वह।।१४।। तां आ वह जात वेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।। यः शचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।

### पुरुषसूक्तम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिँ सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।। १।।

ॐ पुरुष एवेद ् सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।। २।।

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। ३।।

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।। ४।।

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।। ५।।

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्रक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।। ६।।

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाँ्सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।। ७।।

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।। ८।।

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।। ९।।

ॐ यत्पुरुषं व्यद्धुः कितिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।। १०।।

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँ शूद्रो अजायत।। ११।। ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणञ्च मुखादग्निरजायत।।१२।।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष्ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २।। अकल्पयन्।।१३।।

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरन्द्धविः।।१४।।

ॐ सप्तास्यासन् परिधयित्रिः सप्त सिमधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्।।१५।।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।१६।।

॥ इति श्रीपुरुषसूक्तं समाप्तम्॥

## रुद्रसूक्तम्

हरि: ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। वाहुभ्यामुत ते नमः॥ १॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ २॥

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हिर्ठ० सीः पुरुषञ्जगत्।। ३।।

ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ० सुमना असत्।। ४।।

ॐ अध्यवोचदिधवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्। अहीँ श्च सर्वाझम्भयन् सर्वाश्च यातुधन्योधराचीः परासुव॥ ५॥ ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बश्चः सुमङ्गलः। ये चैन रुद्राअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषार्ठ० हेड ईमहे॥ ६॥

ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उत्तैनङ्गोप अदृश्रन्नदृश्रनुदहार्युः स दृष्टो मृडयाति नः॥ ७॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरन्नमः॥८॥

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥ ९॥

ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत्। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥ १०॥

ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।। ११।।

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥ १२॥

अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव।। १३।।

ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ १४॥

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तनवो रुद्र रीरिषः॥ १५॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिष:। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीईविष्मन्तः सदिमत्त्वा हवामहे।। १६।।

## श्रीशिव मानस-पूजास्तोत्रम्

रतीः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं, नाना रत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्। जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा, दीपं देव दयानिधे पशुपते हतकिल्पतं गृह्यताम्।।१।। सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं, भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदिधयुतं रम्भाफलं पानकम्। शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं, ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु।।२।। छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं, वीणाभेरि मृदङ्गकाहलकलागीतं च नृत्यं तथा। साष्टाङ्गंप्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत् समस्तं मया, सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो।।३।। आत्मात्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थिति:। संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वांगिरो, यद्यत्कर्म करोमि तत्तदिखलं शम्भो तवाराधनम्।।४।।

करचरणकृतं वाकायजं कर्मजं वा, श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्। विहितमविहित वा सर्वमेतत्क्षमस्व,

जय-जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।५।।

।। इति शिव मानस-पूजास्तोत्रम् समाप्तम् ॥

## हेमाद्रिः सङ्कल्पः

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः ॐ स्वस्ति श्री मुकुन्द सिच्चदानन्दरुपिणः अनिर्वाच्य माया शक्ति विजृम्भिता विद्या योगात् कालकर्म स्वभावाविभूत महत् तत्वोदिताऽहङ्कार त्रितयोद्भूत, वियदादि पञ्च महाभूतेन्द्रिय देवता निर्मिते अण्डकटाहे चतुर्दशलोकात्मके लोके, लीलया तन्मध्यवर्ति. भगवतः श्रीनारायणस्य नाभिकमलोद्भूत सकललोकपितामहस्य ब्रह्मणः सृष्टिं कुर्वतस्तद् उद्धरणाय प्रजापतिप्रार्थितस्यसमस्त-जगद्उत्पत्तिस्थिति लयकारणस्य जगद्रक्षा शिक्षाविचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अच्युतानन्तवीर्यस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य अचिन्त्यापरिमित, शक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रममाणानामनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमेऽव्यक्त महदहङ्कार पृथिवी-अप्-तेजो-वायु-आकाशातेद्य वरणै: आवृते अस्मिन्महति ब्रह्माण्डखण्डे, आधारशक्ति श्रीमदादि वाराहदंष्ट्रायविराजिते कूर्मानन्तवासुकितक्षककुलिक-कर्कोटक पद्ममहापद्मशंखद्यष्ट महानागैः ध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक वामन कुमुदाञ्जन पुष्पदन्त सार्वभौम सुप्रतिकाष्ट-दिग्गजप्रतिष्ठिते अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पातालाख्य सप्तलोकानां उपरि भागे भूलोंक, भुवलोंक, स्वलोंक, महलोंक, जनलोक, तपोलोक, सत्यलोकाख्य सप्तलोकानाम् अधोभागे चक्रवाल शैल महावलय नगमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणिराजशेषस्य सहस्रफणानां मणिमण्डलमण्डिते दिग्दन्ति शुण्डादण्डोत्तम्भिते अमरावति शोकवती भोगवती सिद्धवती गन्धर्ववती काञ्चवन्त्यलकावती यशोवती पुण्यपुरी प्रतिष्ठिते

इन्द्र-अग्नि-यम-निर्ऋति- वरुण-वायु-कुबेर-ईशाना मष्ट दिक्पाल प्रतिष्ठिते, वरध्रुवाधर सोमपा प्रभञ्जनानल प्रत्यूष प्रभासाख्याष्ट वसुभिः विराजिते हर त्र्यम्बक रुद्र मृग व्याघापराजित कपालिभैरव शम्भु कपर्दि वृषाकपि बटु रुपाख्यैकादशरुद्रैः संशोभिते, रुद्रोपेन्द्र सवितृधातृ विष्णु त्वष्ट्यमेन्द्र-ईशान भगमित्र पूषाख्य द्वादशा दित्य प्रकाशिते यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणाध्यान समाधि अष्टाङ्ग निरत वसिष्ठ बालिखल्य विश्वामित्र दक्ष कात्यायन कौण्डिन्य गौतम्, आङ्गिरस पराशर व्यास वाल्मीकि शुकशौनक भरद्वाज सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार नारदादि मुख्यमुनिभिः पवित्रिते लोकालोक अचल वलयिते लवणेक्षुरस सुरासर्पि दिधक्षीरोदकयुक्त सप्तार्णव परिवृते जम्बूप्लक्ष-शाल्मलि-कुशक्रौञ्चशाकपुष्कराख्य सप्तद्वीपयुते इन्द्रकांस्यताम्र गभस्तिनागसौम्य गन्धर्वचारण-भारतेतिनवखण्डमण्डिते-सुवर्णिगिरि कर्णिकोपेते महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजन विस्तीर्णे भूमण्डले अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका द्वारावतीति सप्तपुरी प्रतिष्ठिते महामुक्ति प्रदस्थले शालग्राम शम्भलनन्दि ग्राम इति ग्राम त्रय विराजिते चम्पकारण्य, बद्रिकारण्य-दण्डकारण्य-अर्बुदारण्य-धर्मारण्य-पद्मारण्य गुह्यारण्य जम्बुकारण्य विन्ध्यारण्य द्राक्षारण्य, नहुषारण्य काम्यारण्य द्वैतारण्य नैमिषारण्या दीनां मध्ये सुमेरु निषध शुभ्रकूट श्रीकूट, हेमकूट रजत चित्रकूट, त्रिकूट, किष्किन्यश्वेत आद्रिकूट हिम विन्ध्याचलानां हरिवर्ष किं पुरुष वर्षयोश्च दक्षिणे नवसहस्र योजन विस्तीर्णे भरतखण्डे मलयाचल सहयाचल विन्ध्याचलानाम उत्तरेण स्वर्णप्रस्थ चन्द्रप्रस्थ शुक्ल

सूक्तिकावर्तक रमणक महारमणक पाञ्चजन्य सिंहललङ्का-शोकवत्य लकावती सिद्धवती गान्धर्ववतीत्यादि पुण्यपुरी, विराजिते नवखण्डोप द्वीपमण्डिते दक्षिणावस्थित रेणुकाद्वय सूकर काशी काञ्ची कालिकालवटेश्वर कालंजर महाकालेति नवोषरयुते द्वादशज्योतिर्लिङ्ग गङ्गागोदावरी क्षिप्रा यमुना सरस्वती नर्मदा तापी पयोष्णी चन्द्रभागा कावेरी मन्दाकिनी प्रवरा कृष्णा वेणी भीमरथी तुङ्गभद्रा मलापहा कृतमाला ताम्रपणीं विशालाक्षी वंजुला चर्मण्वती वेत्रवती भोगवती विशोका कौशिकी गण्डकी वासिष्ठिप्रमदा विश्वामित्री फल्गुनी चित्रकाश्यपी सरयू सर्वपापहारिणी करतोया प्रणीता वज्रा वक्रगामिनी सुवर्णरेखा शोणावनाशिनी शीघ्रगा कुशावर्तिनी ब्रह्मानन्दा महितनयेति अनेकपुण्यनदिभिर्विलसिते ब्रह्मपुत्र सिन्धु नदादि परमपवित्र जलविराजिते हिमवन् मेरु गोवर्धन क्रौञ्च चित्रकूट हिमकूट महेन्द्र मलय सह्येन्द्र कीलपारि यात्रादि अनेक पर्वत समन्वित मतङ्गमाल्यिकिष्किन्ध ऋष्यशृङ्गेति महानग समन्विते अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग काश्मीर कम्बोज सौवीर सौराष्ट्रमहाराष्ट्र राजस्थान मगध नेपाल केरल चोरल पाञ्चाल गौडमालव मलय सिंहल द्रविड कर्नाटक ललाटक रहाटवर हाटपानाट पाण्ड्य सारस्वत निषध मागधान्ध्र दशाणी भोजकुरुगान्धार विदर्भ विदेह बाल्हीक बर्बर कैकय कोसल विराट् शूरसेन कोङ्कण कैकट मत्स्यभद्र पारसीक खर्जूर यवन म्लेच्छ जालन्धर इत्यादि नानादेश विराजिते नानाभाषाभाषि भूमिपाल, विचित्रिते इलावृत कुरुभद्राश्चं केतुमाल किंपुरुष रमणक हिरण्मयादि नवखण्डानां मध्ये भरतखण्डे बकुलचम्पक पाटलाब्ज पुत्रागजाति करवीर रसाल कल्हार केतक्यादि

नानाविध कुसुमस्तवक विराजिते कोकन्त हिरण्य शृङ्ग कुब्जार्बुद मणिकणि वट शालग्राम सूकर मथुरा गया निष्क्रमण लोहार्गलपोत स्वामि प्रभासबदरीति चतुर्दशगुह्य विलसिते जम्बूद्वीपे कुरुक्षेत्रादि सम भूमध्यरेखायाः अमुकदिग्भागे कुलमेरोर्दक्षिण दिग्भागे विन्ध्यस्य अमुकदिग्भागे श्रीगङ्गा-यमुनायोः अमुकदिग्भागे, मत्स्यकूर्मवराह नृसिंहवामन परशुराम रामकृष्ण बुधकल्कीति दशावताराणां मध्ये बौद्धावतारे गङ्गादि सरिद्भिः पाविते एवं नवसहस्र योजन विस्तीर्णे भारतवर्षे निखिलजन पावन परम भागवतोत्तम शौनकादि निवासिते नैमिषारण्य आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे सोमसूर्यान्वय भूभृत्प्रतिष्ठिते तदन्तर्गत (अविमुक्त वाराणसी क्षेत्रे आनन्दवने महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकण्टक विराजिते भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वाम भागे) श्रीमन्नारायण नाभि-कमलोद्भूत सकल जगद् स्रष्टुः परार्द्ध द्वय जीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे एकपञ्चाशत् तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीय मुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंशत् कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायम्भुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेता, द्वापर कलि संज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे (पादे) चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादि षष्टि संवत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे श्रीमन्नूपति विक्रमार्काद अमुक संख्याके सम्वत्सरे उत्तरगोलावलम्बिनी श्रीमार्तण्ड मण्डले अमुक ऋतौ अमुक मासे, अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशिस्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते सूर्ये, अमुक राशिस्थिते देव गुरौ शेषेषु

ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ अमुकगोत्रः अमुक शर्माऽहं (वर्माऽहं गुप्तोऽहं वा) मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा बाल्य यौवन वार्द्धक्य अवस्थासु वाक्पाणि पाद-पायूपस्थ प्राण-रसना-चक्षुः-स्पर्शन-श्रोत्र-मनो बुद्धिभिः चरितानां ज्ञाताज्ञात कामाकाम महापातक उपपातक सञ्चितानां पापानां ब्रह्महनन सुरापान सुवर्णस्तेय गुरुतल्पगमन तत्संसर्गरूप महापातकानां गोहनन स्तेयकरण नरेन्द्राज्ञा भङ्ग श्रोत्रिय विप्रादिमान भङ्ग बुद्धिपूर्वक बहुकाल अधीत अभ्यस्त शास्त्र विस्मरणादिनाम् उपपातकानां च, स्पृष्टास्पृष्ट सङ्करीकरण मलिनीकरण अपात्रीकरण जातिभ्रंशकरण विहिताकरण कर्मलोपजनितानां, रसविक्रय कन्या विक्रय हयविक्रय गोविक्रय खरोष्ट्रविक्रय दासीविक्रय अजादि पशुविक्रय स्वगृहविक्रय नीलीविक्रय अक्रेय विक्रय पण्य विक्रय जलचरादि जन्तुविक्रय स्थलचरादि विक्रय खेचरादिविक्रय सम्भूतानां निरर्थकाद्रवृक्षच्छेदन ऋणानपाकरण ब्रह्मस्वापहरण देवस्वापहरण राजस्वापहरण परद्रव्यापहरण तैलादिद्रव्यापहरण फलादिहरण लोहादिहरण नानाविधवस्तुहरणरूपाणां ब्राह्मणनिन्दा गुरुनिन्दा वेदनिन्दा शास्त्रनिन्दा परनिन्दा अभक्ष्यभक्षण अभोज्य-भोजन, अचोष्य-चोषण, अलेह्य लेहनापेय-पान, अस्पृश्य, स्पर्शन, अश्राव्य-श्रवण, अहिंस्य-हिंसन, अवन्द्य-वन्दनाचिन्त्यचिन्तनायाज्य-याजना, पूज्यपूजन, व्यतिक्रमण रूपाणां मातृपितृ तिरस्कार स्त्रीपुरुष प्रीतिभेदन, परस्त्रीगमन विधवागमन, दासीगमन, वेश्यागमन, चाण्डालादिहीनजाति गमन, गुद्रगमन, रजस्वलागमन, पश्वादिगमन रूपाणां पशुसमान विहरण

रूपाणां च कूट साक्षीत्व पैशुन्य वादिमध्या अपवाद म्लेच्छ सम्भाषण ब्रह्मद्वेषकरण ब्रह्मवृत्तिहरण ब्रह्मवृत्तिच्छेदन परवृत्तिहरणरूपाणां मित्रवञ्चन, गुरुवञ्चन स्वामिवञ्चन भार्यावञ्चन असत्यभाषण गर्भपातन पथिताम्बूल चर्वण, हीनजाति सेवन परान्नभोजन गणान्नभोजन गणिकान्नभोजन लशुनभक्षण, पलाण्डुभक्षण, गृञ्जनभक्षण, तालवृक्षभक्षण, उच्छिष्टभक्षण पर्य्युषितान्नभक्षण रूपाणां पंक्तिभेदकरण भ्रूणहिंसा पशुहिंसा बालहिंसा पिपीलिकादि जन्तु हिंसा पक्षिहिंसा स्त्रीहिंसादि अनेक हिंसोद्धृतानां, शौचत्याग, स्नानत्याग, सन्ध्यात्याग उपासना त्याग अग्नि त्याग, वैश्वदेव त्याग रुपाणां निषिद्धाचरण, कुग्रामवास ब्रह्मद्रोह, गुरुद्रोह, परद्रोह, पितृद्रोह, मातृद्रोह, परनिन्दात्म स्तुति दुष्टप्रतिग्रह दुर्जनसंसर्ग रूपाणां गोयान वृषभयान महिषयान गर्दभयान उष्ट्रयान अजयानादि दुर्यानारोहण भृत्याभरण स्वयामत्याग गोत्रत्याग, कुलत्याग, दूरस्थमन्त्रण विप्राशाभेदना वन्दिताऽशीर्वाद ग्रहण पतित सम्भाषण रुपाणां पतितजन पंक्ति भोजनाहः सङ्गमवृथामनोरथ आदिपापानां आत्मार्थं पाककरणैकाकी मिष्ठान्नभोजन बालकादि सह भोजनात्म स्त्रीसह भोजनेत्यादि प्रकीर्णपातकानां एतत्कालपर्यन्तं नानायोनिषु अद्य अवधि कृतानाम् परभयोत्पादनादि प्रकीर्ण पातकानां, एतत्कालपर्यन्तं सञ्चितानाम् आर्द्र शुष्क गुरुलघु स्थूल सूक्ष्माणां पापानां च निःशेष परिहारार्थं सहस्र गोदान कुरुक्षेत्रादि सर्वतीर्थ स्नानजन्य फल प्राप्त्यर्थं मम समस्त पितृणां आत्मनश्च विष्णवादि लोकप्राप्तये अधीतानां-मध्येष्यमाणानां चाध्यायानां स्थापन-विच्छेद-क्रोश-घोषण-दन्त विवृत्तिदुर्वृत्त द्वृतोच्चारिवर्णानां पूर्वसर्णानां गलोपलम्बित

विवृतोच्चारित वर्णानां शिलष्टास्पष्टवर्ण विघट्टनादिभिः पठितानां श्रुतीनां यद्यातयामत्वं तत् परिहारार्थम् अष्टात्रिंशदनध्यायाध्ययने रथ्यासञ्चरतः शुद्रस्य म्लेच्छान्त्यजादेवी शृणवतोऽध्ययने, अशुचिदेशेऽध्ययने आत्मनः अशुचित्वेऽध्ययने, अक्षरस्वरानुसार पदच्छेद कण्डिका व्यञ्जन ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत-कण्ठ-तालु मूर्घन्य औछ्य दन्त्य नासिका-अनुस्वारअनुनासिकरेफ जिह्वामूलीय उपध्मानीय उदात्त अनुदात्त स्वरित लक्ष्ण जाति गोत्र प्रयत्नोच्चारणे माधुर्य अक्षरव्यक्ति हीनत्वादि अनेक प्रत्यवाय परिहारपूर्वकं सर्वस्य वेदस्य सवीर्य्यत्व सम्पादन द्वारा यथावत्फल प्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं च (देव ब्राह्मण सिवतृ सूर्यनारायण सन्निधौ गङ्गा भागीरथ्याममुकतीर्थे काशी तीर्थे तडागे वा प्रवाहाशिमुखे (सूर्याभिमुखो वा) नाभिमात्र जले अध्यायोत्सर्ग उपाकर्म निमित्तं गणस्नानमहं करिष्ये।।) अमुक कर्माऽहं करिष्ये।

इति हेमाद्रिः संङ्कल्यः सम्पूर्णम् ।

# पार्थिव-पूजन

हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर स्वस्त्ययन (स्वस्तिवाचन) तथा गणपित स्मरण करें। इसके बाद दाहिने हाथ में कुश, पुष्प, अक्षत, जल और द्रव्य रखकर संकल्प करें। सकाम संकल्प-

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ..... मम सर्वारिष्टनिरसन पूर्वक सर्वपापक्षयार्थं दीर्घ आयुरारोग्य धनधान्य पुत्रपौत्रादि समस्त सम्पत्प्रवृद्ध्यर्थं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्यर्थं श्रीसाम्बसदाशिव प्रीत्यर्थं पार्थिव लिङ्ग पूजनं अहं करिष्ये। निष्काम संकल्प-

विष्णुर्विष्णुः अद्य ..... श्री परमात्म प्रीत्यर्थं पार्थिव लिङ्ग पूजनं अहं करिष्ये। भूमि प्रार्थना

हाथ में अक्षत पुष्प लेकर भूमि की प्रार्थना करें। सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपां मृत्तिका मिमाम्। प्रहीष्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे।। हाँ पृथिव्यै नमः।

मिट्टी ग्रहण-

मिट्टी को हाथ में लेकर अच्छी तरह कंकड़ इत्यादि निकाल दें। उद्धतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। मृत्तिके त्वां च गृह्वामि प्रजया च धनेन च।। हराय नमः (यह मंत्र पढ़कर हाथ में मिट्टी लें)

लिङ्ग गठन-

महेश्वराय नमः

प्रतिष्ठा-

शूलपाणये नमः, हे शिव इह प्रतिष्ठितो भव। विनियोग करें—

अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता ओङ्कारो बीजम् , नमः शक्ति, शिवाय इति कीलकम् मम साम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं न्यासे पार्थिव लिङ्ग पूजने जपे च विनियोगः।

विनियोग करने के बाद अपने और देवता को दूर्वा अथवा कुश से स्पर्श करते हुए तत्तद् अङ्गों में न्यास करें।

ऋष्यादिन्यासः -

ॐ वामदेवर्षये नमः। (शिरसि)

```
ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः। (मुखे)
    ॐ सदाशिवदेवतायै नमः। (हृदि)
    🕉 बीजाय नमः। (गुह्ये)
    ॐ शक्तये नमः। (पादयोः)
    ॐ शिवाय कीलकाय नमः। (सर्वाङ्गे)
    ॐ नं तत्पुरुषाय नमः। (हृदये)
    ॐ मं अधोराय नमः। (पादयोः)
   ॐ शिं सद्योजाताय नमः। (गृह्ये)
    ॐ वां वामदेवाय नमः। (मूर्ध्न)
   ॐ यं ईशानाय नमः। (मुखे)
करन्यासः-
    ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः।
    ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः।
    ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः।
    ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः।
    ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
    ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
षडङ्गन्यासः---
    ॐ हृदयाय नमः ।
    ॐ नं शिरसे नम:।
    ॐ मं शिखायै वषट्।
    ॐ शिं कवचाय हुम।
    ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्।
    ॐ यं अस्त्राय फट् नमः ।
ध्यानम्-
```

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतिगिरिनिभं चारु चन्द्रावंतस। रत्नाकल्पोज्वलाङ्ग परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।

पद्माशीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं। विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।। ॐ नागाधीश्वरिवष्टरां फणिफणोत्तंसोरूरत्नावली। भास्वद् देहलतां दिवाकरिनभां नेत्रत्रयोद्धासिताम्। माला-कुम्भ-कपाल-नीरजकरां चन्द्रार्धचूड़ां। परां, सर्वज्ञेश्वर भैरवाङ्किनलयां पद्मावतीं चिन्तये।।

विनियोग-हाथ में जल लेकर विनियोग करें तथा जल भूमि पर छोड़ दें।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आँ वीजं हीं शक्तिः क्रौ कीलकं देव (देवी) प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

#### प्राण-प्रतिष्ठा

हाथ में पुष्प लेकर मूर्ति पर स्पर्श करें।

ॐ ब्रह्मविष्णुरूद्रऋषिभ्यो नमः। - (शिरिस)

ॐ ऋग्यजुः सामच्छन्दोभ्यो नमः। - (मुखे)

ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः। - (हृदि)

ॐ आँ बीजाय नमः। - (गुह्ये)

ॐ ह्रीं शक्त्यै नमः। – (पादयोः)

ॐ क्रौ कीलकाय नमः। - (सर्वाङ्गेषु)

इस प्रकार न्यास करके पुन: पार्थिव लिङ्ग का स्पर्श करें।

ॐ आँ हीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य प्राणा इह प्राणा:।

ॐ आँ हीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शाँ षँ सँ हैं सः सोऽहं शिवस्य जीव इह स्थित:।

ॐ आँ हीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शाँ षँ सँ हैं सः सोऽहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुऽ श्रोत्रघ्राणिजह्वापाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

प्राण-प्रतिष्ठा करने के पश्चात् हाथ में अक्षत (चावल) लेकर आवाहन करें।

ॐ भूः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।

ॐ भूवः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।

ॐ स्वः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।

ॐ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत्वम्प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।।

आवाहन करने के बाद भगवान् शंकर (पार्थिव) जी का यथा विधि पूजन करें तथा पूजन कर प्रार्थना करें।

### प्रार्थना

ॐ भूत्यालेपनभूषितः प्रविलसन्नेत्राग्निदीपाङ्कुरः। कण्ठे पन्नगपुष्पदामसुभगो गङ्गाजलैः पूरितः। ईषत्ताम्रजटाऽग्रपल्लवयुतो न्यस्तो जगन्मण्डपे। शुम्भुर्मङ्गलकुम्भतामुपगतो भूयात्सतां श्रेयसे॥ ॐ आत्मा त्वं गिरिजामितः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं। पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः। सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्तोत्राणिसर्वा गिरो। यद्यत्कर्म करोमि तत्तदिखलं शम्भो तवाराधनम्॥

### क्षमापनम्

करचरणकृतं वाकायजं कर्मजं वा। श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विहितं विहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व। जय जय करूणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।

गणेशाय नमः हर हरे महादेव अन्नपूर्णा देव्यै नमः।

# ब्रह्मादि-शाप-विमोचनम्

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीचिण्डकाया ब्रह्म-विसष्ठ-विश्वामित्रशाप-विमोचन-मन्त्रस्य विसष्ठ-नारद-संवाद-सामवेदाधिपति-ब्रह्माण-ऋषयः सर्वेश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गादेवता चिरत्रत्रयं बीजं हीं शक्तिः त्रिगुणात्मस्वरूप-चिण्डकाशाप-विमुक्तौ मम सङ्गल्पितकार्य-सिब्ह्यर्थं जपे विनियोगः।

#### पाठ:-

ॐ (ह्रीं) रीं रेतःस्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्म-वसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १॥

ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्म-विसष्ठिवश्चामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ २॥

ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ३॥

ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥४॥

ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥५॥

ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥६॥

ॐ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥७॥

ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ८॥

ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ ९॥ ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ. विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १०॥

ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मवसिष्ठः विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥११॥

ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १२॥

ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवसिष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १३॥

ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै ब्रह्म-विसष्ठिवश्चामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १४॥

ॐ हीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्चर्यकारिण्यै ब्रह्म-विसष्ठ-विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १५॥

ॐ ऐं हीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै ब्रह्मविसष्ठिवश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥ १६॥

ॐ क्रीं काल्यै कालि हीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मविसष्ठिविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१७॥

ॐ ऐं हीं क्लीं महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-स्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः॥ १८॥

फलश्रुतिः इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वर!। चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशयः।।१९॥ एवं मन्त्र न जानाति चण्डीपाठं करोति यः। आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः।।२०॥

इति रुद्रयामले ब्रह्मादि-शापविमोचनं समाप्तम्।

# अथ देव्याः कवचम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्री चण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्ध-देवता- स्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः । ॐ नमश्चण्डिकायै ।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्। यत्र कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह॥१॥ ब्रह्मोवाच

गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपंकारकम्। अस्ति देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने॥२॥ प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी। तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥३॥ पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च। सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥४॥ नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः। उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना॥५॥ अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे। विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः॥६॥ न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसङ्कटे। नापदं तस्य पश्यामि शोक-दुःख-भयं न हि॥७॥ यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते। ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः॥८॥ प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना। ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना॥ १॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारीशिखिवाहना। लक्ष्मी: पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया॥१०॥

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना। ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरण-भूषिता॥११॥ इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः। नानाभरण-शोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः॥१२॥ दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः। शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्।।१३॥ खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च। कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्॥१४॥ दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च। धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै॥१५॥ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोर-पराक्रमे। महाबले महोत्साहे महाभय-विनाशिनि॥१६॥ त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि। प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता॥१७॥ दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी। प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी॥१८॥ उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी। ऊर्ध्वं ब्रह्माणि में रक्षेदघस्ताद् वैष्णवी तथा।।१९॥ एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना। जया मे चात्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥२०॥ अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता। शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्धिन व्यवस्थिता॥२१॥ मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी। त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके॥२२॥ शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोद्वरिवासिनी। कपोलौ कालिका रक्षेत् कर्णमूले तु शाङ्करी॥२३॥

निसकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका। अधरे चामृतकला जिह्नायां च सरस्वती॥२४॥ दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका। घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके॥२५॥ कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला। ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी॥२६॥ नीलग्रीवा बहिः कण्ठे निलकां नलकूबरी। स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी॥२७॥ हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च। नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत् कुक्षौ रक्षेत् कुलेश्वरी॥२८॥ स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी। हृदये लिलता देवी उदरे शूलधारिणी॥२९॥ नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्यं शुह्येश्वरी तथा। पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी॥३०॥ कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी। जङ्घे महाबला रक्षेत् सर्वकामप्रदायिनी॥३१॥ गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी। पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत् पादाधस्तलवासिनी॥३२॥ नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी। रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा।। ३३॥ रक्त-मज्जा-वसा-मांसान्यस्थि-मेदांसि पार्वती। अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी॥३४॥ पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा। ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु॥३५॥ शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा। अहङ्कारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी॥३६॥

प्राणापानौ तथा व्यान्मुदानं च समान्कम्। वज्रहस्ता च मे रक्षेत्राणं कल्याणशोभना॥३७॥ रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी। सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेत्रारायणी सदा॥३८॥ आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी। यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी॥३९॥ गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत् पशून्मे रक्ष चण्डिके। पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी॥४०॥ पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा। राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता॥४१॥ रक्षाहीनं तु यत् स्थानं वर्जितं कवचेन तु। तत्सर्वं रक्ष मे देवि! जयन्ती पापनाशिनी॥४२॥ पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः। कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति॥४३॥ तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः। यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्॥४४॥ परमैश्चर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्। निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः॥४५॥ त्रैलोक्ये तु भवेत् पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्। इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्॥४६॥ यः पठेत् प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः। दैवीकला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः॥४७॥ जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः। नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता-विस्फोटकादयः॥४८॥ स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चाऽपि यद्विषम्। अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्र-यन्त्राणि भूतले॥४९॥

भूचराः खेचराश्चेव जलजाश्चोपदेशिकाः। सहजाः कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा॥५०॥ अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः। ग्रह-भूत-पिशाचाश्च यक्ष-गन्धर्व-राक्षसाः॥५१॥ ब्रह्म-राक्षस-वेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः। नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते॥५२॥ मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्। यशसा वर्धते सोऽपि कीर्ति-मण्डित-भूतले॥५३॥ जपेत् सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा। यावद् भूमण्डलं धत्ते स-शैल-वन-काननम्॥५४॥ तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्र-पौत्रिकी। देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्॥५५॥ प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः। लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते।।ॐ॥५६॥ ।। इति वाराहपुराणे हरिहर-ब्रह्म-विरचितं देव्याः कवचं सम्पूर्णम् ॥

अर्गलास्तोत्रम्

विनियोग:-ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवताः, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः। ॐ नमश्रण्डिकायै।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥१॥
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥२॥
मधु-कैटभ-विद्रावि विधातृवरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥३॥

महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥४॥ रक्तबीजवधे देवि चण्ड-मुण्ड-विनाशिनि। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥५॥ शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥६॥ वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जिहा। ७॥ अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥८॥ नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१॥ स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चिण्डके व्याधिनाशिनि। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१०॥ चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥११॥ देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१२॥ विदेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकै:। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१३॥ विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जिहा।१४॥ सुरासुर - शिरोरत्न - निघृष्ट - चरणेऽम्बिके। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१५॥ विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१६॥

प्रचण्ड-दैत्य-दर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१७॥ चतुर्भुजे चतुर्वकत्र-संस्तुते परमेश्वरि। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१८॥ कृष्णेन संस्तुते देवि शश्चद्भक्त्या सदाम्बिके। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१९॥ हिमाचल-सुतानाथ-संस्तुते परमेश्वरि। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥२०॥ इन्द्राणीपतिसद्भाव-पूजिते परमेश्वरि। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥२१॥ देवि प्रचण्ड-दोर्दण्ड-दैत्यदर्प-विनाशिनि। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥२२॥ देवि भक्तजनोद्दाम-दत्तानन्दोदयेऽ'म्बिके। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥२३॥ पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्। तारिणीं दुर्गसंसार-सागरस्य कुलोद्भवाम्॥२४॥ इदं स्तोत्रं पठित्वां तु महास्तोत्रं पठेन्नरः। स तु सप्तशतीसंख्या-वरमाप्नोति सम्पदाम्॥२५॥ इति श्रीदेव्या अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

## कीलकस्तोत्रम्

विनियोग:-ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहासरस्वती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।।

मार्कण्डेय उवाच

विशुद्ध-ज्ञान-देहाय त्रिवेदी-दिव्यचक्षुषे। श्रेयः प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे॥१॥ सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामपि कीलकम्। सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः॥२॥ सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि। एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिब्ह्यति॥३॥ न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते। विना जाप्येन सिद्ध्येत् सर्वमुच्चाटनादिकम्॥४॥ समग्राण्यपि सिब्ह्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः। कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेविमदं शुभम्॥५॥ स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः। समाप्नोति सु न पुण्ये तां यथावन्नियन्त्रणाम्।।६॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेवं न संशयः। कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः॥७॥ प्रतिगृह्णाति नान्यऽथैषा प्रसीदति। इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्॥८॥ यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्। स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः॥९॥ न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायत्। नाऽपमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात्॥१०॥ ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति। ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधै:॥११॥ सौभाग्यादि च यत् किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने। तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम्॥१२॥

शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः। भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत्॥१३॥ ऐश्चर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः। शत्रुहानिःपरो मोक्षःस्तूयते सा न किं जनैः॥ॐ॥१४॥

इति श्रीभगवत्याः कीलकस्तोत्रं समाप्तम्।।

### नवार्णमन्त्र-जपविधिः

विनियोगः श्रीगणपतिर्जयित। ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, हीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे न्यासे च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ब्रह्म-विष्णु-रुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरिस। गायत्र्युष्णि-गनुष्टुप् छन्देभ्यो नमः, मुखे। महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः, हृदि। ऐं बीजाय नमः, गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः, सर्वाङ्गे।

करादिन्यास: - ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास: - ॐ ऐं हृदयाय नम:। ॐ हीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः - ॐ ऐं नमः, शिखायाम्। ॐ हीं नमः, दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे। ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः, वामकर्णे। ॐ डां नमः, दक्षिणनासायाम्। ॐ यै नमः, वामनासायाम्। ॐ विं नमः, मुखे। ॐ च्वें नमः, गुह्ये। एवं विन्यस्याऽष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्।

दिङ्न्यास:- ॐ ऐं प्राच्ये नमः, ॐ ऐं आग्नेय्ये नमः। ॐ हीं

दक्षिणायै नमः। ॐ हीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्

खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघाञ्छूलं भुशुण्डी शिरः शङ्खं संद्धतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषा वृताम्। नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्विपते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।१।। अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुःकुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।२।। घण्टा-शूल-हलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमुद्धवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-पूर्वमत्र सरस्वती-मनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।३।। ततः 'ऐं हीं अक्षमालिकायै नमः' इति मालां सम्पूज्य, प्रार्थयेत्।

्रमाला-प्रार्थना

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिण। चतुर्वर्गस्त्विय न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥१॥ अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृहणामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥२॥ तत्पश्चात् 'ॐ ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इति नवार्णमन्त्रमष्टोत्तरशतं जपेत्।

ततः — गुह्याऽतिगुह्यगोष्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्प्रसादान्महेश्चरि।। इति पठित्वा देव्या वामकरे जपं निवेदयेत्।

इति नवार्णमन्त्र-जप-विधिः समाप्ता ।

# तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगन्द्वात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्। निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः॥१॥ ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका। स्धा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता॥२॥ अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः। त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा॥३॥ त्वयैतद् धार्यते विश्वं त्वयैतत् सृज्यते जगत्। त्वयैतत् पाल्यते देवि त्वमतस्यन्ते च सर्वदा॥४॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपां त्वं स्थितिरूपा च पालने। तथा संहति-रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये॥५॥ महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः। महामोहा च भवती महादेवी महासुरी॥६॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रय - विभाविनी। कालरात्रि - र्महारात्रि-मोहरात्रिश्च दारुणा॥७॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं हीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा। लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्तवं शान्तिः क्षान्तिरेव च॥८॥ खिंड्गनी शूलिनी घोरा गदिनी चिक्रणी तथा। शिक्विनी चापिनी बाणभुशुण्डी परिघायुधा॥९॥ सौम्या सौम्यतराशेष-सौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी। पराऽपराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥१०॥ यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके। तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा॥११॥

यया त्वया जगत्त्रष्टा जगत् पात्यत्ति यो जगत्। सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः॥१२॥ शरीरत्रहणमहमीशान एव विष्णुः कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्॥१३॥ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता। मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधु-कैटभौ॥१४॥ जगत्स्वामी नीयतामच्युतो प्रबोधं च बोधश्च हन्तुमेतौ महासुरौ॥१५॥ क्रियतामस्य

इति तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तं समाप्तम्।

#### सप्तशतीन्यासः

सप्तशतीन्यास—पश्चात् सप्तशती का विनियोग, न्यास एवं ध्यान करें। विनियोग:—प्रथम-मध्यमोत्तरचित्राणां ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः,गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामयों बीजानि, अग्नि-वायु-सूर्यास्तत्त्वानि, ऋग्-यजुः-सामवेदा ध्यानानि, सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवता-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐखड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।

करन्यासः

शिङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।।

अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐशूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च।।

तर्जनीभ्यां नमः।

ॐप्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे। भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥

मध्यमाभ्यां नमः।

ॐसौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते। यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।

अनामिकाभ्यां नमः।

ॐखड्ग-शूल-गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके। करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥

किनष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।:

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

#### हृदयादिन्यासः

'ॐखड्गिनी शूलिनी घोरा॰' हृदयाय नमः। 'ॐ शूलेन पाहि नो देवि॰' शिरसे स्वाहा। 'ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च॰' शिखायै वषट्। 'ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि॰' कवचाय हुम्। 'ॐ खड्ग-शूल-गदादीनि॰' नेत्रत्रयाय वौषट्। 'ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे॰' अस्त्राय फट्। इति हृदयादिन्यासः।

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपितस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्। हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

।। इति सप्तशतान्यासः सम्पूणंन्।।

fretz

#### प्रथमोऽध्यायः (१)

विनियोगः—ॐ प्रथमचिरत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्री छन्दः, नन्दा शक्तिः, रक्तदन्तिका बीजम्, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथमचिरत्रजपे विनियोगः।

ॐखड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वोङ्गभूषावृताम्। नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाददशकां सेवे महाकालिकाम् यामस्तौत्स्विपते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥ ॐ नमश्चण्डिकायै

'ॐ ऐं' मार्कण्डेय उवाच ॥१॥ (पत्र, पुष्प, फल) सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुःकथ्यतेऽष्टमः। अर्क (मदार) निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम॥२॥ महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिप:। अर्क (मदार) स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः॥३॥ स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः। सुरथो नाम राजाऽभूत् समस्ते क्षितिमण्डले॥४॥ तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान्। अपामार्ग (शमी) बभृवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा॥५॥ तस्य तैरभवद् युद्धमितप्रबलदण्डिनः। कुशा न्यूनैरिप स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥६॥ ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत्। खैर आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः॥७॥ अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य कोशो बलं चापहृतं तत्राऽपि स्वपुरे ततः॥८॥

ततो मृगयाव्याजेन हतस्वाम्यः स भूपतिः। एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्॥९॥ स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः। तृण,कुशा,दूर्वा प्रशान्तश्चापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम्।।१०॥ तस्थौ कञ्चित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः। इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन् मुनिवराश्रमे॥११॥ सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः। मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत्।।१२॥ मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा। न जाने स प्रधानों में शूरहस्ती सदामदः॥१३॥ मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्यते। ये ममानुगता नित्यं प्रसाद-धन-भोजनै:॥१४॥ अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्। असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्धिः सततं व्ययम्॥१५॥ सञ्चितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यिति। एतच्चाऽन्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः॥१६॥ तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः। स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः॥१७॥ सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे। इत्याकणर्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम्॥१८॥ प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्॥१९॥ वैश्य उवाच ॥२०॥ पत्र, पुष्प, फल

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले॥२१॥ पुत्र-दारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः। विहीनश्च धनैदरिः पुत्रैरादाय मे धनम्॥२२॥ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाऽऽप्तबन्धुभिः। सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाऽकुशलात्मिकाम्॥२३॥ प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चाऽत्र संस्थितः। किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम्॥२४॥ कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः॥२५॥ राजोवाच॥२६॥ पत्र, पुष्प, फल

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः॥२७॥ तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम्॥२८॥ वैश्य उवाच ॥२९॥ पत्र, पुष्प, फल

एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः॥३०॥ किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः। यैः सन्त्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः॥३१॥ पितस्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः। किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते॥३२॥ यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु। तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते॥३३॥ करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम्॥३४॥

मार्कण्डेय उवाच ॥३५॥ पत्र, पुष्प, फल ततस्तौ सिहतौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ॥३६॥ समाधिनीम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः। कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथाई तेन संविदम्॥३७॥ उपविष्टौ कथाः काश्चिच्वक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ॥३८॥

राजोवाच ॥३९॥ पत्र, पुष्प, फल भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत्॥४०॥

दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना। गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि।।४९॥ जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम। अयं च निकृतः पुत्रैदिरिभृत्यैस्तथोज्झितः ॥४२॥ स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति। एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुः खितौ। ४३॥ ऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ। तिकमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरिप॥४४॥ ममास्य च भवत्येषा विवेकान्यस्य मूढता॥४५॥ त्रहिषरुवाच ॥४६॥ पत्र, पुष्प, फल ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे॥४७॥ विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक्। दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे॥४८॥ केचिद्दिवा तथा रात्रौ पाणिनस्तुल्यदृष्टयः। ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते न हि केवलम्।।४९।। यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशु-पक्षि-मृगादयः। ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम्।।५०॥ मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः। यव, ताण्डुल (चावल) ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु॥५१॥ कणमोक्षादृतान् मोहात् पीड्यमानानि क्षुघा। मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति॥५२॥ लोभात् प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि। तथापि ममतावर्ते मोहगर्ते निपातिताः॥५३॥ महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा। तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः॥५४॥

महामाया हरेश्चेषा तया सम्मोह्यते जगत्। ज्ञानिनामिप चेतांसि देवी भगवती हि सा॥५५॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति। शर्करा (चीनी) तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम्॥५६॥ सेषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये। सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी॥५७॥ संसारबन्धहेतुश्च सेव सर्वेश्वरेश्वरी॥५८॥

राजोवाच ।।५९॥ पत्र, पुष्प, फल

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान्।। ६०॥ ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज। यत्प्रभावा च सा देवि यत्स्वरूपा यदुद्भवा॥ ६१॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर॥ ६२॥

ऋषिरुवाच ।।६३॥ पत्र, पुष्प, फल

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्विमिदं ततम्॥ ६४॥ तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम। देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा॥ ६५॥ उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते। मिश्री, पुष्प योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते॥ ६६॥

पीपल का पत्ता, कमलगट्टा

आस्तीर्य शेषमभजत् कल्पान्ते भगवान् प्रभुः। तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधु-कैटभौ॥६७॥

उड़द राल, समुद्र का झाग

विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ। स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः॥६८॥

दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम्। कमलगद्दा तुष्टावः योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः ॥६९॥ विबोधनार्थाय हरेईरिनेत्रकृतालयाम्। कमलगृहा विश्वेश्वरीं जगब्दात्रीं स्थिति-संहार कारिणीम्॥७०॥

पत्र, पुष्प, फल

निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः॥७१॥ ब्रह्मोवाच ।।७२॥ हल्दी

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका॥७३॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता। दूर्वा, दर्भा अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः॥७४॥ त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा। मिश्री त्वयैतन्द्वार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।।७५॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमतस्यन्ते च सर्वदा। विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने॥७६॥ तथा संहृति रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये। गई महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः॥७७॥ महामोहा च भवती महादेवी महासुरी। राई प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी॥७८॥

लाजा, मिश्री, सहदेवी, पुष्प

कालराम्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा। त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं हीस्त्वं बुद्धिबीधलक्षणा॥७९॥ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्तवं शान्तिः क्षान्तिरेव च। खिंड्गनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा॥८०॥ शिक्विनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघायुधा। पुष्प, सुगन्धित द्रव्य सौम्यतराशेष-सौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी॥८१॥

परापराणां वरमा त्वमेव परमेश्वरी। यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके॥८२॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा। गई, हल्दी यया त्वया जगत्त्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्॥८३॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः। जायफल, भांग विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च॥८४॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्। सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता॥८५॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधु-कैटभौ। प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु॥८६॥ पत्र, पुष्प, फल

बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ॥८७॥ ऋषिरुवाच ॥८८॥ कमलगट्टा, रक्त, गुंजा

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा॥ ८९॥ विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधु-कैटभौ। नेत्रास्य - नासिका-बाहु - हृदयेभ्यस्तथोरसः॥९०॥ निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः। उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः॥९१॥ एकार्णवेऽहिशयनात्ततः ददृशे च तौ। स मधु-कैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ॥९२॥ क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ। समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरि:॥९३॥ पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः। राई तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ॥९४॥ उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तौ ब्रियतामिति केशवम्॥९५॥

श्रीभगवानुवाच ।।९६।। पत्र, पुष्प, फल

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभाविप॥१७॥ किमन्येन वरेणात्र एताविद्ध वृतं मम॥१८॥ ऋषिरुवाच॥१९॥ कपूर

विञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत्।।१००॥ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः। कमलगट्टा आवां जहि न यत्रोवीं सलिलेन परिप्लुता।।१०१॥

ऋषिरुवाच ।।१०२।। पत्र, पुष्प, फल

कुशा, शंखपुष्पी, गूगल, पान, मधु, केला

तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्ख-चक्र-गदाभृता। कृत्वा चक्रेण वैच्छिन्ने जघने शिरसी तयोः॥१०३॥ एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्। पुष्प प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते॥ ऐं ॐ॥१०४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधु-कैटभवधो नाम प्रथमोऽध्याय: ।।१।। उवाच १४,अर्धश्लोका २४,श्लोकाः ६६ एवमादित: ।।१०४।।

#### विशेषाहुति (महाहुति)-

अध्याय पूरा होने पर इस प्रकार आहुति देवें—एक पान पर पुड़ी, खीर या हलुवा, सुपाड़ी, लौंग, इलायची, केला, कमलगट्टा, मधु-गुग्गुल इत्यादि ले, उसे घी से भिगोये, स्नुचि में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र से आहुति दे—

3% नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम।।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बिलिके न मो नयित कश्चन ससंस्त्यधकः सुधिद्रिद काङ्काम्पील वासिनीम्॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सवाहनायै सायुधायै वाग्भव बीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै भहाहुति समर्पयामि नमः स्वाहा। ३८० सम्पूर्ण पूजन एवं यज्ञविधिः इसके बाद पाँच बार स्तुवे से घी की आहुति देवे।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बोलिके न मौ नयित कश्चन ससंस्त्यश्वकः सुभद्रिद काङ्काम्पील वासिनीम् स्वाही॥ ॐ घृतं घृतपावानः पिबत् वसां वसापावानः पिबतांतरिक्षस्य हुवि रिम् स्वाही। प्रदिशंऽआदिशों विदिशंऽ उद्दिशों दिग्भ्यः स्वाहां॥

ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा, ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।

#### द्वितीयोऽध्यायः (२)

विनियोगः - ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुऋषिर्महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेदः स्वरूपम्, श्रीपहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रजपे विनियोगः।

ॐ अक्ष-स्रक्-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धुनुष्कुण्डिकां <sup>भ</sup> दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥

'ॐ हीं' ऋषिरुवाच ।।१।। पत्र, पुष्प,फल

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा। गुगल महिषेऽसुराणामिधपे देवानां च पुरन्दरे॥२॥ तत्रासुरैर्महावीयैर्देवसैन्यं पराजितम्। जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः॥३॥ ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्। पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ॥४॥ यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्। त्रिदशा: कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम्॥५॥

सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्द्रनां यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति॥६॥
स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना॥७॥
एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो दधस्तस्य विचिन्त्यताम्॥८॥
इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ॥९॥
ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्तत।

नीम गिलोय, जायफल, आवला

निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शङ्करस्य च॥१०॥ अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः। निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत॥११॥ अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्। कपूर ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम्॥१२॥ अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्। एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा॥१३॥ यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम। जटामाँसी, विष्णुक्रांता याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा॥१४॥ सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्। आप्रफल वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः॥१५॥ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा। वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका॥१६॥ तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा। कपूर नयनित्रतयं जज्ञे तथा पावकतेजसा॥१७॥

भ्रवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च। रक्तवन्त अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा॥१८॥ ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्। तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिता: ॥१९॥ शूलं शूलाद् विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्। लींग चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः॥२०॥ शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः। शंखपुषी मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी॥२१॥ वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः। लींग ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात्॥२२॥ कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ। प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्॥ २३॥ समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः। कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम्॥ २४॥ क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे। पुष चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च॥२५॥ अर्घचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु। नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम्॥२६॥ अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च। विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम्॥२७॥ अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्। कपूर, पुष अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम्॥२८॥ अददज्जलिधस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्। पुष्प, कमलगृहा हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च॥२९॥

द्दावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिप:। मधु शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम्॥३०॥ नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्। अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा॥३१॥ सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः। तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः॥३२॥ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्। चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे॥३३॥ चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः। जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम्॥ ३४॥ तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्ति-नम्रात्म-मूर्तयः। दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः॥३५॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः। आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः॥३६॥ अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः। स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा॥३७॥ पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखताम्बराम्। क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिः स्वनेन ताम्॥३८॥ दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्। ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम्॥३९॥ शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपित-दिगन्तरम्। महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुर:॥४०॥ युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः। रथानामयुतै:, षड्भिरुदग्राख्यो महासुर:॥४१॥

अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः। पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुर:॥४२॥ अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे। गज-वाजि - सहस्रौधैरनेकैः परिवारितः॥४३॥ वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत। विडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतै:॥४४॥ युयुघे संयुगे तत्र रथानां परिवारित:। शंख अन्ये च तत्रायुतशो रथ-नाग-हयैर्वृताः॥४५॥ युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः। गदा कोटि-कोटि-सहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा॥४६॥ हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुर:। तोमरैभिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा॥४७॥ युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशु-पट्टिशैः। केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे॥४॥ देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः। सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका॥४९॥ लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी। अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभि:॥५०॥ मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी। सोऽपि कुन्हो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी॥५१॥ चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः। निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका॥५२॥ त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः। युयुधुस्ते परशुभिभिन्दिपालासि-पट्टिशै:॥५३॥

नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः। अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे॥५४॥ मुदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे। ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभि:॥५५॥ खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्। पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान्।।५६॥ असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्। हरताल केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे॥५७॥ विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते। वेमुश्च केचिद् रुधिरं मुसलेन भृशं हताः॥५८॥ केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि। निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे॥५९॥ श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः। सरसो केषाञ्चिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे॥६०॥ शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः। विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्या महासुराः ॥६१॥ एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद् देव्या द्विधा कृताः। छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥६२॥ कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः। कटहल ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥६३॥ कबन्धाश्छित्रशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः। तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः॥६४॥ पातितै रथनागाश्वेरसुरैश्च वसुन्धरा। अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः॥६५॥ सं.पू.य.वि. १३

महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवु:। शोणितौघा चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम्॥६६॥ क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका। दर्भा, कपूर, गई क्षयं यथा वहिस्तृणदारुमहाचयम्॥६७॥ महानादमुत्पृजन्धुतकेसरः। केशर सिंहो च विचिन्वति॥६८॥ शरीरेश्योऽमरारीणामसूनिव देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरै:। पुष्प, गुगुल, बिल्वपत्र पुष्पवृष्टिमुचो दिवि।।ॐ॥६१॥ तुतुषुर्देवाः यथैषां

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

उवाच १,श्लोकाः ६८,एवम् ६९,एवमादितः ॥१७३॥

#### विशेषाहुति (महाहुति)-

पान के पत्ते पर पूड़ी, खीर, हलुवा, लौंग, इलायची, सुपारी, मधु, केला, गुगुल, कमलगट्टा एवं हवन सामग्री सहित स्रुवा में रखकर घी में भिगोकर खड़े होकर आहुति देवे।

मन्त्र—ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रवताः स्मताम।।

ॐ श्रीश्च्चे ते लृक्ष्मीश्च्च पत्त्यावहोराञ्जे पाश्वे नक्षित्राणि रूपमृश्चिनौ ळ्यात्तम्। हृष्णिन्निषाणाुमुं मे उइषाण सर्व्वलोकम्मे उइषाण॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सवाहनायै सशक्तिकायै सायुधायै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिठात्र्यै श्रीमहालक्ष्म्यै महाहुर्ति समर्पयामि नमः स्वाहा।

पाँच बार खुवा से बी की आहुति देवे।

१. ॐ प्राणाय स्वाहा, २. ॐ व्यानाय स्वाहा। ३. ॐ अपानाय स्वाहा, ४. ॐ समानाय स्वाहा, ५. ॐ उदानाय स्वाहा।

#### तृतीयोऽध्यायः (३)

ध्यानम्

ॐ उद्यद्धानु-सहस्रकान्तिमरुण-क्षौमां शिरोमालिकां रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्। हस्ताब्जैर्द्धतीं त्रिनेत्र-विलसद् वक्त्रारविन्दश्रियं देवीं बद्ध-हिमांशु-रत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ।।१।। पत्र, पुष्प, फल

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुर:। सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद् ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्॥२॥ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः। यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः॥३॥ तस्यच्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्। जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम्॥४॥ चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्। विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगै:॥५॥ सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्चो हतसारथिः। अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः॥६॥ सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि। आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान्॥७॥ तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन। ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचन॥८॥ चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः। कपूर जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बिमवाम्बरात्॥९॥ दृष्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्जत। लौग, कागजी नीबू तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुराः॥१०॥

325 हते तस्मिन् महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ। गुग्गुल आजगाम गजारूढश्चामरिस्रदशार्दनः॥११॥ सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिकाद्वतम्। हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम्॥१२॥ भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वित:। चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत्॥१३॥ ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः। बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा॥१४॥ युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान् नागान् महीं गतौ। युयुधातेऽसिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणै:॥१५॥ ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा। करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक् कृतम्॥१६॥ उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः। पालक, सोवा, शिलाजीत दन्तमुष्टितलैश्चेव करालश्च निपातितः॥१७॥ देवी कुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्। चिचिड़ी, सोवापालक वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम्॥१८॥ उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्। लौंग त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी॥१९॥ बिडालस्यासिना कायात् पातयामास वै शिरः। सरसी दुर्घरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम्॥२०॥ एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः। माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्॥ २१॥ कांश्चितुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्। लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छङ्गाभ्यां च विदारितान्॥२२॥

कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च। वेगेन निःश्वास-पवनेनान्यान् पातयामास भूतले॥२२॥ निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः। सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका॥ २४॥ सोऽपि कोपान् महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः। बड़ा (उड़द) शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च॥२५॥ वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत। लाङ्गलेनाहतश्चाब्धः प्लावयामास सर्वतः॥ २६॥ धृतशृङ्ग-विभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः। सिंघाड़ा श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः॥२७॥ इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्। दृष्ट्वा सा चिण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत्।।२८॥ सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्। हरताल तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे॥२९॥ ततः सिंहोऽभवत् सद्यो यावत् तस्याम्बिका शिरः। छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत॥३०॥ तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकै:। तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः॥३१॥ करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च। कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत॥३२॥ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः। तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम्॥३३॥ ततः कुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्। मधु, पान, गुड़, दूध पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना॥३४॥

सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः। चासुरः विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान्॥३५॥ तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करै। मदोद्धृतमुखरागाकुलाक्षरम्॥३६॥ उवाच

देव्युवाच ।।३७।। पत्र, पुष्प, फल

मधु, आसव, पत्र, पुष्प, फल

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत् पिबाम्यहम्। त्विय हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः॥३८॥

ऋषिरुवाच ।।३९।। पत्र, पुष्प, फल

एवमुक्तवा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्। सरसो पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्।।४०॥ ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः। अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः॥४१॥ काली मिचई उड़द, लौकी

अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुर। महासिना देव्या शिरिशछत्त्वा निपातितः ॥४२॥ हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः॥४३॥ पत्र, पुष्प, गुलाल, पान, सुपारी

सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभि:। जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ॐ॥४४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥ उवाच ३,श्लोकाः ४१,एवम् ४४,एवमादितः ॥२१७॥

#### विशेषाहुति (महाहुति)-

पान के पत्ते पर पूड़ी, हलुवा, खीर, सुपाड़ी, लौंग, इलायची,

माष (उड़द), दिध, चंदन, कमलगट्टा, मधु, गुग्गुल, पत्र, पुष्प, फल सहित स्रुवा में घी भरकर आहुति देवे।

मन्त्र- ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

ॐ श्रीशच्चे ते ल्क्ष्मीशच्च पत्चावहोराञ्चे पाश्वें नक्षित्राणि रूपमृश्यिनौ व्यात्तम्। इष्णित्रिषाणामुं मे ऽइषाण सर्व्वलोकम्मे ऽइषाण स्वाहा॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सवाहनायै सशक्तिकायै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिठात्र्यै श्रीमहालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

पाँच बार स्रुवा से घी की आहुति देवे।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बलिके न मा नयति कश्चन ससंस्त्यश्वकः सुभद्रिद काङ्काम्पील वासिनीम् स्वाहा।। ॐ घृतं घृतपावानः पिबत् वसा वसापावानः पिबतांतरिक्षस्य हुवि रिम् स्वाहा। दिशाः प्रदिश्रिऽआहिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा, ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।

# चतुर्थोऽध्यायः (४)

कालाभ्राभां कटाक्षैरिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां शृद्धं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्ती त्रिनेत्राम्। सिंहस्कन्थाधिरूढां त्रिभुवनमिखलं तेजसा पूरयन्तीं ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपिरवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।।

नोट: चतुर्थ अध्याय के सभी मन्त्रों में पायस (खीर) युक्त शाकल्य से आहुति देवें।

ऋषिरुवाच ॥१॥ पत्र, पुष्प, फल

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन् दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।

तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा

वाग्भिः प्रहर्ष-पुलकोद्गम-चारुदेहाः॥२॥

देव्या यया ततिमद्ं जगदात्मशक्त्या (कदलीफल)

निश्शेष-देवगण-शक्तिसमूह-मूर्त्या।

तामम्बिकामखिल-देव-महर्षि-पूज्यां

भक्त्या नताः स्म विद्धातु शुभानि सा नः॥३॥

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो

ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।

सा चण्डिकाखिल-जगत्परिपालनाय

नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु॥४॥

(पुष्प, बिल्वफल विष्णुक्रांत)

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः

पापात्मनां कृतिधयां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥५॥

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्

किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।

किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि

सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु॥६॥

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै- (बिल्वपत्र)

र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।

सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत -

मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या॥७॥

यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन (हलुवा, पक्वान्न, श्वेत चंदन) तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि। स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-

रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च॥८॥ या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्व-

मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारै:। मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त - समस्त-दोषै-

र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि॥९॥ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-

मुद्गीथरम्य-पदपाठवतां च साम्नाम्। देवी त्रयी भगवती भवभावनाय

वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री।।१०॥ मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा (ब्राह्मी कपूर) दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।

श्रीः कैटभारि-हृदयैक-कृताधिवासा

गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा॥११॥

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र- (बिजौरा)

बिम्बानुकारि कनकोत्तम-कान्ति-कान्तम्।

अत्यद्धतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि

वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण॥१२॥ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रृकुटी-कराल-

मुद्यच्छशाङ्क-सदृश-च्छवि यन्न सद्यः।

प्राणान् मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन॥१३॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय (लाल कनेर, पुष्प) सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।

विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-

न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य॥१४॥

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां

तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।

घन्यास्त एव निभृतात्मज-भृत्य-दारा

भवती प्रसन्ना॥१५॥ येषां सदाभ्युदयदा

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-

ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृतिं करोति।

स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादात्

लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन॥१६॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः

स्वस्थैः स्मृता मितमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या

सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता॥१७॥

एभिहतैर्जगदुपैति सुखं तथैते

कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।

संश्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु

मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि॥१८॥ दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म

सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्।

लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता

इत्यं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी॥१९॥

खड्ग-प्रभा-निकर-विस्फुरणैस्तथोग्रैः शूलाग्र-कान्ति-निवहेन दृशोऽसुराणाम्।

यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-

योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्॥२०॥ दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं

रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।

वीर्यं च हन्तृ हतदेवपराक्रमाणां

वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्॥२१॥

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य

रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।

चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा

त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि॥२२॥

(कमलगट्टा, लाल कनेर, सीताफल)

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा। नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-

मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते॥२३॥
शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥२४॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥२५॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥२६॥
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥२७॥

त्रदृषिरुवाच ॥२८॥ (पत्र, पुष्प, फल)

(पुष्प, लाल चन्दन, हरिद्रा, सुगन्धित द्रव्य)

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः। अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः॥२९॥ भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैधूपैस्तु धूपिता। (अष्टांग धूप, गुगुल) प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान्॥३०॥ देव्युवाच ॥३१॥ (पत्र, पुष्प, फल)

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम्॥३२॥ देवा ऊचुः ॥३३॥

(पत्र, पुष्प, फल) भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदविशष्यते॥३४॥ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः। (गुगुल, जायफल) यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्चरि॥३५॥ (पंचमेवा, पायस, गुलकंद, मिश्री, पुष्प, फल)

संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः। यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने॥३६॥ (पत्र, पुष्प, फल, बिल्वपत्र)

तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धन-दारादि-सम्पदाम्। वृद्धयेऽस्मत्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके॥३७॥

ऋषिरुवाच ॥३८॥

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः। (पुष्प)
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप॥३९॥
इत्येतत् कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी॥४०॥
पुनश्च गौरीदेहात् सा समुद्भूता यथाभवत्। (भोजपत्र, रक्त कनेर)
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भ-निशुम्भयोः॥४९॥

(पुष्प, आँवला, मधु, धूप) रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी। तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते॥ ह्रीं ॐ॥४२॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्याय: ॥४॥

उवाच १,अर्धश्लोकौ २,श्लोकाः ३५,एवम् ४२,एवमादितः ॥२५९॥ महाहुति—

पान के पत्ते पर पूड़ी, हलुवा, खीर, सुपाड़ी, लौंग, इलायची, माष, दिध, चंदन, कमलगट्टा, मधु, गुग्गुल, पत्र, पुष्प, फल सहित स्रुवा में घी भरकर आहुति देवे।

मन्त्र- ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

ॐ श्रीशच्चे ते लृक्ष्मीशच्च पत्चिवहोराञ्जे पाश्चर्वे नक्षेत्र्ञाणि रूपमृश्चिनौ ळ्यात्तम्। इष्णित्रिषाणामुं मे उइषाण सर्व्वलोकम्मे ऽइषाण॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सायुधायै सवाहनायै सशक्तिकायै श्रीलक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै त्रिवर्णात्मिकायै श्रीमहालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

पाँच बार स्रुवा से घी की आहुति देवे।

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा।

# पञ्चमोऽध्यायः (५)

विनियोग:-ॐ अस्य श्रीउत्तरचिरत्रस्य रुद्रऋषि:, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप् छन्द:, भीमा शक्ति:, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्त्वम्, सामवेद: स्वरूपम्, महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तरचिरत्रपाठे विनियोग:।

ध्यानम्

ॐ घण्टा-शूल-हलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्तब्जैर्द्धतीं हैं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमुद्धवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥ 'ॐ क्लीं' ऋषिरुवाच ।।१।। (पत्र, पुष्प, फल)

पुरा शुम्भ-निशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपते:। त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हता मदबलाश्रयात्॥१॥ तावेव सूर्यतां तद्वदिधकारं तथैन्दवम्। कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च॥३॥ तावेव पवनर्द्धि च चक्रतुर्विह्नकर्म च। ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः॥४॥ हताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः। महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम्॥५॥ (पत्र, पुष्प, फल, हलुवा)

तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः। भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात् परमापदः॥६॥ इति कृत्वा मितं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्। जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः॥॥

देवा ऊचुः ।।८।। (पत्र, पुष्प, फल, खीर)

(पत्र, पुष्प, फल, भोजपत्र, गुगुल) नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥१॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।(हल्दी आँवला) ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिणयै सुखायै सततं नमः॥१०॥ कल्याण्यै प्रणतां वृद्धयै सिद्धयै कुर्मो नमो नमः।(पुष्प, भोजपत्र) नैऋित्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥११॥

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।(दूर्वा) ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥१२॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।(दाहल हल्दी) नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥१३॥ (विष्णुक्रान्ता)

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।नमस्तस्यै॥१४॥ नमस्तस्यै॥१५॥ नमस्तस्यै नमो देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते। (आँवला) या नमस्तस्यै।।१७॥ नमस्तस्यै।।१८॥ नमस्तस्यै नमो नमः।।१९॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।(ब्राह्मी) नमस्तस्यै।।२०।। नमस्तस्यै।।२१।। नमस्तस्यै नमो नमः।।२२।। या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता। (हल्दी, निभगिलोय) नमस्तस्यै।।२३।। नमस्तस्यै।।२४।। नमस्तस्यै नमो नमः।।२५।। या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै॥२६॥ नमस्तस्यै॥२७॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥२८॥ या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।(छाया, सतावरी) नमस्तस्यै॥२९॥ नमस्तस्यै॥३०॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥३१॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।(सोंठ, जायफल) नमस्तस्यै॥३२॥ नमस्तस्यै॥३३॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥३४॥ देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै॥३५॥ नमस्तस्यै॥३६॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥३७॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै॥३८॥ नमस्तस्यै॥३९॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥४०॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै॥४१॥ नमस्तस्यै॥४२॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥४३॥

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता। (लाजा पुष्प) नमस्तस्यै॥४४॥ नमस्तस्यै॥४५॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥४६॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। (पुष्प) नमस्तस्यै॥४७॥ नमस्तस्यै॥४८॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥४९॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रन्द्वारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै॥५०॥ नमस्तस्यै॥५१॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥५२॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।(अबीर) नमस्तस्यै॥५३॥ नमस्तस्यै॥५४॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥५५॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता। (मिस्री, विल्वपत्र, कमलगृहा) नमस्तस्यै।।५६ ॥ नमस्तस्यै।।५७ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः।।५८ ॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता। (मधु, पुष्प) नमस्तस्यै॥५९॥ नमस्तस्यै॥६०॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥६१॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता। (ब्राह्मी, विजया) नमस्तस्यै।।६२॥ नमस्तस्यै।।६३॥ नमस्तस्यै नमो नमः।।६४॥ देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।(सहदेवी) नमस्तस्यै।।६५ ॥ नमस्तस्यै।।६६ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः।।६७॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।(पक्वान) नमस्तस्यै॥६८॥ नमस्तस्यै॥६९॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥७०॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। (लाल कनेर, केसर) नमस्तस्यै।।७१॥ नमस्तस्यै।।७२॥ नमस्तस्यै नमो नमः।।७३॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै॥७५॥ नमस्तस्यै॥७५॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥७६॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या। भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः॥७७॥

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तस्यै।।७८॥ नमस्तस्यै।।७९॥ नमस्तस्यै नमो नमः।।८०॥ स्तृता सुरै: पूर्वमभीष्टसंश्रयात् (मिस्री, इलायची)

तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी

शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।८१॥

साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै- (गुग्गुल) या रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।

या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः

सर्वापदो भक्ति- विनम्र-मूर्तिभिः। ।८२॥

त्रदृषिरुवाच ।।८३॥ (पत्र, पुष्प, फल)

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।(जावित्री) स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन। ८४॥ साब्रवीत्तान् सुरान् सुर्भूर्भवद्धिः स्तूयतेऽत्र का। (दालचीनी) शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा।८५॥ स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतै:।(भोजपत्र) देवै: समेतै: समरे निशुम्भेन पराजितै:।।८६॥ शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निः सृताम्बिका। (भोजपत्र, दालचीनी) कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते॥८७॥ तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती। (दारुल हल्दी, पुष्प) कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया।।८८॥ ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्। (आप्रफल) ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भ निशुम्भयोः॥८९॥ ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा। काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्।।९०॥

नैव तादृक् क्वचिद् रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्। ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर॥११॥ स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्वषा। (कपूर) सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमहिति॥१२॥ यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो। त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे॥९३॥ ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्। (पुष्प, बिल्वपत्र) पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चै:श्रवा हय:॥१४॥ विमानं हंससंयुक्तमेतितिष्ठिति तेऽङ्गणे।(गुंजा) रत्नभूतिमहानीतं यदासीद् वेधसोऽद्धतम्॥९५॥ निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्। (पुष्प, कमलगृहा) किञ्जल्किनीं ददौ चाळ्यिमीलामम्लानपङ्कजाम्॥९६॥ छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्त्रावि तिष्ठति। (भोजपत्र) तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत् प्रजापतेः॥१९०॥ मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता। पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे॥९८॥ निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः। विह्नरिप ददौ तुभ्यमिग्नशौचे च वाससी॥९९॥ एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते। स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते॥१००॥

ऋषिकवाच ॥१०१॥ (पुष्प, पत्र, फळ)
निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्ड-मुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम्॥१०२॥
इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु॥१०३॥

स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने। (मैनशिला) सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा॥१०४॥ दूत उवाच ॥१०५॥ (पत्र, पुष्प, फल)

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः। दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः॥१०६॥ अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु। निर्जिताखिल-दैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत्।।१०७॥ मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः। यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक्।।१०८॥ त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः। तथैव गजरत्नं च हत्वा देवेन्द्रवाहनम्॥१०९॥ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरै:। उच्चै:श्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम्॥११०॥ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च। रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने॥१११॥ स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्। सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्॥११२॥ मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्। भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः॥११३॥ परमैश्चर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परित्रहात्। (लावा,लाजा) एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज।।११४॥

त्रदृषिरुवाच ।।११५॥ (पत्र, पुष्प, फल)

(बच, पान, भोजपत्र, शमीपत्र, दूर्वा)

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तः स्मिता जगौ। दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत्॥११६॥

## देव्युवाच ॥११७॥

(शमीपत्र, दूर्वा, फल, पुष्प, कनेर पुष्प)

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित् त्वयोदितम्। त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः॥११८॥ किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्यां तत् क्रियते कथम्। श्र्यतामल्पबुद्धित्वात् प्रतिज्ञा या कृता पुरा।।११९॥ (लाजा, लौंग, कज्जल)

यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति। यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति॥१२०॥ (लाजा, खाजा, शमीपत्र)

तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुर:। मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु॥१२१॥ दूत उवाच ।।१२२॥ (पत्र, पुष्प, फल)

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः। त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भ-निशुम्भयोः॥१२३॥ अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि। तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका॥१२४॥ इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे। शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्।१२५॥ सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भ-निशुम्भयोः। (जटामासी) वेन्शाकर्षण-निर्धूत-गौरवा मा गमिष्यसि॥१२६॥

देव्युवाच ॥१२७॥

(शमीपत्र, पुष्प, फल,पान)

. एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्। करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा॥१२८॥

(ताम्बूल, सुपारी, ईख)

स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः। तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत्॥ ॐ॥१२९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावणिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्या-दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्याय: ॥५॥

उवाच ९,त्रिपान्मन्त्राः ६६,श्लोकाः ५४,एवम्१२९,एवमादितः ॥३८८। महाहुति- पान, पूड़ी, हलुवा, खीर, कमलगट्टा, लौंग, इलायची, स्पाड़ी, गुग्गुल, मधु, कपूर, श्वेत चंदन तथा फल एवं शाकल्य सहित घी से आहुति देवे।

मन्त्र- ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नम:। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ पावका नृ सरस्वती व्वाजैभिर्व्याजिनीवति। युज्ञं व्वष्टु ध्रियावसुः॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सवाहनायै सशक्तिकायै श्रीविष्णुमायेति चतुर्विंश देवतायै कामबीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहासरस्वत्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

पाँच बार स्रुवा से घी की आहुति देवे।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके उम्बलिके न मा नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिद काङ्काम्पील वासिनीम्।।

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत् वसां वसापावानः पिबतांतरिक्षस्य हुवि रसि स्वाही। प्रदिशंऽआहिशों विदिशंऽ उद्दिशों दिग्भ्यः स्वाहां॥

ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा,

ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।

#### षष्ठोऽध्यायः (६)

ध्यानम्

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-भास्वद् देहलतां दिवाकरिनभां नेत्रत्रयोद्धासिताम्। माला-कुम्भ-कपाल-नीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां प सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्किनलयां पद्मावतीं चिन्तये॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥ (पत्र, पुष्प, फल)

इत्याकणर्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः।
समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात्॥२॥
तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकण्यांसुरराट् ततः।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम्॥३॥
हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः।(राई, जटामासी, गूगल)
तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम्॥४॥
तत्परित्राणदः कश्चिद् यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा॥५॥
ऋषिरुवाच॥६॥

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः। (मक्र) वृत्तः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्वृतं ययौ।।७॥ स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम्। जगादोच्यैः प्रयाहीति मूलं शुम्भ-निशुम्भयोः।।८॥ न चेत् प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति। ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम्।।९॥

देव्युवाच ।।१०।। (पत्र, पुष्प, शमीपत्र, दूर्वा, जल) दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः। बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम्॥११॥ त्रष्टिषरुवाच ।।१२॥ (पत्र, पुष्प, फल, गुगुल)

(सूरमा, नीबू, गूगुल, बिजौरा)

सोऽभ्यधावत्तामसुरो व्यूम्रलोचनः। हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः॥१३॥ अथ क्रुब्हं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका। (उड़द मसूर) ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्चधै:॥१४॥ ततो धुतसटः कोपात् कृत्वा नादं सुभैरवम्। पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः॥१५॥ कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्। आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान्।।१६॥ केषाञ्चित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी। (केसर) तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक्।।१७॥ विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे। (केसर, राई) पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः॥१८॥ क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना। तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना।।१९॥ (लौंग, इलायची, सुपारी, कमलगट्टा)

श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्। बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसिरणा ततः॥२०॥ चुकोप दैत्याधिपितः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः। आज्ञापयामास च तौ चण्ड-मुण्डौ महासुरौ॥२१॥ हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ। तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु॥२२॥ केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि।(गई जटामासी) तदाशेषायुधैः सवैरसुरैर्विनिहन्यताम्॥२३॥ (लौंग, कनेर, पुष्प, ईख)

तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते। शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम्॥ ॐ॥२४॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावणिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भ-निशुम्भ-सेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्याय:॥६॥ उवाच ४, श्लोकाः २०, एवम् २४, एवमादितः ४१२।

## महाहुति-

पान के पत्ते पर सुपाड़ी, लौंग, इलायची, पूड़ी, हलुवा, खीर, कमलगट्टा, गुग्गुल, भोजपत्र, नारियल फल, नारंगी, कुष्माण्ड एवं शाकल्य लेकर स्रुवा सहित घी में भिगोकर आहुति देवे।

मन्त्र- ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

ॐ पावका नृ सरस्वती व्वाजैभिर्व्याजिनीवति। युज्ञं व्वष्टु ध्रियावसुः॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सवाहनायै सशक्तिकायै शताक्ष्यै श्रीधूमाक्षीदेवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

पाँच बार स्रुवा से घी की आहुति देवे।

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा।

### सप्तमोऽध्यायः (७)

*•ध्यानम्* 

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्। कह्वाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुर-मधु-मदां चित्रकोद्भासिभालाम्॥ 'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥ (पत्र, पुष्प, फल)

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्ड-मुण्डपुरोगमाः। चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुद्याः॥२॥

दृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्। सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने॥३॥ ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः। आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः॥४॥

(काला रंग, हल्दी, कस्तुरी) ततः कोपं चकारोच्चैरिम्बका तानरीन् प्रति। चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा॥५॥ कोपेन भूकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद् द्रुतम्। (कालीमिर्च) काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी॥६॥ विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा। द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा॥७॥ (पान, रक्तचंदन, कुंकुम, केशर) अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा। निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा॥८॥ सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्। सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत् तद्बलम्॥९॥ पार्ष्णि-ग्राहाङ्कशग्राहि-योध-घण्टा-समन्वितान्। समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान्॥१०॥ तथैव योधं तुरगै रथं सारिथना सह। निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम्॥११॥ एकं जयाह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्। (चौराई सरसो) पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत्॥१२॥ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरै:। मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मिथतान्यि।।१३॥ बिलिनां तद्बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्। (हल्दी, काली मिर्च)

ममर्दाभक्षयच्चान्यांश्चाताडयत् तथा॥१४॥

थिसना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः।(गुग्नुल, वन्नदंती) दन्ताग्राभिहतास्तथा।।१५॥ जग्मुर्विनाशमसुरा क्षणेन तद्बलं सर्वमसुराणां निपातितम्। दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम्।।१६॥ तां शरवर्षेर्महाभीमैभीमाक्षीं महासुर:। छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः॥१७॥ तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्। घनोदरम्॥१८॥ बभूर्यथार्किबम्बानि सुबहूनि ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी। (कपूर, वज्रदंती) कालीकरालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला

जटामासी, दर्भा, सरसो, कदलीफल, (केला)

उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत। गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत्॥२०॥ अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्। तमप्यपातयद् भूमौ सा खङ्गाभिहतं रुषा॥२१॥ हतशेषं ततःसैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्। मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम्॥२२॥ शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च। (बिजौरी नींबू) प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्॥२३॥ प्राह ईख का टुकड़ा, कुष्पाण्ड खण्ड)

मया तवात्रोपहृतौ चण्ड-मुण्डौ महापशू। युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि॥२४॥

त्रदृषिरुवाच ।।२५।। (पुष्प, पत्र, फल)

पान, जायफल (२ नग) कमलगट्टा)

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्ड-मुण्डौ महासुरौ। उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः॥१६॥ पान, पुष्प, फल, आप्रफल, चिरौंजी) यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता। चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवी भविष्यसि॥ॐ॥२७॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्याय: ॥७॥

उवाच २, श्लोकाः २५, एवम् २७, एवमादितः ॥४३९॥ महाहुति—

पान के पत्ते पर पूड़ी, हलुवा, खीर, पान, लौंग, इलायची, सुपाड़ी, कमलगट्टा, कुष्माण्ड का टुकड़ा, जायफल, कर्पूर, चिरौंजी एवं शाकल्य लेकर स्नुवा सहित घी में भिगोकर खड़े होकर आहुति देवे।

मन्त्र- ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

ॐ पावका नृक्ष सरस्वती व्याजेभिर्व्याजिनीवति। युज्ञं व्यष्टु धियावसुः॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सयुधायै सवाहनायै श्रीकर्पूर बीजाधिष्ठात्र्यै श्रीधूमाक्षी काली चामुण्डादेवता महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

पाँच बार स्रुवा से घी की आहुति देवे।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके उम्बलिके न मा नयित कश्चन ससंस्त्यश्वकः सुभिद्रिद काङ्काम्पील वासिनीम्॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत् वसां वसापावानः पिबतांतरिक्षस्य हुवि रिम् स्वाहा। दिशीः प्रदिशीऽआहिशों विदिशऽ उद्दिशों दिग्भ्यः स्वाहा।

ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा, ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।

## अष्टमोऽध्यायः (८)

ध्यानम्

ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं

धृत-पाशाङ्कुश-बाण-चापहस्ताम्।

अणिमादिभिरावृतां मयूखै-

रहमित्येव विभावये भवानीम्।।

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥ (पत्र, पुष्प फल)

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते।

बहुलेषु सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः॥२॥ च

ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान्।

उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ॥३॥

अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः।

कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ॥४॥ कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै।(राई)

शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया।।५॥

कालका दौर्हदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः।(राई)

युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम।।६।।

इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः।

निर्जगाम महासैन्यसहस्त्रैर्बहुभिर्वृत:॥७॥

(दूर्वा, रक्त कनेर, गग्गुल)

आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम्। ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम्॥८॥

ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप। घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत्॥९॥

(दूर्वा,गुग्गुल, हल्दी कारा रंग)

धनुर्ज्यासिंहघण्टानां े नादापूरितदिङ्मुखा। निनादै भींषणै:

काली जिग्ये विस्तारितानना।।१०॥

निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम्। देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः॥११॥ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम्। भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः 118511 ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः। (पत्र,पुष्प,फल) शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः॥१३॥ यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम्। (गुंजा तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ॥१४॥ हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः। (ब्राह्मी) आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते॥१५॥ माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी।(जटामासी) महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा॥१६॥ कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना।(मोरपंखी) योद्धमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी॥१७॥ तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता। (विष्णुक्रान्ता शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥१८॥ यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरे:।(वज्रदन्दी पत्र, या समिधा) शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम्॥१९॥ नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः। प्राप्ता तत्र सटाक्षेपिक्षप्तनक्षत्रसंहतिः॥२०॥ वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता। (पुष्प, लौंग) प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा॥२१॥ ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः। हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम्॥२२॥

ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा। चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतिननदिनी॥२३॥ सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता। दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः॥२४॥ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ। ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः॥२५॥ त्रैलोक्यिमन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः। यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ॥ १६॥ बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः। तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः॥२७॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्। (जटामासी, विजया) शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता॥ २८॥ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः। (हल्दी) अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता॥२९॥ ततः प्रथममेवाये शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः। ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः॥३०॥ सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्। चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभि:॥३१॥ तस्यायतस्तथा काली शूलपातविदारितान्। खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा॥३२॥ कमण्डलु-जलाक्षेप-हतवीर्यान् हतौजसः। ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावित॥३३॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी। दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्तचातिकोपना॥३४॥

ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः। ४१५ पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः॥३५॥ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः। वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः॥३६॥ नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान्। नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा॥३७॥ चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः। पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा॥३८॥ इति मातृगणं क्रुब्दं मर्दयन्तं महासुरान्।(सरसो) दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥३९॥ पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातुगणार्दितान्। योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुर:॥४०॥ रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः। समुत्पति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः॥४१॥ युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुर:। ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत्॥४२॥ कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम्।(रक्तगुंजा) समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः॥४३॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तिबन्दवः।(रक्तगुंजा) तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः॥४४॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः। समं मातृभिरत्युग्र-शस्त्रपाताति-भीषणम्॥४५॥ पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा। ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः॥४६॥

वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभि जघान ह। गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम्॥४७॥ वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवै:। सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरै:॥४८॥ शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना।(लाल चंदन) माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम्॥४९॥ स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक्। मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुर:॥५०॥ तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि। पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः॥५१॥ तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्। व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम्॥५२॥ तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा। उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु॥५३॥ मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तिबिन्दून् महासुरान्। (लाल चंदन, गुंजा) बिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना॥५४॥ भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान् महासुरान्। (लाल चंदन) एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति॥५५॥ भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे। इत्युक्तवा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम्॥५६॥ मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।(लाल चंदन) ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्॥५७॥ न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि। तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम्॥५८॥

यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छित।

मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान् महासुराः॥५९॥

तांश्चखादाथ चामुण्डा पणै तस्य च शोणितम्।(रक्तचंदन)

देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः॥६०॥

जधान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम्।(रक्तचंदन)

स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः॥६१॥

नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।(बिजौरा नींबू)

ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप॥६२॥

तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः॥ॐ॥६३॥ (पुष्प)

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्याय: ॥८॥

उवाच १,अर्धश्लोकः १,श्लोकाः ६१,एवम् ६३,एवमादितः ॥५०२॥

# महाहुति-

पान के पत्ते पर पूड़ी, हलुवा, खीर, पान, लौंग, इलायची, सुपाड़ी, कमलगट्टा, कुष्माण्ड का टुकड़ा, जायफल, कर्पूर, चिरौंजी एवं शाकल्य लेकर स्रुवा सहित घी में भिगोकर खड़े होकर आहुति देवे।

मन्त्र- ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नम:।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

ॐ पावका नृक्ष सरस्वती व्वाजेभिर्व्याजिनीवित। युज्ञं व्वष्टु ध्रियावसुः॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सवाहनायै सशक्तिकायै अष्टमातृका सहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

पाँच बार स्रुवा से घी की आहुति देवे।

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा।

#### नवमोऽध्यायः (१)

ध्यानम्

🕉 बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां पाशाङ्कशौ च वरदां निजबाहुदण्डै:। बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि॥

'ॐ' राजोवाच ॥१॥ (पत्र, पुष्प, फल)

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम। (बीजौरा नीब्) देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्चितम्॥२॥ भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते। चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः॥३॥

ऋषिरुवाच ॥४॥ (पत्र, पुष्प, फल)

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते। शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे॥५॥ हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्। अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया॥६॥ तस्यायतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः। संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः॥७॥ आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः। निहन्तुं चिण्डकां कोपात् कृत्वा युद्धं तु मातृभिः।।।। ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः। (गई) शरवर्षमतीवोयं मेघयोरिव वर्षतोः॥१॥ चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः। ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रीधैरसुरेश्वरौ॥१०॥ निशुभ्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्। अताडयन्मूर्धिन सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम्॥११॥

ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्। निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम्॥१२॥ छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः। तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम्॥१३॥ कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः। आयान्तं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत्॥१४॥ आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चिण्डकां प्रति। सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता॥१५॥ ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम्। आहत्य देवीं बाणौधैरपातयत भूतले॥१६॥ तस्मित्रिपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे। भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्।।१७॥ स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः। भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥१८॥ तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्। ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम्॥१९॥ पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च। (केसर) समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना॥२०॥ ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः।(केला) पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश।।२१॥ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्। कराभ्यां तन्निनादेन प्रावस्वनास्ते तिरोहिताः॥२२॥ अट्टाट्टहासमिशवं शिवदूती चकार ह। तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ॥२३॥ दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा। तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः॥२४॥

शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा। आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया॥२५॥ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्। निर्घातिनः स्वनो घोरो जितवानवनीपते॥१६॥ शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्। चिच्छेद स्वशरैरुगैः शतशोऽथ सहस्रशः॥२७॥ ततः सा चण्डिका कुद्धा शूलेनाभिजधान तम्। स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह॥२८॥ ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः।(केसर) आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा॥२९॥ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः। चक्रायुधेन दितिजञ्छादयामास चण्डिकाम्॥३०॥ ततो भगवती कुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी।(दूर्वा कनेर) चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरै: सायकांश्च तान्॥३१॥ ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्। अभ्यघावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृत:॥३२॥ तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका। खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे॥३३॥ शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्।(लौग) हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका॥३४॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निः सृतोऽपरः।(बीजौरा नीब्) महाबलो महावीर्थस्तिष्ठेति पुरुषो वदन्॥३५॥ तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः। (गुग्गुल, इन्द्र जौ) शिरिश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद् भुवि॥३६॥

सिंहश्चखादोग्र दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान्। ततः असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान्॥३७॥ कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः। (मोरपंखी, ब्राह्मी) ब्रह्माणीमन्त्रपूर्तेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ ३८॥ माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथाऽपरे। वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि॥३९॥ खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः। चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे॥४०॥ वज्रेण (उड़द, कूष्माण्ड, फलखण्ड इक्षुखण्ड,पान, सुपारी, बेलगिरी) विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा पहाहवात्। भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपै:।।ॐ।।४१।। इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्याय: ।।९।। उवाच २, श्लोकाः ३९, एवम् ४१, एवमादितः ॥५४३॥

## महाहुति-

पान के पत्ते पर पूड़ी, हलुवा, खीर, पान, लौंग, इलायची, सुपाड़ी, कमलगट्टा, कुष्माण्ड का टुकड़ा, जायफल, कर्पूर, चिरौंजी एवं शाकल्य लेकर स्रुवा सहित घी में भिगोकर खड़े होकर आहुति देवे।

मन्त्र- ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

# ॐ पावका नृक्ष् सरस्वती व्वाजेभिर्व्याजिनीवति। <sup>युज्ञं</sup> व्वष्टु ध्रियावसुः॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सवाहनायै सशक्तिकायै श्रीवारभव बीजाधिष्ठात्र्यै भगवती श्रीमहाकाल्यै तारादेव्यै नमः महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

पाँच बार स्रुवा से घी की आहुति देवे।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बलिके न मा नयित कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभिद्रिद काङ्काम्पील वासिनीम्॥ 🕉 घृतं घृतपावानः पिबत् वसां वसापावानः पिबतांतरिक्षस्य हुवि रसि स्वाही। प्रदिशंऽआदिशों विदिशंऽ उद्दिशों दिग्भ्यः स्वाहा॥

🕉 अम्बायै स्वाहा। 🕉 अम्बिकायै स्वाहा, 🕉 अम्बालिकायै स्वाहा।

### दशमोऽध्यायः (१०)

ध्यानम्

'ॐ' उत्तप्तहेमरुचिरां रवि-चन्द्र-विह्न-नेत्रां क्र धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम्। रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्॥ 'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥ (पान, पुष्प, फल)

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम्। (केसर कस्तूरी) हन्यमानं बलं चैव शुम्भः कुद्धोऽब्रवीद् वचः॥२॥ बलावलेपाद् दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह। अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे यातिमानिनी॥३॥

देव्युवाच ।।४।। (पान, पुष्प, फल, दूर्वा, शमीपत्र)

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा। (लाल चंदन) पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः॥५॥ ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखालयम्।(पान, पुष्प, फल) देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका॥६॥ तस्या

देव्युवाच ।।७।। (पुष्प)

(पान, पुष्प, फुल, दूर्वा, शमीपत्र) विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता। तत्संहतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरौ भव॥८॥

# ऋषिरुवाच ॥९॥ (पुष्प)

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य घोभयोः। पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम्॥१०॥ शरवर्षेः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रेश्चेव दारुणै:। तयोर्युद्धमभूद् भूयः सर्वलोकभयङ्करम्॥११॥ दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका। बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्त्रभिः॥१२॥ मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी। बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः॥१३॥ ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः। सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभि:॥१४॥ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे।(धनुष-बाण) चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम्॥१५॥ ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत्। अभ्यधावत् तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः॥१६॥ तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका। धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम्॥१७॥ हताश्वः स तदा दैत्यिश्छन्नधन्वा विसारिशः। जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः॥१८॥ चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः। तथापि सोऽभ्यधावत् तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान्॥१९॥ स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः। देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत्॥२०॥ निपपात महीतले। तलप्रहाराभिहतो स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः॥२१॥

च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थित:। उत्पत्य तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका॥२२॥ नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्। प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम्॥२३॥ चक्रतुः ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह। उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप घरणीतले॥२४॥ स क्षिप्तो घरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः। अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया॥२५॥ तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्। जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि॥२६॥ स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः।(केला) चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम्॥२७॥ ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि।(भोजपत्र) जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाऽभवन्नभः॥२८॥ उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः। सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते॥२९॥ ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः। बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः॥३०॥ अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाऽप्सरोगणाः।(पुष्प) ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद् दिवाकरः॥३१॥ (कपूर, गुगुल, कमलगट्टा, वट पत्र, इन्द्र जौ) जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः॥ॐ॥३२॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिक मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दशमोऽध्याय: ॥१०॥

उवाच ४,अर्धश्लोकः १,श्लोकाः २७, एवम् ३२, एवमादितः ॥५७५॥

# महाहुति (विशेषाहुति)-

स्रुवा में घी भरे उस पर पान के पत्ते पर पूड़ी, हलुवा, खीर, पान, लींग, इलायची, सुपाड़ी, कस्तूरी, कमलगट्टा, गुग्गल, कुष्माण्ड का टुकड़ा, बिल्वपत्र पुष्प, फल एवं शाकल्य लेकर खड़े होकर आहुति देवे।

मन्त्र- ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥

ॐ पावका न् सरस्वती व्वाजेभिर्व्याजिनीवति। वृज्ञं व्वष्टु धियावसुः॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सवाहनायै सशक्तिकायै सिंहवाहनायै शूलपाशधारिणयै अम्बिका भैरवी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

पाँच बार स्रुवा से घी की आहुति देवे।

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा।

# एकादशोऽध्यायः (११)

ध्यानम् ॐ बालरिवद्युतिमिन्दुिकरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्। स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्॥ 'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥ (पत्र, पुष्प, फल)

(२ से ३७ मन्त्र तक सभी मंत्रों पर पत्र, पुष्प, फल की आहुति दे) देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे

सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्।

कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्

विकाशिवक्त्राब्जविकाशिताशाः॥२॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥३॥

आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि। अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये॥४॥ त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया। सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतु:॥५॥ विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु। त्वयैकया पूरितमम्बयैतत् का ते स्तुतिः स्तव्यपराः परोक्तिः॥६॥ सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी। त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।।।। सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते। स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥८॥ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनी !। विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि! नमोऽस्तु ते॥९॥ सर्वमङ्गलमङ्गलये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥१०॥ सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनाति। गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते॥११॥ शरणागत-दीनार्त-परित्राणपरायणे सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥१२॥ हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि। कौशाम्भः क्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥१३॥ त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनी। माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते॥१४॥ मयूर - कुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे। कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते॥१५॥

शङ्ख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग-गृहीत-परमायुधे प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते॥१६॥ गृहीतोग्र - महाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे। वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते॥१७॥ नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे। त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते॥१८॥ किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले। वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते॥१९॥ शिवदूती - स्वरूपेण हतदैत्यमहाबले!। घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते॥२०॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे। चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते॥२१॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रुवे। महारात्रि महाऽविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते॥२२॥ मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि। नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते॥२३॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥२४॥ एतत् ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्। पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते॥२५॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते॥२६॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।।२७।।

असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः। शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्॥२८॥ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥२९॥ एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्। रूपेरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या॥३०॥ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च कात्वदन्या। ममत्वगर्तेऽतिमहान्यकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्॥३१॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र। दावानला यत्र तथाऽब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥३२॥ विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वम्

विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्। विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति

विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः॥३३॥ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-

र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः। पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु

उत्पातपाकजिनतांश्च महोपसर्गान्॥३४॥ प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि। त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव॥३५॥ देव्युवाच ॥३६॥

देव्युवाच ॥३६॥ वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ। तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्॥३७॥ देवा ऊचुः ॥३८॥ (पान, पुष्प, फल) सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्॥३९॥ देव्युवाच ॥४०॥ (दूर्वा, पान, शमीपत्र)

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।(सरसों)
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरी॥४१॥
नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा।(मक्खन)
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचल निवासिनी॥४२॥
पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले। (जायफल)
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान्॥४३॥
भक्षयन्त्याश्च तानुप्रान् वैप्रचित्तान् महासुरान्। (दाडिन केफूल)
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः॥४४॥
ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः।(अनार, मजीठ)
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम्॥४५॥
पुष्प, पान, फल, नारंगी)

भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा॥४६॥
ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।इलायची कमलगद्याः)
कीर्तियष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः॥४७॥
ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः॥४८॥
(पत्र, पुष्प, फल, हरी सब्जी)

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि। तत्रैव च विध्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्॥४९॥ (दूर्वांकुर, लाल कनेर, फल, पान)

देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति। भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले॥५०॥ यदा पुनश्चाहं भक्षियष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्। रक्षांसि मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः॥५१॥ तदा (रक्त गुंजा, पान, पुष्प, फल)

भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति। करिष्यति॥५२॥ यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्। (लाल कनेर) हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम्॥५३॥ त्रैलोक्यस्य भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।(पुष्प, फल, पान) यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति॥५४॥ यदा (काली मिर्च, सरसों, गूगल)

तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्॥ॐ॥५५॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥ उवाच ४,अर्धश्लोकः १,श्लोकाः ५०,एवम् ५५,एवमादितः ॥६३०॥

# महाहुति-

पान के पत्ते पर पूड़ी, हलुवा, खीर, पान, लौंग, इलायची, सुपाड़ी, कमलगट्टा, कुष्माण्ड का टुकड़ा, जायफल, कर्पूर, चिरौंजी एवं शाकल्य लेकर स्रुवा सहित घी में भिगोकर खड़े होकर आहुति देवे।

मन्त्र- ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

ॐ पावका नु सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवित। यज्ञं व्वष्टु ध्रियावसुः॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सायुधायै सवाहनायै सशक्तिकायै सर्वनारायण्ये शक्त्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

पाँच बार स्रुवा से घी की आहुति देवे।

🕉 अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बलिके न मी नयति कश्चन ससंस्त्यश्वकः सुमंद्रिद काङ्काम्पील वासिनीम्॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत् वसा वसापावानः हुवि रसि स्वाही। पिबतांतरिक्षस्य प्रदिश्रीऽआहिशो विदिशाऽ उद्दिशी दिग्भ्यः स्वाही॥

ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा, ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।

## द्वादशोऽध्यायः (१२)

ॐ विद्युद्दाम-समप्रभां मृगपृतिस्कन्थस्थितां भीषणाम् कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्। हस्तैश्चक्र-गदासि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥ 'ॐ' देव्युवाच ॥१॥ (पान, शमीपत्र, पुष्प,फल)

(गूगल, दूर्वा, हल्दी, नागकेसर)

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः। सकलां बाद्यां नाशयिष्याम्यसंशयम्॥२॥ तस्याहं महिषासुरघातनम्।(दर्भा) मधु-कैटभनाशं च कीर्तियिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भ-निशुम्भयोः॥३॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः।(भोजपत्र) श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम्॥४॥ न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः। (गूगल, भिश्री) दारिद्रयं न चैवेष्टवियोजनम्॥५॥ भविष्यति

शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः।(हल्दी, दूर्या) न शस्त्रानलतोयौघात् कदाचित् सम्भविष्यति।।६॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः। श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत्।।७॥ उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्।(गूगल, मिश्री) तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम।।८॥ (गूगल, पान, पुष्प, मिश्री, इलायची, मध्र)

यत्रैतत् पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम्।।९॥
बिलप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।(इक्षुखण्ड, कुष्माण्ड)
सर्वं ममैतच्चिरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च।।१०॥
(कदली फल, इक्षुखण्ड, कुष्माण्ड खण्ड)

जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम्।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या विह्नहोमं तथा कृतम्।।११॥
शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी। (पान, पुष्प,फल, मिली)
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः।।१२॥
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।(पान, पुष्प, फल, मिश्री)
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।१३॥
श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः।(दूर्वा)
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान्।।१४॥
रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।(दर्भा गूगल)
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृणवताम्।।१५॥
शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम।।१६॥

(अर्क, पलाश, शमीपत्र, भोजपत्र)

उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः। दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते॥१७॥

(राई, गूगल, धूप, पान, पुष्प फल)

बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम्॥१८॥
दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षो-भूत-पिशाचानां पठनादेव नाशनम्॥१९॥
सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्।
पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः॥२०॥

(पान, पुष्प, फल, धूप, केसर, मिश्री, कपूर, बिजौरा नीबू, पक्वान्न) विप्राणां भोजनेहोंमै: प्रोक्षणीयैरहर्निशम्। अन्यैश्च विविधैभोंगै: प्रदानैर्वत्सरेण या॥२१॥ प्रीतिमें क्रियते सास्मिन् सकृत्सुचरिते श्रुते। (पायस, पक्वान्न) श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति॥२२॥

(पान, पुष्प, फल, जायफल)

रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्भनां कीर्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम्।।२३॥
तिस्मञ्छुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः।।२४॥
(दर्भा, पुष्प, भोजपत्र)

ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मितम्। अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः॥२५॥ दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः। सिंह-व्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः॥२६॥ राज्ञा कुन्द्वेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा। आधूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे॥२७॥

पतस्तु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे। सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा॥२८॥ स्मरन् ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्घटात्। (हलताल, गूगल, पुष्प मम प्रभावात् सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा॥२९॥ पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम॥३०॥ दुरादेव

ऋषिरुवाच ।।३१॥ (पान, पुष्प, फल)

(वच, पान, पुष्प) इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा॥३२॥ पश्यतामेव देवानां तत्रैवाऽन्तर्धीयत।(सर्वोषधी) तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा॥३३॥ यज्ञभागभुजः सर्वे चक्नुर्विनिहतारयः। दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि।।३४॥ जगद्विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे। निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः॥३५॥ एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः। (पान,पुष्प,फल) सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम्।।३६॥ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।(इलायची, मिश्री) सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति॥३७॥ व्याप्तं तयैतत् सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर। महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया॥३८॥ सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा। (अनार के छिलके) स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी॥३९॥ भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे। सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते॥४०॥

(गंध, पुष्प, पान, फल, मिश्री, जायफल, चंदन, धूप)

#### स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा। ददाति वित्तं पुत्रांश्च मितं धर्मे गितं शुभाम्॥ॐ॥४१॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये फलस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्याय: ॥१२॥

उवाच २,अर्धश्लोकौ २,श्लोकाः ३७,एवम् ४१,एवमादितः ॥६७१।

#### महाहुति (विशेषाहुति)-

पान के पत्ते पर पूड़ी, हलुवा, खीर, लौंग, इलायची, सुपाड़ी, कमलगट्टा, केसर, कस्तूरी, बिल्वपत्र, पुष्प, मिश्री, अगर एवं शाकल्य लेकर स्रुवा में घीर भरकर सामग्री सहित खड़े होकर आहुति देवे।

मन्त्र- ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

#### ॐ पावका न् सरस्वती व्वाजेभिर्व्याजिनीवति। यूज्ञं व्वष्टु ध्रियावसुः॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सवाहनायै सशक्तिकायै श्रीबालात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पगामि नमः स्वाहा।

पाँच बार स्रुवा से घी की आहुति देवे।

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा।

#### त्रयोदशोऽध्यायः (१३)

ध्यानम् ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्। पाशा-ङ्कुश-वरा-भीतीर्धारयन्तीं १ शिवां १ भजे।।

'ॐ' ऋषिरुवाच । । १।। (पत्र, पुष्प,फल)

एतत् ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्। एवं प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत्॥२॥ विद्या तथैव क्रियते भगविद्वष्णुमायया। (विष्णुक्रान्ता)
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥३॥
मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे। (इलायची)
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्॥४॥
(पान,पत्र,पुष्ण,फल)

आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा॥५॥ मार्कण्डेय उवाच ॥६॥ (पान,पत्र,पुष्प,फल)

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः॥७॥
प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम्।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च॥८॥
जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने।(पुष्प,भोजपत्र)
संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः॥९॥
(पान, पुष्प, गंध, धूप, फल)

स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्ति महीमयीम्।।१०॥
अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः।(ईक्षुखण्ड)
निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ।।११॥
(पान, पुष्प, फल, दूर्वा, शमीपत्र)

ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्। एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः॥१२॥ परितुष्टा जगब्दात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका॥१३॥ देव्युवाच ॥१४॥ (पान, पुष्प, फल, नारिकेल खण्ड)

्पान, पुष्प, फल) यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन॥१५॥

मार्कण्डेय उवाच ।।१६॥ (गूगल, काली मिर्च, अशोक पत्र) वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मि। अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात्॥१७॥ (पान, पुष्प, दूर्वा, कनेर पुष्प, शमीपत्र)

सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वब्ने निर्विण्णमानसः। ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम्॥१८॥ देव्युवाच ।।१९।। (कमल पुष्प, अशोक पुष्प या पत्र)

(सरसो, गूगल)

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्॥२०॥ रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति॥२१॥ (अर्क (मदार) कपूर)

मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद् विवस्वतः॥२२॥

(पुष्प फल)

सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति॥२३॥ (भोजपत्र)

वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः॥२४॥

(पुष्प, फल, पान)

तं प्रयच्छामि संसिद्धयै तव ज्ञानं भविष्यति॥२५॥ मार्कण्डेय उवाच ॥२६॥

इति दत्वा तयोर्देवी यथाभिलिषतं वरम्॥२७॥ बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता। एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः॥२८॥

(अर्क, कपूर, गंध, फल, पान,सुपाड़ी)

सूर्याज्जन्म सावर्णिर्भविता मनुः॥२९॥ समासाद्य

एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः। सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः॥ क्लीं ॐ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथ-वैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्याय: ॥१३॥

महाहुति-

पान के पत्ते पर पूड़ी, हलुवा, खीर, लौंग, इलायची, सुपाड़ी, कमलगट्टा, गूगल, फल, शमीपत्र, केसर, कपूरअर्क पुष्प नारिकेल खण्ड, बिल्वपत्र एवं शाकल्य सहित स्त्रुवा में घी भरकर खड़े होकर महाहुति देवे।

मन्त्र- ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

ॐ पावका नृ सरस्वती व्वाजेभिर्व्याजिनीवति। यूज्ञं व्वष्टु धियावसुः॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै, सवाहनायै सशक्तिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै श्रीविद्यायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

पाँच बार स्रुवा से घी की आहुति देवे।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बलिके न मो नयित कश्चन ससंस्त्यश्वकः सुभीद्रद काङ्काम्पील वासिनीम्॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत् वसां वसापावानः पिबतांतरिक्षस्य हुवि रिस् स्वाही। दिशेः प्रदिशेऽआदिशों विदिशऽ उद्दिशों दिग्भ्यः स्वाही॥

ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा, ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।

#### उत्तरन्यासः

#### करन्यासः

ॐ हीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ डिं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ कां अनामिकाभ्यां नमः। ॐ यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ हीं चण्डिकायै करतरकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

ॐखड्गि शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शिक्षिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुद्या।। हृदयाय नमः।
ॐशूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।शिरसे स्वाहा।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
प्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।। शिखायै वषट्।
ॐसौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षारमांस्तथाभुवम्।। कवचाय हुम्।
ॐखड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।। नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐसर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।। अस्त्राय फट्।
ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपितस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्। हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिश्चाणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

तन्त्रोक्तं देवी-सूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।१॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः। ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥२॥ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः। नैऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥३॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥४॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः। नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥५॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमा नमः॥६॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।७॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमरतस्यै नमो नमः॥॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥९॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमा नमः॥१०॥ या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥११॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१२॥

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१३॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१४॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१५॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१६॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१७॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमा नमः॥१८॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१९॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२०॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमा नमः॥२१॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२२॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२३॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२४॥

देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। या नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या। भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः॥२७॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१८॥

स्तुता सुरै: पूर्वमभीष्ट-संश्रयात् तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः॥२९॥

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।

या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः

सर्वापदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः॥३०॥ इति तन्त्रोक्तं देवीसूक्तं समाप्तम्।

नवार्णमन्त्र-जपः

ततो देवीसूक्तस्य पाठं कृत्वाऽष्टोत्तरशतसंख्याकं 'ॐऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इति नवार्णमन्त्रं जपेत्। तत्पश्चात्-

गुह्यातिगुह्यगोष्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिब्हिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥ इति पठित्वा, देव्या वामहस्ते जपं निवेदयेत्। ततः सप्तशती-रहस्यत्रयं पठेत्।

## प्राधानिकं रहस्यम्

विनियोगः — ॐ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्-छन्दः, महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवता, यथोक्तफलावाप्यर्थं जपे विनियोगः । राजोवाच

भगवन्नवतारा चण्डिकायास्त्वयोदिताः। एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हिस॥१॥ आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज। विधिना ब्रूहि सकलं यथावत् प्रणतस्य मे॥शा

ऋषिरुवाच

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते। भक्तोऽसीति न मे किञ्चित् तवावाच्यं नराधिप॥३॥ सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी। लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्सं व्यवस्थिता।।४॥ मातुलुङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती। नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्धनि॥५॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा। शून्यं तदिखलं स्वेन पूरयामास तेजसा॥६॥ शून्य तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी। बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि॥७॥ सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना। विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा।।८॥ खड्गपात्रशिरः खेटैरलङ्कृतचतुर्भुजा। कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणां हि शिरःस्रजम्॥९॥ सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा। नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः॥१०॥

तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्। ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते॥११॥ महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा। निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया॥१२॥ इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मिभः। एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम्॥१३॥ तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप। सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ॥१४॥ अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी। सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ॥१५॥ महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती। आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी॥१६॥ अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम्। युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः॥१७॥ इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः संसर्ज मिथुनं स्वयम्। हिरण्यगर्भी रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ॥१८॥ ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम्। श्री: पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम्।।१९॥ महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह। एतयोरिप रूपाणि नामानि च वदामि ते॥२०॥ नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम्। जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम्॥२१॥ स रुद्रः शङ्करः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः। त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा॥२२॥

सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप। जनयामास नामानि तयोरिप वदामि ते॥२३॥ विष्णुः कृष्णो हषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः। उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा॥२४॥ एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे। चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः॥२५॥ ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम्। रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम्॥२६॥ स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्। विभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान्॥२७॥ अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभूत्रृप। महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्॥१८॥ पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः। संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वर:।।२९॥ महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी। निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत्॥३०॥ नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित्।।ॐ॥३१॥ इति प्राधानिकं रहस्यं समाप्तम्।

#### वैकृतिकं रहस्यम्

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता। सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते॥१॥ योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा। <sup>मधु</sup>-कैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः॥२॥

दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्चनप्रभा। विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया॥३॥ स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप। रूप-सौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः॥४॥ खड्गबाणगदाशूलचक्रशङ्खभुशुण्डिभृत् । परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्वधिरं दधौ॥५॥ एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया। आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम्॥६॥ सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा। त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी॥७॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला। रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा॥८॥ सुचित्रजघना चित्र-माल्याम्बर-विभूषणा। चित्रानुलेपना कान्ति-रूप-सौभाग्यशालिनी॥९॥ अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती। आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः करक्रमात्॥१०॥ अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा। चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः॥११॥ शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलु:। अलङ्कृत-भुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्।।१२॥ सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप। पूजयेत् सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत्।।१३॥ गौरीदेहात् समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया। साक्षात् सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी॥१४॥

दघौ चाष्टभुजा बाण-मुसले श्रूल-चक्रभृत्। शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप॥१५॥ एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति। निशुम्भमिथनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी।।१६॥ इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव। उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय॥१७॥ महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती। दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम्॥१८॥ विरिश्चः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे। दामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम्॥१९॥ अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना। दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत्॥२०॥ अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप। दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा॥२१॥ काल-मृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये। यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी॥२२॥ नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्र-विनायकौ। नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत्॥२३॥ अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः। अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी॥ २४॥ महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती। ईश्वरी पुण्य-पापानां सर्वलोकमहेश्वरी॥ २५॥ महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः। पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्॥ २६॥

अर्घ्यादिभिरलङ्कारैर्गन्ध-पुष्पैस्तथाऽक्षतैः ध्यपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नाना- भक्ष्य- समन्वितै: ॥ २७॥ रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप। (बलि-मांसादि-पूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता॥ तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित्।) प्रणामा- ऽचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना॥२८॥ सकपूरैश्च ताम्बूलैर्भक्ति-भाव-समन्वितै:। वामभागेऽत्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम्॥२९॥ पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया। दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम्।।३०॥ वाहनं पूजयेद् देव्या धृतं येन चराऽचरम्। कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः॥३१॥ ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमै:। एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह॥३२॥ चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात्। प्रदक्षिणा-नमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥३३॥ क्षमापयेज्जगब्द्वात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः। प्रतिश्लोकं च जुहुयात् पायसं तिल-सर्पिषा॥३४॥ जुहुयात् स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हवि:। भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत् सुसमाहित: ॥३५॥ प्रयतः प्राञ्जलिः प्रहः प्रणम्यारोप्य चात्मिन। सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत्॥३६॥

एवं यः पूजयेद् भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्। भक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।३७॥ यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्। भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत् परमेश्वरी॥३८॥ तस्मात् पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम्। यथोक्तेन विधानेन चिण्डकां सुखमाप्स्यसि॥३९॥ इति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम्।

## मूर्ति- रहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा। स्तुता या पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्॥१॥ कनकोत्तमकान्तिः या सुकान्ति-कनकाम्बरा। देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा॥२॥ कमलाङ्क्ष्या - पाशाब्जैरलङ् वृत्त - चतु भुं जा । इन्दिरा कमला लक्ष्मी: सा श्रीरुक्माम्बुजासना॥३॥ या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ। तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम्॥४॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा। रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा॥५॥ रक्तायुधा रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका। पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम्॥६॥ विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी। वसुधेव दीर्घौ लम्बावितस्थूलौ तावतीव मनोहरौ॥७॥ सं.पू.य.वि. १५

कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी। भक्तान् सम्पाययेद् देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ॥८॥ खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा। आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च॥९॥ अनया व्याप्तमखिलं जगतस्थावर-जङ्गमम्। इमां यः पूजयेद् भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम्॥१०॥ (भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।) अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम्। तं सा परिचरेद् देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना॥११॥ शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना। गम्भीर-नाभिस्त्रिवली-विभूषित-तनूदरी ॥१२॥ सुकर्कश-समोत्तुङ्ग-वृत्त-पीन-घनस्तनी मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया॥१३॥ पुष्प-पल्लव-मूलादि-फलाढ्यं शाकसञ्चयम्। काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुतृण्मृत्युभयापहम्॥१४॥ कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी। शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता॥१५॥ विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम्। उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती॥१६॥ शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायन् जपन् सम्पूज्यन् नमन्। अक्षय्यमञ्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम्॥१७॥ भीमाऽपि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा। विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा॥१८॥

चन्द्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती। एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता॥१९॥ तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत्। चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता॥२०॥ चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते। इत्येता मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुघाधिप॥२१॥ जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः। इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित् त्वया।।२२॥ व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम्। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम्॥२३॥ सप्तजन्मार्जितैघोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्विकिल्बिषै:।।२४॥ देव्या ध्यानं मयाख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत्। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम्।।२५॥ (एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि। सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्॥ अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।) इति मूर्तिरहस्यं सम्पूर्णम्।

देव्यपराध-क्षमापन-स्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदिष च न जाने स्तुतिमहो, न चाह्वानं ध्यानं तदिष च न जाने स्तुति-कथाः। न जाने मुद्रास्ते तदिष च न जाने विलपनं, परं जाने मातस्त्वदनुशरणं क्लेशहरणम्॥१॥

विधेरज्ञानेन द्रविण-विरहेणालसतया, विधेयाऽशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्। तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोब्हारिणि शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥२॥ पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः। मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिद्पि कुमाता न भवति॥३॥ जगन्मातर्मातस्तव चरण-सेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि! द्रविणमपि भूयस्तव मया। तथाऽपि त्वं स्नेहं मिय निरुपमं यत्प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदिप कुमाता न भवति॥४॥ परित्यक्ता देवा विविध-विधि-सेवाकुलतया, मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि। इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नाऽपि भविता, निरालम्बो लम्बोदर-जननि कं यामि शरणम्।।५॥ श्रपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा, निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटि-कनकै:। तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं, जनःको जानीते जननि जपनीयं जपविधौ॥६॥ चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो, जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः। कपाली-भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं, भवानि त्वत्पाणि- ग्रहण- परिपाटी- फलमिदम्।।७॥ न मोक्षस्याऽऽकांक्षा-भव-विभव-वाञ्छापि च न मे, न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छाऽपि न पुनः।

अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै,
मृहानी रुद्राणी शिव-शिव भवानीति जपतः।।८।।
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः,
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे,
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव।।९॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणाणंविशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधा-तृषार्ता जननीं स्मरन्ति।।१०॥
जगदम्ब! विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणाऽस्ति चेन्मिय।
अपराध-परम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्।।१९॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि! यथायोग्यं तथा कुरु।।१२॥
इस प्रकार देव्यपराधक्षमापन स्तोत्र समाप्त। ●

### सिब्द-कुञ्जिका-स्तोत्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्।।१॥
न कवचं नाऽर्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नाऽिष ध्यानं च न न्यासो न च वाऽर्चनम्।।२॥
कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि! देवानामिष दुर्लभम्।।३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्विति!।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।।४॥

मन्त्र—ॐ ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।। इति मन्त्रः।

रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि। नमस्ते नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि॥१॥ नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि। जायतं हि महादेवि! जपं सिद्धं कुरुष्व मे॥२॥ ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका। क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते॥३॥ चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी। विच्वे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणी॥४॥ धां धीं धूं धूर्जिटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी। क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि! शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥५॥ हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी। भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः॥६॥ अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं। धिजायं धिजायं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥७॥ पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा। सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे॥८॥ इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे। अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति!॥९॥ यस्तु कुञ्जिकाया देवि! हीनां सप्तशतीं पठेत्। न तस्य जायते सिब्हिररण्ये रोदनं यथा॥१०॥

इति रुद्रयामलस्थ-गौरीतन्त्रे शिव-पार्वती-संवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

#### देवताओं के यज्ञ विचार

#### रूद्रयाग

रूद्रयाग तीन प्रकार का होता है—रुद्र, महारुद्र और अतिरुद्र। रूद्रयाग ५,७ अथवा ९ दिन में होता है। महारुद्र याग ९ दिन में अथवा ११ दिन में होता है। अतिरूद्रयाग ९ दिन में अथवा ११ दिन में होता है। रूद्रयाग में १६ अथवा २१ विद्वान् होते हैं। महारूद्रयाग में ३१ अथवा ४१ विद्वान् होते हैं। अतिरूद्रयाग में ६१ अथवा ७१ विद्वान् होते हैं।

रूद्रयाग में उन्नीस हजार नव सौ इक्कीस (१९९२१) आहुति होती है। महारूद्र में दो लाख उन्नीस हजार एक सौ इकतीस (२१९१३१) आहुति होती है। अतिरूद्रयाग में चौबीस लाख दस हजार चार सौ इकतालिस (२४१०४४१) आहुति होती है।

लघु रूद्रयाग में हवन सामग्री ११ मन, महारूद्रयाग में २१ मन और

अतिरूद्रयाग में ७० मन लगती है।

विष्णुयाग

विष्णुयाग तीन प्रकार का होता है—विष्णु, महाविष्णु और अतिविष्णु। विष्णुयाग ५, ७, ८ अथवा ९ दिन में होता है। महाविष्णुयाग ९ दिन में होता है। अतिविष्णुयाग ९ दिन में अथवा ११ दिन में होता है। विष्णुयाग में १६ अथवा २१ विद्वान् होते हैं। महाविष्णुयाग में ३१ अथवा ४१ विद्वान् होते हैं। अतिमहाविष्णुयाग में ६१ अथवा ७१ विद्वान् होते हैं।

विष्णुयाग में हवनसामग्री ११ मन, महाविष्णुयाग में २१ मन और

अतिविष्णुयाग में ५५ मन लगती है।

अनन्तदेवकृत विष्णुयाग पद्धति के अनुसार विष्णुयाग में सोलह हजार (१६०००) आहुति होती है। महाविष्णुयाग में एक लाख साठ हजार (१,६००००) आहुति होती है। अतिविष्णुयाग में तीन लाख बीस हजार (३,२००००) आहुति होती है।

नागरकृत विष्णुयाग पद्धति के अनुसार विष्णुयाग में एक लाख साठ हजार (१६००००) आहुति होती है। महाविष्णुयाग में तीन लाख बीस हजार (३,२००००) आहुति होती है। अतिविष्णुयाग में चार लाख अस्सी

हजार (४८०,०००) आहुति होती है।

आधुनिक विद्वानों की मुद्रित विष्णुयाग पद्धति के अनुसार विष्णुयाग में सोलह हजार (१६०००) आहुति होती है। महाविष्णुयाग में एक लाख साठ हजार (१६००००) आहुति होती है। अतिविष्णुयाग में तीन लाख बीस हजार (३२००००) आहुति होती है।

#### हरिहर महायज्ञ

हरिहर महायज्ञ में हरि (विष्णु) और हर (शिव) इन दोनों का यज्ञ होता है। प्रात:काल विष्णुयज्ञ और मध्याह्न में रूद्रयज्ञ होता है। विष्णुयज्ञ में 'पुरुषसूक्त' से आहुति होती है और रूद्रयज्ञ में 'रूद्रसूक्त' से आहुति होती है। हरिहर महायज्ञ में १६ अथवा २१ विद्वान् होते हैं। हरिहर महायज्ञ में विष्णुयज्ञ और रूद्रयज्ञ की तरह आहुति की संख्या कही गयी है। हरिहर याग में हवन सामग्री २५ मन लगती है। यह महायज्ञ ९ दिन अथवा ११ दिन में होता है।

#### रामयज्ञ

रामयज्ञ विष्णुयाग की तरह होता है। इसमें पुरुषसूक्त से अथवा 'ॐ रामाय नमः' इस षडक्षर मन्त्र से आहुति होती है। प्रतिदिन अथवा पूर्णाहुति के दिन (रामसहस्रनामावली) से हवन करना चाहिये। रामयज्ञ में १६ अथवा २१ विद्वान् होते हैं। इसमें हवनसामग्री १५ मन लगती है। यह यज्ञ ८ दिन में होता है। रामयज्ञ में एक लाख (१०००००) अथवा एक लाख साठ हजार (१६००००) आहुति होती है।

#### शिवशक्ति महायज्ञ

शिवशिक्त महायज्ञ में शिव (रूद्रयज्ञ) और शिक्त (दुर्गा) इन दोनों का यज्ञ होता है। शिवयज्ञ प्रात:काल और शिक्तयज्ञ (दुर्गायज्ञ) मध्याह्न में होता है। शिवयज्ञ (रूद्रयज्ञ) में शुक्ल यजुर्वेद के पाँचवें सम्पूर्ण अध्याय से हवन होता है और शिक्तयज्ञ (दुर्गायज्ञ) में सम्पूर्ण दुर्गा से हवन होता है।

शिवयज्ञ और शक्तियज्ञ इन दोनों यज्ञों की आहुति की संख्या एक लाख पचीस हजार (१२५०००) कही गयी है। इसमें हवन-सामग्री १५ मन लगती है। शिवशक्ति महायज्ञ में २१ हवन करने वाले विद्वान् होते हैं। यह महायज्ञ ९ दिन अथवा ११ दिन में सुसम्पन्न होता है।

#### गणेशयज्ञ

गणेशयज्ञ में शुक्ल यजुर्वेद के ३३वें अध्याय के ६५वें मन्त्र से (७२) मन्त्र तक आठ मन्त्रों से आहुति होती है। प्रतिदिन अथवा पूर्णाहुति के दिन 'गणेशसहस्त्रनाम' से हवन करना चाहिए। गणेशयज्ञ में एक लाख (१००००) आहुति होती है। इसमें १६ अथवा २१ विद्वान् होते हैं। गणेशयज्ञ में हवन-सामग्री १२ मन लगती है। यह यज्ञ ८ दिन में होता है।

#### दुर्गायज्ञ । गुनलाल हुण

दुर्गायज्ञ में 'दुर्गासप्तशती' के द्वारा हवन होता है। प्रतिदिन अथवा पूर्णाहुति के दिन 'दुर्गासहस्रनामावली' (देवीसहस्रनामावली) से हवन करना चाहिए दुर्गायज्ञ में हवन करनेवाले ९ विद्वान् होते हैं। आचार्य, ब्रह्मा और द्वारपालादि सब मिलाकर १६ अथवा २१ विद्वान् होते हैं। यह यज्ञ ९ दिन में होता है। दुर्गायज्ञ में हवन-सामग्री २० मन अथवा १५ मन लगती है।

#### लक्ष्मीयज्ञ

लक्ष्मीयज्ञ में ऋक परिष्टोक्त 'श्रीसूक्त' से हवन होता है। प्रतिदिन अथवा यज्ञ की पूर्णाहुित के दिन 'लक्ष्मीसहस्रनामावली' से हवन करना चाहिए। लक्ष्मीयज्ञ में एक लक्ष (१०००००) आहुित होती है। इसमें हवन करनेवाले ११ अथवा १६ विद्वान् होते हैं। आचार्य और ब्रह्मा मिलाकर २१ विद्वान् होने चाहिए। यह यज्ञ ८ दिन में होता है। लक्ष्मीयज्ञ में हवन-सामग्री १५ मन लगती है।

#### लक्ष्मीनारायण महायज्ञ किलीक्ष

लक्ष्मीनारायण महायज्ञ में लक्ष्मी और नारायण (विष्णु) इन दोनों का यज्ञ होता है। प्रात:काल लक्ष्मी का यज्ञ और मध्याह्न में नारायण (विष्णु) का यज्ञ होता है। लक्ष्मीयज्ञ में ऋग्वेदपरिशिष्टोक्त 'श्रीसूक्त' से हवन होता है और नारायण यज्ञ में पुरुषसूक्त (शुक्ल यजुर्वेद के ३१वें अध्याय के प्रारम्भ के १६ मन्त्र) से हवन होता है। लक्ष्मीयज्ञ और नारायण यज्ञ इन दोनों की आहुति संख्या एक लाख साठ हजार (१६००००) अथवा सवा लाख (१२५०००) कही गई है। इसमें ५० मन हवन-सामग्री लगती है। लक्ष्मीनारायण महायज्ञ में हवन करनेवाले ३१ विद्वान् होते हैं। यह महायज्ञ ८ दिन में अथवा ९ दिन में अथवा ९१ दिन में सुसम्पन्न होता है।

तिलार्थं तण्डुलाः देयास्तण्डुलार्धं यवास्तथा। यवार्धं शर्कराः प्रोक्ताः सर्वार्द्धं च घृतं स्मृतम्।।

(आनन्दरामायण)

तिल का आधा चावल और चावल काआधा जौ देना चाहिये। जौ से आधा शर्करा कही गई है और सबसे आधा घृत कहा गया है।

तिलार्थं तण्डुलाः प्रोक्तास्तण्डुलार्धं यवास्तथा। तण्डुलैस्त्रिगुणं चाज्यं यथेष्ठं शर्करा मता।।

तिल के आधे चावल कहे गये हैं, चावलों के आधे जौ और चावलों से तिगुना घृत कहा गया है। शर्करा जितनी इच्छा हो उतनी कही गई है।

तिलास्तु द्विगुणाः प्रोक्ता यवेभ्यश्चैव सर्वदा। अन्यं सौगन्धिकाः स्निग्धा गुग्गुलादि यवः समाः॥

यव की अपेक्षा तिल को द्विगुणित रखना चाहिए और अन्य सुगन्धित गुग्गुल इत्यादि द्रव्यों को यव के बराबर ही रखना चाहिये।

तिलार्थं तु यवाः प्रोक्ता यवार्धं तण्डुलाः स्मृताः। तण्डुलार्धं शर्कराः प्रोक्ता आज्यभाग चतुष्टयम्।।

तिल का आधा यव, यव का आधा चावल, चावल की आधी चीनी और चतुर्गुण घृत से शाकल्य का निर्माण उत्तम कहा गया है।

तिलाधिक्ये भवेल्लक्ष्मीर्यवाधिक्ये दरिद्रता। घृताधिक्ये भवेन्मुक्तिः सर्वसिद्धिस्तु शर्करा॥

तिल की अधिकता से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है और यव की अधिकता से दिरद्रता की प्राप्ति होती है। घृत के अधिक से मुक्ति और शर्करा के आधिक्य से सर्वसिद्धि होती है।

उत्तम गोघृतं प्रोक्तं मध्यमं महिषीभवम्। अधमं छागलीजातं तस्माद् गव्यं प्रशस्यते।।

गोघृत सर्वोत्तम, भैंस का घृत मध्यम और बकरी का घृत अधम कहा गया है, अत: इनमें गोघृत ही प्रशस्त है।

## आहुति देने का विचार

प्रश्न- अधोमुखः ऊर्ध्वपादः प्राङ्मुखो हव्यवाहनः। तिष्ठत्येव स्वभावेन आहुतिः कुत्र दीयते?॥

(कारिका)

'अग्नि (जो हवनीय द्रव्य चरू आदि को तत्तत् देवताओं को पहुँचाता है) स्वभावतः ही अधोमुख (नीचे की ओर मुखवाला) ऊर्ध्वपाद (ऊपर की ओर पैरवाला) रहता है, उसका मुँह पूर्वकी ओर रहता है, ऐसी स्थिति में आहुति कहां दी जाय?

उत्तर- सपवित्राम्बुहस्तेन वहेः कुर्यात्प्रदक्षिणम्। हव्यवाट् सलिलं दृष्ट्वा विभेति सम्मुखो भवेत्।।

(कारिका)

हाथ में पवित्री और जल लेकर कर्ता अग्नि की प्रदक्षिणा करे। हव्यवाहन (अग्नि) जल को देखकर डर जाता है और सम्मुख (हवनकर्ता के सामने) हो जाता है। इसलिए सामने होम करना चाहिए।

### हवनादि में हस्तस्तर का निषेध

उपस्थाने जपे होमे दोहे च यज्ञकर्मणि। हस्त स्तरं न कुर्वीत शेषास्तु स्वरसंयुता।।

(क्षौतोल्लास)

उपस्थान में, जप में, गोदोहन (गोदोहन-कर्म श्रौतभाग में होता है) में और यज्ञकर्म में हस्तस्तर नहीं लगाना चाहिए। शेष कर्मों में स्तर लगाना चाहिये।

जपे होमे मखे श्राब्हेऽभिषेके पित्रकर्मणि। हस्तस्वरं न कुर्वीत सन्ध्यादौ देवपूजने।।

(स्मार्तप्रभु)

जप में, होम, में, यज्ञ में, श्राद्ध में, अभिषेक में, पित्रकर्म में, सन्ध्या में तथा देवपूजन में हस्तस्वर नहीं लगाना चाहिये।

#### हवन मुद्रा के भेद

होमे मुद्राः स्मृतास्त्रिस्त्रो मृगी हंसी च सूकरी। मुद्रां विना कृतो होमः सर्वो भवति निष्फलः॥

(परशुरामकारिका)

होम में मृगी, हंसी और सूकरी यह तीन प्रकार की मुद्रा कही गयी है। मुद्रा के बिना किया हुआ सब हवन निष्फल होता है।

### कामनाभेद से मुद्रा का विधान शान्तिक तु मृगी ज्ञेया हंसी पौष्टिककर्मणि। सूकरी त्विभचारे तु कार्या तन्त्रविदुत्तमै:।।

(परशुरामकारिका)

शान्ति-कर्म के मृगी-मुद्रा, पौष्टिक कर्म में हंसी और अभिचारात्मक (मारणात्मक) कर्म में सूकरी, मुद्रा से होम करना चाहिए, यही उत्तम तन्त्रशास्त्र के ज्ञाताओं के लिए उचित है।

#### यज्ञ के कलशों पर नारिकेल के स्थापन का क्रम अधोमुखं विवर्धनाय

ऊर्ध्वस्य वक्त्रं बहुरोगवद्ध्यै। प्राचीमुखं वित्तर्विनाशताय

तस्माच्छुभं सम्मुखनारिकेलम्।।

यदि नारिकेल (नारियल) अधोमुख रखा जाय, तो उससे शत्रुओं की वृद्धि होता है, यदि ऊपर को मुख करके रखा जाय तो उससे बहुत से रोगी की वृद्धि होती है तथा यदि पूर्व की ओर मुख करके रखा जाय तो उससे धन नाश होता है। इसलिये नारियल को सम्मुख रखना शुभ है।

### ब्रह्मा आसन दक्षिण में क्यों?

उत्तरे सर्वत्रात्राणि उत्तरे सर्वदेवताः। उत्तरेऽपां प्रणयनं किमर्थं ब्रह्म दक्षिणे॥

प्रश्न-उत्तर दिशा में समस्त देवता रहते हैं और उत्तर दिशा में जल का प्रणयन होता है, तो ब्रह्मा का आसन दक्षिण दिशा में किसलिये रखा जाता है।

#### यमो वैवस्वतो राजा वसते दक्षिणा दिशि। तस्य संरक्षणार्थाय ब्रह्मा तिष्ठति दक्षिणे।।

उत्तर-दक्षिण दिशा में यम और वैवस्वत नामक राजा रहते हैं, अत: उनके रक्षार्थ ब्रह्मा दक्षिण दिशा में रहते हैं।

दक्षिणे दानवाः प्रोक्ताः पिशाचोरग राक्षसाः। तेभ्यः संरक्षणार्थाय ब्रह्मा स्थाप्यस्तु दक्षिणे।।

(कारिका)

दक्षिण दिशा में समस्त दानव, पिशाच, नाग और राक्षसादि रहते हैं, अत: उनसे सुरक्षित रखने के लिये ही ब्रह्मा को दक्षिण दिशा में स्थापित करना चाहिये।

#### आशीर्वादेऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा। शयने भोजने चैव पत्नि तूत्तरतो भवेत्।। (धर्मप्रवृत्ति)

ब्राह्मणों के द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करने के समय अभिषेक के समय, ब्राह्मणों के पाद-प्रक्षालन के समय, शयन के समय और पित के साथ भोजन करते समय पत्नी को सर्वदा अपने पित से उत्तर अर्थात् वाम भाग में बैठना चाहिये।

### यज्ञादि में प्रौढपाद बैठने का निषेध स्नानं दानं जपं होमे भोजनं देवतार्चनम्। पौढपादो न कुर्वीत स्वाधायां पितृतर्पणम्॥

(अत्रि संहिता ३१८)

स्नान, दान, जप, होम, भोजन, देवपूजन, वेद का स्वाध्याय और पित्र तर्पण में पौढपाद (जाँघपर पैर रखकर) होकर नहीं बैठना चाहिए।

दानमाचमनं होमं भोजनं देवतार्चनम्। प्रौढपादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम्।।

(शाट्यायन:)

दान, आचमन, होम, भोजन, देवपूजन, स्वाध्याय और पितृतर्पण में पौढपाद होकर नहीं बैठना चाहिए। मुक्तां शुक्तिं हरेरचीं शिवलिङ्गं शिवां तथा। शङ्खं प्रदीपं मन्त्रं च माणिक्यं हीरकं तथा।।३९॥ (देवी. नवम स्कं. अ. ९)

#### यज्ञसूत्रं च पुष्पं च पुस्तकं तुलसीदलम्। जपमालां पुष्पमालां कर्पूरं च सुवर्णकम्।।४०।।

किंतु हे भगवन्! आप यह सुन लीजिये कि मैं मोती, सीप, शालग्राम शिला, शिवलिंग, पार्वती विग्रह, शंख, दीप, मन्त्र, माणिक्य, हीरा, यज्ञोपवीत, पुष्प, पुस्तक, तुलसीदल, जपमाला, पुष्पमाला, कपूर, सुवर्ण,

#### गोरोचनं चन्दनं च शालग्राम जलं तथा। एतान्वोढुमशक्ताहं क्लिष्टा च भगवच्छृणु॥४१॥

गोरोचन, चन्दन और शालग्राम का जल— इन वस्तुओं का वहन करने में सर्वथा असमर्थ हूँ, इससे मुझे क्लेश होता है।

## विप्रपादोदके चैव शालग्रामोदके तथा। करोति भेदबुद्धिं यो ब्रह्महत्यां लभेत्तु सः।।३६॥

(देवी.नवमस्कंध अ. ३४)

जो मनुष्य ब्राह्मण के चरणोदक तथा शालग्राम के जल में भेदबुद्धि करता है, वह ब्रह्महत्या के पाप का भागी होता है।

#### शिवनैवेद्यके चैव हरिनैवेद्यके तथा। करोति भेदबुद्धिं यो ब्रह्महत्यां लभेतु सः॥३७॥

(देवी.नवमस्कंध अ. ३४)

जो मनुष्य शिव के नैवेद्य तथा भगवान् विष्णु के नैवेद्य में भेदबुद्धि रखता है, वह ब्रह्महत्या के पाप का भागी होता है।

#### कृष्णजन्माष्टमीं रामनवमीं च सुपुण्यदाम्। शिवरात्रिं तथा चैकादशीं वारे खेस्तथा।।४६।।

(देवी.नवमस्कंध अ. ३४)

जो मनुष्य पुण्यदायिनी कृष्णजन्माष्टमी, रामनवमी, शिवरात्रि, एकादशी और रिववार—इन पाँच पर्वों के अवसर पर व्रत नहीं करते, वे चाण्डाल से भी बढ़कर पापी हैं और उन्हें ब्रह्महत्या का पाप लगता है। 

# न पाणिना न शूर्पेण न च मेध्याजिनादिभिः। मुखेनोपधमेदग्निं मुखादेव व्यजायत।।५।।

(देवी.एकादश स्कंध अ. २२)

हाथ से, सूप से अथवा पवित्र मृगचर्म से धौंककर अग्नि को प्रज्वलित नहीं करना चाहिये, अपितु मुख से फूँककर अग्नि को प्रज्वलित करना चाहिये; क्योंकि अग्नि का प्राकट्य मुख से ही हुआ है।

# पटकेन भवेद्याधिः शूर्पेण धननाशनम्। पाणिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिर्मुखेन तु॥७॥

(देवी.नवमस्कंध अ. २२)

कपड़े से हवा करने पर व्याधि, सूप से हवा करने पर धननाश तथा हाथ से हवा करने पर मृत्यु की प्राप्ति होती है। मुख से फूँककर आग प्रज्वलित करने से कार्य की सिद्धि होती है।

#### वायुं वायौ जयेद्विप्रः प्राणसंयमनत्रयात्। ब्राह्मणः श्रुतिसम्पन्नः स्वधर्मनिरतः सदा॥२॥

(देवी.नवमस्कंध अ. ३)

श्रुति-सम्पन्न ब्राह्मण को सदा अपने धर्म का पालन करना चाहिए, उसे वैदिक मन्त्र का जपकरना चाहिये, लौकिक मन्त्र का जप कभी नहीं करना चाहिये।

## दक्षिणेनोदकं पीत्वा वामेन संस्पृशेद् बुधः। तावन्न शुध्यते तोयं यावद्वामेन न स्पृशेत्।।२५॥

(देवी.एकादश स्कंध अ. १६-२५)

बुद्धिमान् व्यक्ति को चाहिए की दाहिने हाथ से जल पीते समय बायें हाथ से उसे स्पर्श किये रहे; क्योंकि वह जल तब तक शुद्ध नहीं होता जब तक बायें हाथ का स्पर्श नहीं होता।

#### शिवाय शिवरातौ च विल्पपत्रं ददाति यः। पत्रमानयुगं तत्र मोदते शिवमन्दिरे।।७२।।

(देवी.नवमस्कंध अ. ३०)

जो मनुष्य शिवरात्रि के दिन भगवान् शंकर को बिल्वपत्र अर्पण करता है, वह बिल्वपत्रों की जितनी संख्या है उतने वर्षी तक उस शिवलोक में आनन्द करता है।

#### षडङ्गन्यासाः

'मनोजूति'रिति मन्त्रस्य बृहस्पतिऋषिः, बृहतीच्छन्दः, बृहस्पति-देवता, हृदयन्यासे विनियोगः॥

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोक्त्विरिष्टं य्यज्ञर्ठ. सिममं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ. प्रतिष्ठ्ठ।। ॐ हदयाय नमः॥१॥

ॐ अबोध्द्याग्निः समिधा जनानां प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम्। यहव्वा ऽइव प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ।। ॐ शिरसे स्वाहा॥२॥

ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअरितं पृथिव्या व्यैश्श्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कविर्ठ. सम्प्राजमितिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्तं देवाः।। ॐ शिखायै वषट्।।३॥

ॐ मर्माणि ते व्वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृते नानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्नं त्वानु देवा मदन्तु।। ॐ कवचाय हुम्॥४॥

ॐ व्यिश्श्वतश्चक्षुरुत व्यिश्श्वतोमुखो व्यिश्श्वतोबाहुरुत व्यिश्श्वतस्पात्। संबाहुब्भ्यां धमित सम्पत्नैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽएक:।। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।।५।।

ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिष:। मा नो व्वीरान् रुद्द्र भामिनो व्वधीर्हिविष्मन्त: सदिमत्त्वा हवामहे।। ॐ अस्त्राय फट्।।६।।

इति षडङ्गन्यासाः ।

#### रुद्र-प्रार्थना

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतिगरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।। करचरणकृतं वाक्-कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व जय जय करुणाब्धे! श्रीमहादेव! शम्भो!।।२।। ॐ शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम्। दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्।।३।। गङ्गाधरं नीलग्रीवं सशाङ्काङ्कं नाग-यज्ञोपवीतिनम्। व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्।।४।। कमण्डल्वक्षसूत्राभ्यामन्वतं शूलपाणिनम्। ज्वलन्तं पिङ्गल-जटाजूटमुद्योतकारिणम्।।५।। अमृतेनाऽऽप्लुप्तं हृष्टमुमादेहार्घधारिणम्। दिव्यसिंहासनासीनं दीव्यभोगसमन्वितम्।।६।। दिग्देवतासमायुक्तं सुराऽसुर-नमस्कृतम्। नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्।।७।। सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्। एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्।।८।।

# शुक्लयजुर्वेदीय-रुद्राष्ट्राध्यायी प्रथमोऽध्यायः (१)

हरि÷ ॐ। गुणानां त्वा गुणपतिष्ठ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपितिष्ठ हवामहे निधीनां त्वी निधिपितिष्ठ हवामहे वुसो मम। आहमीजानि गर्ब्स् धमा त्वमीजासि गर्ब्भ्धम्॥१॥ गायुत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पुङ्कत्या सुह। बृह्त्युष्टिणहो कुकुप्सूचीभि÷ शम्यन्तु त्त्वा॥२॥ द्विपदा वाश्श्चतुष्ट्यदा-स्त्रिपदा वाश्श्च षट्पदा । विच्छन्दा वाश्नु सच्छीन्दाः सूचीिभि÷ शम्मयन्तु त्वा॥३॥ सहस्तोमा सहस्रन्दस ऽआवृते सहस्रमा ऽऋषेय स्पत दैळ्यां÷। पूर्वेषां पन्थामनुदृश्यु धीरा ऽअ्त्र्वालेभिरे रत्थ्यो न रुश्मीन्॥४॥ ॐ खज्जाग्ग्रीतो दूरमुदैति दैवं तदुं सुप्प्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकुं तन्मे मर्न÷ शिव-सङ्कल्प्यमस्तु॥५॥ येन् कम्मीण्युपसौ मनीषिणौ युज्ञे कृण्वन्ति व्विदथेषु धीरि । यदेपूर्वं व्यक्षम्नः प्रजानुां तत्रमे मर्नः शिवसङ्कल्प्यमस्तु॥६॥ यत्त्प्रज्ञानेमृत चेतो धृतिश्च्य यज्ज्योति-रुन्तरुमृतं प्रजासु। यसम्मान्न ऽऋते किञ्च न कम्मी क्रियते तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्प्यमस्तु॥७॥ येनेदं भूतं भुवेनं भविष्व्यत्त्परिगृहीतम्मृतेन् सर्वुम्। येने युज्ञस्तायते सुप्तहोता तन्ने मने÷ शिवस्कल्पमस्तु ॥८॥ वस्मिन्नच् साम् वर्जू छिषु वस्मिन्नप्रतिष्ठिता रथनाभाविद्याराः। यसिमाँश्चित्तः सर्व्यमोतं प्रजानां तत्रमे मर्नः शि्वसंङ्कल्प्पमस्तु ॥९॥ सृष्गुर्धारश्वानिव्

बन्मनुष्य्यान्नेनीयते ऽभीशीभव्वाजिन ऽइव। हुत्प्रतिष्ठृं ख्यदेजिरं जविष्ठृं तन्मे मने÷ शिवसङ्कल्प्यमस्तु ॥१०॥

### द्वितीयोऽध्यायः (२)

हरि÷ ॐ। सुहस्रेशीर्ष्या पुरुष सहस्राक्षः सुहस्रेपात्। स भूमिश सुर्व्वतस्प्यृत्त्वात्त्यतिष्टुद्दशाङ्गुलम्॥१॥ पुरुष ऽएवेदश सर्व्य व्यद्धतं व्यच्च भाव्यम्। उतामृत्त्वस्येशाना वदन्नैनातिरोहित॥२॥ एतावीनस्य महिमातो ज्ज्यायौश्चु पूर्रषः। पादौऽस्यु व्विश्श्वी भूतानि श्रिपार्दस्यामृतं दिवि॥३॥ श्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्त्पुर्रष् पादौऽस्येहाभवृत्त्पुर्न÷। ततो व्यिष्वुङ् व्युकामत्त्साशनानशुने ऽअभि॥४॥ ततौ व्यिरार्डजायत व्यिराजो ऽअधि पूर्रवः। स जातो ऽअत्येरिच्च्यत पृश्चाद्धमि्मथौ पुरशापा तस्मौद्यज्ञा-त्सर्व्यहुत् सम्भृतं पृषद् ज्यम्। पुश्रूस्ता अवेत व्यायुळ्यानारुणण्या ग्ग्राम्म्याश्च्यु ये।।६॥ तस्माद्य-ज्ञान्सर्व्यहुतु ऽऋचु सामीनि जिज्ञरे। छन्दि छिस जिज्ञरे तस्म्माद्यजुस्तस्मदिजायत॥७॥ तस्म्मादश्चा ऽअजायन्त् वे के चौभ्यादतः। गावौ ह जित्तरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअंजावयं÷ ॥८॥ तं व्यज्ञं ब्हिष् प्यौक्ष्रपुर्सषं जातमग्गृतः। तेने देवा ऽअयजन्त साद्ध्या उऋषेयश्च्य वे।।९॥ वन्पुर्मषुं व्यादेधुः कति्धा व्यकल्पयन्। मुखुं किमस्यासीित्क बाहू किमूरू पादी उउच्येते॥१०॥ ब्बाह्मण्रोऽस्य मुखमासीद् बाहूराज्ञ्यू÷कृतः। ऊरू तदस्य

यद्वैश्यं÷ पुद्ध्यार्थशूद्रो ऽअंजायत॥११॥ चुन्द्रमा मनेसो जातश्रक्षो सूर्व्यो ऽअजायत। अओम्रोद्धायुश्चे प्याणश्च्य मुखाद्गिनरं जायत॥१२॥ नाब्भ्यां ऽआसीदुन्तरिक्षष्ट शीष्णों द्यौः समेवर्तत। पुद्भ्यां भूमिुर्दिशुः श्रोश्रात्तथा लोकाँ २॥ ऽअकल्प्ययन्॥१३॥ यन्पुरुषेण हुविषी देवा युज्ञमतेन्वत। व्यसुन्तोऽस्यासीदाज्ज्यं ग्रीषम उर्ध्मः शुरद्धविशा१४॥ सुप्तास्यांसन्परिधयुक्तिश सुप्त समिर्धः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्त्वाना ऽअवध्नुन्पुरुषं पशुम्॥१५॥ अज्ञेन अज्ञमेयजन्त देवास्तानि धम्माणि प्रथमान्यासन्। ते हु नाकं महिमानं सचन्तु अशु पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥१६॥ अद्भयः सम्भृतः पृथिळ्यैरसांच्च व्विश्वकेर्मण् समवर्त्तताग्रे। तस्यु त्त्वष्टा व्विद्धंदूपमेति तन्मर्त्यंस्य देव्त्वमाजानुमग्रे॥१७॥ व्वेदाहमेतं पुरुषं मुहान्त्रीमादित्त्यवेण्णुं तमसः पुरस्तात्। तम्व व्विद्तित्वातिऽमृत्युमेति नाउन्चः पन्था व्विद्युतेऽयेनाय।।१८॥ प्युजापेतिश्शारित् गढभें ऽअन्तरजीयमानो बहुधा व्विजीयते। तस्य योनिं परिपश्यक्ति धीरास्तिरिमन्ह तस्त्थु बर्भु वीनानि व्यिश्धा। १९॥ यो देवेब्भ्यं ऽआतपति यो देवानां पुरोहित। पूर्व्वो वो देवेब्भ्यो जातो नमो रुचाय ब्बाह्मये॥२०॥ रुचं ब्हाह्मं जुनयन्तो देवा ऽअग्गे तदेब्बुवन्। यस्त्वैवं ब्रोह्मणो व्विद्यात्तस्ये देवा ऽअस्वशे ॥२१॥ श्रीश्च ते लुक्ष्मीश्रश्च पत्वन्यविहोराञ्चे पाश्रश्चे

नक्षित्राणि रूपमुश्यिनौ ळ्यात्तम्। इष्णित्रिषाणामुं मे उइषाण सर्वुलोकं में उइषाण॥२२॥

# तृतीयोऽध्यायः (३)

हरि÷ ॐ। आशु शशानो व्यष्मो न भीमो धनाघुनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्देनोनिम्ष ऽएकवीरः श्तर सेना ऽअजयत्साकमिन्द्रे÷॥१॥ सङ्क्रन्देनेनाऽनिमिषेणी जिष्णुना युक्तारेण दुश्च्च्यव्नेन धृष्णुना। तदिन्द्रेण जयत् तत्त्र्सहद्ध्वं य्युधौ नर् उइषुहस्तेन् व्यूष्णा।।२॥ स उइषुंहस्तुं स निष्ङ्गिभिर्व्यशी स७स्रष्टा स युध् उइन्द्रो गुणेने। सृष्ट् सृष्ट्जित्सीमुपा बाहुशुर्द्ध्युग्गर्धन्वा प्यतिहिताभिरस्तां॥३॥ बृहंस्प्यते परिदीया रथेन रक्षोहामित्रौँ २॥ऽअपुबार्धमानः। प्रभुञ्जन्त्सेनिः प्रमृणो गुधा जयंशसमार्वामेद्धयविता रथानाम्॥४॥ ब्लुविज्ञायस्त्थिविरुः प्यवीरुः सहस्वात्र्वाजी सहमान ऽव्ग्ग्रः।अभिवीरो ऽअभिसंत्वा सहोजा जैर्शमिन्ह रथुमातिष्ठु गोवित्॥५॥ गोश्रभिदं गोविदं व्वज्रवाहुं जयन्तुमज्ज्मे प्रमृणन्तुमोजेसा।इमक्ष सेजाताऽअनु वीर-यद्विमिन्द्रेष्ट सखायो ऽअनु सष्टर्रभद्ध्वम्॥६॥ अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽद्यो व्वीरः श्तमन्युरिन्द्रेः। दृश्च्युवनः पृतनाषाडं युद्धयोसमाकृष्ट् सेनां ऽअवतु प्र युत्त्यु॥७॥ इन्द्रे ऽआसां नेता बृहस्प्यतिर्हिक्षीणायुज्ञः पुर ऽएतु सोमं । देवसेनानामिभभञ्जतीनां जयन्तीनां

मरुतौ यन्त्वग्रम्॥८॥ इन्द्रस्यु व्वष्ण्णो वुरुणस्यु राज्ञी ऽआदित्यानां मुरुतालंशद्धं ऽतुग्ग्रम्। मुहामेनसां भुवनच्च्युवानुां घोषौ देवानुां जयतुामुदेस्त्थात्॥९॥ उद्धर्षय मघवुत्रायुधान्युत्त्सत्त्वेनां मामुकानां मनि सि। उद्वृंत्रहन्त्वाजिनां व्याजिनान्युद्रथानां जयेतां व्यन्तु घोषां ॥१०॥ असमाकुमिन्द्र समृतेषु ध्वुजेष्व्यसमाकुं ठ्या उइषवृस्ता जीयन्तु। असम्मार्कं व्यीरा उउत्तरे ऽभवन्त्वसमाँ २॥ ऽउ देवा ऽअवता हवेषु॥११॥ अमीर्षा चित्त म्प्रीतलोभयन्ती गृहाणाङ्गीत्र्यप्ये परेहि। अभि प्पे हि निर्दीह हुत्सु शोवैतरुन्धेनु। मिश्रास्तर्मसा सचन्ताम्॥१२॥ अवसृष्ट्टा पर्रापत् शर्रव्ये ब्रह्मसक्ष्शिते। गच्छामित्रान्प्रपद्यस्व मामीषुां कञ्चनोच्छिषः॥१३॥ प्रेता जयंतानर् ऽइन्द्रौ वृक्ष शम्मी यच्छतु। उ्ग्ग्रावं÷ सन्तु बाहवीनाधृष्या यथास्य॥१४॥ असौ या सेना मरुत्र परेषाम्बभ्यैति न् उओजसा स्प्यद्धीमाना। तां गूह तृतम्सापेव्यतेन् यथामी ऽअत्रयो ऽअत्रयं न जानन्॥१५॥ वर्त्र बाणाः सम्पतिन्ति कुमारा विशिखा ऽईव। तन्न ऽइन्ह्रो बृहस्प्यतिरदिति शमी यच्छतु व्विश्श्वाहा शमी वच्छतु॥१६॥ मम्मीणि ते वुर्मीणा च्छादयामि सोमेस्त्वा राजाऽमृतेनानुवस्ताम्। उरोर्वुरीयो वृत्तंणस्ते कृणोतु जयन्तुं त्वानुं देवा मदन्तु ॥१७॥

इति रुद्राष्ट्राध्याय्यां तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

#### चतुर्थोऽध्यायः (४)

हरि÷ ॐ। व्यिब्भाड्बृहत्तिपंबतु सोमयं मद्थ्या-युईधेद्युज्ञपेतावविहुतम्। वातेजूतो को ऽअभिरक्षेतित्त्मनी प्यूजाः पुपोष पुरुधा विराजित॥१॥ उदुत्त्यं जातवैदसं देवं वृहन्ति केतवे :। दुशे विश्धाय सूर्व्यम्॥२॥ येना पावकु चक्षसा भुरुण्यन्तुं जन्तैशाऽअनु। त्वं वृक्षणु पश्यंसि।।३।। दैळ्यांवद्ध्वर्ट्या ऽआगंत् हरथेंन् सूर्व्यत्त्वचा। मद्ध्वीयुज्ञ समञ्जाथे। तं प्रत्कथाऽयं व्वेनश्श्चित्रं देवानीम्।।४॥ तं प्रत्वनथा पूर्वथा व्विश्श्यथे मथा ज्ज्येष्ठतातिं बर्हिषदे स्वुर्विदम्। प्रतीचीनं व्यूजनेन्दो ह से धुनिमाशुं जयन्तुमनुया सुवुद्धिसे॥५॥ अयं व्वेन श्चौदयृत्पृश्रिनगब्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजेसो व्विमाने। इमम्पाछं संङ्गमे सूर्ळीस्य शिशुन्न विप्रां म्तिभी रिहन्ति॥६॥ चिुम्नं देवानामुदेगादनीवृं चक्षुंर्मिम्म्मस्य व्यर्गणस्यागने। आप्रा द्यावीपृथिवी ऽअन्तरिक्षृष्ट् सूर्वी'ऽआुत्मा जगीतस्तुस्त्थुषीशश्च।।७।। आ नु ऽइडिभिर्विद्थे सुशुस्ति व्विश्धानेरः सविता देव ऽएतु। अपि यथा युवानो मत्सीथा नो व्विश्धं जगदिभिपित्त्वे पेनीषा॥८॥ यदुद्य कच्च व्वत्रहन्नुदगाऽअभि सूर्व्य। सर्व्यु तदिन्द्र ते वुशे॥९॥ तुरिणिर्व्विश्यदेशीतो ज्ज्योतिष्कृदेसि सूर्खा विष्रश्रमाभीसि रोचुनम्॥१०॥ तत्सूर्ख्यस्य देवृत्वं तन्महित्वं मुद्ध्या कर्त्तोर्वितत्रह सं जभार। ग्देदयुं क्तह्रितं÷ स्धास्त्थादाद्राश्री व्यासंस्तनुते

सिमसमै।।११॥ तिन्मित्रस्य व्वर्तणस्या-भिचक्षे सूर्व्यो क्षपं वीतणुत् द्योक्षपस्तथे । अनुन्तम् न्यद्वशीदस्य पार्जन्वूरक्णमुन्यद्धरितु सम्भरन्ति॥१२॥ वणमुहाँ२॥ ऽअसि सूर्व्य बडोदित्य महाँ २॥ ऽअसि। महस्ते स्तो मेहिमापेनस्यतेऽद्धादेवम्हाँ २॥ ऽअसि॥१३॥ बद्सूर्व्य श्श्रवेसा मुहाँश। ऽअसि सुल्रा देव मुहाँश। असि। मुन्हा देवानामसुर्ख्यः पुरोहितो व्यिभु ज्ज्योति्रदिष्यम्॥१४॥ श्रायेन्त उइव् सूर्व्यं विश्श्वेदिन्द्रस्य भक्षत। वसूनि जाते जनमानु उओजेसा प्यति भागं न दीधिम॥१५॥ अ्द्या देवा उउदिता सूर्व्यस्य निरष्टहंसः पिपृता निरवद्यात्। तन्नों मिन्त्रो व्यक्तणो मामहन्तामदितिः सिन्धुं÷ पृथिवी उउत द्यौशाश्दा। आ वृत्र्णणेन् रर्जसा व्वर्तीमानो निवेशयंत्रमृतं मत्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो यति भुवनानि पश्यन्॥१७॥

इति रुद्राष्टाध्याय्यां चतुर्थोऽध्याय:॥४॥

### पञ्चमोऽध्यायः (५)

हरि÷ ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ। नर्मस्ते रुद्र मुन्यवं ऽठुतो तु ऽइषवे नर्म÷। बाहुक्म्यामुत ते नर्म÷॥१॥ वा तें रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपीपकाशिनी। तयी नस्तुन्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥२॥ वामिषुं गिरिशन्त् हस्तै बि्भर्ष्यस्तवे। शि्वां गिरित्र तां कुरु मा हिंश्सी । पुर्तषुं जगत्॥३॥ शिवेनु व्वचेसा त्वा

गिरिशाऽच्छांव्वदामिस। यथा नु सर्व्वमिज्जगंदयुक्ष्मष्ट सुमना ऽअसेत्॥४॥ अद्धर्यवोचदिधवुक्ता प्रथिमो दैळ्यौ भिषक्। अहीं ११ हा सब्वी झुम्भयन्त्सळी श्र वातु-धात्र्योऽध्राची्**६ परासुव॥५॥ असौ बस्ताम्प्रो ऽ**अंहण उड्त ब्बन्धः सुमुङ्गलं÷। ये चैनि रुह्रा ऽअभितौ दिक्षु शिता? संहस्त्रशोऽवैषा्७ं हेड उईमहे॥६॥ असी बोऽव्सप्पति नीलंग्ग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा ऽअंदृश्शनदृश्भन्नदहु।र्व्याक्ष स दुष्ट्टो मृडयाति नक्षा७॥ नमों उस्तु नीलंग्ग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषे। अथ्रो वे ऽअस्य सत्त्वानोऽहं तेब्भ्योऽकरं नर्म÷॥८॥ प्रमुञ्च धन्वन्स्त्वमुभयोरात्न्योज्ज्याम्। याश्च ते हस्त् उइषव्र परा ता भगवो वुप॥९॥ विज्ज्युं धर्नु : कपुर्दिन्रो विशल्ल्यो बाणीवाँ२॥ उड्त। अनैशन्नस्यु या उइषेव उआ्भुरस्य निषङ्गुधिशा१०॥ या ते हेतिम्मी ढुष्ट्रम् हस्ते बुभूव ते धर्नु÷। तयासमान्विश्श्वतुस्त्वमयुक्ष्मया परिब्भुज।११॥ परि ते धन्वनो हेतिरुसम्मान्विणक्त व्विश्श्वते । अथो य ऽईषुधिस्तवारे ऽअसम्मनिधेहि तम्॥१२॥ अवृतत्त्य धनुष्ट्वक्ष सहस्त्राक्षु शतेषुधे। निशीर्व्य शुल्ल्यानुां मुखा शिवो ने÷ सुमनी भव॥१३॥ नमस्तु ऽआयुधायानातताय धृष्णपावे। उभावभ्यामृत ते नमो बाहुबभ्यां तव् धन्वने॥१४॥ मा नौ मुहान्त्रमृत मा नौ ऽअर्ब्भ्कं मा नु ऽउक्षेन्तमुत मा ने ऽउक्षितम्। मा नौ व्वधी । पितरुं मोत मातरुं मा ने÷ प्रियास्तुन्वो रुद्र रीरिषद्॥१५॥ मा नेस्तोके

तनेये मा नु ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्रेषु रीरिषः। मा नौ व्वी्रान्त्रंद्र भामिनौ व्रधीर्द्धविषमन्त्रः सद्मित्त्वा हवामहे॥१६॥ नम्ो हिर्गण्यबाहवे सेनाञ्ये दिशां च पतेये नमो नमों व्यक्षेक्य्यो हरिकेशेक्य पशूनां पतेये नमो नर्म÷ शुष्पिञ्चराय क्तिषीमते पथीनां पतेये नम्। नम्। हरिकेशायोपवीतिने पुष्ट्वानुं पत्रये नम्। नमो बब्म्लुशाय।।१७॥ नमौ बब्म्लुशाय व्याधिनेऽन्नीनां पतेये नम्। नमों भ्वस्य हेत्यै जगतां पत्ये नम्। नमों रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमे सूतायाहन्त्यै वुननां पत्ये नमो नमो रोहिताय॥१८॥ नमो रोहिताय स्त्थुपत्ये व्यक्षाणां पत्ये नमो नमो भुवन्तये व्यारिवस्वृत्तायौषधीनां पत्ये नमो नमो मुन्त्रिणे न्त्राणिजायु कक्षाणां पत्रये नम् नमे उउच्चैग्घी-षायाक्कृन्दयेते पत्तीनां पत्रये नम्रो नर्मः कृत्सनायतया ॥१९॥ नर्म÷ कृत्स्नायुतया धावते सत्त्वेनां पतेये नमो नम् सहमानाय निळ्याधिन ऽआळ्याधिनीनां पतेये नमो नमों निष्डिङ्गणे ककुभाय स्तेनानां पर्तये नमो नमो निचेरवे परिच्रायारंण्ण्यानां पत्ये नम्रो नम्रो वुर्भ्वते॥२०॥ नम्। वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पत्रेये नमो नमो निष्किण उइषुधिमते तस्कराणां पतेये नमो नर्मः सृकायिक्य्यो जिघां असद्यो मुख्यातां पत्ये नमो नमो सिमद्भयो नत्तुश्चरंद्भ्यो विवृ्त्रतानां पत्ये नर्म÷॥२१॥ नर्म ऽउष्ण्णीिषणे गिरिच्राये कुलुञ्चानुां

पतिये नम्। नमे उइषुमद्भयों धन्वायिकम्यश्च वो नम्। नमं ऽआतन्त्वानेब्भ्यं÷ प्रतिद्धानिब्भ्यश्च वो नमो नमे ऽआयच्छुद्धयोस्यद्भयश्च वो नम्रो नमौ विस्नद्धर्य ॥२२॥ नमों विस्जब्ह्यों विद्धयद्भ्यश्च वो नमो नर्म स्वपद्ध्यो जाग्ग्रेद्ध्यश्च वो नम्रो नम् शयनिबन्य ऽआसीनेबन्यश्च वो नम्रो नम्सितष्ठुद्ध्यो धावद्भ्यश्च वो नम्रो नमं÷ स्भाब्भ्यं :॥२३॥ नर्म : स्भाब्भ्यं : स्भापितिब्भ्यश्च वुो नम्। नमोश्शेब्भ्योऽश्श्रीपतिब्भ्यश्च वो नम्। नम ऽआळ्याधिनीं ब्य्यो ळिविबद्धयंन्ती ब्य्यश्च वो नम्रो नम् ऽउगेणाब्भ्यस्तृ ह हुतीब्भ्यं श्च वो नमो नमो गुणेब्भ्यं÷ ॥२४॥ नमों गुणेब्भ्यों गुणपंतिब्भ्यश्च वो नमो नमों व्यातेक्यो व्यातपतिक्यश्च वो नमो नमो गृत्त्रेक्यो गृत्त्रीपतिबभ्यश्च वो नम्रो नम्रो विक्रीपेबभ्यो व्विरुश्व-स्रिपेब्भ्यश्च वो नम्। नम् सेनिबभ्यः॥२५॥ नम् सेनिब्भ्यं सेनानिबभ्यंश्च वो नम्रो नमा र्थिबभ्यो ऽअरुथेब्म्यश्च वो नमो नर्मः क्षत्तृब्म्यः सङ्गृहीत्तृब्म्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यों ऽअर्ब्धकेब्म्यश्च वो नर्म÷॥२६॥ नमुस्तक्षक्यो रथकारेक्येश्च वो नम्। नम् कुललिक्यः कुम्मिरिक्म्यश्च वो नमो नमो निषादेकम्य पुञ्जिष्ठेकम्यश्च वो नमो नमः शश्चनिक्यो मृग्युक्येशच वो नमो नम् ११वब्ध्यं÷॥२७॥ नम् ११वब्ध्युः ११वपतिब्ध्यश्च वो नमो नमो भुवाय च रुद्राय च नमें शुर्वाय च पशुपतेये च् नम्। नीलीग्गीवाय च शितिकणण्ठीय च् नमं÷

कपुद्दिने ॥२८॥ नर्म : कपुद्दिने च ळ्यूप्प्त केशाय च नर्म÷ सहस्राक्षायं च शुतर्धन्वने च नर्मो गिरिश्यायं च शिपिविष्ट्रायं चु नमों मीबुष्ट्रमायु चेषुमते चु नमों हुस्वायं॥२९॥ नमीं हुस्वायं च वामुनायं चु नमीं बृहुते च वूषीयसे चु नमी व्यद्धार्य च स्वृधे चु नमोग्रयीय च प्रथमार्य चु नर्म ऽआशवै॥३०॥ नर्म ऽआशवै चाजिरायं चु नम् शीग्ध्रयाय चु शीब्भ्याय चु नम् उऊम्प्यीय चावस्वुन्याय चु नमौ नादेयाय चु द्वीप्प्यीय च ॥३१॥ नमों ज्ज्येष्ठायं च किन्छायं च नर्म÷ पूर्व्वजायं चापरुजाये चु नमी मद्ध्यमाये चापगुल्ल्भाये चु नमी जघुत्रयाय च बुध्धन्याय चु नम् सोबभ्याय ॥३२॥ नम् सोब्भ्याय च प्रतिसुर्ख्याय चु नम्। वाम्प्याय चु क्षेम्प्यीय चु नम् श्लोकक्यीय चावसान्न्याय चु नमी ऽउर्व्युर्व्याय चु नमो व्वन्याय॥३३॥ नमो वुत्र्यीय चु कक्क्ष्यीय चु नर्म÷ श्रुवाये च प्रतिश्रुवाये चु नर्म ऽआुशुषैणाय चाुशुरथाय चुनमु शूराय चावभेुदिनै चुनमी बिल्मिमने ॥३४॥ नमी बिल्मिमने च कव्चिने चु नमों व्युम्मिणें च वुरूथिने चु नमें शशुताये च शशुतसेनाये चु नमी दुन्दुब्ध्याय चाहनुत्र्याय चु नमी धृष्णणवै॥३५॥ नमीं धृष्णणवें च प्रमृशायं च नमों निष्क्षिणों चेषुधिमतें च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमें स्वायुधाये च सुधक्रवेने च॥३६॥ नम्ब स्नुत्याय चु पत्थ्याय चु नम्ब काट्यीय चु नीप्प्यीय चु नमुः कुल्ल्याये च सरुस्याय

च नमों नादेयायं च वैश्क्तायं च नम् कूप्याय॥३७॥ नम् कूप्प्याय चाऽवृद्द्र्याय च नम्। वीद्ध्र्याय चात्प्याय च नमो मेग्ध्याय च विद्युत्याय च नमो वुष्याय चावुष्यिय च नम्रो व्यात्त्यीय॥३८॥ नम्रो व्यात्त्याय च रेष्मयीय चु नमौ वास्तुव्वयाय च वास्तुपाय चु नम् सोमार्य च रुद्राय चु नमस्ताम्प्राय चारुणाय चु नमें शुङ्गवै॥३९॥ नर्म÷ शुङ्गवै च पशुपतेये चु नर्म ऽरुग्गाये च भीमाय चु नमौऽग्ग्रेव्धाय च दूरेव्धाय चु नमौ हुन्त्रे चु हनी यसे चु नमों व्यूक्षेब्ध्यो हरिवेतशेब्ध्यो नर्मस्ताराय।।४०॥ नर्म÷ शम्भुवाय च मयोभुवाय च नर्म÷ शङ्करायं च मयस्क्क्रायं चु नर्म÷ शिवायं च शिवतराय च॥४१॥ नम् पार्व्याय चावार्व्याय च नमं÷ प्युतरंणाय चोत्तरंणाय च नम्स्तीत्थ्यां य च कूल्ल्याय चु नम् शब्प्याय चु फेत्र्याय चु नर्म÷ सिकुत्त्याय॥४२॥ नर्म÷ सिकुत्त्याय च प्रवाह्याय च नर्म÷ किष्टिशिलायं च क्षयुणायं च नर्म÷ कपुर्दिने च पुल्स्तये च नमे उइरिण्ण्याय च प्रप्तथ्याय च नमो व्यज्ज्याय॥४३॥ नम्। व्यज्ज्याय च् गोष्ट्रयाय च् नमुस्तल्प्यीय चु गेह्याय चु नमी हृदुव्याय च निवेष्प्याय चु नमु काट्ट्यीय च गह्ळरेष्ठ्वायं चु नम् शुष्वयाय ॥४४॥ नम् । शुष्कयाय च हरित्याय च नर्म÷ पाछस्वुगाय च रज्स्याय चु नम्रो लोण्यीय चोल्ल्प्याय घु नम् उकळ्यीय चु सूळ्यीय चु नर्म÷ पुण्णायि॥४५॥

नर्म÷ पुण्णायं च पण्णिशृदायं चु नर्म ऽउद्गृरमाणाय चाभिग्घनुते चु नमे ऽआखिदुते चे प्यखिदुते चु नमे ऽइषुकृद्ध्यौ धनुष्कृद्ध्यशच वो नमो नमौ वः किरिकेक्प्यौ देवानाश् हृदयेब्ध्यो नमी विचित्रवृत्त्वेत्ब्ध्यो नमी विक्षिण्त्वेरब्भ्यो नमं ऽआनिर्हतेब्भ्यं÷॥४६॥ द्रापे ऽअन्धसस्पते दरिद्रनीलेलोहित। आसां प्रजानीमेुषां पेशूनां मा भुम्मा रोङ्मो च नुः किञ्चनाममत्॥४७॥ इमा रुद्राय तुवसे कपुर्दिने क्षुयद्द्वीरायु प्रभरामहे मृती ।। यथा शमसंद्द्विपदे चतुंष्यदे विष्रश्वं पुष्टुर्ग्रामें ऽअस्मिन्नं-नातुरम्॥४८॥ या ते रुद्र शि्वा तुनू शि्वा व्विश्श्वाही भेषुजी। शिवा रुतस्य भेषुजी तया नो मृड जीवसे॥४९॥ परि नो रुद्रस्य हेतिर्व्यणक्कतु परि त्त्वेषस्य दुर्म्मितरघायो । अवं स्त्थ्रा मुघवंद्भ्यस्तनुष्व् मीड्ढ्वंस्तोकाय् तनयाय मृड॥५०॥ मीढुष्टुम् शिवंतम शिवो नं÷ सुमना भव। प्रमे व्यक्ष ऽआयुधं नि्धायु कृत्तिं वसान् ऽआचर् पिनकिं बिब्धृदार्गिहि॥५१॥ व्विकिरिह् विलौहित् नर्मस्ते ऽअस्तु भगवः। यास्ते सुहरू हेतयोऽत्यमुस्म्म-न्निवेपन्तु ताशापशास्त्रहाणि सहस्राशो ब्राह्बोस्तवे हेतर्य÷। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृषि॥५३॥ असंद्व्याता सुहस्रीणि ये रुद्रा ऽअधि भूमयीम्। तेषां छ सहस्रयोज्नेऽव् धन्वीनि तन्मसि॥५४॥ अस्मिन्मे-हुन्यूण्ण्विऽन्तरिक्षे भ्वा ऽअधि।तेषां सहस्रयोज्नेऽव धन्वीनि तन्मसि॥५५॥ नीलंग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवंध

रुद्रा उउपेशिश्रतार।तेषां एं सहस्रयोज्नेऽव धन्वानि तन्मिस॥५६॥ नीलंग्ग्रीवार शित्विकण्ठार शुर्वा ऽअधः क्षमाच्राः। तेषां ७ सहस्रयोजुनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५७॥ ये व्यक्षेषु शृष्णिअसुरा नीलग्गीवा विलीहिता। तेषां सहस्रयोज्ने ऽव् धन्वानि तन्मसि॥५८॥ वे भूतानामिधपतयो व्विशिखासं कपुर्दिने । तेषां ७ सहस्रयोजुनेऽव धन्वीनि तन्मसि॥५९॥ वे पृथां पेशिरक्षय उऐलब्दा उआयुर्क्या तेषां छ सहस्रयोजुनेऽव धन्वानि तन्मिस॥६०॥ ये तीर्ल्थानि प्यूचरित सुकाहिस्ता निष्किणि÷। तेषां सहस्रयोज्नेऽव् धर्वानि तत्मिस।।६१॥ वेऽत्रेषु व्विविद्धयेत्रित् पात्रेषु पिबतो जनान्। तेषां सहस्रयोज्नेऽव धन्वानि तत्मिसि।।६२॥ य उपुतावैन्तश्च भूयां ७सश्च दिशों रुद्रा वितस्तिथ्रे। तेषां ए सहस्रयोज्ने उव धन्वां च तत्रमि।।६३।। नमों उस्तु रुद्रेब्भ्यो ये दिवि येषां व्यर्षमिषवं। तेब्भ्यो दशु प्याचीर्दश दक्षिणा दश प्यतीचीर्दशोदींचीर्दशोद्धि। तेब्भ्यो नमौ ऽअस्तु ते नौऽवन्तु ते नौ मृडयन्तु ते यं द्विषमो यश्च नो द्वेष्ट्ट तमैषां जम्भे दध्ध्मक् ॥६४॥

नमौऽस्तु रुद्रेक्थ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्यात् ऽइषेव । तेक्थ्यो दश् प्याचीर्दश दक्षिणा दश प्यतीचीर्दशो- दीचीर्दशोदर्ध्वाः। तेक्थ्यो नमौ ऽअस्तु ते नौऽवन्तु ते नौ भृडयन्तु ते यं द्विष्यो यश्रेच नो द्वेष्ट्रितमेषां जम्भे

दहहम्।।६५॥ नमों उस्तु कृद्रेब्ध्यो वो पृंशिवुद्यां क्षेष्ठामञ्जीपविवः। तेब्ध्यो प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोद्धविः। तेब्ध्यो नमों उअस्तु ते नौऽवञ्जु ते नौ मृडयञ्जु ते वं द्विष्मो वश्श्चं नो द्वेष्टिं तमेषां जम्भे दहहमः॥६६॥ ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः।

इति रुद्राष्ट्राध्याय्यां पञ्चमोऽध्याय:।।५।।

#### षष्ठोऽध्यायः (६)

हिरि÷ ॐ। व्यथ्ध सौम व्यते तवु मनस्तुनूषु बिब्धति। प्रजावन्तः सचेमिह॥१॥ एष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽिम्बकया तं जीषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग ऽआखुस्ते पृशुः॥२॥अवे रुद्रमेदीमह्यवे देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यस्कर्द्यथा नः १९९३ वस्यस्कर्द्यथा नो व्यवसाययात्॥३॥ भेषुजमिस भेषुजं गवेऽ ११वाय प्रेषाय भेषुजम्। सुखं मेषाय मेष्ट्ये॥४॥

१. अथाऽत्र द्वितीयप्रकार:- हरि: ॐ नमस्ते० (इत्यारभ्य) मा नस्तोके० (इति पर्यन्ता: षोडश-मन्त्रा:)॥१६॥ एष ते० ॥१७॥ अव रुद्द्र० ॥१८॥ नमस्ते० ॥१९॥ या ते० ॥२०॥ न तं व्विदाथ य ऽइमा जजानान्न्यद्युष्माकमन्तरं बभृव । निहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप ऽउवथशासश्र्चरन्ति ॥२१॥ व्विद्श्यकम्मा हयजिष्ट देव ऽआदिद्गन्धर्वो ऽअभवद्द्वितीयः। तृतीयः पिता जिततौषधीनामपां गर्ब्म व्यदधात्पुरुत्ता ॥२२॥ मीढुष्टम० ॥२३॥ व्विकिरिद्र०॥२४॥ सहस्राणि ॥२५॥ असङ्ख्याता० ॥२६॥ व्ययश्व सोम० ॥२७॥ एष ते०॥२८॥ अव रुद्र० ॥२९॥ भेषजमित्र०॥३०॥ त्र्यम्बकं०। त्र्यम्बकं० ॥३१॥ एतत्ते० ॥३२॥ त्र्यायुषं०॥३३॥ शिवो नामा० ॥३४॥ उग्यस्वकं० ॥३१॥ एतत्ते० ॥३२॥ त्र्यायुषं०॥३३॥ शिवो नामा० ॥३४॥ उग्यस्वकं० ॥३५॥ अग्निश्च हृदये० ॥३६॥ उग्यं लोहितेन० ॥३७॥ स्वस्ति न ऽइन्द्रो०॥३८॥ पयःपृथिव्व्यां० ॥३९॥ व्विष्णो रराट० ॥४०॥ अग्निहेंवता० ॥४१॥ द्याः शान्ति० ॥४२॥ (पश्चात् 'व्वाजश्च्च मे० ऋचं व्वाचं०' इत्यध्यायद्वयं पठेत् ।

त्र्यम्बकं व्यजामहे सुगुन्धं पुष्टिट्वद्धंनम्। वृद्ध्वित्वक्षंम्याम्मुंशीय् माऽमृतात्। व्रद्धां व्यजामहे सुगुन्धं पितुवेदनम्। वृद्धां कृतिमेव बन्धनादितो मुक्षीय् मामुतं ॥५॥ एतत्ते रुद्धाऽवसं तेने पुरो मूजवतोऽतीहि। अवतत्यव्या पिनाकावस् कृत्तिवास्। ऽअहिष्टसन्न शिवोऽतीहि॥६॥ त्र्यायुषं जुमदंग्गे कृश्यपस्य त्र्यायुषम्। यहेवेषु त्र्यायुषं तन्नी ऽअस्तु त्र्यायुषम्॥७॥शिवो नामिस् स्वधितस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मा मो हिष्टसी । निवर्त्तयाम्यायुषे ऽन्नाद्याय पूजनेनाय गुयस्पोषीय सुप्रजास्त्वाय सुवीस्त्रीय॥८॥

### सप्तमोऽध्यायः (७)

इति रुद्राष्ट्राध्याय्यां षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

हिर्रः ॐ। दुग्ग्रश्चं भीमश्च् ध्वान्तश्च् धुनिश्च।
सास्ह्राँश्श्चं भियुग्वा चं व्विक्षिप् स्वाहां॥१॥ अग्निष्ट
हृदं येन्।शानिष्ट हृदयाग्ग्रेणं पशुपतिं कृत्सन्हृदं येन
भ्वं घ्वाच्या। शृवं मतंस्त्राब्ध्यामीशानं मृत्युनां
महादेवमंत्रतः पर्श् व्येनोग्गं देवं व्येनिष्ठुनां व्यसिष्ठ् हृनुः
शिङ्गीनि कोश्याब्ध्याम्॥२॥ दुग्गं लोहितेन मिन्नष्ट
सौव्यक्त्येन सृद्धं दौर्व्यक्त्येनेन्त्रं प्रक्षीडेन मुकतो बलेन
साद्ध्यान्युमुद्दा। भ्वस्य कण्ठां सृहस्यान्तः पाश्व्यं
महादेवस्य वकृच्छुर्वस्य व्यनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥३॥

लोमेब्भ्यु स्वाहा लोमेब्भ्यु स्वाही त्त्वुचे स्वाही त्त्वुचे स्वाहा लोहितायु स्वाहा लोहितायु स्वाहा मेदीब्ध्युक स्वाहा मेदौक्यु स्वाही। माछ्सेक्यु स्वाही माछसेक्यु स्वाहा स्त्राविष्म्यु स्वाहा स्त्राविष्म्यु स्वाहाऽस्त्थब्म्यु स्वाहाऽस्त्थब्भ्यु स्वाही मुज्जब्भ्यु स्वाही मुज्जब्भ्यु स्वाही॥ रेतेसे स्वाही पायवे स्वाही॥४॥ आयासाय स्वाही प्यायासाय स्वाहा संख्यासाय स्वाहा वियासाय स्वाहोद्यासायु स्वाहा। शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानायु स्वाहा शोकायु स्वाहा॥५॥ तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानायु स्वाही तप्प्तायु स्वाही घुर्माय स्वाही। निष्कृत्ये स्वाहा प्रायिश्चत्ये स्वाही भेषजाय स्वाही॥६॥ युमायु स्वाहान्तिकायु स्वाही मृत्त्यवे स्वाही। ब्बह्मणे स्वाहा ब्बह्महुत्त्यायै स्वाहा व्विश्श्वेक्यो देवेक्य्यः स्वाहा द्यावीपृथिवीब्भ्यां स्वाही॥७॥

इति रुद्राष्टाध्याय्यां सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

## अष्टमोऽध्यायः (८)

हरि÷ ॐ। व्वाजिश्च में प्रस्वश्च में प्रयंतिश्च में प्रसितिश्च में धीतिश्च में क्रतुंश्च में स्वरंश्च्य में श्शलोकेश्च्य में श्श्रवश्च्य में श्श्रुतिश्च्य में ज्ज्योतिश्च्य में स्वृश्च्य में युज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥१॥

प्राणश्च्चे मेऽपानश्च्चे मे ळ्यानश्च्च मे सुश्च्च मे चित्तं चे मु ऽआधीतं च मे ळ्याक् चे मे मनश्च्च मे

चक्ष्रिच्य में अशोत्र च में दक्षिशच्य में बल च में खुज़ेन कल्पन्ताम्॥२॥

ओर्जश्च में सहश्च्च म ऽआतमा चे में तुनूश्च्चे में शमी च में व्यमी चु मेऽङ्गीनि चु मेऽस्थीनि च में पर्लंछिष च में शरीराणि च म् ऽआयुंश्श्च में जुरा चे मे युज्ञेन कल्प्यन्ताम्।।३॥

ज्ज्यैष्ठ्यं च म् ऽआधिपत्त्यं च मे म्न्युश्श्चे मेु भामेशच्च मेऽमेशच्च मेऽम्भेशच्च मे जेमा चे मे महिमा र्च मे वृत्मा र्च मे प्रिथमा र्च मे व्वर्षिमा र्च मे द्राधिमा र्च मे व्वृद्धं चे में व्वद्धिशच्च में वुज़ेने कल्पन्ताम्॥४॥ (१न०)।

सुत्त्यं चे मे शुद्धा चे में जगच्च में धने च में विश्श्वें च में महंशच्च में क्रीडा चे में मोदंशस्य में जातं चे मे जिन्छ्यमणि च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे खुज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥५॥ विक्रिके विक्रिके विक्रिके

ऋतं च मेऽमृतं च मे ऽयुक्ष्मं च मे उनामयञ्च मे जीवातुंश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनिमुत्रं च मेऽभयं च मे सुखं चे में शर्यनं च में सुषाश्चे में सुदिनं च में यूज़ेने कल्पन्ताम्॥६॥

१. अत्राऽयं विचार:-'वेद-वेदा-ऽब्धि-रामाश्च राम-राम-द्विकैककम् । द्वौ द्वौ पृथग्भिर्मन्त्रैस्तु नमकाञ्चमकाः समृताः॥ बाजञ्च सत्यमृक्र्चाऽश्मा चाऽग्निरंशुस् तथाऽग्निकः। एका चैव चतस्त्रश्च त्र्यविर्वाजा' इति क्रमः॥ एवं चमकानेकादशधा विभज्य, एकैकभागं नमकेषु संयोज्य पठेत्,स 'रुद्र:'। तैरेकादशरुद्र: 'लघुरुद्र:'। तैरेकादशगुणै: 'महारुद्र:'। तैरेकादशावृत्तै: 'अतिरुद्रः'। एवं चाऽत्र 'नमस्ते' 'इत्यारभ्य जम्भे दध्मः' इत्यध्यायपर्यन्तं पठनीयम्। एवमग्रेऽपि बोद्ध्यम्।

युक्ता चे मे धुर्ता चे में क्षेमेश्रच में धृतिशच्च व्विश्श्वं च में महंश्च में सुंव्विच्वं में ज्ञानं च सूश्वं मे प्रसूश्च्वं में सीरं च में लयंश्च्व में खुज़ेने कल्पन्ताम्॥७॥

शं च में मयेशच्च में प्रियं च मेऽनुकामशच्च में कामेश्च्य में सौमनुसश्च्य में भगेश्च्य में द्रविणं च मे भुद्रं चे में श्रेयश्च्य में व्यसीयश्च्य में यशश्च्य मे बुज्ञेन कल्प्यन्ताम्॥८॥(न०)।

जक्कची में सूनृता च में पर्यश्च्य में रसंश्च्य में घृतं चे में मधु च में सिगिधश्च्य में सपीतिश्च्य में कृषिश्च्ये में व्यष्टिंशच्य में जैझें च म् उऔद्भिद्यं च मे युज़ेने कल्पन्ताम्॥९॥

र्यिश्च्यं में रायश्च्य में पुष्टं चे में पुष्टिश्च्य मे व्यिभु च मे प्रभु च मे पूर्ण च मे पूर्णतरं च मे कुयवं च मेऽक्षितं च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे युज्ञेन कल्पन्ताम्।।१०।।

व्यितं च में व्येद्धं च में भूतं च में भविष्यच्ये में 'सुगं चे मे सुप्तथ्यं च म उऋद्धं चे मु उऋद्धिश्च मे क्लुप्तं चे में क्लिप्तिश्च में मुतिश्चे में सुमुतिश्चे में युज्ञेने कल्पन्ताम्॥११॥ ब्ब्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषश्च मी तिलोश्च मे मुद्राश्चे में खल्ल्वोश्च मे प्रियङ्गवश्श्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्यच मे नीवारश्च मे गुोधूमश्च मे मुसूरश्च मे युज्ञेन कल्प्यन्ताम्॥१२॥ (न०)।

अशमां च में मृत्तिका च में गिरयेश्च में पर्ळीताश्च में सिकंताश्च में वुन्स्प्पतियश्च में हिरण्यं च मेऽयेश्च में श्यामं च में लोहं च में सीसं च में श्रुपं च में खुज़ेने कल्प्यन्ताम्॥१३॥

अगिगनश्ची म् ऽआपेश्च मे व्वीरुधेश्च म् ऽओषेधयश्च मे कृष्टपुच्च्याश्ची मेकृष्टपुच्च्याश्ची मे ग्राम्प्याश्ची मे पुशवी ऽआरुणण्याश्ची मे व्वितां ची में व्वित्तिश्च मे भूतं ची में भूतिश्च मे बुज़ेनी कल्पान्ताम्॥१४॥

व्यसुं च मे व्यस्तिश्चं में कर्मी च में शक्तिश्च मेऽत्थिश्च म् उएमंश्च म ऽइ्त्या च में गतिश्च में युज्ञेने कल्प्यन्ताम्॥१५॥(न०)।

अगिनश्चं मु ऽइन्द्रंश्च में सोमंश्च मु ऽइन्द्रंश्च में सिवृता चं मु ऽइन्द्रंश्च में सरस्वती च मु इन्द्रंश्च में पूषा चं मु ऽइन्द्रंश्च में बृहस्पतिश्च मु ऽइन्द्रंश्च में खुज़ेने कल्प्यन्ताम्।।१६॥

मित्रश्चे मु ऽइन्द्रश्च में व्वर्हणश्च मु ऽइन्द्रश्च में धाता चे मु ऽइन्द्रश्च में त्वष्टी च मु ऽइन्द्रश्च्च में मुरुतंश्च्च मु उइन्द्रश्च में विश्वे च में देवा ऽइन्द्रश्च में खुजेने कल्पन्ताम्॥१७॥ पृथिवी चे मु ऽइन्द्रश्च में उन्तरिक्षं च मु ऽइन्द्रश्च्च में द्यौश्च्च मु उइन्द्रश्च्च में समिश्च्च मु ऽइन्द्रश्च्च में नक्षित्राणि च मु ऽइन्द्रश्च्च में दिशश्च्च मु ऽइन्द्रश्च्च में विश्वेत्राणि च मु ऽइन्द्रश्च्च में दिशश्च्च मु ऽइन्द्रश्च्च में विश्वेत्राणि च मु ऽइन्द्रश्च्च में दिशश्च्च मु

अ्ट्रशुश्च्चं मे रुशिम्मश्च्च मेऽदिष्म्यश्च्च मेऽधिपतिश्श्च म ऽउपाछ्शुश्श्चं मेऽन्तर्व्यामश्श्चं म ऽऐन्द्रवायुवश्श्चं मे मैत्रावरुणश्श्चं म ऽआश्श्चिनश्श्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च्च मे शुक्कश्चं मे मुन्धी चं मे युज्ञेनं कल्प्पन्ताम्॥१९॥

आग्गृयुणश्च्च मे वैश्श्वदेवश्च मे ध्रुवश्श्च मे वैश्श्वानुरश्श्च म ऽऐन्द्राग्ग्रश्च्च मे मृहावैश्श्वदेवश्च्च मे मरुत्त्वतीयश्च्च मे निष्क्षेवल्ल्यश्च मे सावित्रश्ची मे सारस्वतश्ची म पात्कीवृतश्ची मे हारियोजनश्ची मे युज्ञेन कल्प्यन्ताम्॥२०॥

स्रुचेश्च मे चम्साश्ची मे व्वायुव्वगानि च मे द्रोणकल्शश्ची मे ग्रावीणश्च मेऽधिषवीणे च मे पूत्भृची म ऽआधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्ची मे ऽवभृथश्ची मे स्वगाकारश्ची मे युज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥२१॥(न०)।

अग्निश्च में घुर्मश्च में उर्कश्च में सूर्व्वश्च में प्राणश्ची मेऽश्श्वमें घश्च में पृथिवी च मेदितिश्च में दितिश्च में चौश्च में झुल यु शवक्व रयो दिशश्च में गुज़ेने कल्पन्ताम्।।२२॥

व्युतं चे म ऽऋतविश्श्च में तपश्च्च में संवत्स्रश्च्चे मेऽहोराभ्रे ऽर्ज्ञर्वृष्टीवे बृहद्रथन्त्रे चे मे युज्ञेने कल्प्यन्ताम्॥२३॥ (न०)।

एका च मे तिस्त्रशच्चे मे तिस्त्रशच्चे में पद्मे च में पञ्ची च मे सुप्पत ची मे सुप्पत ची में नवी च में नवी च मु उएकोदश च मु उएकोदश च में अयोदश च में अयोदश च में पञ्चेदश च में पञ्चेदश च में सुप्तदेश च में सुप्तदेश च मे नवंदश च मे नवंदश च म् उएकंविष्टशतिशच्च म् ऽएकविध्शतिश्च में अयोविध्शतिश्च में अयोविध-शतिश्च्च में पञ्चिविध्शतिश्च्च में पञ्चिविध्शतिश्च्च मे स्प्तिविधिशतिश्च्च मे स्प्तिविधशतिश्च्च मे नविविध्शतिशच्च मे नविविध्शतिशच्च म् ऽएकेत्रिध्शच्च म् एवरितिष्टशच्च में त्रयंस्तिष्ट शच्च में यूज्ञेन कल्प्यन्ताम्॥२४॥ (न०)।

चतंत्रशच्च मेऽष्टौ च मे्ऽष्टौ च में द्वादेश च में द्वादेश च मे षोडश च मे षोडश च मे विध्शतिश्च्च मे विध्शतिश्चं में चतुर्विध्शतिश्चं में चतुर्विध्शतिश्च मे् उष्ट्राविष्टशतिश्च मे् उष्ट्राविष्टशतिश्च मेद्वाभिष्टशच्च में द्वाभिक्षशच्य में षद्भिष्टशच्य में षद्भिष्टशच्य मे चत्वारिष्ट्शच्चे में चत्वारिष्ट्शच्चे में चतुंश्चत्वारिष्टशच्च में चतुंश्चत्वारिष्टशच्च मेऽष्ट्राचेत्वारिष्टशच्च मे यूज्ञेन कल्प्यन्ताम्॥२५॥ (न०)।

त्र्यविश्च मे त्र्यवी चे मे दित्युवाट् चे मे दित्यौही चे में पञ्चाविश्च में पञ्चावी चं में त्रिवुत्सश्चं में त्रिवुत्सा

च मे तुर्व्याय च मे तुर्व्याही च मे व्यज्ञेन कल्प्यन्ताम्॥२६॥

पृष्ठ्वाद् चं मे पष्टौही चं म उठ्धा चं मे व्वृशा चं म उऋष्भश्चं मे व्वेहच्चं मेनुड्वाँश्चं मे धेनुश्चं मे युज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥२७॥ (न०)॥

वाजीय स्वाही प्रम्वाय स्वाहीिष्जाय स्वाहा क्रतेवे स्वाहा वसेवे स्वाहीऽहर्प्यतेये स्वाहाऋे मृग्णाय स्वाहीऽमुग्णाय वैनश्शिनाय स्वाहा विनशिशने ऽआन्यायनाय स्वाहान्त्यीय भौवनाय स्वाहा भुवेनस्य पतेये स्वाहाधिपतये स्वाही प्रजापतेये स्वाही। इयं ते राण्मित्राय स्नाहास स्मन ऽकुर्जेत्वा व्यष्ट्यै त्वा प्रजानां त्वाधिपत्याय।।२८॥

आयुर्व्यक्तिने कल्प्यतां प्राणो गुज्ञेने कल्प्यतां चक्षुर्व्यक्तिने कल्प्यतां श्रुश्चेने कल्प्यतां वाग्यक्तिने कल्प्यतां मनी युज्ञेने कल्प्यतामात्मा युज्ञेने कल्प्यतां बृह्या युज्ञेने कल्प्यतां ज्योतिर्व्यक्तिने कल्प्यतां पृष्ठं युज्ञेने कल्प्यतां पृष्ठं युज्ञेने कल्प्यतां युज्ञो युज्ञेने कल्प्यताम्। स्तोपेश्च यजुश्च उऋक् च साम च बृहच्चे रथन्तुरं चे। स्वर्देवा ऽअगन्मामृता ऽअभूम प्युजापते प्राजा ऽअभूम् वेद स्वाहां॥२९॥

इति रुद्राष्ट्राध्याययामष्टमोऽध्याय:।।८।।

#### परिशिष्टाऽध्याय:

#### शान्त्यध्यायः (१)

हरिः ॐ। ऋचं वाचं प्रपेद्ये मनो यजुः प्रपेद्ये सामे प्राणं प्रपेद्ये चक्षुः श्रोत्र्यं प्रपेद्ये। वागोजेः सहौजो मिर्य प्राणापानौ॥१॥ यत्रमे चिकुद्धं चक्षुंद्यो इदेवस्य मनेसो वाति तण्णं बृहस्प्रतिर्म्मे तह्यातु। शं नौ भवतु भुवेनस्य यस्प्रतिः॥२॥ भूब्र्भुवः स्वः तत्त्र्सवितुत्वृरिण्यं भगो देवस्य धीमिह। धियो यो नेः प्रचोदयत्॥३॥ कया निश्चत्र ऽआभुवद्गती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठ्या व्या ता।।४॥ कस्त्वा स्तत्यो मदौनाम् महिहिष्ठो मत्सदत्र्र्यसः। दुढा चिदारुजे वृसुं॥५॥ अभीवृण्ः सखीनामविता जिरवृणाम्। शृतं भवास्यूतिभिः॥६॥

कया त्वं ने उक्त्याभि प्यमेन्द्रसे व्वषन्। कयो स्तोतृब्थ्यु ऽआभर॥७॥ इन्द्रो व्विश्श्वस्य राजित। शं नौ ऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्ट्यदे॥८॥ शं नौ मिन्न्नेश शं वृष्टिण् शं नौ भवत्त्वर्व्यमा। शं नु उइन्द्रो बृहस्पिति शं नो व्विष्णणुक्तककृमशा९॥ शं नो व्वाते पवताले शं नेस्तपतृ सूर्व्याः। शं नु किनिकदहेवश पुर्जाश्यो ऽअभिवर्षतु॥१०॥

अहानि शं भवन्तु नु शंश रात्री प्रतिधीयताम्। शं ने उइन्ह्राग्री भवतामवीभिः शं न उइन्ह्रावर्रणा ग्तहंबुगा। शं नं ऽइन्त्रापूषणा व्वाजिसाती शमिन्द्रासोमी
सुविताय शं व्योशाशशा शं नी देवीरिभष्ट्रंय ऽआपी
भवन्तु पीतये। शं व्योरिभस्त्रंवन्तु नशाशशास्योना
पृथिवि नो भवान्नक्षरा निवेशनी। यच्छा नृश् शम्मी
सुप्प्रथाशाश्चा आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नं उकुर्जे
देघातना मृहे रणांय चक्षंसे॥१४॥ यो वेश् शिवंतमो
रस्स्तस्य भाजयतेह नशा उश्तीरिव मातरशाश्या
तस्मा ऽअरं गमाम वो यस्य क्षयीय जिन्न्यथा आपौ
जनयथा च नशाश्वा।

द्यौः शान्तिरुत्तिरिक्षृष्ट शान्तिः पृथिवी शान्ति-राप्र शान्तिरोषेधयुः शान्तिः। वुनुस्प्पत्युः शान्तिविश्वे देवाः शान्तिर्द्धस् शान्तिः सर्व्धः शान्तिरंशान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरिध॥१७॥

दृते दृष्ट् मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याउइं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥१८॥ दृते दृष्ट् मा। ज्योक्क्ते संदृशि जीक्व्यासं ज्योक्त्ते संदृशि जीक्व्यासम् ॥१९॥ नमस्ते इरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्ष्टिचषे। अत्र्यांस्ते ऽअस्ममत्तपन्न हेतये पावको ऽअस्ममक्ष्येष्ट शिवो भव॥२०॥ नमस्ते ऽअस्तु व्विद्युते नमस्ते स्तनियुत्तवे। नमस्ते भगवत्रस्तु वतुः स्वः स्मीहसे॥२१॥ वर्तो वर्तः स्मीहिस् तर्तो ना ऽअभियं कुरु। शं नेः कुरु प्युजाभ्योऽभीयं नः पृशुक्ष्येः॥२२॥ स्नुमित्रिया न ऽआप्ऽओषेधयः सन्तु दुर्मिमित्रियास्तस्मी सन्तु ब्रोऽस्मान्द्रेष्ट्वि यं चे व्वयं द्विष्माः॥२३॥ तच्वक्षुर्ह्विवहितं पुरस्ति च्छुक्रमुच्चेरत्। पश्येम श्रादेः शृतं जीवेम श्रादेः श्रतः शृणीयाम श्रादेः शृतं प्रब्बवाम श्रादेः शृतमदीनाः स्याम श्रादेः शृतं भूयेश्च श्रादेः शृतात्॥२४॥

इति रुद्राष्ट्राध्याय्यां शान्त्यध्यायः ॥१॥

# स्वस्ति-प्रार्थनामन्त्राध्यायः (२)

हिरः ॐ । स्वृस्ति नु ऽइन्द्रौ व्युद्धश्रश्रीवाः स्वृस्ति नेः पूषा व्विश्श्ववैदाः। स्वृस्ति नुस्ताक्ष्यों ऽअरिष्ट्रनेमिः स्वृस्ति नो बृह्स्प्पतिर्द्धातु॥१॥ ॐ पर्यः पृथिव्व्याम् पयु ऽओषधीषु पर्यो दिव्वयुन्तिरक्षे पर्यो धाः। पर्यस्वतीः प्यृदिशः सन्तु मह्मम्॥२॥ॐ विष्णो र्राटमिस् विष्णोः श्नप्ते स्त्थो व्विष्णोः स्यूरिस् विष्णोद्ध्वृंवोऽसि। व्यैष्ण्यावमिस् व्विष्णोः स्यूरिस् विष्णोद्ध्वृंवोऽसि। व्यौष्णावमिस् व्विष्णोवे त्त्वा॥३॥ ॐ अगिनर्हेवता व्यातौ देवता सूर्व्यो देवता चन्द्रमा देवता व्यस्वो देवता रुद्धा देवतादित्या देवता मुरुतो देवता व्विश्श्वेदेवा देवता

ॐ सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्धवाय नमे÷॥५॥ वामुदेवाय नमो ज्ज्येष्ठाय नमे÷ १९३१ष्ठाय नमो रुद्राय

नमः कालीय नमुः कलीवकरणायु नम्रो बलीवकरणायु नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमुः सर्वे भूतदमनाय नमौ मुनोन्मनायु नमः ॥६॥ अघोरैभ्योऽश्रु घोरैभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वे भ्यः सर्व्यशर्वे भ्यो नर्मस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥७॥ तत्पुरुषाय विदाहे महादेवाय धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयात्॥८॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वीभूतानाम्। ब्ब्रह्माधिपतिर्ब्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्ब्रह्मी शिवो में ऽअस्तु सदाशिवोम्॥९॥ ॐ शिवो नामीसि स्वधितिस्ते पिता नर्मस्ते ऽअस्तु मा मो हिष्टसी । निवर्त्तयाम्यायुषे उन्नाद्यांय पूजनेनाय रायस्पोषांय सुप्रजास्त्वायं सुवीर्घ्याय।।१०॥ ॐ विश्श्वांनि देवसवितर्हुरितानि परीसुव। यद्धद्वं तन्नु ऽआसुव॥११॥ ॐ द्यौ शान्ति-रुत्तरिक्षृष्ट् शान्ति÷ पृथिवी शान्तिरापु शान्तिरोषेधयु । शाद्रित÷। व्वनुस्पत्यं शाद्रितुर्विश्श्वे देवाः शान्तिर्व्हाह्य शान्ति सर्व्युष्ट् शान्ति शान्तिरेव शान्तिस्सामा शादितरेधि॥१२॥

ॐ सृर्ळीषां वा ऽएष व्वेदानाष्ट रुसो यत्साम सर्व्येषामेवैनेमतद्वेदानाष्ट रुसेनाभिष्ठिश्चति॥१३॥

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु।

अनेन रुद्राऽभिषेककर्मणा कृतेन श्रीभवानीशङ्कारमहारुद्रः प्रीयतां न मम। ॐ सदाशिवार्पणमस्तु।

इति रुद्राष्ट्राध्याय्यां स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्याय:।।२।।

#### षडङ्गन्यासाः

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्त्विरष्टं यज्ञर्ठ. समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ।। ॐ हृदयाय नमः।।१।।

ॐ अबोध्द्यग्निः समिधा जनानां प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम्। यह्ना ऽइव प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ।। ॐ शिरसे स्वाहा ॥२॥

ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कविर्ठ. सम्प्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ ॐ शिखायै वषट्॥३॥

ॐ मर्माणि ते वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृते नानुवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु।। ॐ कवचाय हुम्।।४।।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। संबाहुभ्यां धमित सम्पतत्वैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः।। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।।५।।

ॐ मा नस्तोके तनये मान ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषुरीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदिमत्वा हवामहे।। ॐ अस्त्राय फट्।।६।।

इति षडङ्गन्यासान् कृत्वा, ध्यानं कुर्यात् । तद्यथा — ध्यानम्-ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतिगरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।। ॥ श्री: ॥

#### रुद्रस्वाहाकारविधिः

ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा।

ॐ अम्बेऽअम्बिके० स्वाहा। इति हुत्वा,

ॐ यज्जायतः ० (६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ सहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः ० (६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ आशुः शिशानः ० (१२ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ विब्धाड् बृहत्पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ नमस्ते रुद्ध मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः स्वाहा।।१।।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा।।२।।

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते व्विभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रताङ्करु मा हिर्ठ. सी: पुरुषञ्जगत् स्वाहा।।३।।

ॐ शिवेन व्वचसा त्वा गिरिशाच्छा व्वदामिस। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ. सुमना ऽअसत् स्वाहा।।४।।

ॐ अद्ध्यवोचदिधवक्ता प्रथमो दैळ्यो भिषक्। अहींश्रच्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वांश्रच्च यातुधात्र्योऽधराचीः परासुव स्वाहा॥५॥

ॐ असौ यस्ताम्म्रो ऽअरुण ऽउत बब्धुः सुमङ्गलः। ये चैनर्ठ० रुद्रा ऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषा७ हेड ऽईमहे स्वाहा।।६।। ॐ असौ योऽवसर्प्यति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनङ्गोपा ऽअदृश्र्यत्रदृश्र्यत्रदुहार्य्यः सः दृष्ट्टो मृडयाति नः स्वाहा।।७।। ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्क्षाय मीढुषे। अथो

ये ऽअस्य सत्त्वानो हन्तेबभ्योऽकरन्नमः स्वाहा।।८।।

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्वन्योज्ज्याम्। याश्च्य ते हस्त ऽइषवः परा ता भगवो व्वप स्वाहा।।९।।

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ २ ऽउत। अनेशत्रस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा।।१०।।

ॐ या ते हेतिम्मींढुष्ट्रम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्म्मान्त्रिश्व्यतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा।।११।।

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु व्विश्श्वतः। अथो य ऽइषुधिस्तवारे ऽअस्मन्निधेहि तम् स्वाहा।।१२।।

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्घ्य शल्ल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा।।१३।।

ॐ नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्णणवे। उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्वने स्वाहा।।१४।।

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकम्मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम् । मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः ण्रियास्तन्वो रुद्द रीरिषः स्वाहा।।१५॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिष: । मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदिमत्त्वा हवामहे स्वाहा।।१६।।

ॐ नमो हिरण्णयबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा।।१७।। ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हिरकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा।।१८।।

ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा।।१९।।

ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्ट्वानाम्पतये नमः स्वाहा।।२०।।

ॐ नमो बब्भ्लुशाय ळ्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमः स्वाहा॥२१॥

ॐ नमो भवस्य हेत्त्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा।।२२।।

ॐ नमो रुद्धायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा।।२३।।

ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा।।२४।।

ॐ नमो रोहिताय स्त्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२५॥

ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा।।२६।।

ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा।।२७।।

ॐ नम ऽउच्चैग्घीषायाक्ऋन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा॥२८॥

ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा।।२९।।

ॐ नमः सहमानाय निळ्याधिन ऽआळ्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा।।३०।।

ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा।।३१।। ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्णयानाम्पतये नमः स्वाहा।।३२।।

ॐ नमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा।।३३।।

ॐ नमो निपङ्गिण ऽइषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमः स्वाहा।।३४।।

ॐ नमः सृकायिब्भ्यो जिघा ७ सद्ब्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा।।३५।।

ॐ नमोऽसिमद्ब्भ्यो नक्ताञ्चरद्ब्भ्यो व्विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा।।३६।।

ॐ नम ऽउष्णणीिषणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा।।३७।।

ॐ नम ऽइषुमद्ब्भ्यो धन्वायिब्भ्यश्च्व वो नमः स्वाहा॥३८॥

ॐ नम ऽआतन्त्वानेब्ध्यः प्रतिद्धानेब्ध्यश्च्य वो नमः स्वाहा।।३९।।

ॐ नम ऽआयच्छद्क्योऽस्यद्क्य्यश्च्य वो नमः स्वाहा॥४०॥

ॐ नमो व्विसृजद्क्यो व्विद्ध्यद्क्यएच्च वो नमः स्वाहा।।४१।।

ॐ नमः स्वपद्क्ष्यो जाग्ग्रद्ब्भ्यश्च्य वो नमः स्वाहा।।४२।।

ॐ नमः शयानेब्भ्य ऽआसीनेब्भ्यश्च्न वो नमः स्वाहा॥४३॥ ॐ नमस्तिष्ठद्बभ्यो धावद्बभ्यशच्च वो नमः स्वाहा॥४४॥

ॐ नमः सभाब्भ्यः सभापतिब्भ्यश्च्य वो नमः स्वाहा॥४५॥

ॐ नमोऽश्श्वेब्भ्योऽश्श्वपतिब्भ्यश्च्य वो नमः स्वाहा॥४६॥

ॐ नम ऽआळ्याधिनीबभ्यो ळिविवद्ध्यन्तीबभ्यश्च्य वो नमः स्वाहा।।४७।।

ॐ नम ऽउगणाबभ्यस्तृर्ठ. हतीबभ्यश्च्य वो नमः स्वाहा।।४८।।

ॐ नमो गणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा॥४९॥

ॐ नमो व्यातेब्भ्यो व्यातपतिब्भ्यश्च्य वो नमः स्वाहा॥५०॥

ॐ नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सपतिब्भ्यश्च्य वो नमः स्वाहा ॥५१॥

ॐ नमो व्विरूपेब्भ्यो व्विश्श्वरूपेब्भ्यश्च्य वो नमः स्वाहा।।५२।।

ॐ नमः सेनाबभ्यः सेनानिबभ्यश्च्य वो नमः स्वाहा ॥५३॥

ॐ नमो रिथक्यो ऽअरथेक्युच्च वो नमः स्वाहा

ॐ नमः क्षत्तृक्षयः सङ्ग्रहीतृक्षयश्च्य वो नमः स्वाहा ॥५५॥ ॐ नमो महद्ब्भ्यो ऽअब्भिकेक्भ्यश्च्य वो नमः स्वाहा।

ॐ नमस्तक्षक्यो रथकारेक्यश्च्य वो नमः स्वाहा

ॐ नमः कुलालेब्भ्यः कर्मारेब्भ्यश्च्य वो नमः स्वाहा।।५८।।

ॐ नमो निषादेबभ्यः पुञ्जिष्ट्वेबभ्यश्च्य वो नमः स्वाहा।।५९।।

ॐ नमः श्विनिब्भ्यो मृगयुब्भ्यश्च्य वो नमः स्वाहा।।६०।।

ॐ नमः श्वबभ्यः श्वपतिबभ्यश्च्य वो नमः स्वाहा।।६१।।

ॐ नमो भवाय च रुद्धाय च स्वाहा ।।६२।।
ॐ नमः शर्व्वाय च पशुपतये च स्वाहा।।६३।।

ॐ नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा।।६४।।

ॐ नमः कपर्दिने च ळ्युप्तकेशाय च स्वाहा।।६५।।

ॐ नमः सहस्राक्क्षाय च शतधन्वने च स्वाहा।।६६।।

ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्ट्टाय च स्वाहा।।६७।।

ॐ नमो मीढुष्ट्टमाय चेषुमते च स्वाहा।।६८।।

ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा।।६९।।

ॐ नमो बृहते च व्वर्षीयसे च स्वाहा।।७०।।

ॐ नमो व्वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा।।७१।।

ॐ नमोऽग्याय च प्रथमाय च स्वाहा।।७२।।

ॐ नम ऽआशवे चाजिराय च स्वाहा।।७३।।

ॐ नमः शीग्घ्याय च शीब्भ्याय च स्वाहा।।७४।। ॐ नम ऽऊम्पर्याय चावस्वन्याय च स्वाहा।।७५।। ॐ नमों नादेयाय च द्वीप्प्याय च स्वाहा।।७६।। ॐ नमो ज्ज्येष्ट्वाय च कनिष्ट्वाय च स्वाहा।।७७।। ॐ नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च स्वाहा।।७८।। ॐ नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा।।७९।। ॐ नमो जघन्याय च बुद्ध्याय च स्वाहा।।८०।। ॐ नमः सोबभ्याय च प्रतिसर्व्याय च स्वाहा।।८१।। ॐ नमो याम्प्याय च क्षेम्प्याय च स्वाहा।।८२।। ॐ नमः श्र्श्लोक्क्याय चावसान्याय च स्वाहा।।८३।। ॐ नम ऽउर्व्वर्घ्याय च खल्ल्याय च स्वाहा।।८४।। ॐ नमो व्वन्याय च कक्क्ष्याय च स्वाहा।।८५।। ॐ नमः श्र्यवाय च प्रतिश्र्यवाय च स्वाहा।।८६।। ऽआशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा।।८७।। ॐ नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा।।८८।। ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च स्वाहा।।८९।। ॐ नमो व्वर्मिणे च व्वरूथिने च स्वाहा।।९०।। ॐ नमः श्र्रुताय च श्र्रुतसेनाय च स्वाहा।।९१।। ॐ नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च स्वाहा।।९२।। ॐ नमो धृष्णावे च प्रमृशाय च स्वाहा।।९३।। ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा।।९४।। ॐ नमस्तीक्क्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा।।९५।। ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च स्वाहा।।९६।। ॐ नमः स्नुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा।।९७।।

🕉 नमः काङ्याय च नीप्प्याय च स्वाहा।।९८।। ॐ नमः कुल्ल्याय च सरस्याय च स्वाहा।।९९।। 🕉 नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा।।१००।। ॐ नमः कूप्प्याय चावट्ट्याय च स्वाहा।।१०१।। ॐ नमो व्वीद्ध्याय चातप्याय च स्वाहा।।१०२।। ॐ नमो मेग्घ्याय च व्विद्युत्त्याय च स्वाहा।।१०३।। ॐ नमो व्यर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा।।१०४।। ॐ नमो व्वात्त्याय च रेष्म्याय च स्वाहा।।१०५।। ॐ नमो व्वास्तव्याय च व्वास्तुपाय च स्वाहा।।१०६।। ॐ नमः सोमाय च रुद्वाय च स्वाहा।।१०७।। ॐ नमस्ताम्प्राय चारुणाय च स्वाहा।।१०८।। ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा।।१०९।। ॐ नम ऽउग्राय च भीमाय च स्वाहा।।११०।। ॐ नमोऽग्येवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा।।१११।। ॐ नमो हब्ने च हनीयसे च स्वाहा।।११२।। ॐ नमो व्वृक्षेत्भयो हरिकेशेन्भयः स्वाहा।।११३।। स्वाहा।।११४।। ॐ नमस्ताराय ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा।।११५।। ॐ नमः शङ्कराय च मयस्कराय च स्वाहा।।११६।। ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा।।११७।। ॐ नमः पार्घ्याय चावार्घ्याय च स्वाहा।।११८।। ॐ नमः प्रातरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा।।११९।। ॐ नमस्तीत्थ्यीय च कूल्ल्याय च स्वाहा।।१२०।। ॐ नमः शष्याय च फेत्र्याय च स्वाहा।।१२१।।

सिकत्त्याय च प्रवाह्याय च स्वाहा।।१२२।। ॐ नमः किर्ठ. शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा।।१२३।। ॐ नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा।।१२४।। ॐ नम ऽइरिण्ण्याय च प्रपत्थ्याय च स्वाहा।।१२५।। ॐ नमो व्यज्ज्याय च गोष्ट्व्याय च स्वाहा।।१२६।। ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा।।१२७।। ॐ नमो हृदय्याय च निवेष्याय च स्वाहा।।१२८।। ॐ नमः काट्ट्याय च गह्वरेष्ट्राय च स्वाहा।।१२९।। ॐ नमः शृष्कक्याय च हरित्त्याय च स्वाहा।।१३०।। ॐ नमः पार्धसळ्याय च रजस्याय च स्वाहा।।१३१।। ॐ नमो लोप्याय चोलप्याय च स्वाहा।।१३२।। ॐ नम ऽऊर्व्याय च सूर्व्याय च स्वाहा।।१३३।। ॐ नमः पण्णीय च पण्णीशदाय च स्वाहा।।१३४।। ॐ नम ऽउद्गुरमाणाय चाभिग्घनते च स्वाहा।।१३५।। ॐ नम ऽआखिदते च प्रखिदते च स्वाहा।।१३६।। ॐ नम ऽइषुकृद्क्यो धनुष्कृद्क्यशच्च वो नमः स्वाहा॥१३७॥

ॐ नमो वः किरिकेब्भ्यो देवानाछ हृदयेब्भ्यः स्वाहा॥१३८॥

ॐ नमो व्विचिन्वत्केब्भ्यो देवानाछं हृदयेब्भ्यः स्वाहा॥१३९॥

ॐ नमो व्विक्षिणत्वेत्वभ्यो देवानाछ हृदयेबभ्यः स्वाहा॥१४०॥

ॐ नम ऽआनिर्हतेब्भ्यो देवाना छ हृदयेब्भ्यः स्वाहा।।१४१।। ॐ द्रापे ऽअन्धसस्प्यते दिरद्ध नीललोहित। आसाम्प्रजाना-मेषाम्पशूनाम्मा भेम्मा रोङ् मो च नः किञ्चनाममत् स्वाहा।।१४२।।

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपिद्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मती:। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्यदे व्विश्श्वम्पुष्ट्टं ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् स्वाहा।।१४३।।

ॐ या ते रुद्ध शिवा तनूः शिवा व्विश्श्वाहा भेषजी। शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा।।१४४।। ॐ परि नो रुद्द्रस्य हेतिर्व्वृणक्कु परि त्वेषस्य दुर्मितिरघायोः।

अव स्त्थिरा मघवद्ब्भ्यस्तनुष्व मीड्ढ्वस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा।।१४५।।

ॐ मीढुष्ट्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष ऽआयुधन्निधाय कृतिं व्यसान ऽआचर पिनाकम्बिब्भ्रदागिह स्वाहा।।१४६।।

ॐ व्विकिरिद्र व्विलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः। यास्ते सहस्र्रठ. हेतयोऽन्यमस्म्मित्रवपन्तु ताः स्वाहा।।१४७।। ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेत्यः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा।।१४८।। ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि चे रुद्धा ऽअधि भूम्म्याम्। तेषाः सहस्रयोजने ऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१४९।। ॐ अस्म्मिन्महत्यण्णविऽन्तरिक्षे भवा ऽअधि। तेषाः सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५०।।

🕉 नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवर्ठ. रुद्दा ऽउपश्र्रिताः। तेषाछ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५१।। 🕉 नीलग्त्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वा ऽअधः क्षमाचराः। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५२।। ॐ ये व्वृक्षेषु शिष्पञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिता:। तेषाछं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५३।। ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्दिनः। तेषा असहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५४।। ॐ ये पथाम्पथिरक्षय ऽऐलवृदा ऽआयुर्ख्युधः। तेषाछ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५५।। ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्ति सुकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषा७ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५६।। ॐ येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्। तेषाछः सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५७।। ॐ य ऽ एतावन्तश्च भूया ७ सङ्च्च दिशो रुद्द्रा व्वितस्त्थिरे। तेषा सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५८।। ॐ नमोऽस्तु रुद्देब्भ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषव:। तेब्भ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते व्यन्द्विषमो

याश्च्य नो द्वेष्ट्वि तमेषाञ्चम्भे दद्ध्यः स्वाहा।।१५९।। ॐ नमोऽस्तु रुद्रेष्यो वेऽन्तरिक्षे येषां व्वात ऽइषवः। तेब्थ्यो दश प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः। तेहभ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते व्यन्द्रिष्मो वश्च्य नो द्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्यः स्वाहा।।१६०।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो ये पृथिळ्यां येषामन्निषवः। तेब्भ्यो दश प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्रिष्मो यश्च्य नो द्वेष्ट्वि तमेषाञ्जमभे दद्ध्यः स्वाहा।।१६१।।

## शान्त्यध्यायः

ऋचं वाचं प्रपेद्ये मन्। यजुः प्रपेद्ये सामे प्याणं प्रपेद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्रपेद्ये। वागोजे स्हौजो मिर्ये प्राणापानौ स्वाहा॥१॥ यत्रमे च्छिद्धं चक्षुंषो हृदेयस्य मनसो वाति तृण्णं बृहुस्प्यतिम्में तह्यातु। शं नौ भवतु भवंनस्य व्यस्पाति स्वाहा॥२॥ भूबर्भु वृह स्वृश्च तत्त्तिवृत्वविर्णयं भगो देवस्य धीमिह। धियो वो नेश्च प्रचोदयात् स्वाहा॥३॥ कया निश्च्त्र ऽआभ्वद्धती स्वावृद्धः सखा। कया शचिष्ठ्या व्यता स्वाहा॥४॥ कस्त्वा स्त्यो मदीनाम् मिर्हष्ठो मत्सदन्ध्यसः। दुढा चिदारुजे वृस् ॥६॥ अभीषुण् सखीनामिवृता जित्वणाम्। शृतं भवास्युतिभिः स्वाहा॥६॥

कया त्वं ने उऊत्याभि प्यमेत्र्दसे व्वषन्। कयो स्तोतृब्ध्य उआर्थर स्वाहा॥७॥ इन्द्रो विश्विष्यं राजित। शं नी उअस्तु द्विपदे शं चतुष्ठ्यदे स्वाहा॥८॥ शं नी मित्र्यः शं वृष्ठण्ढं शं नी भवत्त्वर्व्यमा। शं न उइन्द्रो बहुस्पतिहं शं नो विष्ठणुरुक्तककृमः स्वाहा॥९॥ शं नो वातं पवताछं शं नेस्तपतु सूर्य्यः। शं नु किनेक्रदहेवः पुर्जात्यो ऽअभिवर्षतु स्वाहा॥१०॥

अहानि शं भवन्तु नृ शृष्ट रात्नी प्रातिधीयताम्। शं ने उइन्हागी भवतामवोभि शं न उइन्हावर्रणा रातहेव्या। शं ने उइन्हापूषणा व्याजसातौ शमिन्हासोमी सुविताय शं व्योश स्वाहा॥११॥ शं नो देवीरिभष्टृय उआपो भवन्तु पीतये। शं व्योरिभर्मवन्तु न स्वाहा॥१२॥स्योना पृथिवि नो भवान्नक्षुरा निवेशनी। यच्छा न शम्मी सुप्प्रथा स्वाहा॥१३॥ आपो हि ष्ट्रा मेयोभुवस्ता ने उऊर्जे देधातन। महे रणाय चक्षसे स्वाहा॥१४॥ यो वेश्वितमो रसस्तस्य भाजयतेह नेश उश्तीरिव मातरशस्य स्वाहा॥१५॥ तस्मा उअरं गमाम वो वस्य क्षयाय जिन्नथा। आपो जनयथा च न स्वाहा॥१६॥

द्यौः शान्तिरुत्तिरिक्षृष्ट शान्तिः पृथिवी शान्ति-राप्र शान्तिरोषेधयुः शान्तिः। वुन्स्प्यतेयुः शान्तिविश्वे देवाः शान्तिव्बिद्य शान्तिः सर्विष्ट शान्तिःशान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि स्वाहा॥१७॥

दृते दृष्ट्रहं मा मित्रस्यं मा चक्षुषा सर्व्वीणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्व्वीण भूतानि समीक्षे।िम्त्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे स्वाहा॥१८॥ दृते दृष्टहं मा। ज्योक्क्तें संदृशि जीव्व्यासं ज्योक्तकें संदृशि जीव्व्यासम् स्वाहा॥१९॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वुर्च्चिषे। अन्त्याँस्ते ऽअसम्मत्तेपन्न हेत्यं÷ पावको ऽअसमाब्भ्येष्ट शिवो भेव स्वाहा॥२०॥ नमेस्ते ऽअस्तु व्विद्युते नमेस्ते स्तनियुत्नवे। नमेस्ते भगवन्नस्तु यतुः स्वृः सुमीहसे स्वाहा॥२१॥

वर्तो वतः स्मीहस् ततौ नो ऽअभयं कुरु। शं नं वुरु प्युजाभ्योऽभीयं नः पृशुब्भ्यः स्वाहा॥२२॥ सुमित्रिया न ऽआप्ऽओषधयः सन्तु दुर्मिमित्रियास्तस्मी सन्तु बोऽस्मान्द्रेष्ट्वि यं चे व्वयं द्विषमः स्वाहा॥२३॥ तच्चक्षुर्द्देवहितं पुरस्तीच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम श्रदंश्शतं जीवेम श्रदंश्शतः शृणुयाम श्रदंश्शतं प्रब्ब्रवाम श्रदंश्शतमदीनाः स्याम श्रदंश्शतं पूर्वश्च श्रदंश्शतात् स्वाहा॥२४॥

## स्वस्ति-प्रार्थनामन्त्राध्यायः

स्वस्ति न ऽइन्द्रौ व्युद्धश्रश्रवाः स्वस्ति नेः पूषा व्यिश्यववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों ऽअरिष्ट्रनेमिः स्वस्ति नो बृह्स्प्पतिर्द्दधातु॥१॥ ॐ पर्यः पृथिव्व्याम् पया ऽओषधीषु पर्यो दिव्वयुन्तरिक्षे पर्यो धाः। पर्यस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्मम्॥२॥ॐ विष्णो र्राटमिस् विष्णोः प्रतिशः सन्तु मह्मम्॥२॥ॐ विष्णो र्राटमिस् विष्णोः प्रतिशः स्वर्षे स्वर्षे विष्णोः स्वर्षेस् विष्णोः स्वर्षे स्वर्णा देवता स्वर्णो देवता स्वर्णो देवता विष्र्रिवता देवता स्वर्णो देवता देवता विष्र्र्रिवतेन्द्रौ देवता व्यर्णो देवता॥४॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भ्वोद्धवाय नर्मशापा वामुदेवाय नमीं ज्ज्येष्ठाय नमें श्रेष्ठाय नमीं कुद्राय नमुः कालायु नमुः कलिकरणायु नमुो बलिकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमुः सर्वेभूतदमनाय नमी मुनोन्मनाय नमः ॥६॥ अघोरेभ्योऽश्रु घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वे भ्यः सर्व्धशर्वे भ्यो नर्मस्ते ऽअस्त रुद्ररूपेभ्यः॥७॥ तत्पुर्रुषाय विदाहे महादेवाय धीमि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयात्॥८॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वीभूतानाम्। ब्ब्रह्माधिपतिर्ब्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्ब्रह्मो शिवो में ऽअस्तु सदाशिवोम्॥९॥ ॐ शिवो नामीसि स्वधितिस्ते पिता नर्मस्ते ऽअस्तु मा मो हिष्टसी । निवर्त्तयाम्यायुषे उन्नाद्याय प्रजननाय रायस्प्योषाय सुग्रज्यास्त्वाय सुवीर्घ्याय॥१०॥ ॐ विश्श्वांनि देवसवितर्हुरितानि परीसुव। यद्धद्वं तन्नु ऽआसुव॥११॥ ॐ द्यौः शान्ति-रुत्तरिक्षुष्ट् शान्ति÷ पृथिवी शान्तिराप् शान्तिरोषेषय् शान्ति÷। व्वनुस्पत्यं शान्तिर्व्विश्श्वे देवाः शान्तिर्व्वहा शान्तिः सर्व्धः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिःसामा शादितरेधि॥१२॥

ॐ सर्व्वेषां वा उएष व्येदाना रुसो अत्साम सुर्वेषामेवैनेमतहेदानाध रुसेनाभिष्ठिक्चिता।१३॥

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु।

इति रुद्राष्ट्राध्याय्यां स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्याय:।।२।।

## अथ शिवसहस्रनामावलिः

१. ॐ स्थिराय नम:

२. ॐ स्थाणवे नमः

३. ॐ प्रभवे नमः

४. ॐ भीमाय नमः

५. ॐ प्रवराय नमः

६. ॐ वरदाय नमः

७. ॐ वराय नमः

८. ॐ सर्वात्मने नमः

९. ॐ सर्व्वविख्याताय नमः

१०. ॐ सर्व्वस्मै नमः

११. ॐ सर्व्वकराय नमः

१२. ॐ भवाय नमः

१३.ॐ जटिने नमः

१४.ॐ चर्मिणे नमः

१५.ॐ शिखण्डिने नमः

१६.ॐ सर्व्वाङ्गाय नमः

१७.ॐ सर्व्वभावनाय नमः

१८.ॐ हराय नमः

१९.ॐ हरिणाक्षाय नमः

२०.ॐ सर्व्वभूतहराय नमः

२१.ॐ प्रभवे नमः

२२.ॐ प्रवृत्तये नमः

२३. ॐ निवृत्ताय नमः

२४. ॐ नियताय नमः

२५.ॐ शाश्वताय नमः

२६.ॐ ध्रुवाय नमः

२७. ॐ श्मशानवासिने नमः

२८.ॐ भगवते नमः

२९.ॐ खचराय नमः

३०.ॐ गोचराय नमः

३१.ॐ अर्दनाय नमः

३२.ॐ अभिवाद्याय नमः

३३.ॐ महाकर्म्मणे नमः

३४.ॐ तपस्विने नमः

३५.ॐ भूतभावनाय नमः

३६.ॐ उन्मत्तवेषप्रच्छान्नाय नमः

३७.ॐ सर्व्वलोकप्रजापतेय नमः

३८.ॐ महारूपाय नमः

३९.ॐ महाकायाय नमः

४०.ॐ वृषरूपाय नमः

४१.ॐ महायशसे नमः

४२.ॐ महात्मने नमः

४३.ॐ सर्व्वभूतात्मने नमः

४४.ॐ विश्वरूपाय नमः

४५.ॐ महाहनवे नमः

४६.ॐ लोकपालाय नमः

४७. ॐ अन्तर्हितात्मने नमः

४८.ॐ प्रसादाय नमः

४९.ॐ हयगर्दभये नमः

५०.ॐ पवित्राय नमः

५१.ॐ महते नमः

५२.ॐ नियमाय नमः

५३.ॐ नियमाश्रिताय नमः

५४. ॐ सर्व्वकर्मणे नमः

५५.ॐ स्वयम्भूताय नमः

५६.ॐ आदये नमः

५७. ॐ आदिकराय नमः

५८.ॐ निधये नमः

५९.ॐ सहस्राक्षाय नमः

६०.ॐ विशालाक्षाय नमः

६१.ॐ सोमय नमः

६२.ॐ नक्षत्रसाधकाय नमः

६३.ॐ चन्द्राय नमः

६४.ॐ सूर्य्याय नमः

६५.ॐ शनये नमः

६६.ॐ केतवे नमः

६७.ॐ ग्रहाय नमः

६८.ॐ ग्रहपतये नमः

६९.ॐ वराय नमः

७०.ॐ अत्रये नमः

७१.ॐ अत्र्यानमस्कर्त्रे नमः

७२.ॐ मृगवाणार्प्यणाय नमः

७३.ॐ अनघाय नमः

७४.ॐ महातपसे नमः

७५.ॐ घोरतपसे नमः

७६.ॐ अदीनाय नमः

७७. ॐ दीनसाधकाय नम:

७८.ॐ सँव्वत्सरकराय नमः

७९.ॐ मन्त्राय नमः

८०.ॐ प्रमाणाय नमः

८१.ॐ परमायतपसे नमः

८२.ॐ योगिने नमः

८३.ॐ योज्याय नमः

८४. ॐ महाबीजाय नमः

८५.ॐ महारेतसे नमः

८६.ॐ महाबलाय नमः

८७. ॐ सुवर्णरेतसे नमः

८८.ॐ सर्व्वज्ञाय नमः

८९.ॐ सुबीजाय नमः

९०.ॐ बीजवाहनाय नमः

९१.ॐ दशवाहवे नमः

९२.ॐ अनिमिषाय नमः

९३.ॐ नीलकण्ठाय नमः

९४.ॐ उमापतये नमः

९५.ॐ विश्वरूपाय नमः

९६.ॐ स्वयंश्रेष्ठाय नमः

९७.ॐ बलबीराय नमः

९८. ॐ अबंलगणाय नमः

९९.ॐ गणकर्त्ने नमः

१००. ॐ गणपतये नमः

१०१. ॐ दिग्वाससे नमः

१०२. ॐ कामाय नमः

१०३. ॐ मन्त्रविदे नमः

१०४. ॐ परममन्त्राय नमः

१०५. ॐ सर्व्वभवकराय नमः

१०६. ॐ हराय नमः

१०७. ॐ कमण्डलुधराय नमः

१०८. ॐ धन्विने नमः

१०९. ॐ बाणहसताय नमः

११०. ॐ कपालवेत नमः

१११. ॐ अशनिने नमः

११२. ॐ शतिध्नने नमः

११३. ॐ खङ्गिने नमः

११४. ॐ पट्टिशिने नमः

११५. ॐ आयुधिने नमः

११६. ॐ महते नमः

११७. ॐ स्नुवहस्ताय नम:

११८. ॐ सुरूपाय नमः

११९. ॐ तेजसे नमः

१२०. ॐ तेजस्करनिघये नम्ः

१२१. ॐ उष्णीिषणे नमः

१२२. ॐ सुवक्त्राय नमः

१२३. ॐ उदयाय नमः

१२४. ॐ विनताय नमः

१२५. ॐ दीर्ग्याय नमः

१२६. ॐ हरिकेशाय नमः

१२७. ॐ सुतीर्त्थाय नमः

१२८. ॐ कृष्णाय नमः

१२९. ॐ सृगालरूपाय नमः

१३०. ॐ सिद्धर्त्थाय नम:

१३१. ॐ मुण्डाय नमः

१३२. ॐ सर्व्वशुभंकराय नमः

१३३. ॐ अजाय नमः

१३४. ॐ बहुरूपाय नमः

१३५. ॐ गन्धधारिणे नमः

१३६. ॐ कपिर्दिने नमः

१३७. ॐ ऊब्हवरितसे नमः

१३८. ॐ उर्व्हलिङ्गाय नमः

१३९. ॐ उर्ध्वशायिने नमः

१४०. ॐ नभस्थलाय नमः

१४१. ॐ त्रिजटिनेय नमः

१४२. ॐ चीरवाससे नमः

१४३. ॐ रुद्राय नमः

१४४. ॐ सेनापतये नमः

१४५. ॐ विभवे नमः

१४६. ॐ अहश्चराय नमः

१४७. ॐ नक्तंचराय नमः

१४८. ॐ तिग्ममन्यवे नमः

१४९. ॐ सुवर्च्चसाय नमः

१५०. ॐ गजघ्ने नमः

१५१. ॐ दैत्यघ्ने नमः

१५२. ॐ कालाय नमः

१५३. ॐ लोकधात्रे नमः

१५४. ॐ गुणाकराय नमः

१५५. ॐ सिंहशाईलरूपाय नमः

१५६. ॐ आर्द्रचर्म्भाम्बरावृताय नमः

१५७. ॐ कालयोगिने नमः

१५८. ॐ महानादाय नमः

१५९. ॐ सर्व्वकामाय नमः

१६०. ॐ चतुष्यथाय नमः

१६१. ॐ निशाचराय नमः

१६२. ॐ प्रेतचारिणे नमः

१६३. ॐ भूतचारिणे नम:

१६४. ॐ महेश्वराय नमः

१६५. ॐ बहुभूताय नमः

१६६. ॐ बहुधराय नमः

१६७. ॐ स्वर्ब्भानवे नमः

१६८. ॐ अमिताय नमः

१६९. ॐ गतये नमः

१७०. ॐ नृत्यप्रियाय नमः

१७१. ॐ नित्यनर्त्ताय नमः

१७२. ॐ नर्त्तकाय नमः

१७३. ॐ सर्व्वलालसाय नमः

१७४. ॐ घोराय नमः

१७५. ॐ महातपसे नमः

१७६. ॐ पाशाय नमः

१७७. ॐ नित्याय नमः

१७८. ॐ गिरिरूहाय नमः

१७९. ॐ नभसे नमः

१८०. ॐ सहस्रहस्ताय नमः

१८१. ॐ विजयाय नमः

१८२. ॐ व्यवसाय नमः

१८३. ॐ अतन्द्रिताय नमः

१८४. ॐ अधर्षणाय नमः

१८५. ॐ धर्ष्यणात्मने नमः

१८६. ॐ यज्ञघ्ने नमः

१८७. ॐ कामनासकाय नमः

१८८. ॐ दक्षयागापहारिणे नमः

१८९. ॐ सुसहाय नमः

१९०. ॐ मध्यमाय नमः

१९१. ॐ तेजोपहारिणे नमः

१९२. ॐ बलघ्ने नमः

१९३. ॐ मुदिताय नमः

१९४. ॐ अर्त्थाय नमः

१९५. ॐ अजिताय नमः

१९६. ॐ अवराय नमः

१९७. ॐ गम्भीराय नमः

१९८. ॐ गभीराय नमः

१९९. ॐ गम्भीरबलवाहनाय नमः

२००. ॐ न्यग्रोधरूपाय नमः

२०१. ॐ न्यप्रोघाय नमः

२०२. ॐ वृक्षकण्णस्थितये नमः

२०३. ॐ विभवे नमः

२०४. ॐ सुतीक्ष्णदशनाय नमः

२०५. ॐ महाकायाय नमः

२०६. ॐ महाननाय नमः

२०७. ॐ विष्वक्सेनाय नमः

२०८. ॐ हरये नमः

२०९. ॐ यज्ञाय नमः

२१०. ॐ संय्युगापीडवाहनाय नमः

२११. ॐ तीक्ष्णतापाय नमः

२१२. ॐ हर्य्यश्वाय नमः

२१३. ॐ सहायाय नमः

२१४. ॐ कर्म्मकालविदे नमः

२१५. ॐ विष्णुप्रसाविताय नमः

२१६. ॐ यज्ञाय नमः

२१७. ॐ समुद्राय नमः

२१८. ॐ वडवामुखाय नमः

२१९. ॐ हुताशनसहायाय नमः

२२०. ॐ प्रशान्तात्मने नमः

२२१. ॐ हुताशनाय नमः

२२२. ॐ उग्रतेजसे नमः

२२३. ॐ महातेजसे नमः

२२४. ॐ जन्याय नमः

२२५. ॐ विजयकालविदे नमः

२२६. ॐ ज्योतिषामयनाय नमः

२२७. ॐ सिद्धये नमः

२२८. ॐ सर्व्वविग्रहाय नमः

२२९. ॐ शिखिने नमः

२३०. ॐ मुण्डिने नमः

२३१. ॐ जटिने नमः

२३२. ॐ ज्वालिने नमः

२३३. ॐ मूर्तिजाय नमः

२३४. ॐ मूर्द्धवगाय नमः

२३५. ॐ बलिने नमः

२३६. ॐ वेणविने नमः

२३७. ॐ पणविने नमः

२३८. ॐ तालिने नमः

२३९. ॐ खलिने नमः

२४०. ॐ कालकटङ्कटाय नमः

२४१. ॐ नक्षत्रविग्रहमतये नमः

२४२. ॐ गुणबुद्धये नमः

२४३. ॐ लयाय नमः

२४४. ॐ अगमाय नमः

२४५. ॐ प्रजापतये नमः

२४६. ॐ विश्ववाहवे नमः

२४७. ॐ विभगाय नमः

२४८. ॐ सर्व्वगाय नमः

२४९. ॐ अमुखाय नमः

२५०. ॐ विमोचनाय नमः

२५१. ॐ सुसरणाय नमः

२५२. ॐ हिर्ण्यकवचोद्भवाय नमः

२५३. ॐ मेढूजाय नमः

२५४. ॐ बलचारिणे नमः

२५५ ॐ महीचारिणे नमः

सं.पू.य.वि. १७

२५६. ॐ स्रुताय नमः

२५७. ॐ सर्व्वतूर्य्यनिनाविने नमः

२५८. ॐ सर्व्वतोद्यपरिग्रहाय नमः

२५९. ॐ व्यालरूपाय नमः

२६०. ॐ गुहावासिने नमः

२६१. ॐ गुहाय नमः

२६२. ॐ मालिने नमः

२६३. ॐ तरङ्गविदे नमः

२६४. ॐ त्रिदशाय नमः

२६५. ॐ त्रिकालधृषे नमः

२६६. ॐ कर्म्मसर्व्वबन्धविमोचनाय

२६७. ॐ असुरेन्द्राणाम्बन्धनाय नमः

२६८. ॐ युधिशत्रुविनाशनाय नमः

२६९. ॐ साङ्क्चप्रसादाय नमः

२७०. ॐ दुर्व्वाससे नमः

२७१. ॐ सर्व्वसाधुनिषेविताय नमः

२७२. ॐ प्रसंकन्दनाय नमः

२७३. ॐ विभागाज्ञाय नमः

२७४. ॐ अतुल्याय नमः

२७५. ॐ यज्ञविभागविदे नमः

२७६. ॐ सर्व्ववासाय नमः

२७७. ॐ सर्व्वचारिणे नमः

२७८. ॐ दुर्व्वाससे नमः

२७९. ॐ वासवाय नमः

२८०. ॐ अमराय नमः

२८१. ॐ हैमाय नमः

२८२. ॐ हेमकराय नमः

२८३. ॐ अयज्ञाय नमः

२८४. ॐ सर्व्वधारिणे नमः

२८५. ॐ धरोत्तमाय नमः

२८६. ॐ लोहिताक्षाय नमः

२८७. ॐ महाक्षाय नमः

२८८. ॐ विजयाक्षाय नमः

२८९. ॐ विशारदाय नमः

२९०. ॐ सङ्ग्रहाय नमः

२९१. ॐ निग्रहाय नमः

२९२. ॐ कर्त्रे नमः

२९३. ॐ सर्प्पचीरनिवासनाय नमः

२९४. ॐ मुख्याय नमः

२९५. ॐ अमुख्याय नमः

२९६. ॐ देहाय नमः

२९७. ॐ काहलये नमः

२९८. ॐ सर्व्वकामदाय नमः

२९९. ॐ सर्व्वकालप्रसादाय नमः

३००. ॐ सुबलाय नमः

३०१. ॐ बलरूपधृषे नमः

३०२. ॐ सर्वकामवराय नमः

३०३. ॐ सर्व्वदाय नमः

३०४. ॐ सर्व्वतोमुखाय नमः

३०५. ॐ आकाशनिर्व्विरूपाय नमः

३०६. ॐ निपातिने नमः

३०७. ॐ अवशाय नमः

३०८. ॐ खगाय नमः

३०९. ॐ रौद्ररूपाय नमः

३१०. ॐ अंशवं नमः

३११. ॐ आदित्याय नमः

३१२. ॐ बहुरश्मये नमः

३१३. ॐ सुवर्च्चस्विने नमः

३१४. ॐ वसुवेगाय नमः

३१५. ॐ महावेगाय नमः

३१६. ॐ मनोवेगाय नमः

३१७. ॐ निशाचराय नमः

३१८. ॐ सर्व्ववासिने नमः

३१९. ॐ उपदेकराय नमः

३२०. ॐ उपदेशकराय नमः

३२१. ॐ अकाराय नमः

३२२. ॐ मुनये नमः

३२३. ॐ आत्मनिरालोकाय नमः

३२४. ॐ सम्भग्नाय नमः

३२५. ॐ सहस्रदाय नमः

३२६. ॐ पक्षिणे नमः

३२७. ॐ पक्षरूपाय नमः

३२८. ॐ अतिदीप्ताय नमः

३२९. ॐ विशाम्पतये नमः

३३०. ॐ उन्मादाय नमः

३३१. ॐ मदनाय नमः

३३२. ॐ कामाय नमः

३३३. ॐ अश्वत्थाय नमः

३३४. ॐ अर्थकराय नमः

३३५. ॐ यशसे नमः

३३६. ॐ वामदेवाय नमः

३३७. ॐ वामाय नमः

३३८. ॐ प्राचे नमः

३३९. ॐ दक्षिणाय नमः

३४०. ॐ वामनाय नमः

३४१. ॐ सिद्धयोगिने नमः

३४२. ॐ महर्ष्यये नमः

३४३. ॐ सिद्धार्त्थाय नम:

३४४. ॐ सिद्धासाधकाय नमः

३४५. ॐ भिक्षवे नमः

३४६. ॐ भिक्षुरूपाय नमः

३४७. ॐ विपणाय नमः

३४८. ॐ मृदवे नमः

३४९. ॐ अव्ययाय नमः

३५०. ॐ महासेनाय नमः

३५१. ॐ विशाखाय नमः

३५२. ॐ षष्टिभागाय नमः

३५३. ॐ गवाम्मतये नमः

३५४. ॐ वज्रहसताय नमः

३५५. ॐ विष्कम्भिने नमः

३५६. ॐ चमूस्तम्भनाय नमः

३५७. ॐ वृत्तावृत्तकराय नमः

३५८. ॐ तालाय नमः

३५९. ॐ मधवे नमः

३६०. ॐ मधुकलोचनाय नमः

३६१. ॐ वाचस्पत्याय नमः

३६२. ॐ वाचसनाय नमः

३६३. ॐ नित्यमाश्रमपूजिताय नमः

३६४. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः

३६५. ॐ लोकचारिणे नमः

३६६. ॐ सर्वचारिणे नमः

३६७. ॐ विचारविदे नमः

३६८. ॐ ईशानाय नमः

३६९. ॐ ईश्वराय नमः

३७०. ॐ कालाय नमः

३७१. ॐ निशाचारिणे नमः

३७२. ॐ पिनाकधृषे नमः

३७३. ॐ निमित्तस्थाय नमः

३७४. ॐ निमित्ताय नमः

३७५. ॐ नन्दये नमः

३७६. ॐ नन्दिकराय नमः

३७७. ॐ हरये नमः

३७८. ॐ नन्दीश्वराय नमः

३७९. ॐ नन्दिने नमः

३८०. ॐ नन्दनाय नमः

३८१. ॐ नन्दिवर्द्धनाय नमः

३८२. ॐ भगहारिणे नमः

३८३. ॐ निहन्त्रे नमः

३८४. ॐ कालाय नमः

३८५. ॐ ब्रह्मणे नमः

३८६. ॐ पितामहाय नमः

३८७. ॐ चतुर्मखाय नमः

३८८. ॐ महालिङ्गाय नमः

३८९. ॐ चारूलिङ्गाय नमः

३९०. ॐ लिङ्गाध्यक्षाय नमः

३९१. ॐ सुराध्यक्षाय नमः

३९२. ॐ योगाध्यक्षाय नमः

३९३. ॐ युगावहाय नमः

३९४. ॐ बीजाध्यक्षाय नमः

३९५. ॐ बीजकर्त्रे नमः

३९६. ॐ अध्यात्मानुगताय नमः

३९७. ॐ बलाय नमः

३९८. ॐ इतिहासाय नमः

३९९. ॐ सङ्कल्पाय नमः

४००. ॐ गौतमाय नमः

४०१. ॐ निशाकराय नमः

४०२. ॐ दम्भाय नमः

४०३. ॐ अदम्भाय नमः

४०४. ॐ वैदम्भाय नमः

४०५. ॐ वश्याय नमः

४०६. ॐ वशकराय नमः

४०७. ॐ कलये नमः

४०८. ॐ लोककर्त्रे नमः

४०९. ॐ पशुपतये नमः

४१०. ॐ महाकर्त्रे नमः

४११. ॐ अनौषधाय नमः

४१२. ॐ अक्षराय नमः

४१३. ॐ परमब्रह्मणे नमः

४१४. ॐ बलवते नमः

४१५. ॐ शक्राय नमः

४१६. ॐ नीतये नमः

४१७. ॐ अनीतये नमः

४१८. ॐ शुद्धात्मने नमः

४१९. ॐ शुद्धाय नमः

४२०. ॐ मान्याय नमः

४२१. ॐ गतागताय नमः

४२२. ॐ बहुप्रसादाय नमः

४२३. ॐ सुस्वप्नाय नमः

४२४. ॐ दर्पणाय नमः

४२५. ॐ अमित्रजिते नमः

४२६. ॐ वेदकारय नमः

४२७. ॐ मन्त्रकाराय नमः

४२८. ॐ विदुषे नमः

४२९. ॐ सम्रर्दनाय नमः

४३०. ॐ महामेघनिवासिने नमः

४३१. ॐ महाघोराय नमः

४३२. ॐ वशिने नमः

४३३. ॐ कराय नमः

४३४. ॐ अग्निज्वालाय नमः

४३५. ॐ महाज्वालाय नमः

४३६. ॐ अतिघ्रूमाय नमः

४३७. ॐ हुताय नमः

४३८. ॐ हविषे नमः

४३९. ॐ विषाय नमः

४४०. ॐ शङ्कराय नमः

४४१. ॐ नित्यंवर्चस्विने नमः

४४२, ॐ धूमकेतनाय नमः

४४३. ॐ नीलाय नमः

४४४. ॐ अङ्गलुब्धाय नमः

४४५. ॐ शोभनाय नमः

४४६. ॐ निरवग्रहाय नमः

४४७. ॐ स्वस्तिदाय नमः

४४८. ॐ स्वतिभावाय नमः

४४९. ॐ भागिने नमः

४५०. ॐ भागकराय नमः

४५१. ॐ लघवे नमः

४५२. ॐ उत्साङ्गाय नमः

४५३. ॐ महाङ्गायनम नमः

४५४. ॐ महागर्ब्भपरायणाय नमः

४५५. ॐ कृष्णवण्णीय नमः

४५६. ॐ सुवर्णाय नमः

४५७. ॐ सर्वदेहिनामिन्द्रियाय नमः

४५८. ॐ महापादाय नमः

४५९. ॐ महाहस्ताय नमः

४६०. ॐ महाकायाय नमः

४६१. ॐ महायशसे नमः

४६२. ॐ महामूद्ध्र्त्रे नमः

४६३. ॐ महामात्राय नमः

४६४. ॐ महानेत्राय नमः

४६५. ॐ निशालयाय नमः

४६६. ॐ महान्तकाय नमः

४६७. ॐ महाकण्णीय नमः

४६८. ॐ महोष्ठय नमः

४६९. ॐ महाहनवे नमः

४७०. ॐ महानासाय नमः

४७१. ॐ महाकम्बवे नमः

४७२. ॐ महाग्रीवाय नमः

४७३. ॐ श्यमशानभाजे नमः

४७४. ॐ महावक्षसे नमः

४७५. ॐ महोरस्काय नमः

४७६. ॐ अन्तरात्मने नमः

४७७. ॐ मृगलयाय नमः

४७८. ॐ लम्बनाय नमः

४७९. ॐ लम्बितोष्ठाय नमः

४८०. ॐ महामायाय नमः

४८१. ॐ पयोनिधये नमः

४८२. ॐ महादनताय नमः

४८३. ॐ महादंष्ट्राय नमः

४८४. ॐ महाजिह्वाय नमः

४८५. ॐ महामुखाय नमः

४८६. ॐ महानखाय नमः

४८७. ॐ महारोम्णे नमः

४८८. ॐ महाकेशाय नमः

४८९. ॐ महाजटाय नमः

४९०. ॐ प्रसन्नाय नमः

४९१. ॐ प्रसादाय नमः

४९२. ॐ प्रत्ययाय नमः

४९३. ॐ गिरिसाधनाय नमः

४९४. ॐ स्नेहनाय नमः

४९५. ॐ अस्नेहनाय नमः

४९६. ॐ अजिताय नमः

४९७. ॐ महामुनये नमः

४९८. ॐ वृक्षाकाराय नमः

४९९. ॐ वृक्षकेतवे नमः

५००. ॐ अनलाय नमः

५०१. ॐ वायुवाहनाय नमः

५०२. ॐ गण्डलिने नमः

५०३. ॐ मेरुधामे नमः

५०४. ॐ देवाधिपतये नमः

५०५. ॐ अथर्व्यशीर्षाय नमः

५०६. ॐ सामास्याय नमः

५०७. ॐ ऋक्सहस्रामितेक्षणाय नमः

५०८. ॐ यजुःपादभुजाय नमः

५०९. ॐ गुह्याय नमः

५१०. ॐ प्रकाशाय नमः

५११. ॐ जङ्गमायाय नमः

५१२. ॐ अमोघार्त्थाय नमः

५१३. ॐ प्रसादाय नमः

५१४. ॐ अभिगम्याय नमः

५१५. ॐ सुदर्शनाय नमः

५१६. ॐ उपकाराय नमः

५१७. ॐ प्रियाय नमः

५१८. ॐ सर्व्वाय नमः

५१९. ॐ कनकाय नमः

५२०. ॐ कांचनच्छवये नमः

५२१. ॐ नाभये नमः

५२२. ॐ नन्दिकाराय नमः

५२३. ॐ भावाय नमः

५२४. ॐ पुष्करस्थपतये नमः

५२५. ॐ स्थिराय नमः

५२६. ॐ द्वादशाय नमः

५२७. ॐ त्रासनाय नमः

५२८. ॐ आद्याय नमः

५२९. ॐ यज्ञाय नमः

५३०. ॐ यज्ञसमाहिताय नमः

५३१. ॐ नक्ताय नमः

५३२. ॐ कलये नमः

५३३. ॐ कालाय नमः

५३४. ॐ मकराय नमः

५३५. ॐ कालपूजिताय नमः

५३६. ॐ सगणाय नमः

५३७. ॐ गणकाराय नमः

५३८. ॐ भूतवाहनसारथये नमः ५६६. ॐ अपराय नमः

५३९. ॐ भरमशयाय नम:

५४०. ॐ भस्मगोष्ट्रे नमः

५४१. ॐ भस्मभूताय नमः

५४२. ॐ तरवे नमः

५४३. ॐ गणाय नमः

५४४. ॐ लोकपालाय नमः

५४५. ॐ अलोकाय नमः

५४६. ॐ महात्मने नमः

५४७. ॐ सर्व्वपूजिताय नमः

५४८. ॐ शुक्लाय नमः

५४९. ॐ त्रिशुक्लाय नमः

५५०. ॐ सम्पन्नाय नमः

५५१. ॐ शुचये नमः

५५२. ॐ भूतनिषेविताय नमः

५५३. ॐ आश्रयस्थाय नमः

५५४. ॐ क्रियावस्थाय नमः

५५५. ॐ विश्वकम्ममितये नमः

५५६. ॐ वराय नमः

५५७. ॐ विशालशाखाय नमः

५५८. ॐ ताम्रोष्ठय नमः

५५९. ॐ अम्बुजालाय नमः

५६०. ॐ सुनिश्चलाय नमः

५६१. ॐ कपिलाय नमः

५६२. ॐ कपिशाय नमः

५६३. ॐ शुक्लाय नमः

५६४. ॐ आयुषे नमः

५६५. ॐ पराय नमः

५६७. ॐ गन्धर्व्वाय नमः

५६८. ॐ आदितये नमः

५६९. ॐ ताक्ष्यीय नमः

५७०. ॐ सुविज्ञेयाय नम:

५७१. ॐ सुशारदाय नमः

५७२. ॐ परश्वधायुधाय नमः

५७३. ॐ देवाय नमः

५७४. ॐ अनुकारिणे नमः

५७५. ॐ सुबान्धवाय नमः

५७६. ॐ तुम्बवीणाय नमः

५७७. ॐ महोक्रोधाय नमः

५७८. ॐ उद्धवरितसे नमः

५७९. ॐ जलेशाय नमः

५८०. ॐ उत्राय नमः

५८१. ॐ वंशकराय नमः

५८२. ॐ वंशाय नमः

५८३. ॐ वंशनादाय नमः

५८४. ॐ अनिन्दिताय नमः

५८५. ॐ सर्व्वाङ्गरूपाय नमः

५८६. ॐ मायाविने नमः

५८७. ॐ सुहृदाय नमः

५८८, ॐ अनिलाय नमः

५८९. ॐ अनलाय नमः

५९०. ॐ बन्धनाय नमः

५९१. ॐ बन्धकर्त्रे नमः

५९२. ॐ सुबन्धनविमोचनाय नमः ६२०. ॐ शक्राय नमः

५९३. ॐ सयज्ञारये नमः

५९४. ॐ सकामारये नमः

५९५. ॐ महादंष्ट्राय नमः

५९६. ॐ महायुधाय नमः

५९७. ॐ बहुधानिन्दिताय नमः

५९८. ॐ शर्व्वाय नमः

५९९. ॐ शङ्कराय नमः

६००. ॐ शङ्कराय नमः

६०१. ॐ अधनाय नमः

६०२. ॐ अमरेशाय नमः

६०३. ॐ महादेवाय नमः

६०४. ॐ विश्वदेवाय नमः

६०५. ॐ सुरारिघ्ने नमः

६०६. ॐ अहिर्ब्युन्याय नमः

६०७. ॐ अनिलाभाय नमः

६०८. ॐ चेकितानाय नमः

६०९. ॐ हविषे नमः

६१०. ॐ अजैकपदे नमः

६६१. ॐ कपालिने नमः

६१२. ॐ त्रिशङ्कवे नमः

६१३. ॐ अजिताय नमः

६१४. ॐ शिवाय नमः

६१५. ॐ धन्वन्तरये नमः

६१६. ॐ धूमकेतवे नमः

६१७. ॐ स्कन्दाय नमः

६१८. ॐ वैश्रवणाय नमः

६१९. ॐ धात्रे नमः

६२१. ॐ विष्णावे नमः

६२२. ॐ मित्राय नमः

६२३. ॐ त्वष्ट्रे नमः

६२४. ॐ ध्रुवाय नमः

६२५. ॐ घराय नमः

६२६. ॐ प्रभावाय नमः

६ २७. ॐ सर्वगाय वायवे नमः

६ २८. ॐ अर्घ्यम्णे नमः

६२९. ॐ सवित्रे नमः

६३०. ॐ रवये नमः

६३१. ॐ उषङ्गवे नमः

६३२. ॐ विधात्रे नमः

६३३. ॐ मान्धात्रे नमः

६३४. ॐ भूतभावनाय नमः

६३५. ॐ विभवे नमः

६३६. ॐ वर्णाविभाविने नमः

६३७. ॐ सर्व्वकामगुणावहाय नमः

६३८. ॐ पद्मनाभाय नमः

६३९. ॐ महागर्व्भाय नमः

६४०. ॐ चन्द्रवक्त्राय नमः

६४१. ॐ अनिलाय नमः

६४२. ॐ अनलाय नमः

६४३. ॐ बलवते नमः

६४४. ॐ उपाशान्ताय नमः

६४५. ॐ पुराणाय नमः

६४६. ॐ पुष्पचञ्चवे नमः

६४७. ॐ ईत्यै नमः

६४८. ॐ कुरकर्त्रे नमः

६४९. ॐ कुरुवासिने नमः

६५०. ॐ कुरुहूताय नमः

६५१. ॐ गुणौषघाय नमः

६५२. ॐ सर्वाशयाय नमः

६५३. ॐ दर्ब्भचारिणे नमः

६५४. ॐ सर्व्वेषांप्राणिपतये नमः

६५५. ॐ देवदेवाय नमः

६५६. ॐ सुखासक्ताय नमः

६५७. ॐ सते नमः

६५८. ॐ असते नमः

६५९. ॐ सर्व्वरत्नविदे नमः

६६०. ॐ कैलासगिरिवासिने नमः

६६१. ॐ हिमवद्गिरिसंश्रयाय

६६२. ॐ कूलहारिणे नमः

६६३. ॐ कूलकर्त्रे नमः

६६४. ॐ बहुविद्याय नमः

६६५. ॐ बहुप्रदाय नमः

६६६. ॐ वणिजाय नमः

६६७. ॐ वर्द्धिकने नमः

६६८. ॐ वृक्षाय नमः

६६९. ॐ बकुलाय नमः

६७०. ॐ चन्दनाय नमः

६७१. ॐ छन्दसे नमः

६७२. ॐ सारग्रीवाय नमः

६७३. ॐ महाजत्रवे नमः

६७४. ॐ अलोलाय नमः

६७५. ॐ महौषधाय नमः

६७६. ॐ सिद्धार्थकारिणे नमः

६७७. ॐ छन्दोव्याकरणोत्तर-सिद्धार्त्थाय नमः

६७८. ॐ सिंहनादाय नमः

६७९. ॐ सिंहदंष्ट्रय नमः

६८०. ॐ सिंहगाय नमः

६८१. ॐ सिंहवाहनाय नमः

६८२. ॐ प्रभावात्मने नमः

६८३. ॐ जगत्कालस्थालाय नमः ७११. ॐ गोचर्मावसनाय नमः

६८४. ॐ लोकहिताय नमः

६८५. ॐ तरवे नमः

६८६. ॐ सारङ्गाय नमः

६८७. ॐ नवचक्राङ्गाय नमः

६८८. ॐ केतुमालिने नमः

६८९. ॐ सभावनाय नमः

६९०. ॐ भूतालयाय नमः

६९१. ॐ भूतपतये नमः

६९२. ॐ अहोरात्राय नमः

६९३. ॐ अनिन्दिताय नमः

६९४. ॐ सर्वभूतनामवाहित्रे नमः ७२२. ॐ रतये नमः

६९५. ॐ सर्वभूतानां निलयाय नमः ७२३. ॐ नराय नमः

६९६. ॐ विभवे नमः

६९७. ॐ भवाय नमः

६९८. ॐ अमोघाय नमः

६९९. ॐ सॅय्यताय नमः

<sup>७००</sup>. ॐ अश्वाय नम:

७०१. ॐ भोजनाय नमः

७०२. ॐ प्राणधारणाय नमः

७०३. ॐ धृतिमते नमः

७०४. ॐ मतिमते नमः

७०५. ॐ दक्षाय नमः

७०६. ॐ सत्कृताय नम:

७०७. ॐ युगाधिपाय नमः

७०८. ॐ गोपालाय नमः

७०९. ॐ गोपतये नमः

७१०. ॐ ग्रामाय नमः

७१२. ॐ हरये नमः

७१३. ॐ हिरण्वाहवे नमः

७१४. ॐ प्रवेशिनाङ्गहापालाय नमः

७१५. ॐ प्रकृष्टारये नमः

७१६. ॐ महाहर्ष्याय नमः

७१७. ॐ जितकामाय नमः

७१८. ॐ जितेन्द्रियाय नमः

७१९. ॐ गान्धाराय नमः

७२०. ॐ सुवासाय नमः

७२१. ॐ तपः सक्ताय नमः

७२४. ॐ महागीताय नमः

७२५. ॐ महानृत्याय नमः

७२६. ॐ अप्सरोगणसेविताय नमः

७२७. ॐ महाकेतवे नमः

७२८. ॐ महाघातवे नमः

७२९. ॐ नैकसानुचराय नमः

७३०. ॐ चलाय नमः

७३१. ॐ आवेदनीयाय नमः

७३२. ॐ आदेशाय नमः

७३३. ॐ सर्व्वगन्धसुखवहाय नमः

७३४. ॐ तोरणाय नमः

७३५. ॐ तारणाय नमः

७३६. ॐ वाताय नमः

७३७. ॐ परिधये नमः

७३८. ॐ पतिखेचराय नमः

७३९. ॐ सँय्योगवर्द्धनाय नमः

७४०. ॐ गुणधिकवृद्धाय नमः

७४१. ॐ अतिवृद्धाय नमः

७४२. ॐ गुणाधिकाय नमः

७४३. ॐ नित्यात्मसहाय नमः

७४४. ॐ देवायसूरपतये नमः

७४५. ॐ पत्ये नमः

७४६. ॐ युक्ताय नमः

७४७. ॐ युक्तबाहवे नमः

७४८. ॐ देवाय दिविसुपर्व्वदेवाय

नमः

७४९. ॐ आषाढाय नमः

७५०. ॐ सुषाढाय नमः

७५१. ॐ ध्रुवाय नमः

७५२. ॐ हरणाय नमः

७५३. ॐ हराय नम:

७५४. ॐ आवर्त्तमानभ्योवपुषे नमः

७५५. ॐ वसुश्रेष्ठाय नमः

७५६. ॐ महापथाय नमः

७५७. ॐ विमर्प्यासिरोहारिणे नमः ७८३. ॐ सेनाकल्पाय नमः

७५८. ॐ सर्व्वलक्ष्ज्ञणलक्षिताय

७५९. ॐ अक्षायरथयोगिने नमः

७६०. ॐ सर्व्वयोगिने नमः

७६१. ॐ महाबलाय नमः

७६२. ॐ समाम्रयाय नमः

७६३. ॐ असाम्रायाय नमः

७६४. ॐ तीर्त्यदेवाय नमः

७६५. ॐ महारथाय नमः

७६६. ॐ निज्जीवाय नमः

७६७. ॐ जीवनाय नमः

७६८. ॐ मन्त्राय नमः

७६५. ॐ शुभाक्षाय नमः

७७०. ॐ बहुकर्कशाय नमः

७७१. ॐ रत्नप्रभूताय नमः

७७२. ॐ रत्नाङ्गाय नमः

७७३. ॐ महाण्णविनिपानविदे नमः

७७४. ॐ मूलाय नमः

७७५. ॐ विशालाय नमः

७७६. ॐ अमृताय नमः

७७७. ॐ व्यक्ताव्यक्ताय नमः

७७८. ॐ तपोनिधये नमः

७७९. ॐ आरोहणाय नमः

७८०. ॐ अधिरोहाय नमः

७८१. ॐ शूलधारिणे नमः

७८२. ॐ महायशसे नमः

७८४. ॐ महाकल्पाय नमः

७८५. ॐ योगाय नमः

७८६. ॐ युगकराय नमः

७८७. ॐ हरये नमः

७८८. ॐ युगरूपाय नमः

७८९. ॐ महारूपाय नमः

७९०. ॐ महानागहनाय नमः

७९१. ॐ वधाय नमः

७९२. ॐ न्यायनिर्व्वपणाय नमः

७९३. ॐ पादाय नमः

७९४. ॐ पण्डिताय नमः

७९५. ॐ अचलोपमाय नमः

७९६. ॐ बहुमालाय नमः

७९७. ॐ महामालाय नमः

७१८. ॐ शशिनेहरसुलोचनाय

७९९. ॐ विस्ताराय लवणकूपाय

८००. ॐ त्रियुगाय नमः

८०१. ॐ सफलोदयाय नमः

८०२. ॐ त्रिनेत्राय नमः

८०३. ॐ विषणणाङ्गाय नमः

८०४. ॐ मणिविद्धाय नमः

८०५. ॐ जटाधराय नमः

८०६. ॐ बिन्दवे नमः

८०७. ॐ विसरगीय नमः

८०८. ॐ सुमुखाय नमः

८०९. ॐ शराय नमः

८१०. ॐ सर्व्वायुघाय नमः

८११. ॐ सहाय नमः

८१२. ॐ निवेदनाय नमः

८१३. ॐ सुखाजाताय नमः

८१४. ॐ सुगन्धाराय नमः

८१५. ॐ महाधनुषे नमः

८१६. ॐान्धापालिभगवते नमः

८१७. ॐ सर्व्वकर्मोत्थानाय नमः

८१८. ॐ मन्थानबहुलवायवे नमः

८१९. ॐ सकलाय नमः

८२०. ॐ सर्व्वलोचनाय नमः

८२१. ॐ तलस्तालाय नमः

८२२. ॐ करस्थालिने नमः

८२३. ॐ उद्धर्ध्वसंहननाय नमः

८२४. ॐ महते नमः

८२५. ॐ छत्राय नमः

८२६. ॐ सुच्छत्राय नमः

८२७. ॐ विख्यातलोकाय नमः

८२८. ॐ सर्व्वाश्रयाराक्रमाय नमः

८२९. ॐ मुण्डाय नमः

८३०. ॐ विरूपाय नमः

८३१. ॐ विकृताय नमः

८३२. ॐ दण्डिने नमः

८३३. ॐ कुण्डिने नमः

८३४. ॐ विकुर्वाणाय नमः

८३५. ॐ हर्य्यक्षाय नमः

८३६. ॐ ककुभाय नमः

८३७, ॐ वज्रिणे नमः

८३८. ॐ शतजिह्नाय नमः

८३९. ॐ सहस्रपादेसहस्रमूद्धर्ने नमः ८६७. ॐ पशुपतये नमः

८४०. ॐ देवेन्द्राय नमः

८४१. ॐ सर्व्वदेवमयाय नमः

८४२. ॐ गुरवे नमः

८४३. ॐ सहस्रबाहवे नमः

८४४. ॐ सर्वाङ्गाय नमः

८४५. ॐ शरण्याय नमः

८४६. ॐ सर्व्वलोककृते नमः

८४७. ॐ पवित्राय नमः

८४८. ॐ त्रिककुन्मन्त्राय नमः

८४९. ॐ कनिष्ठाय नमः

८५०. ॐ कृष्णपिङ्गलाय नमः

८५१. ॐ ब्रह्मदण्डविनिम्मित्रे नमः ८७८. ॐ उमाकान्ताय नमः

८५२. ॐ शतध्नीपाशशक्तिमते नमः ८७९. ॐ जान्ह्वीधृते नमः

८५३. ॐ पद्मगर्व्भाय नमः

८५४. ॐ महागर्ब्भाय नमः

८५५. ॐ ब्रह्मब्मीय नमः

८५६. ॐ जलजोद्भवाय नमः

८५७. ॐ गभस्तये नमः

८५८. ॐ ब्रह्मकृते नमः

८५९. ॐ ब्रह्मणे नमः

८६०. ॐ ब्रह्मविदे नमः

८६१. ॐ ब्राह्मणाय नमः

८६२. ॐ गतये नमः

८६३. ॐ अनन्तरूपाय नमः

८६४. ॐ नैकात्म्ने नमः

८६५. स्वयम्भुवस्तिग्मतेजसे नमः

८६६. ॐ उन्दर्वगात्मने नमः

८६८. ॐ वातरंहसे नमः

८६९. ॐ मनोजवाय नमः

८७०. ॐ चन्दिनने नमः

८७१. ॐ पद्मनालाग्राय नमः

८७२. ॐ सुरभ्यूत्तारणाय नमः

८७३. ॐ नराय नमः

८७४. ॐ कर्णिकारमहास्रमिवेण नमः

८७५. ॐ नीलमोलये नमः

८७६. ॐ पिनाकधृषे नमः

८७७. ॐ उमापतये नमः

८८०. ॐ उमाधवाय नमः

८८१. ॐ वरवराहाय नमः

८८२. ॐ वरदाय नमः

८८३. ॐ वरेण्याय नमः

८८४. ॐ सुमहास्वनाय नमः

८८५. ॐ महाप्रसादाय नमः

८८६. ॐ दमनाय नमः

८८७. ॐ शत्रुघ्नेनमः

८८८. ॐ श्वेतिपङ्गलाय नमः

८८९. ॐ पीतात्मने नमः

८९०. ॐ परमात्मने नमः

८९१. ॐ प्रयतात्मने नमः

८९२. ॐ प्रधानधृते नमः

८९३. ॐ सर्व्वपार्श्वमुखाय नमः|९१९. ॐ आद्यनिर्गमाय नमः

८९४. ॐ त्र्यक्षाय नमः

८९५. ॐ धर्म्मसाधारणारावराय

८९६. ॐ चराचरात्मने नमः

८९७. ॐ सूक्ष्मात्मने नमः

८९८. ॐ अमृतगोवृषेश्वराय नमः ९२५. ॐ मात्रे नमः

८९९. ॐ साध्यर्षये नमः

९००. ॐ आदित्यायवासवे नमः |९२७. ॐ स्वर्गद्वाराय नमः

९०१. ॐ विवस्वसवित्रमृताय नमः ९२८. ॐ प्रजाद्वाराय नमः

९०२. ॐ व्यासाय नमः

९०३. ॐ सर्गाय सुसंक्षेपविस्तराय ९३०. ॐ त्रिविष्टपाय नमः

नमः

९०४. ॐ पर्यनयाय नमः

९०५. ॐ ऋतुवे नमः

९०६. ॐ सँव्वत्सराय नमः

९०७. ॐ मासाय नमः

९०८. ॐ पक्षाय नमः

९०९. ॐ संख्यासमापनाय नमः

९१०. ॐ कलायै नमः

९११. ॐ काष्ठायै नमः

९१२. ॐ लबेभ्यो नमः

९१३. ॐ मात्राभ्यो नमः

९१४. ॐ मुहुर्त्ताहःक्षपाभ्यो नमः

११५. ॐ क्षणेभ्यो नमः

९१६. ॐ विश्वक्षेत्राय नमः

११७. ॐ प्रजाबीजाय नमः

९१८. ॐ लिङ्गाय नमः

९२०. ॐ सते नमः

९२१. ॐ असते नमः

९२२. ॐ व्यक्ताय नमः

९२३. ॐ अव्यक्ताय नमः

९२४. ॐ पित्रे नमः

९२६. ॐ पितामहाय नमः

९२९. ॐ मोक्षद्वाराय नमः

९३१. ॐ निर्व्वाणाय नमः

९३२. ॐ ह्लादनाय नमः

९३३. ॐ ब्रह्मलोकाय नमः

९३४. ॐ परस्यैगतये नमः

९३५. ॐ देवासुरविनिम्मत्रि नमः

९३६. ॐ देवासुरपरायणाय नमः

९३७. ॐ देवासुरगुरवे नमः

९३८. ॐ देवाय नमः

९३९. ॐ देवासुरनमस्कृताय नम:

९४०. ॐ देवासुरमहामात्राय नमः

९४१. ॐ देवासुरगणाश्रयाय नमः

९४२. ॐ देवासुरगणाध्यक्षाय नमः

९४३. ॐ देवासुरगणायण्ये नमः

९४४. ॐ देवातिदेवाय नमः

९४५. ॐ देवर्षये नमः

९४६. ॐ देवासुरवरप्रदाय नमः

९४७. ॐ देवासुरेश्वराय नमः

९४८. ॐ विश्वाय नमः

९४९. ॐ देवासुरमहेश्वराय नमः

९५०. ॐ सर्व्वदेवमयाय नमः

९५१. ॐ अचिन्त्याय नमः

९५२. ॐ देवात्मने नमः

९५३. ॐ आत्मसम्भवाय नमः

९५४. ॐ उद्भिदे नमः

९५५. ॐ त्रिविक्रमाय नमः

९५६. ॐ वैद्याय नमः

९५७. ॐ विरसेय नमः

९५८. ॐ नीरसेय नमः

९५९. ॐ अमराय नमः

९६०. ॐ ईड्याय नमः

९६१. ॐ हस्तीश्वराय नमः

९६२. ॐ व्याघ्राय नमः

९६३. ॐ देवसिंहाय नमः

९६४. ॐ नरर्ष्यभाय नमः

१६५. ॐ विवुधाय नमः

९६६. ॐ अग्रवराय नमः

९६७. ॐ सूक्ष्माय नमः

९६८. ॐ सर्व्वदेवाय नमः

९६९. ॐ तपोमयाय नमः

९७०. ॐ सुयुक्ताय नमः

९७१. ॐ शोभनाय नमः

९७२. ॐ बज्रिणे नमः

९७३. ॐ प्रासानाम्प्रभवाय नमः

९७४. ॐ अव्ययाय नमः

९७५. ॐ गुहाय नमः

९७६. ॐ कान्ताय नमः

९७७. ॐ निजायसरगीय नम:

९७८. ॐ पवित्राय नमः

९७९. ॐ सर्व्वपावनाय नमः

९८०. ॐ शृङ्गिणे नमः

९८१. ॐ शृङ्गप्रियाय नमः

९८२. ॐ बभ्रवे नमः

९८३. ॐ राजराजाय नमः

९८४. ॐ निरामयाय नमः

९८५. ॐ अभिरामाय नमः

९८६. ॐ सुरगणाय नमः

९८७. ॐ विरामाय नमः

९८८. ॐ सर्व्वसाधनाय नमः

९८९. ॐ ललाटाक्षाय नमः

९९०. ॐ विश्वदेवाय नमः

९९१. ॐ हरिणाय नमः

९९२. ॐ ब्रह्मवर्च्चसाय नमः

९९३. ॐ स्थावराणानां पतये नमः

९९४. ॐ नियमेन्द्रियवद्धनाय नमः

९९५. ॐ सिद्धार्त्थाय नमः

९९६. ॐ सिद्धभूतार्त्याय नमः

९९७. ॐ अचिन्त्याय नमः

९९८. ॐ सत्यव्रताय नमः

९९९. ॐ शुचये नमः

१०००. ॐ व्रताधिपाय नमः

इति शिवसहस्रनामार्वालः सस्पूर्ण॥

## अथ दुर्गा सहस्रनामावलिः

१.ॐ महाविद्यायै नमः

२.ॐ जगन्मात्रे नमः

३.ॐ महालक्ष्म्यै नमः

४.ॐ शिवप्रियायै नमः

५.ॐ विष्णुमायायै नमः

६.ॐ शुभायै नमः

७.ॐ शांतायै नमः

८.ॐ सिद्धायै नमः

९.ॐ सिद्धसरस्वत्यै नमः

१०.ॐ क्षमायै नमः

११.ॐ कांत्यै नमः

१२.ॐ प्रभाये नमः

१३.ॐ ज्योत्स्नायै नमः

१४.ॐ पार्वत्यै नमः

१५.ॐ सर्वमंगलायै नमः

१६.ॐ हिंगुलायै नमः

१७.ॐ चण्डिकायै नमः

१८.ॐ दांतायै नमः

१९.ॐ पद्याये नमः

२०.ॐ लक्ष्म्यै नमः

२१.ॐ हरिप्रियायै नमः

२२.ॐ त्रिपुरानंदिन्यै नमः

२३. ॐ नंदाये नमः

२४.ॐ सुनंदायै नमः

२५.ॐ सुरवन्दितायै नमः

२६.ॐ यज्ञविद्यायै नमः

२७. ॐ महामायायै नमः

२८.ॐ वेदमात्रे नमः

२९.ॐ सुधायै नमः

३०.ॐ धृत्यै नमः

३१.ॐ प्रीत्यै नमः.

३२.ॐ प्रियायै नमः

३३.ॐ प्रसिद्धायै नमः

३४.ॐ मृडान्यै नमः

३५.ॐ विंध्यवासिन्यै नमः

३६.ॐ सिद्धविद्यायै नमः

३७.ॐ महाशक्तयै नमः

३८.ॐ पृथव्यै नमः

३९.ॐ नारदसेवितायै नमः

४०.ॐ पुरुहूतप्रियायै नमः

४१.ॐ कांत्यै नमः

४२.ॐ कामिन्यै नमः

४३.ॐ पद्मलोचनायै नमः

४४.ॐ प्रऱ्हादित्यै नमः

४५.ॐ महामात्रे नमः

४६.ॐ दुर्गायै नमः

४७. ॐ दुर्गिर्तिनाशिन्यै नमः

४८.ॐ ज्वालामुख्यै नमः

४९.ॐ सुगोत्रायै नमः

५०.ॐ ज्योतिषे नमः

५१.ॐ कुमुदवासिन्यै नमः

५२.ॐ दुर्गीयै नमः

५३.ॐ दुर्लभायै नमः

५४.ॐ विद्यायै नमः

५५.ॐ स्वर्गत्यै नमः

५६.ॐ पुरवासिन्यै नमः

५७.ॐ अपर्णायै नमः

५८.ॐ शांवर्थे नमः

५९.ॐ मायायै नमः

६०.ॐ मदिरायै नमः

६१.ॐ मृदुहासिन्यै नमः

६२.ॐ नारायण्यै नमः

६३.ॐ महानिद्रायै नमः

६४.ॐ योगनिद्रायै नमः

६५.ॐ प्रभावत्यै नमः

६६.ॐ प्रज्ञायै नम:

६७.ॐ अपरिमितायै नमः

६८.ॐ प्राज्ञायै नमः

६९.ॐ तारायै नमः

७०.ॐ मधुमत्यै नमः

७१.ॐ मधवे नमः

७२.ॐ क्षीरार्णवसुतायै नमः

७३.ॐ बालायै नमः

७४.ॐ बालिकायै नमः

७५.ॐ सिंहगामिन्यै नमः

७६.ॐ ओंकाराये नमः

७७.ॐ सुधाकारायै नमः

७८.ॐ चेतनायै नमः

७९.ॐ कोपनायै नमः

८०.ॐ क्षित्यै नमः

८१.ॐ अर्घविंदुधरायै नमः

८२.ॐ धीरायै नमः

८३.ॐ विश्वमात्रे नमः

८४. ॐ कलावत्यै नमः

८५. ॐ पद्यावत्यै नमः

८६. ॐ सुवस्त्रायै नमः

८७. ॐ प्रवृद्धायै नमः

८८. ॐ सरस्वत्यै नमः

८९. ॐ जितमात्रे नमः

९०.ॐ जितेन्द्रायै नमः

९१. ॐ शारदायै नमः

९२. ॐ हंसवाहनायै नमः

९३. ॐ कुंडासनायै नमः

९४. ॐ जगब्दात्र्यै नमः

९५. ॐ बुद्धमात्रे नमः

९६. ॐ जनेश्वर्ये नमः

९७. ॐ राज्यलक्ष्म्यै नमः

९८. ॐ वषट्कारायै नमः

९९. ॐ सुधाकाराये नमः

१००. ॐ सुधात्मिकायै नमः

१०१. ॐ राजनीत्यै नमः

१०२. ॐ त्रयीवार्तायै नमः

१०३. ॐ दण्डनीत्त्यै नमः

१०४. ॐ क्रियावृत्यै नमः

१०५. ॐ सद्धृत्यै नमः

१०६. ॐ तारिणयै नमः

१०७. ॐ श्रन्द्वायै नमः

१०८. ॐ सद्गत्यै नमः

१०९. ॐ सत्परायणायै नमः

११०. ॐ सिंधवे नमः

१११. ॐ मंदािकनयै नमः

११२. ॐ गंगायै नमः

११३. ॐ यमुनायै नमः

११४. ॐ सरस्वत्यै नमः

११५. ॐ गोदावर्ये नमः

११६. ॐ विपाशायै नमः

११७. ॐ कावेर्ये नमः

११८. ॐ शतह्रदायै नमः

११९. ॐ शरय्यै नमः

१२०. ॐ चन्द्रभागायै नमः

१२१. ॐ कौशिक्यै नमः

१२२. ॐ गंडक्यै नमः

१२३. ॐ शिवायै नमः

१२४. ॐ नर्मदायै नमः

१२५. ॐ कर्मनाशायै नमः

१२६. ॐ चर्मण्वत्यै नमः

१२७. ॐ केदिकायै नमः

१२८. ॐ वेत्रवत्यै नमः

१२९. ॐ वितस्तायै नमः

१३०. ॐ वरदायै नमः

१३१. ॐ वरवाहनाये नमः

१३२. ॐ सत्यै नमः

१३३. ॐ पतिव्रतायै नमः

१३४. ॐ साध्वी नमः

१३५. ॐ सुचक्षुषे नमः

१३६. ॐ कुंडवासिन्यै नमः

१३७. ॐ एकचक्षुषे नमः

१३८. ॐ सहस्राक्ष्यै नमः

१३९. ॐ सुश्रोण्यै नमः

१४०. ॐ भगमासिन्यै नमः

१४१. ॐ सेनाश्रेण्यै नमः

१४२. ॐ पताकायै नमः

१४३. ॐ सव्यूहायै नमः

१४४. ॐ युद्धकांक्षिण्यै नमः

१४५. ॐ पताकिन्यै नमः

१४६. ॐ दयायै नमः

१४७. ॐ रंभायै नमः

१४८. ॐ विपंत्र्ये नमः

१४९. ॐ पंचमप्रियायै नमः

१५०. ॐ परायै नमः

१५१. ॐ परकलायै नमः

१५२. ॐ कांतायै नमः

१५३. ॐ त्रिकात्तयै नमः

१५४. ॐ मोक्षदायिन्यै नमः

१५५. ॐ ऐंद्रयै नमः

१५६. ॐ माहेश्वर्ये नमः

१५७. ॐ ब्राह्य नमः

१५८. ॐ कौमार्ये नमः

१५९. ॐ कमलासनायै नमः

१६०. ॐ इच्छायै नमः

१६१. ॐ भगवत्यै नमः

१६२. ॐ घेन्वै नमः

१६३. ॐ कामधेन्वै नमः

१६४, ॐ कृपावत्यै नमः

१६५. ॐ वज्रायुधायै नमः

१६६. ॐ वज्रहस्तायै नमः

१६७. ॐ चण्ड्यै नमः

१६८. ॐ चण्डपराक्रमायै नमः

१६९. ॐ गौर्ये नमः

१७०. ॐ सुवर्णवर्णायै नमः

१७१. ॐ स्थितिसंहारकारिण्यै नमः

१७२. ॐ एकायै नमः

१७३. ॐ अनेकायै नमः

१७४. ॐ महेज्याये नमः

१७५. ॐ शतवाहवे नमः

१७६. ॐ महाभुजायै नमः

१७७. ॐ भुजंगभूषणायै नमः

१७८. ॐ भूषायै नमः

१७९. ॐ षट्चक्रक्रमवासिन्यै नमः

१८०. ॐ षट्चक्रभेदिन्यै नमः

१८१. ॐ श्यामायै नमः

१८२. ॐ कायस्थायै नमः

१८३. ॐ कायर्जितायै नमः

१८४. ॐ सुस्मितायै नमः

१८५. ॐ सुमुख्यै नमः

१८६. ॐ क्षामाये नमः

१८७. ॐ मूलप्राकृत्यै नमः

१८८. ॐ ईश्वर्ये नमः

१८९. ॐ अजायै नमः

१९०. ॐ बहुवर्णाये नम:

१९१. ॐ पुरुषार्थप्रवर्तिन्यै नमः

१९२. ॐ रक्तायै नमः

१९३. ॐ नीलायै नमः

१९४. ॐ सितायै नमः

१९५. ॐ श्यामायै नमः

१९६. ॐ कृष्णायै नमः

१९७. ॐ पीतायै नमः

१९८. ॐ कर्बुरायै नमः

१९९. ॐ क्षुघाये नमः

२००. ॐ तृष्णायै नमः

२०१. ॐ जरायै नमः

२०२. ॐ वृद्धायै नमः

२०३. ॐ तरुण्यै नमः

२०४. ॐ करूणालयायै नमः

२०५. ॐ कलाये नमः

२०६. ॐ काष्ठायै नमः

२०७. ॐ मुहूर्तायै नमः

२०८. ॐ निमेषायै नमः

२०९. ॐ कालरुपिण्यै नमः

२१०. ॐ सुवर्णाये नमः

२११. ॐ रसनायै नमः

२१२. ॐ नासायै नमः

२१३. ॐ चक्षुषे नमः

२१४. ॐ स्पर्शवत्यै नमः

२१५. ॐ रसयै नमः

२१६. ॐ गंधप्रियायै नमः

२१७. ॐ सुगंघायै नमः

२१८. ॐ सुस्पर्शयै नमः

२१९. ॐ मनोगत्यै नमः

२२०, ॐ मृगनाभ्यै नमः

२२१. ॐ मृगाक्षयै नमः

२२२. ॐ कर्पूरामोदधारिण्यै नमः

२२३. ॐ पद्मयोग्यै नमः

२२४. ॐ सुकेश्यै नमः

२२५. ॐ सुर्गिायै नमः

२२६. ॐ भगरूपिएयै नमः

२२७. ॐ योनिमुद्रायै नमः

२२८. ॐ महामुद्रायै नमः

, २२९. ॐ खेचर्वे नम:

२३०. ॐ स्वर्गगामिन्यै नमः

२३१. ॐ मधुश्रिये नमः

२३२. ॐ माधवीवल्ल्यै नमः

२३३. ॐ मधुमतायै नमः

२३४. ॐ मदोद्धतायै नमः

२३५. ॐ मातंग्ये नमः

२३६. ॐ शुकहस्तायै नमः

२३७. ॐ पुष्पवाणाये नमः

२३८. ॐ इक्षुचापिन्यै नमः

२३९. ॐ रक्ताबरधाक्ष्ज्ञये नमः

२४०. ॐ रक्तपुष्पावतंसिन्वै नमः

२४१. ॐ शुभ्रांबरधारायै नमः

२४२. ॐ अधारायै नमः

२४३. ॐ महाश्वेताये नमः

२४४. ॐ वसुप्रियायै नमः

२४५. ॐ सुवेण्यै नमः

२४६. ॐ पद्महस्तायै नमः

२४७. ॐ मुक्ताहारविभूषणायै नगः

२४८. ॐ कपूरामोदिन्यै नमः

२४९. ॐ श्वासायै नमः

२५०. ॐ पिदान्यै नमः

२५१. ॐ पद्ममंदिरायै नमः

२५२. ॐ खङ्गिन्यै नमः

२५३. ॐ चक्रहस्तायै नमः

२५४. ॐ भुशुंडीपरिघायुघायै नमः

२५५. ॐ चापिन्यै नमः

२५६. ॐ पाशहसतायै नमः

२५७. ॐ त्रिशूलवरघारिण्यै नमः

२५८. ॐ सुबाणायै नमः

२५९. ॐ शक्तिहस्तायै नमः

२६०. ॐ मयूरबरवाहनायै नमः

२६१. ॐ वरायुधधरायै नमः

२६२. ॐ धीरायै नमः

२६३. ॐ वीरपानमदोत्कटायै नमः

२६४. ॐ वसुधायै नमः

२६५. ॐ बसुधारायै नमः

२६६. ॐ जयायै नमः

१६७. ॐ शाकंभयें नमः

२६८. ॐ शिवायै नमः

२६९. ॐ विजयायै नमः

२७०. ॐ जयंत्यै नमः

२७१. ॐ सुस्तन्यै नमः

२७२. ॐ शत्रुनाशिन्ये नमः

२७३. ॐ कूर्मायै नमः

२७४. ॐ सुपर्वायै नमः

२७५. ॐ कामाक्ष्यै नमः

२७६. ॐ कामवंदितायै नमः

२७७. ॐ जालंधरधरायै नमः

२७८. ॐ अनंतायै नमः

२७९. ॐ कामरूपनिवासिन्यै नमः|३०७. ॐ कपालकुंडलायै नमः

२८०. ॐ अंतर्वत्न्यै नमः

२८१. ॐ देवशक्तयै नमः

२८२. ॐ वरदायै नमः

२८३. ॐ वरधारिण्यै नमः

२८४. ॐ शीतलायै नमः

२८५. ॐ सुशीलायै नमः

२८७. ॐ कामवीजवत्यै नमः

२८८. ॐ सत्यायै नमः

२९०. ॐ स्थूलमार्गस्थितायै नमः

२९१. ॐ सूक्ष्मायै नमः

२९२. ॐ सूक्ष्मबुद्ध्यै नमः

२९३. ॐ प्रबोधिन्यै नमः

२९४. ॐ षट्कोणायै नमः

२९५. ॐ त्रिकोणायै नमः

२९६. ॐ त्र्यक्षायै नमः

२९७. ॐ त्रिपुरसुन्दर्ये नमः

२९८. ॐ वृषप्रियायै नमः

२९९. ॐ वृषारूढायै नमः

३००. ॐ महिषासुरधातिन्यै नमः

३०१. ॐ शम्भुदर्पहरायै नमः

३०२. ॐ दृप्तायै नमः

३०४. ॐ कपालभूषणायै नमः

३०५. ॐ काल्यै नमः

३०६. ॐ कपालवरधारिण्यै नमः ३३४. ॐ तपस्विन्यै नमः

३०८. ॐ दीर्घायै नमः

३०९. ॐ शिवदूत्यै नम:

३१०. ॐ धनस्वन्यै नमः

३११. ॐ सिब्द्विदायै नमः

३१२. ॐ बुद्धिदायै नमः

३१३. ॐ नित्यायै नमः

२८६. ॐ बालग्रहविनाशिन्यै नमः ३१४. ॐ सत्यमार्गप्रबोधिन्यै नमः

३१५. ॐ मूलाधरायै नमः

३१६. ॐ निराकारायै नमः

२८९. ॐ सत्यधर्मपरायणायै नमः ३१७. ॐ विह्नकुण्डकृताश्रयायै नमः

३१८. ॐ वायुकुण्डासनासीनायै नमः

३१९. ॐ निराधारायै नमः

३२०. ॐ निराश्रयायै नमः

३२१. ॐ कंबुग्रीवायै नमः

३२२. ॐ बसुमत्यै नमः

३२३. ॐ छत्रछायाकृतालयायै नमः

३२४. ॐ कुण्डालिन्यै नमः

३२५. ॐ जगद्गगभीयै नमः

३२६. ॐ भुजंगाकारशायिन्यै नमः

३२७. ॐ प्रोल्लसत्सप्तपद्यायै नमः

३२८. ॐ नाभिनालमृडालिन्यै नमः

३२९. ॐ बल्लीतंतुसमुत्थानायै नमः

३३०. ॐ षड्रसास्वादलोलुपायै नमः

३०३. ॐ दीप्तपावकसान्निभायै नमः ३३१. ॐ श्वासोच्छ्वासगतये नमः

३३२. ॐ जिह्वागाहिण्यै नमः

३३३, ॐ वनसंश्रयायै नमः

३३५. ॐ तपःसिद्धायै नमः

३३६. ॐ तापस्यै नमः

३३७. ॐ तपःप्रियाये नमः

३३८. ॐ तपोनिष्ठायै नमः

३३९. ॐ तपोयुक्तायै नमः

३४०. ॐ तपसःसिद्धिदायिन्यै नमः ३६८. ॐ विद्यायै नमः

३४१. ॐ सप्तधातुमयीमूत्यैं नमः ३६९. ॐ दृढबंधविभोक्षिण्यै नमः

३४२. ॐ सप्तधात्वंतराश्रयायै नमः ३७०. ॐ अंबिकायै नमः

३४३. ॐ देहपुष्ट्यै नमः

३४४. ॐ मनुस्तुष्ट्ययै नमः

३४५. ॐ रत्नपुष्ट्यै नमः

३४६. ॐ बलोव्हतायै नमः

३४७. ॐ औषध्यै नमः

३४८. ॐ वैद्यमात्रे नमः

३४९. ॐ द्रव्याशक्तयै नमः

३५०. ॐ प्रभाविन्यै नमः

३५१. ॐ वैद्याविद्यायै नमः

३५२. ॐ चिकित्सायै नमः

३५३. ॐ सुपथ्यायै नमः

३५४. ॐ रोगनाशिन्यै नमः

३५५. ॐ मृगयायै नमः

३५६. ॐ मृगमांसादायै नमः

३५७. ॐ मृगत्वचे नमः

३५८. ॐ मृगलोचनायै नमः

३५९. ॐ बागुरायै नमः

३६०. ॐ बन्धरूपयै नमः

<sup>३६</sup>१. ॐ वधरूपायै नमः

३६२. ॐ बधोद्यताथै नमः

३६३. ॐ बंदिन्यै नमः

३६४. ॐ बंदिस्तुताकारायै नमः

३६५. ॐ काराबन्धविमोचिन्यै नमः

३६६. ॐ शृंखलायै नमः

३६७. ॐ कलहायै नमः

३७१. ॐ अम्बालिकायै नमः

३७२. ॐ अंबायै नमः

३७३. ॐ स्वस्थायै नमः

३७४. ॐ साधुजलार्चितायै नमः

३७५. ॐ कौलिक्यै नमः

३७६. ॐ कुलविद्यायै नमः

३७७. ॐ सुकूलायै नमः

३७८. ॐ कुलपूजितायैत नमः

३७९. ॐ कालचक्रभ्रमायै नम:

३८०. ॐ भ्रांतायै नमः

३८१. ॐ विभ्रमायै नमः

३८२. ॐ भ्रमनाशिन्यै नमः

३८३. ॐ वात्याल्यै नमः

३८४. ॐ मेघमालायै नमः

३८५. ॐ सुवृष्टौ नमः

३८६. ॐ सस्यवर्धिन्यै नमः

३८७. ॐ अकारायै नमः

३८८. ॐ इकारायै नमः

३८९. ॐ उकारायै नमः

३९०, ॐ ऍकाररूपिण्यै नमः

३९१. ॐ ऱ्हींकारबीजरूपायै नमः ४१९. ॐ वैश्यायै नमः

३९२. ॐ क्लींकारांबरूपिण्यै नमः ४२०. ॐ शूद्रायै नमः

३९३. ॐ सर्वाक्षरमयीशक्तयै नमः ४२१. ॐ आचारवरवर्णजायै नमः

३९४. ॐ अक्षरार्णवमालिन्यै नमः ४२२. ॐ वेदमार्गरतायै नमः

३९५. ॐ सिंदूरायै नमः

३९६. ॐ अरुणवर्णायै नमः

३९७. ॐ सिंदूरतिलकप्रियायै नमः ४२५. ॐ अस्त्रशास्त्रमयीविद्यायै नमः

३९८. ॐ वश्यायै नमः

३९९. ॐ वश्यबीजायै नमः

४००. ॐ लोकवश्यविभाविन्यै नमः ४२८. ॐ सत्यमेधायै नमः

४०१. ॐ नृपवश्यायै नमः

४०२. ॐ नृपव्यायै नमः

४०३. ॐ नृपवश्यकर्ये नमः

४०४. ॐ प्रियायै नमः

४०५. ॐ महिष्यै नमः

४०६.ॐ नृपमान्यायै नमः

४०७. ॐ नृपाज्ञायै नमः

४०८. ॐ नृपनंदिन्यै नमः

४०९. ॐ नृपधर्ममय्य नमः

४१०. ॐ धन्यायै नमः

४११. ॐ धन्यधान्यविवर्धिन्यै नमः ४३९. ॐ सुस्वरायै नमः

४१२. ॐ चातुर्वर्णमय्यै नमः

४१३. ॐ नीत्यै नमः

४१४. ॐ चतुर्वर्णै:पूजितायै नमः ४४२. ॐ कालिकायै नमः

४१५. ॐ सर्वधर्म मयीशक्तयै नमः ४४३. ॐ बालायै नमः

४१६. ॐ चतुराश्रमवासिन्यै नमः ४४४. ॐ बालक्रीडायै नमः

४१७. ॐ ब्राह्यण्यै नमः

४१८. ॐ क्षत्रियायै नमः

४२३. ॐ यज्ञायै नमः

४२४. ॐ वेदविश्वविभाविन्यै नमः

४२६. ॐ वरशस्त्रास्त्रधारिण्यै नमः

४२७. ॐ सुमेधायै नमः

४२९. ॐ भद्रकाल्यै नमः

४३०. ॐ अपराजितायै नमः

४३१. ॐ गायत्र्ये नमः

४३२. ॐ सत्कृत्यै नमः

४३३. ॐ संध्यायै नमः

४३४. ॐ सावित्रयै नमः

४३५. ॐ त्रिपदाश्रयायै नमः

४३६. ॐ त्रिसंध्यायै नमः

४३७. ॐ त्रिपदायै नमः

४३८. ॐ घात्र्यै नमः

४४०. ॐ समागायिन्यै नमः

४४१. ॐ पांचाल्यै नमः

४४५. ॐ सनातन्यै नमः

४४६. ॐ गर्भाधारायै नमः

४४७. ॐ घरायै नमः

४४८. ॐ शून्यायै नमः

४४९. ॐ गर्भाशयनिवासिन्यै नमः ४७७. ॐ तुष्टिदायै नमः

४५०. ॐ सुरारिधातिन्यै नमः

४५१. ॐ कृत्यायै नमः

४५२. ॐ पूतनायै नमः

४५३. ॐ त्रिलोत्तमायै नमः

४५४. ॐ लज्जाये नमः

४५५. ॐ रसवत्यै नमः

४५६. ॐ नन्दायै नमः

४५७. ॐ भवान्यै नमः

४५८. ॐ पापनाशिन्यै नमः

४५२. ॐ पट्टांबरधरायै नमः

४६०. ॐ गीतायै नमः

४६१. ॐ सुगीत्यै नमः

४६२. ॐ गानगोचरायै नमः

४६३. ॐ सप्तस्वरमयीतंत्र्ये नमः ४९१. ॐ कुरुकल्पायै नमः

४६४. ॐ षड्जमध्यमधैवतायै नमः ४९२. ॐ अमृतोद्भवायै नमः

४६५. ॐ मूर्छनाग्रामसंस्थानायै नमः ४९३. ॐ भूतभतिहरायै नमः

४६६. ॐ स्वस्थानायै नमः

४६७. ॐ स्वस्थानवासिन्यै नमः

४६८. ॐ शत्रुमार्गायै नमः

४६९. ॐ महादेव्यै नमः

४७०. ॐ वैष्णव्यै नमः

४७१. ॐ कुलपुत्रिकायै नमः

<sup>४७</sup>२. ॐ अट्टहासिन्यै नमः

४७३. ॐ प्रेतायें नमः

४७४. ॐ प्रतासननिवासिन्यै नमः ५०२. ॐ चन्द्रकान्त्यै नमः

४७५. ॐ गीतनृत्यप्रियायै नमः

४७६. ॐ कामायै नमः

४७८. ॐ पुष्टिदायै नमः

४७९. ॐ'क्षमायै नमः

४८०. ॐ निष्ठायै नमः

४८१. ॐ सत्यप्रियायै नमः

४८२. ॐ प्रज्ञायै नमः

४८३. ॐ लोकेशायै नमः

४८४. ॐ सुरोत्तमायै नमः

४८५. ॐ सविषायै नमः

४८६. ॐ ज्वालिन्यै नमः

४८७. ॐ ज्वालायै नमः

४८८. ॐ विवमोहार्तिनाशिन्यै नमः

४८९. ॐ विषार्ये नमः

४९०. ॐ नागदमन्यै नमः

४९४. ॐ रक्षायै नमः

४९५. ॐ भूतावेशनिवासिन्यै नमः

४९६. ॐ रक्षोध्न्यै नमः

४९७. ॐ राक्षस्यै नमः

४९८. ॐ रात्र्यै नमः

४९९. ॐ दीर्घनिद्रायै नमः

५००. ॐ दिवागत्यै नमः

५०१. ॐ चन्द्रिकायै नमः

५०३. ॐ सूर्यकान्त्यै नमः

५०४. ॐ निशाचर्ये नमः

५०५. ॐ डाकिन्यै नमः

५०६. ॐ शाकिन्यै नमः

५०७. ॐ शिक्षायै नमः

५०८. ॐ हाकिन्यै नमः

५०९. ॐ चक्रवर्तिन्यै नमः

५१०. ॐ शिवायै नमः

५११. ॐ शिवप्रियायै नमः

५१२. ॐ स्वांगायै नमः

५१३. ॐ सकलायै नमः

५१४. ॐ वनदेवतायै नमः

५१५. ॐ गुरूरूपधरायै नमः

५१६. ॐ गुर्व्ये नमः

५१७. ॐ मृत्युमार्ये नमः

५१८. ॐ विशारदायै नमः

५१९. ॐ महामार्ये नमः

५२०. ॐ विनिद्रायै नमः

५२१. ॐ तंद्रायै नमः

५२२. ॐ मृत्युबिनाशिन्यै नमः

५२४. ॐ चन्द्रमण्डलवर्तिनयै नमः ५५२. ॐ मंगलायै नमः

५२५. ॐ अणिमादिगुणोपेतायै नमः ५५३. ॐ सुशीलायै नमः

५२६. ॐ सुस्पृहायै नमः

५२७. ॐ कामरूपिणयै नमः

५२८. ॐ अष्टसिन्ध्रिप्रदायै नमः

५२९. ॐ प्रोढायै नमः

५३०. ॐ दुष्टदानवधतिन्यै नमः

५३१. ॐ अनादिनिधनायै नमः

५३२. ॐ पुष्ट्यै नमः

५३३. ॐ चतुर्बाहवे नमः

५३४. ॐ चतुर्मुख्यै नमः

५३५. ॐ चतुःसमुद्रवसनायै नमः

५३६. ॐ चतुर्वर्गफलप्रदायै नमः

५३७. ॐ काशपुष्यप्रतीकाशायै नमः

५३८. ॐ शरत्कुमुदलोचनायै नमः

५३९. ॐ भूतभव्यभविष्यायै नमः

५४०. ॐ शैलजायै नमः

५४१. ॐ शैलवासिन्यै नमः

५४२. ॐ वाममार्गरतायै नमः

५४३. ॐ वामायै नमः

५४४. ॐ शिवामांगवासिन्यै नमः

५४५. ॐ वांमाचारिप्रयायै नमः

५४६. ॐ तुष्ट्यै नमः

५४७. ॐ लोपामुद्रायै नमः

५४८. ॐ प्रबोधिन्यै नमः

५४९. ॐ भूतात्मने नमः

५५०. ॐ परमात्मने नमः

५२३. ॐ चन्द्रमण्डलसन्काशायै नमः ५५१. ॐ भूतभावविभाविन्यै नमः

५५४. ॐ परमार्गप्रबोधिन्यै नमः

५५५. ॐ दक्षायै नमः

५५६. ॐ दक्षिणामूर्त्ये नमः

५५७. ॐ सुदक्षायै नमः

५५८. ॐ हरिप्रियायै नमः

५५९. ॐ योगिन्यै नमः

<sub>५६०.</sub> ॐ योगनिद्रायै नमः

५६१. ॐ योगांगन्ययानशालिन्यै नमः

५६२. ॐ योगपट्टधरायै नमः

५६३. ॐ मुक्तायै नमः

५६४. ॐ मुक्तानांपरमागतयै नमः

५६५. ॐ नारसिंह्यै नमः

५६६. ॐ सुजनमने नमः

५६७. ॐ त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः

५६८. ॐ धर्मदायै नमः

५६९. ॐ धनदायै नमः

५७०. ॐ कामदायै नमः

५७१. ॐ मोक्षदायै नमः

५७२. ॐ द्युतये नमः

५७३. ॐ साक्षिण्यै नमः

५७४. ॐ क्षणदायै नमः

५७५. ॐ आकांक्षायै नमः

५७६. ॐ दक्षजांये नमः

५७७. ॐ कोटिरूपिण्यै नमः

५७८. ॐ क्रतवे नमः

५७९. ॐ कात्यायन्यै नमः

५८०. ॐ स्वास्थायै नमः

५८१. ॐ स्वच्छंदायै नमः

५८२. ॐ कविप्रियायै नमः

५८३. ॐ सत्यागमायै नमः

५८४. ॐ बहि:स्थायैनम

५८५. ॐ काव्यशक्तयै नमः

५८६. ॐ कवित्वदायै नमः

५८७. ॐ मेनापुत्र्यै नमः

५८८. ॐ सत्यै नमः

५८९, ॐ साध्वी नमः

५९०. ॐ मैनाकभगिन्यै नमः

५९१. ॐ तडिते नमः

५९२. ॐ सौदामन्यै नमः

५९३. ॐ सुघामायै नमः

५९४. ॐ सुधाम्न्यै नमः

५९५. ॐ घामशालिन्यै नमः

५९६. ॐ सौभाग्यदायिन्यै नमः

५९७. ॐ दिवे नमः

५९८. ॐ सुमगाये नमः

५९९. ॐ द्युतिवर्धिनै नमः

६००. ॐ श्रियै नमः

६०१. ॐ न्हिये नमः

६०२. ॐ कृतिवसनायै नमः

६०३. ॐ कृत्तिकायै नमः

६०४. ॐ कालनाशिन्यै नमः

६०५. ॐ रक्तबीजवधोद्युक्तायै नमः

६०६. ॐ सुतन्तवे नमः

६०७. ॐ बीजसंतत्यै नमः

६०८. ॐ जगज्जीवायै नमः

६०९. ॐ जगद्वीजायै नमः

६१०. ॐ जगत्रयहितैषिण्यै नमः

६६१. ॐ चमीकरायै नमः

६१२. ॐ चन्द्रायै नमः

६ १ ३. ७ॐ साक्षात्वोडशीकलायै नमः

६१४. ॐ यत्तत्पदानुबन्धायै नमः

६१५. ॐ यक्षिण्यै नमः

६१६. ॐ धनदार्चिताये नमः

६१७. ॐ चित्रिण्यै नमः

६ १८. ॐ चित्रमायायै नमः

६१९. ॐ विचित्रायै नमः

६२०. ॐ भुवनेश्वर्ये नमः

६२१. ॐ चामुण्डायै नमः

६२२. ॐ मुण्डहस्तायै नमः

६२३. ॐ चण्डमुण्डबधोद्यतायै नमः ६५१. ॐ कादन्बर्ये नमः

६ २४. ॐ अष्टम्यै नमः

६२५. ॐ एकादश्यै नमः

६२६. ॐ पूर्णायै नमः

६२७. ॐ नवम्यै नमः

६ २८. ॐ चतुर्दश्यै नमः

६२९. ॐ उमायै नमः

६३०. ॐ कलशहस्तायै नमः

६३१. ॐ पूर्णकुम्भधरायै नमः

६३२. ॐ धरायै नमः

६३३. ॐ अभीरवे नमः

६३४. ॐ भैरव्ये नमः

६३५. ॐ भीरवे नमः

६३६. ॐ भीमायै नमः

६३७. ॐ त्रिपुरभैरव्यै नमः

६३८. ॐ महाचण्डायै नमः

६३९. ॐ रौद्राये नमः

६४०. ॐ महाभैरवपूजितायै नमः ६६८. ॐ मध्यै नमः

६४१. ॐ निर्मुडायै नमः

६४२. ॐ हस्तिन्यै नम:

६४३. ॐ चण्डायै नमः

६४४. ॐ करालदशनाननायै नमः

६४५. ॐ करालायै नमः

६४६. ॐ विकरालायै नमः

६४७. ॐ घोरघर्घरनादिन्यै नम:

६४८. ॐ रक्तदन्तायै नमः

६४९. ॐ उर्ध्वकेश्यै नमः

६५०. ॐ बन्यूककुसुमारूणायै नमः

६५२. ॐ पलाशायै नमः

६५३. ॐ काश्मीरकुंकुमप्रियायै नमः

६५४. ॐ क्षांत्यै नमः

६५५. ॐ बहुवर्णायै नमः

६५६. ॐ रत्यै नमः

६५७. ॐ बहुसुवर्णदायै नमः

६५८. ॐ मातन्गिन्यै नमः

६५९. ॐ बरारोहायै नमः

६६०. ॐ मत्तमातनागामिन्यै नमः

६६१. ॐ हंसायै नमः

६६२. ॐ हंसगत्यै नमः

६६३. ॐ हंसयै नमः

६६४. ॐ हंसोज्जवलशिरोरुहायै नमः

६६५. ॐ पूर्णचन्द्रप्रतीकाशायै नमः

६६६. ॐ स्मिताशायै नमः

६६७. ७३० सुकुण्डलायै नमः

६६९. ॐ लेखन्यै नमः

६७०. ॐ लेखायै नमः

६७१. ॐ सुलेखायै नमः

६७२. ॐ लेखकप्रियायै नमः

६७३. ॐ शंखिन्यै नमः

६७४. ॐ शंखहस्तार्थ नम:

६७५. ॐ जलस्थायै नमः

६७६. ॐ जलदेवतायै नमः

६७७. ॐ कुरूक्षेत्रायै नमः

६७८. ॐ वन्यै नमः

६७९. ॐ काश्यै नमः

६८०. ॐ मथुरायै नमः

६८१. ॐ कांच्ये नमः

६८२. ॐ अवंतिकायै नमः

६८३. ॐ अयोध्यायै नमः

६८४. ॐ द्वारकायै नमः

६८५. ॐ मायायै नमः

६८६. ॐ तीर्थायै नमः

६८७. ॐ तीर्थकर्ये नमः

६८८. ॐ प्रियायै नमः

६८९. ॐ त्रिपुरायै नमः

६९०. ॐ अप्रमेयायै नमः

६९१. ॐ कोशस्थायै नमः

६९२. ॐ कोशवासिन्यै नमः

६९३. ॐ कौशिक्यै नमः

६९४. ॐ कुशावर्तायै नमः

६९५. ॐ कोशांबायै नमः

६९६. ॐ कोशवर्धिन्यै नमः

६९७. ॐ कौशदायै नमः

६९८. ॐ पद्मकोशाक्ष्यै नमः

६९९. ॐ कुसुम्भकुसुमप्रियायै नमः

७००. ॐ तोतुलायै नमः

७०१. ॐ वर्तुलायै नमः

७०२. ॐ कोट्यै नमः

७०३. ॐ कोटस्थायै नमः

७०४. ॐ कोटराश्रयायै नमः

७०५. ॐ स्वयंभुवै नमः

७०६. ॐ स्वरूपायै नमः

७०७. ॐ सुख्यायै नमः

७०८. ॐ रूपवर्धिन्यै नमः

७०९. ॐ तेजस्विनयै नमः

७१०. ॐ सुदीक्षायै नमः

७११. ॐ बलदायै नमः

७१२. ॐ बलपायिन्यै नमः

७१३. ॐ महोकोशायै नमः

७१४. ॐ महागर्तायै नमः

७१५. ॐ बुद्धये नमः

७१६. ॐ सदसदात्मिकायै नमः

७१७. ॐ महायहहरायै नमः

७१८. ॐ सौम्यायै नमः

७१९. ॐ विशोकायै नमः

७२०. ॐ शोकनाशिन्यै नमः

७२१. ॐ सात्विकायै नमः

७२२. ॐ सत्वसंस्थायै नमः

७२३. ॐ राजस्यै नमः

७ २४. ॐ रजोयुतायै नमः

७२५. ॐ तामस्यै नमः

७२६. ॐ तमोक्तायै नमः

७२७. ॐ गुणत्रयविभाविन्यै नमः

७२८. ॐ अप्यक्तायै नमः

७२९. ॐ व्यस्तरूपायै नमः

७३०. ॐ वेदविद्यायै नमः

७३१. ॐ शांभव्यै नमः

७३२. ॐ कल्पाण्यै नमः

७३३. ॐ शांकर्ये नमः

७३४. ॐ कल्पायै नमः

७३५. ॐ मनःसंकल्पसंतत्यै नमः

७३६. ॐ सर्वलोकमर्य्यशक्तयै नमः

७३७. ॐ सर्वश्रवणगोचराये नमः

७३८. ॐ सर्वज्ञानवत्यै नमः

७३९. ॐ वान्छायै नमः

७४०. ॐ सर्वत्त्वप्रबोधिन्यै नमः

७४१. ॐ जागृत्यै नमः

७४२. ॐ सुषुप्त्यै नमः

७४३. ॐ स्वप्तावस्थायै नमः

७४४. ॐ तुरीयकायै नमः

७४५. ॐ त्वरायै नमः

७४६. ॐ मन्दगतये नमः

७४७. ॐ मन्दायै नमः

७४८. ॐ मदिरामादमोदिन्यै नमः

७४९. ॐ पानभूम्यै नमः

७५०. ॐ पानपात्रायै नमः

७५१. ॐ पानदानकरोद्यतायै नमः

७५२. ॐ आघूर्णायै नमः

७५३. ॐ अरूणनेत्रायै नमः

७५४. ॐ किचिदव्यक्तभाषिण्यै नमः

७५५. ॐ आशापूरायै नमः

७५६. ॐ दीक्षायै नमः

७५७. ॐ दीक्षादीक्षितपूजितायै

नमः

७५८. ॐ नागवल्यै नमः

७५९. ॐ नागकन्यायै नमः

७६०. ॐ भोगिन्यै नमः

७६१. ॐ भोगवल्लभायै नमः

७६२. ॐ सर्वशास्त्रमय्यै नमः

७६३. ॐ सुस्मृत्यै नमः

७६४. ॐ धर्मवाहिन्यै नमः

७६५. ॐ श्रुतिस्मृतिधरायै नमः

७६६. ॐ ज्येष्ठायै नमः

७६७. ॐ श्रेष्ठायै नमः

७६८. ॐ पातालवासिन्यै नमः

७६९. ॐ मीमांसायै नमः

७७०. ॐ तर्कविद्यायै नमः

७७१. ॐ सुभक्तयै नमः

७७२. ॐ भक्तवत्सलायै नमः

७७३. ॐ सुनाभ्यै नमः

७७४. ॐ यातनायै नमः

७७५. ॐ यात्ये नमः

७७६. ॐ गंभीरायै नमः

७७७. ॐ अभाववर्जितायै नमः

७७८. ॐ नागपाशधरामूत्यैं नमः

७७९. ॐ अगाधायै नमः

७८०. ॐ नागकुण्डलायै नमः

७८१. ॐ सुचक्रायै नमः

७८२. ॐ चक्रमध्यस्थायै नमः

७८३. ॐ चक्रकोणनिवासिन्यै नमः

७८४. ॐ सर्वमन्त्रमय्यैविद्यायै नमः

७८५. ॐ सर्वमंत्राक्षरायै नमः

७८६. ॐ मधुश्रवसे नमः

७८७. ॐ स्रवन्त्यै नमः

७८८. ॐ भ्रामर्थे नमः

७८९. ॐ भ्रमरालयायै नमः

७९०. ॐ मातृमण्डलामध्यस्थायै नमः

७९१. ॐ मातृमण्डलासिन्यै नमः

७९२. ॐ कुमारजन्यै नमः

७९३. ॐ क्रूरायै नमः

७९४. ॐ सुमुख्यै नमः

७९५. ॐ ज्वरनाशिन्यै नमः

७९६. ॐ अतीतायै नमः

७९७. ॐ विद्यमानायै नमः

७९८. ॐ भाविन्यै नमः

७९९. ॐ प्रीतिमजर्ये नमः

८००. ॐ सर्वसौख्यकत्यैशक्तयै नमः

८०१. ॐ आहारपरिणामिन्यै नमः

८०२. ॐ पंचभूतिनदानायै नमः

८०३. ॐ भवसागरतारिण्यै नमः

८०४. ॐ अक्रूरायै नमः

८०५. ॐ यहवत्यै नमः

८०६. ॐ विग्रहायै नमः

८०७. ॐ यहर्जितायै नमः

८०८. ॐ रोहिणीभूमिगर्भायै नमः

८०९. ॐ कालभुवे नमः

८१०. ॐ कालवर्तिन्यै नमः

८११. ॐ कलंकरहितायै नमः

८१२. ॐ नार्ये नमः

८१३. ॐ चतुःषष्ट्यभिद्यायिन्यै नमः

८१४. ॐ जीर्णायै नमः

८१५. ॐ जीर्णवस्त्रायै नमः

८१६. ॐ नूतनायै नमः

८१७. ॐ नववल्लभायै नमः

८१८. ॐ जरायै नमः

८१९. ॐ रतिप्रीत्यै नमः

८२०. ॐ अतिरागविवर्धिन्यै नमः

८२१. ॐ पंचवातगतिभिन्नायै नमः

८२२. ॐ पंचश्लेष्मायाधरायै नमः

८२३. ॐ पंचिपत्तपत्येशक्तये नमः

८२४. ॐ पंचस्थानविभाविन्यै नमः

८२५. ॐ उदक्यायै नमः

८२६. ॐ वृषसयंत्यै नमः

८२७. ॐ त्र्यहः प्रस्नविण्यै नमः

८२८. ॐ रजःशुक्रधराशक्तयै नमः

८२९. ॐ जरायुर्गर्मधारिण्यं नमः

८३०. ॐ त्रिकालज्ञायै नमः

८३१. ॐ त्रिलिंगायै नमः

८३२. ॐ त्रिमूर्तिपुरवासिन्यै नमः

८३३. ॐ अगारायै नमः

८३४. ॐ शिवतत्त्वायै नमः

८३५. ॐ कामतत्त्वायै नमः

८३६. ॐ रागिण्यै नमः

८३७. ॐ प्राच्ये नमः

८३८. ॐ अवाच्यै नमः

८३९. ॐ प्रतीच्यैदिशे नमः

८४०. ॐ उदीच्यै नमः

८४१. ॐ विदिशे नमः

८४२. ॐ दिशाये नमः

८४३. ॐ अहंकृत्यै नमः

८४४. ॐ अहंकारायै नमः

८४५. ॐ बालमायायै नमः

८४६. ॐ बलिप्रियायै नमः

८४७. ॐ स्रुचे नमः

८४८. ॐ स्नुवायै नमः

८४९. ॐ सामिधेन्यै नमः

८५०. ॐ सुश्रद्धयै नमः

८५१. ॐ श्राद्धदेवतायै नमः

८५२. ॐ मात्रे नमः

८५३. ॐ मातामही नमः

८५४. ॐ तृप्त्यै नमः

८५५. ॐ पितुमत्रि नमः

८५६. ॐ पितामह्यै नमः

८५७. ॐ स्नुपायै नमः

८५८. ॐ दौहित्रिण्यै नमः

८५९. ॐ पुत्रयै नमः

८६०. ॐ पौत्रयै नमः

८६१. ॐ नपूत्रयै नमः

८६२. ॐ स्वस्ने नमः

८६३. ॐ प्रियायै नम:

८६४. ॐ स्तनदायै नमः

८६५. ॐ स्तनधारायै नमः

८६६. ॐ विश्वयोन्यै नमः

८६७. ॐ स्तनन्धय्यै नमः

८६८. ॐ शिशुत्संगधरायै नमः

८६९. ॐ दोलायै नमः

८७०. ॐ दोलाक्रीडायै नमः

८७१. ॐ अभिनंदिन्यै नमः

८७२. ॐ उर्वश्यै नमः

८७३. ॐ कदल्यै नमः

८७४. ॐ केकायै नमः

८७५. ॐ विशिखायै नमः

८७६. ॐ शिखिवर्तिन्यै नमः

८७७. ॐ षट्वांगधारिण्यै नमः

८७८. ॐ खङ्गवाणपुंखानुवर्तिन्ये नमः

८७९. ॐ लक्षप्राप्तिकरायै नमः

८८०. ॐ लक्ष्यै नमः

८८१. ॐ सुलक्षणायै नमः

८८२. ॐ शुभालक्षणयै नमः

८८३. ॐ वर्जिन्यै नमः

८८४. ॐ सुपथाचारायै नमः

८८५. ॐ परिखायै नमः

८८६. ॐ प्रकारावलयायै नमः

८८७. ॐ वेलायै नमः

८८८. ॐ मर्यादायै नमः

८८९. ॐ महोदध्यै नमः

८९०. ॐ महोदध्यै नमः

८९१. ॐ पोषण्यै नमः

८९२. ॐ शोषणीशक्तौ नमः

८९३. ॐ दीर्घकेश्यै नमः

८९४. ॐ सुलोमशायै नमः

८९५. ॐ ललितायै नमः

८९६. ॐ मांसलायै नमः

८९७. ॐ तन्व्यै नमः

८९८. ॐ वेदावेदांगधारिण्यै नमः

८९९. ॐ नरासृक्पानमततायै नमः

९००. ॐ नरमुण्डास्थिभूषणायै नमः

९०१. ॐ अक्षकीडारत्यै नमः

९०२. ॐ सौर्ये नमः

९०३. ॐ सारिकाशुकभाषिणयै नमः

९०४. ॐ शाबर्ये नमः

९०५. ॐ गारूडीविद्यायै नमः

९०६. ॐ वारूण्यै नमः

१०७. ॐ वरूणार्चितायै नमः

९०८. ॐ वाराह्ये नमः

१०९. ॐ तुंडहस्तायै नमः

९१०. ॐ दंष्ट्रोद्धतवसुंधरायै नमः

९११. ॐ मीनमर्त्ये नमः

११२. ॐ धरामूर्त्ये नमः

९१३. ॐ वदान्यायै नमः

११४. ॐ प्रतिमाश्रयायै नमः

९१५. ॐ अमूर्त्ये नमः

९१६. ॐ निधिरूपायै नमः

११७. ॐ शालग्रामशिलायै नमः

९१८. ॐ शुचये नमः

९१९. ॐ स्मृतिसंस्काररूपायै नमः

९२०. ॐ सुसंस्कारायै नमः

९२१. ॐ संसुत्ये नमः

९२२. ॐ प्राकृतायै नमः

९२३. ॐ वेदाभाषायै नमः

९२४. ॐ गायायै नमः

९२५. ॐ गीत्यै नमः

९२६. ॐ प्रहेलिकायै नमः

९२७. ॐ इडायै नमः

९२८. ॐ पिंगलायै नमः

९२९. ॐ पिगायै नमः

९३०. ॐ सुषम्नौ नमः

९३१. ॐ सूर्यवाहिनयै नमः

९३२. ॐ शशिश्रवायै नमः

९३३. ॐ तालुस्थायै नमः

९३४. ॐ कातिन्यै नमः

९३५. ॐ मृतजीविन्यै नमः

९३६. ॐ अणुरूपायै नमः

९३७. ॐ वृहद्रुपायै नमः

९३८. ॐ लघुरूपायै नमः

९३९. ॐ गुरुस्थिरायै नमः

९४०. ॐ स्थावर्ये नमः

९४१. ॐ जंगमायैदेव्यै नमः

९४२. ॐ कृतकर्मफलप्रदायै नमः

९४३. ॐ विषयायै नमः

९४४. ॐ क्रांतदेहायै नमः

९४५. ॐ निर्विषयै नमः

९४६. ॐ जितेन्द्रियायै नमः

९४७. ॐ चित्स्वरूपायै नमः

९४८. ॐ चिदानन्दायै नमः

९४९. ॐ परब्रह्मावबोधिन्यै नमः

९५०. ॐ निर्विकारायै नमः

९५१. ॐ निर्वेरायै नमः

९५२. ॐ रत्यै नमः

९५३. ॐ सत्यायै नमः

९५४. ॐ अधिवर्तिन्यै नमः

९५५. ॐ पुरुषायै नमः

९५६. ॐ अज्ञानभिन्नायै नमः

९५७. ॐ क्षांत्यै नमः

९५८. ॐ कैवल्यादायिन्यै नमः

९५९. ॐ विविक्तसेविन्यै नमः

९६०. ॐ प्राज्ञायै नमः

९६१. ॐ जनितायै नमः

९६२. ॐ बहुश्रुतायै नमः

९६३. ॐ निराहारायै नमः

९६४. ॐ समस्तैकार्ये नमः

९६५. ॐ सर्वलोकैकसेवितायै नमः

९६६. ॐ सेव्यसेव्यायै नमः

९६७. ॐ प्रियाये नमः

९६८. ॐ सेव्यायै नमः

९६९. ॐ सेवाफलविवर्धिन्यै नमः | ९९७. ॐ सर्वतीर्थभय्यैमूर्त्ये नमः

९७०. ॐ कलौकल्किप्रियायै नमः

९७१. ॐ शीलायै नमः

९७२. ॐ दुष्टलेच्छविनाशिन्यै नमः १०००. ॐ सर्वमंगलसंज्ञितायै नमः

९७३. ॐ प्रत्यन्वायै नमः

९७४. ॐ धनुषे नमः

९७५. ॐ यष्ट्यै नमः

९७६. ॐ खङ्गधरायै नमः

९७७. ॐ घरारथायै नमः

९७८. ॐ अश्वप्लुतायै नमः

९७९. ॐ वल्गायै नमः

९८०. ॐ सृण्यै नमः

९८१. ॐ मत्तवारुणायै नमः

९८२. ॐ वीरसुवे नमः

९८३. ॐ वेदमात्रे नमः

९८४. ॐ वीरश्रिये नमः

९८५. ॐ वीरंदिन्यै नमः

९८६. ॐ जयश्रिये नमः

९८७. ॐ जयदीक्षायै नमः

९८८. ॐ जयदायै नमः

९८९. ॐ जयवर्धिन्यै नमः

९९०. ॐ क्षेमंकर्ये नमः

९९१. ॐ सिद्धिरूपायै नमः

९९२. ॐ सत्कीत्यें नमः

९९३. ॐ पथिदेवताये नमः

९९४. ॐ सौभाग्यायै नमः

९९५. ॐ शुभाकारायै नमः

९९६. ॐ सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः

९९८. ॐ सर्वदेवमय्यैप्रभायै नमः

९९९. ॐ सर्वसिद्धिप्रदायैशक्तयै नमः

इति श्रीदुर्गासहस्रनामावलिः सम्पूर्णम् ॥

## देवी-देवताओं की गायत्री

दुर्गा गायत्री---

ॐ कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमारी धीमहि। तन्नो दुर्गीः प्रचोदयात्।।
(नारायणोपनिषत्)

कात्यायन्यै विद्यहे कन्याकुमार्यै धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।। (लङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।२६)

लक्ष्मी गायत्री—

महालक्ष्म्यै च विदाहे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मी: प्रचोदयात्।। (ऋग्वेद, परिशिष्ट भाग)

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुप्रियायै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।
(नारायणोपनिषत् ६)

महाम्बिकायै विद्यहे कर्मसिब्झ्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मी: प्रचोदयात्।। (लिङ्गपुराण, उत्तरार्ध ४८।२३)

राधा गायत्री---

ॐ हीं राधिकायै विद्यहे गान्धर्विकायै धीमहि। तन्नो राधा प्रचोदयात्।। ॐ वृषभानुजायै विद्यहे कृष्णप्रियायै धीमहि। तन्नो राधिका प्रचोदयात्।। सीता गायत्री—

जनकात्मजायै विद्महे रामपत्न्यै च धीमहि। तन्नो सीता प्रचोदयात्।। गंगा गायत्री—

भागीरथ्यै च विद्महे विष्णुपद्यै च धीमहि। तन्नो गङ्गा प्रचोदयात्।। तुलसी गायत्री—

तुलसीपत्राप विदाहे विष्णुप्रियाय च धीमहि। तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।। वगलामुखी गायत्री—

बगलामुख्यै च विदाहे स्तम्भिन्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।। ब्रह्मा गायत्री—

वेदात्मनाय विदाहे हिरण्यगर्भाय धीमहि। तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्।। विष्णु गायत्री—

नारायणाय विद्यहे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णु प्रचोदयात्।।

सं.पू.य.वि. १८

शिव गायत्री—

तत्पुरुषाय विद्यहे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।। (नारायणोपनिषत् २४।२०)

राम गायत्री--

दाशरथाय विदाहे सीतावल्लभाय धीमहि। तन्नो रामः प्रचोदयात्।। (महानारायणोपनिषत् ७)

कृष्ण गायत्री—

दामोदराय विदाहे वासुदेवाय धीमहि। तन्नोः कृष्णः प्रचोदयात्।। हनुमद् गायत्री—

रामदूताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि। तन्नो हनुमत्प्रचोदयात्।। गणेश गायत्री—

लम्बोदराय विद्महे महोदराय धीमहि। तन्नो दन्ती: प्रचोदयात्।। (अग्निपुराण) ७२।६

एकदन्ताय विद्यहे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। (अथर्वशीर्षोपनिषत्)

कार्तिकेय गायत्री---

तत्पुरुषाय विद्यहे महासेनाय धीमहि। तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात्।। परशुराम गायत्री—

जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि। तन्नः परशुरामः प्रचोदयात्।। सूर्य गायत्री—

आदित्याय विद्यहे सहस्त्रकिरणाय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।। अग्नि गायत्री—

वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि। तन्नो अग्निः प्रचोदयात्।। चन्द्र गायत्री—

अत्रिपुत्राय विद्यहे सागरोद्धवाय धीमहि। तन्नः चन्द्रः प्रचोदयात्।। गुरु गायत्री—

परब्रह्मणे विद्महे गुरुदेवाय धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।।

## देवी-देवताओं की आरती

## आरती श्रीगणेशजी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। पार्वती, पिता महादेवा।। जाकी माता जय गणेश...॥ एकदन्त दयावन्त, चार भुजाधारी। मस्तक सिन्दूर सोहे, मूस की सवारी। जय गणेश...॥ अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। जय गणेश...। पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लडुअन को भोग लगे सन्त करें सेवा।। जय गणेश...॥ दीनन की लाज राखो शम्भु सुत वारी। कामना को पूरा करो जग बलिहारी।। जय गणेश...॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।

माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

#### आरती श्रीशंकरजी की

ॐ जय शिव ओंकारा हर जै शिव ओंकारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा॥ टेक॥ एकानन चतुरानन पंचानन राजे। हंसानन गरुडासन वृषवाहन साजे।। ॐ जय... दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज ते सोहे। तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे॥ ॐ जय... श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे। सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।। ॐ जय... अक्षमाला, वनमाला, मुण्डमाला धारी। चंदन मृगमद चन्दा, भाले शुभकारी॥ ॐ जय... कर के मध्ये कमंडल, चक्र त्रिशूल धर्ता। जग कर्ता जग हर्ता जग पालन करता।। ॐ जय... ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका। प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका।। ॐ जय... काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दी-ब्रह्मचारी। नित उठ दर्शन पावत महिमा अति भारी।। ॐ जय... त्रिगुण स्वामी जी की आरती, जो कोई नर गावे। कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे।। ॐ जय शिव ओंकारा...

## आरती श्रीहनुमानजी की

आरती कीजे हनुमान लला की। दलन रघुनाथ कला की॥ टेक।। जाके बल से गिरवर काँपै। रोग-दोष भय निकट न ऑवै॥ अंजनिपुत्र महा बलदाई। के प्रभु सदा सहाई॥ सन्तन बीड़ा रघुनाथ पठाये। जारि सिया सुधि लाये।। लंका सो कोट समुद्र-सी खाई। लंक 💮 जात पवन-सुत बार न . लाई॥ लंका जारि असुर संहारे। रामचन्द्रजी के काज लिंछमन मुर्छित परे आनि सजीवन प्राण सँवारे॥ सँगारे। उबारे॥ पैठि पताल तोरि यमकारे। अहिरावण की भुजा उखारे॥ बाईं भुजा असुरदल मारे। दाहिनी भुजा सन्तजन तारे॥ गुनि आरती उतारें। सुर-नर-मुनि उतारें। जै जै हनुमानजी उचारें॥ कंचन थार कपूर सुहाई। आरति करत अंजनी माई॥ जो हनुमानजी की आरति गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै।। आरती कीजे हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

## आरती श्रीविष्णुजी की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे। भक्त जनन के संकट, क्षण में दूर करे।। टेक।। जो ध्यावै फल पावै, दुःख बिनसे मन का। सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तन का।। ॐ जय०॥

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी। तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।। ॐ जय०।।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी। पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ॐ जय०॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥
ॐ जय०॥

तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपती। किस विधि मिलूँ दयामय! तुमको मैं कुमती॥ ॐ जय०॥

दीन-बन्धु दु:खहर्ता तुम रक्षक मेरे। करुणा हस्त उठाओ द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ जय०॥

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ ॐ जय०॥

श्री जगदीशजी की आरती जो कोई नर गावें। कहत शिवानंद स्वामी, सुख संपत्ति पावें।।

### आरती श्रीलक्ष्मीजी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुमको निशिदिन सेवत हर विष्णु धाता।। टेक।। ब्रह्माणी, रुद्राणी, कमला तुम ही जग-माता। सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।।

ॐ जय...॥

दुर्गारूप निरंजनि, सुख-सम्पति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता॥

ॐ जय...॥

तू ही पाताल-निवासनी, तू ही है सुखदाता। कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि भवनिधि की त्राता।।

ॐ जय...॥

जिस घर थारो बासो, वाहि में गुण आता। कर न सके सोई कर ले, मन नहिं घड़काता॥

ॐ जय...॥

तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न होय पाता। खान-पान को वैभव सब तुमसे आता।।

ॐ जय...॥

शुभ गुण सुन्दर रक्तक्षीर निधि जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहीं पाता॥ ॐ जय...॥

आरति लक्ष्मीजी की जो कोई नर गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।।

ॐ जय...॥

स्थिर चर जगत् बचावे कर्म प्रेम ल्याता। राम प्रताप मैया की शुभ दृष्टि चाहता॥ ॐ जय...॥

#### & ● &

#### आरती श्रीअम्बाजी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव री।।१।। माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को। उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्रवदन नीको।।२।। कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे। रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे।।३।। केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःख हारी॥४॥ कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती॥५॥ शुम्भ-निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती। धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।।६।। चण्ड-मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे। मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे॥७॥ ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।८।। चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूं। बाजत ताल मृदंगा, अरू बाजत डमरू॥१॥

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। भक्तन की दुःख हरता, सुख-सम्पति करता।।१०।। भुजा चार अति शोभित, वरमुद्रा धारी। मन वांछित फल पावत, सेवत नर-नारी॥११॥ कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। श्री माल केतु में राजत, कोटि रतन ज्योती॥१२॥ माँ अम्बे जी की आरित, जो कोई नर गावैं। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पति पावैं॥१३॥

#### **രം** • എ

## आरती श्रीदुर्गाजी की

जगजननी जय! जय!! मां! जगजननी जय! जय!!। भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय।। तू ही सत्-चित् सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा। सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा॥१॥ जग०॥

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी। अमल अनन्त अगोचर अज आनन्दराशी॥२॥ जग०॥

अविकारी अघहारी, सकल कलाधारी। कर्ता विधि, भर्ता हरि हर सँहारकारी॥३॥ जग०॥

तू विधिवधू, रमा तू, तू उमा, महामाया। मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया।।४।। जग०॥

राम, कृष्ण तू, सीता, व्रजरानी राधा। तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा।।५॥ जग०॥

दश विद्या, नवदुर्गा, नाना शस्त्रधरा। अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव रूप धरा।।६॥ जग०॥

तू परमधाम-निवासिनि, महाविलासिनि तू। तू ही श्मशानविहारिणी, ताण्डवलासिनि तू॥७॥ जग०॥

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा। विवसन विकट-स्वरूपा, प्रलयमयी धारा॥८॥ जग०॥

तू ही स्नेह-सुधामिय, तू अति गरल मना। रत्निवभूषित तू ही, तू ही अस्थि तना॥९॥ जग०॥

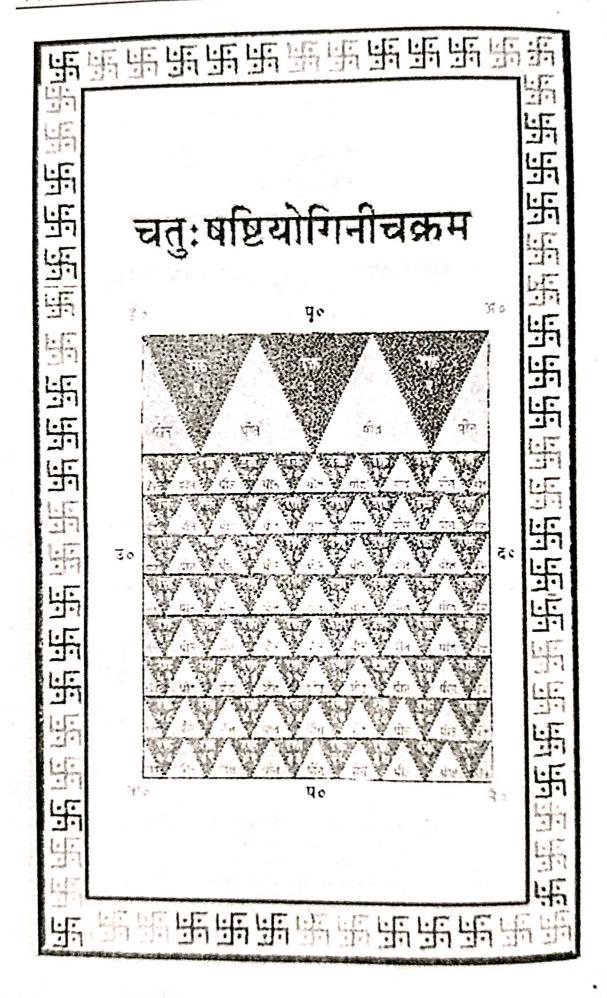
मूलाधार-निवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे। कालातीता काली, कमला तू वरदे॥१०॥ जग०॥

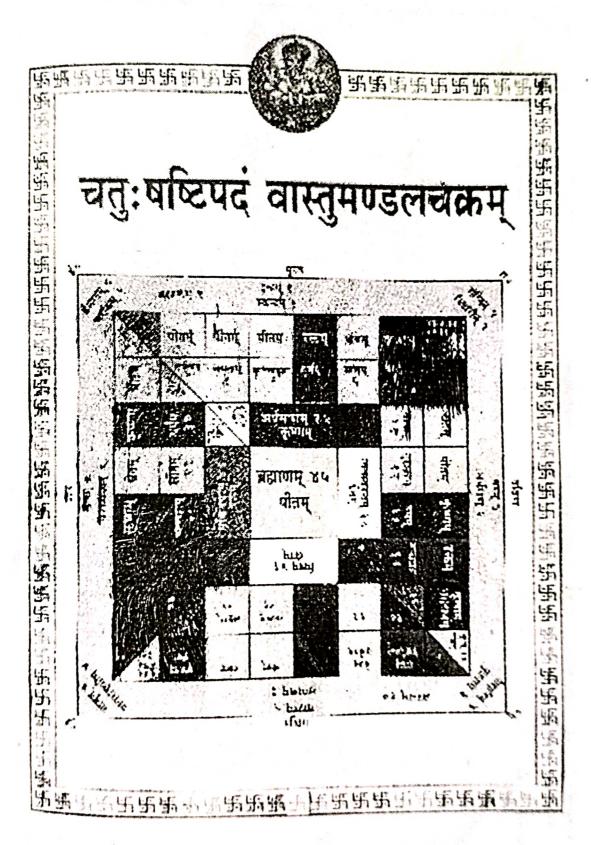
शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी। भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी॥११॥ जग०॥

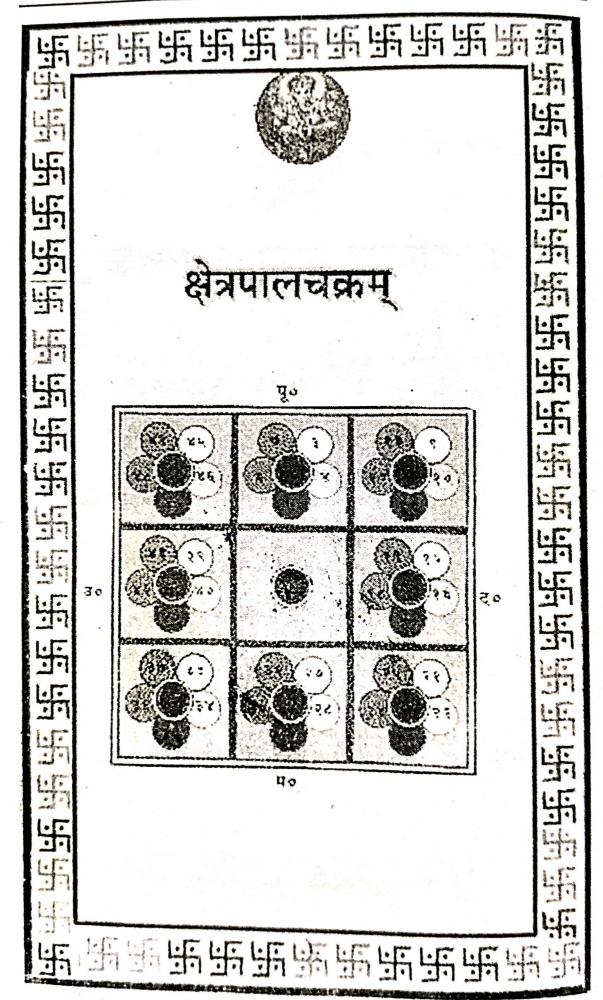
हम अति दीन दुखी माँ विपत जाल घेरे। है कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे।।१२।। जग०।।

निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै। करुणाकर करुणामिय! चरण-शरण दीजै॥१३॥ जग०॥

乐	强肥肥肥肥黑肥肥肥肥	浙
出出	अथ वसोर्द्धाराचक्रम्	光影
卐	।।श्री।।	等
当	000	卐
斯斯斯斯	0000	張黑
	000000	等
馬馬		当
乐	ष्रीर्लक्ष्मीयृर्ति मेथा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती। माहल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्रता घृतमातरः।।	第三元
s 等	अथ षोडशमातृकाचक्रम्	뚦
	Transit Arms Arms (Account)	部
卐	मुस्त कर करा है जा कि सार कर	44
		哥
	शर्थ के किस	計画
400	top and the state of the state	4
出	र्गारी प्रशा मानी मेमा सामित्रं विभण वदा। देव क्षेत्रा हन्या स्वाहा गानशे लोक्सम्हरः ।	#:
	धृषिः कृष्टिस्तकः गृष्टिः अभ्ययः कृष्टदेवनः। गर्वजानाधिका होतः मृत्ये कृष्यास्तु बोरशः।	引端
能是是是思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思思		





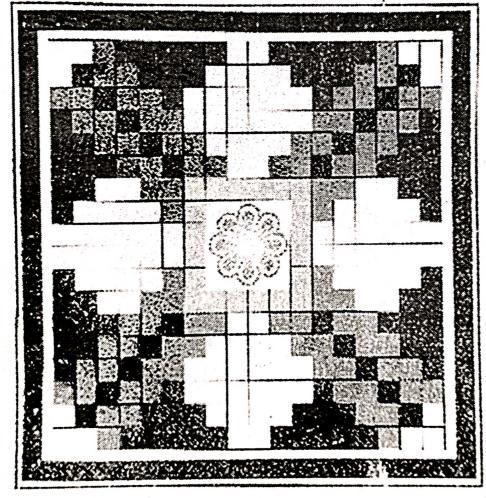


斯斯斯斯

光光光



**船供配配配配配配配配配** 



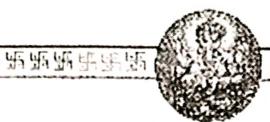
प्रातु द्वीन्यवाता क्याः क्योरिकोत्रविष्यक्तिः । स्रापन्नेद्वस्मिष्ट्वः क्षोणे सृहत्ता प्रकृतिः प्रदेशः । १ । महिंदिहान्युग्न वाची वीतिर्दिशनिः परेशास्त्र एकदशासा शल्यो एउ तु स्वभि। पर्देश पक्षे बोहराप्ति क्लेक्ट कालकरलं समाप्त् । धेनेन्द्रः स्थाना कुमावन्ते रीनेव पृत्येत् । १३ परकता मित्र वापी प्रदेशिः अववर्णकः। यसान्धन्तिः देन मत्रीमनः अत्रनामेकः । ं वर्षे चारो मध्ये मताल्याः १ ५३% भ्यतन्त्रं त्याय अवस्मास सम्भगम् । १५३ कुल्यंप्रमदल शुभन । लेथुमार्क च्लाड च्याकृत्वा वस सुमार् ।।६।

H

光光光

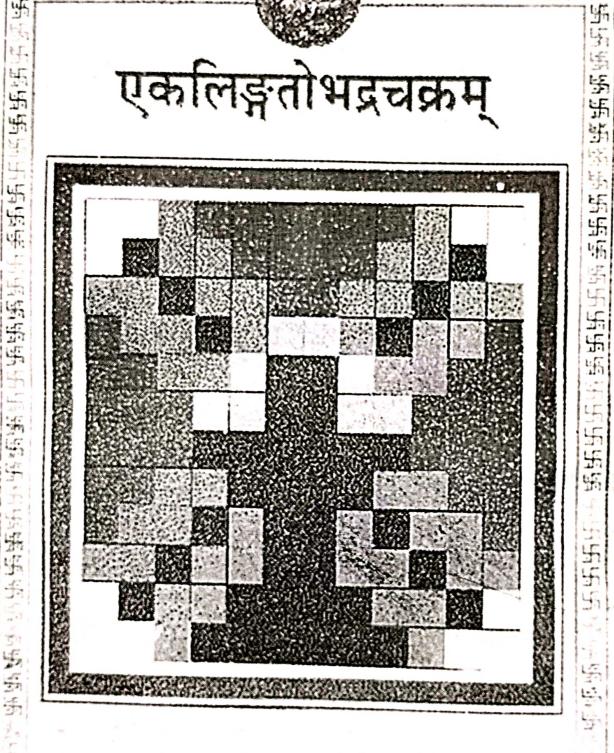
断断场

¥.



斯斯斯斯斯斯斯斯斯 脈

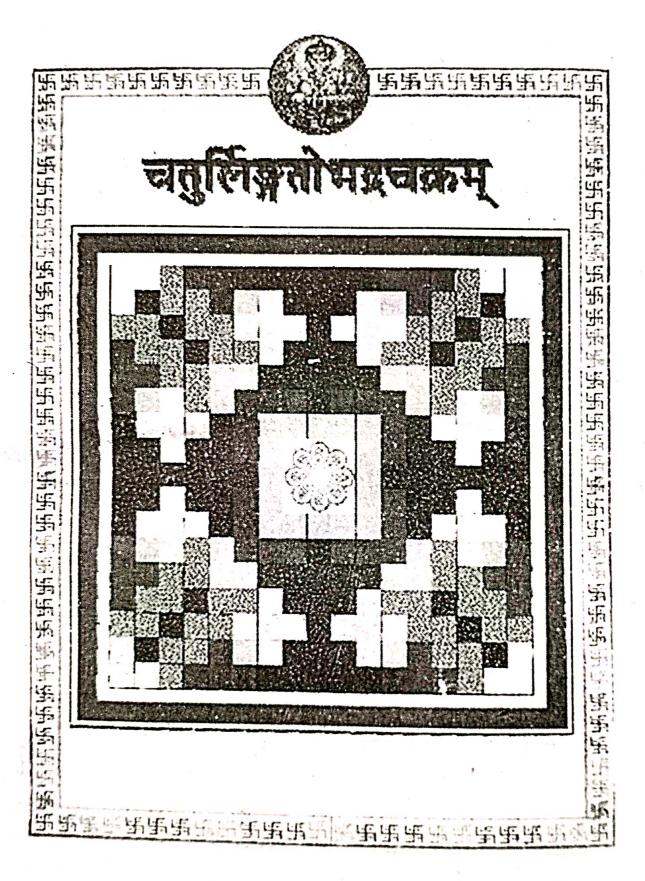
एकलिङ्गतोभद्रचक्रम्

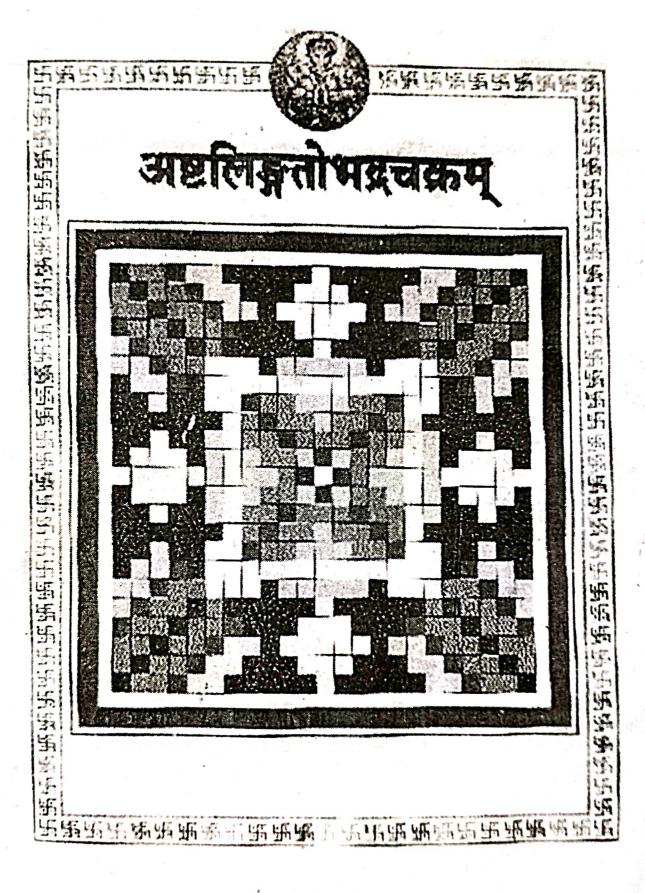


**有折** 

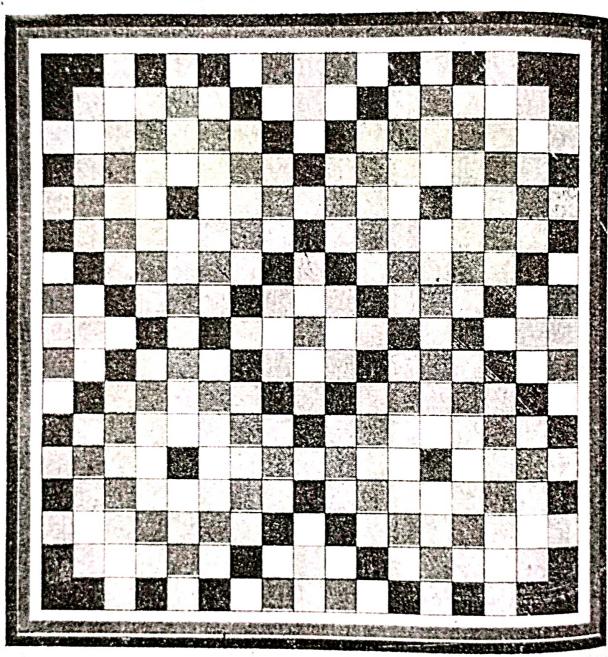


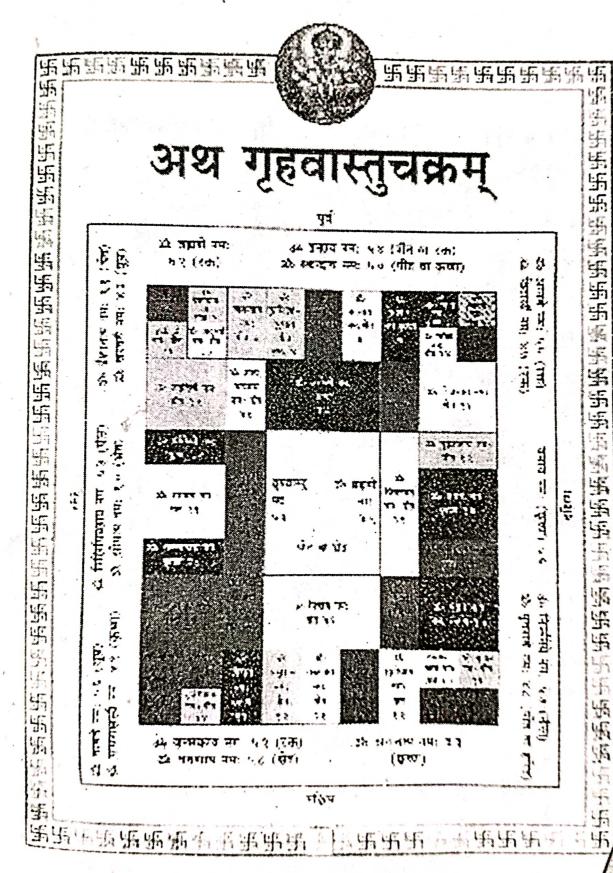
सं.पू.य.वि. १९९

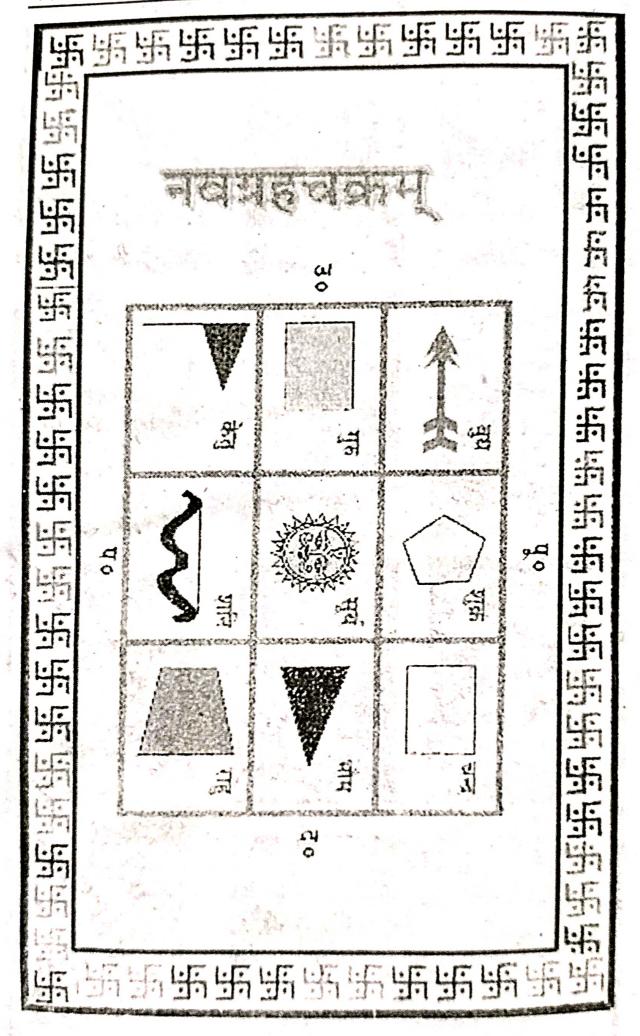




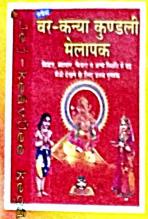
# ( दुर्गा पूजा प्रतिष्ठा समये )

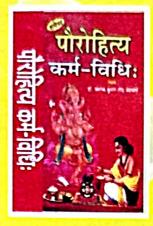


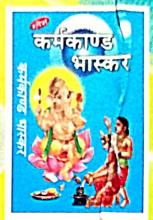




## हमारे यहाँ से प्रकाशित कुछ मह वपूर्ण पुस्तकें-

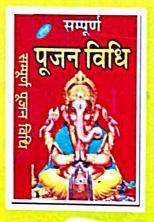


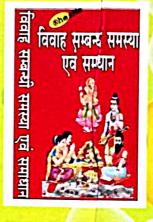




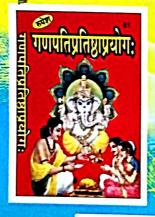




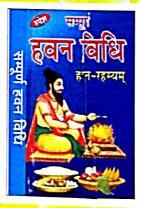


















प्रकाशक :

## रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन

कचौड़ीगली, वाराणसी फोन: (0542) 2392543, 2392471

